प्रस्तावना

श्लोक

व्याजे द्वी गुणं वितं, व्यापारे च चतुर्गुणं;
सेतं शत गुणं वितं, दाने च अनंत गुणं.

इस वक्त जैन धर्म के आराधन करने वाले विशेषत्व वैश्य (वणिये - वैपारी) जाती के लोक ही ज्यादातर होते हैं और वैपारी लोक हिसाब में होंशियार जास्ती होते हैं, वो जिस वैपार में ज्यादा लाभ देखते हैं, वो करने उत्सुक होते हैं, और यथा शक्ति करते भी हैं, इस लिये उनको अधिकाधिक लाभ का वैपार बताना, वो बात उनके हृदय में ठसाना, और सुखी बनाना, यह मेरा कर्तव्य है, क्योंकि वो मेरे धर्म बन्धु हैं. अब लाभ उपार्जन करने के लिये अपन अव्वल तो व्यवहारिक (हर हमेश संसार में प्रवृतती हुइ) रीति की तरफ द्रीष्टी दे कर विचार ते हैं. उपरोक्त श्लोक में कहे अनुसार, व्याज में दो गुणा, वैपार में चौगुणा, और खेत में सो गुणा, लगाया हुवा द्रव्य धन

होता है, ऐसा एक श्लोक कर्ता ने अनुमान किया है, परन्तु यह निश्चय नहीं, क्योंकि - जो नियम सिर ऐसाही होता हो तो, यह तीनही कार्य करने वाले कभी निराश न हुवे चाहिये ऐसा तो द्रीष्टी नहीं आता है, उलटे बहुदा उपरोक्त तीनोंही कार्य करने वालों को झुरते - पश्चाताप करते ही देखने मे आते है, कि - हाय! वस्तु या व्याज डूब गया! दिवाला निकला गया! निपजत ही नहीं हुइ! वगेरा इस से जाना जाता है कि - उपर कहे तीनों ही कर्तव्यों में लाभा-लाभ का होना देवाधीन - कर्माधीन है वो कर्म दो तरह हैं - १ अलाभ - दुःख जिस से होता है उन्हे पाप कर्म कहते है और लाभ - सुख जिस से होता है उन्हे पुण्य कर्म कहते है. इसलिये डाली पत्ते को छोड कर, मूल कर्तव्य जो लाभा लाभ के कर्ता पुण्य पाप है, उन्ही के तरफ लक्ष देने की बहुत जरूर है, और अलाभ का करता जो पाप कर्तव्य उसे त्याग - छोड कर, लाभ का करता पुण्य कर्तव्य है, उसका स्वीकार करने के वास्ते ही उपरोक्त श्लोक कर्ता ने जाने वैपारी वर्ग को सुचित - सावधान करके - सच्चा लाभ उपार्जन करने को ही बोध करते है कि - "दाने च अनन्त गुण" अहो लाभार्थी वैपारीयो! सब वैपारों से जो 'दान' नाम का वैपार है वो सच्चा ही वैपार है अर्थात् पार विगर का अपार लाभ - अनन्त गुण लाभ का दाता है, इसलिये लाभार्थीयों को अन्य वैपार से इस 'दान' नामक वैपार करने की बहुत ही आवश्यकता - जरूर है परन्तु यों कहने सेही इस जमाने के लोक इस बात को सर्व मान्य बनादे, ऐसा भोला जमाना अब न रहा! अब तो उपदेश प्रत्याक्षादि प्रमाण से सिद्ध किया जाय उसे ही कबूल करते है, और उनको कबूल कराने के लिये, इस विश्वालय में प्रत्यक्ष प्रमाण अनेक मोजूद है, सो देखिये - एक जन्म से दरिद्र और एक जन्म से ही श्रीमंत - तालिवर होता है, इसका क्या सबब? एक सल्प प्रयास से विशेष लाभ

उपार्जन कर लेता है, और एक मता मुशीबत मद्दन करभी अपनाही पेट नहीं भर शक्ता है, इसका क्या कारण? इत्या-दि ऽ नेक दृष्टांतो से. जग शूंघे शोधी से विचार करेंगे तो, सहज ही द्रोष्टे आजायगा कि - पुर्वो पार जित पाप पुण्य का ही लगव है!! वहा इसी वोध को वैपारी भव्यों के हृदय मे विशेष ठसाने- वेपारीया केही जाति भाइ " मदन श्रेष्ट " कि जिनोने दान रूप वेपार किया था, जिससे क्या क्या - लाभ - सुख - संपतो - सततो - यशः आदि की प्राप्ती हुइ. जिसका इस चरीत्र मे विस्तार युक्त वरनन किया गया है.

और इस चारित्र को सगित रूप रचिता भी ससार पक्ष मे भोपाल शेहर (मालवा) के निवासी वैश्य वशी - ओस वाल शाती के केवल चन्द जी के सुपुत्र अमोलख चन्द्र जी कि जिनोने विक्रम सवत् १९४४ के फलगुन वद्य द्वितीया का फक्त ११ वर्ष की उम्मर मे ससार पक्ष के पिताके पास दिक्षा धारन कर पुज्य श्री कहान जी ऋषि जी महराज के सम्प्रदाय के क्रिया पात्र श्री खूबा ऋषि जी महाराज के शिष्य आर्य मुनि श्री चेना ऋषि जी के शिष्य बनाय थे, और पण्डित वर्य श्री रत्न ऋषि जी महाराज के पास ज्ञानाभ्यास कर गद्य पद्य मय अनेक ग्रन्थ रचे और रच रहे है, सो हमारे सुभाग्यो दय से पांच वर्ष से यहाँ (दक्षिण - हेद्राबाद मे) अपने वृद्ध पिता श्री की सेवा मे विराजमान है. महाराज श्री के सद्बोध से यह जैन मार्ग मे एक नवा क्षेत्र प्रगट हो कर आजतक लौकीक लोकोतर सम्बन्धी अनेक सुधार हुवे है, और अग्र वाल वश शिरोमणी श्रीमंत सेठ लाला जी नेतराम जी रामनारायण जी

प्रमुख बहुत श्रावकों ने तन मन और धन से जो धर्म सेवा बजाइ है. व आजतक वडी छोटी १८००० पुस्तकों छपवाकर अमुल्य प्रसार किया वगैरा माशूर है.

महाराज श्री यहां पधारे उसी साल चतुर्मास में रात्री को हमेशा जोड कर मुखारविंदसे यह मदन चरित्र फरमाते थे, पांच महीने यह चला था इस के श्रवण से श्रोता गण को बडाही अद्भूत रस उत्पन्न हुवा, और ऐसा रसीला चरित्र प्रगट होने से बहुत उपकार का कारण जान. सिकंद्रावाद (हैद्रावाद) निवासी वैपारी वर्ग में श्रेष्ट श्रीमत भाइ जी शिवराज जी सुराणा (जन्म सं १९११) लांवा (मारवाड - मेडता) वाले और इन के ही वैपार में सरिकती श्रीमत भाइ रुगनाथमल जी भंडारी (जन्मस १९२) आसोप (मारवाड) वाले ने अपने प्राप्त द्रव्य का अनेक धर्म कार्य व जीव दया के कार्य मे व्यय किया व कर रहे हैं. और महाराज श्री हैद्रावाद पावन कराने में अवल सहायक भी येही हैं. क्योंकि जब महाराज श्री अवरंगावाद पधारे और हैद्रावाद स्फर्सने का विचार दरशाया तब प्रायः वहां के सब श्रावको ने मना किया, कि आगे कोइ भी साधु जी हेदरावाद पाधारे नही हैं, तथा रस्ता महा विकट है फक्त तैलिंगो की ही वस्ती है, और शेहर में भी साधूओंका निर्वाह होना व अहार पाणी का लाना बहुत मुशकिल है, वगैरा अनेक धोके दिये - उन सब धोके को निवारन करने यहां के श्रावकों के सुभाग्यो दये से भाइ जी शिवराज जी सुराना यहां हाजर थे, यह महाराज श्री का हैद्रावाद पावन करने का विचार सुन बडे

खुशी हुवे और अग्रह पुर्वक विनंती करी कि आंप किसीभी प्रकार का धोका न रखिये, सुखे २ पधारिये, रस्ते के ग्रामों मे मेराभी लेन देन है सो मैंभी दर्शन करने भाग्य शाली वनूगा, वगैरा अर्ज सुन महाराज निश्चिन्त हो. हैद्राबाद प वन किया. आज वोही सद्गृहस्थ महाराज श्री के सद्बोधसे ज्ञान प्रसार के शोकीन वन इस "मदन श्रेष्ट चरित्र" की १००० प्रत छपवाकर अपने भ्रातृगणों को अमुल्य समरपण कर कर कृतार्थत्ता समजते है.

प्रस्तावना का सारांस यह है कि - यह चारित्रभी वैश्य जाति में उत्पन्न हुवे मदन श्रेष्ट का है, और रचिता तथा प्रसिद्ध कर्ताभी वैश्य जाति में उत्पन्न हुवे है और उपदेशभी विशेपत्व वैश्य जाति को मुख्य अनंत लाभ का कर्ता दान नाम क वैपार वताने का है, ऐसा इस ग्रन्थ का सम्वन्ध मिलनेसे यह ग्रन्थ हमारे वन्धू गणों वैश्य भाइयों को विशेपही गृहण करने लायक होगा, ओर इसे श्रवण पठन मनन कर सच्चे दान के वैपारी होकर इस ग्रन्थ कर्ताका प्रसिद्ध कर्ताका, वक्ता का व पठन करने का श्रम - मेहनत सफल करेंगे इस उम्मेद से इस प्रस्तावना की समाप्ती कर आगे इस ग्रन्थ को यत्ना युक्त पढने सुणने की और गुणही गुण ग्रहण करने की अर्ज गुजारता हूं इत्यलं सुज्ञेषु किंमधिकं.

हैद्राबाद चारकमान,
वीर सं २४३७ विक्रमार्क, १९६८
वैशाख सुदी पूर्णीमा.

आपला लाभ इच्छक,
रामलाल पन्नालाल कीमती,
रामपुरा वाला.
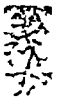
शुद्धपत्र.
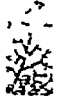
सुचना—पाठक गणो ! अव्वल निम्न लिखित अशुद्धियोंको शुद्ध कर फिर यत्नासे पढियेजी.

पान	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२	२	नत	नन
४	१	४	कारण	कारण
४	२	१	नोनो	धीनी
४	२	६	कराव	फरावे
५	२	२	निरधार	निराधार
८	२	७	जायो	जाग्यो
८	२	१२	कशवाय	कषाय
९	१	६	कशरे	कारे
११	२	४	कार	कर
११	२	१	नितक्षिण	ततक्षिण
१२	१	८	को	का
१२	१	११	सुनार	सुनार
१३	१	१	कुंनारा	कुंवार
१४	१	११	गराय	गाय
१४	२	८	प रात ॥	प ॥ रात
१५	१	३	प तिहां	तिहां
१५	२	१०	भल्लभ	वल्लभ
१६	२	१४	रक	कर
१७	२	५	अपारे	अपार
१७	२	७	मिल ॥	मिली ॥ श्रो॥
१८	१	११	भाय ॥	धाय
१९	१	नाट	खर्जे	कर्जे
२०	१	३	तक्षिण	ततक्षिण
२०	१	७	थराड	थरांड
२०	१	८	कंन्या	राज कन्या
२०	२	२	केस	कम
२१	१	७	पाप	पाय
२१	२	८	दीतोडी	दीटोडी

२२	१	६	गर्गी	भरा
२२	२	८	नें	ने
२३	१	७	आया	भाय
२३	१	१५	ठाम	ठाय
२४	२	१२	पडे	पाडे
२४	२	११	नम	नाम
२५	१	१४	भालो	मोलो
२६	२	४	आथाग्र।	आग्या
२७	१	३	गडर्का	गंडर्गा
२७	१	४	सुदर्गी	सुन्दर्गी
२७	२	४	शद्व	शब्द
२७	२	१०	चीने	चहाने
२८	१	१	मुत्ति	युक्ति
२८	१	१०	अव	आव
२८	२	१४	अष्टम	अष्टम नष्टम
२९	२	२	वृद्धि	बुद्धि
२९	२	९	फांइ	कांय
३१	१	७	मूल्यो	मूल्यों
३१	१	१०	ज़िहां	जिहां
३१	२	३	जोगा	जागा
३१	२	११	वेटक	वेठक
३३	१	६	इज्छा	इच्छा
३७	१	१५	वृथ	वध

३३	२	१	मे त्रन	भेद न
३३	२	१	॥ श्री ॥	॥ श्री ॥ १८ ॥
३३	२	४	जुडी	जुडि
३३	२	७	फरमातो	फरामानती
३३	२	१४	साजते	साजन
३४	२	१०	बांग्रा	वांग्रा
३५	१	१	त्राय	वय
३५	१	११	प्राती	भिती
३५	१	१२	गकीते	घकानो
३६	१	५	गरम यां	फरमांया
३६	२	११	तृतीर	तेही २
३७	१	८	प्रभन	प्रधान
३७	१	३	मककत्	मककेत्
४०	२	४	प्रकागी	पाकमी
४१	३	१०	फछ	फळ
४४	१	७	आवी	आपो
४५	२	१०	थाय	थायरे
४६	४	१०	शद्व	शब्द
४७	१	१४	विडर्डी	विगडी
४७	२	३	हुरसी	हारसी
५१	१	५	आवसे	भावसे
५०	१	१४	थरे २	थरथरे
५४	१	६	हाइ	ठाइ

५६	१	३	आणद्	आणंद
५७	१	४	शद्व	शब्द
५८	१	१४	व्य	ष्य
५८	२	६	घृष्टी	द्रष्टी
५८	२	७	शद्व	शब्द
६०	१	१४	चटी	चैटी
६०	२	३	सगाया	छगाया
६०	२	५	निश्च	निश्चय
६१	२	७	हिव	हिवे
६२	१	७	उमग	उमंग
६२	२	१४	अकुल्याय	अकुलाय
६३	१	३	प्यारे	थां
६३	१	३	मम्बन्ध	सम्बन्ध
६४	१	१	चिंता	चिंती
६४	१	११	पुण्य	पुण्य
६४	१	१२	शद्व	शब्द
६७	२	नोट	निथा	निद्रा
६७	२	६	शद्व	शब्द
६९	१	२	च	चे
६९	१	४	लवां	लेवां
६९	२	१२	चौउ	चौ
७१	२	४	निप्य	निष्परी

७३—७४ पृष्ठांक व नाम उलट पलट हैं.

७७	१	१०	जयारे	त्यारे
७८	१	१३	ूरो	पूरो
७८	२	४	सणीये	सुणीये
७८	२	४	पूचरे	पूछचो
७८	२	६	म	मे
७८	२	१०	वस्या	वैश्या
७९	१	४	भोप्या	भाप्य
८०	१	९	देर	टेर
८१	१	नोट	क्लेक्ष	क्लेस
८१	२	५	उभारी	ऊभरी
८२	१	३	दीया	दरीया
८२	१	१२	हेसी	होसी
८४	१	४	दोढी	दोडी
८४	१	१३	अङ्यासे	अभ्यासे
८४	२	३	रुड्चो	रुठचो
८४	२	१३	डावव	दानव
८६	२	६	सुज	मुज
८७	१	१०	प्रम	प्रेम
८८	१	१०	सत्प	सत्य
९०	१	१०	शिघ	शिघ्र
९०	२	१३	मारो	मारी

९	५	१२	दवू	उ
९३	२	७	विग्रोय	विगोय
९३	२	१०	विम्रा	विस्ता
१००	२	१	गयो सो	गयोसोय
१०१	२	१४	भोगी	जोगी
१०२	२	१	घठो	बेठो
१०३	१	३	नप	नृप
१०३	१	३	म	में
१०४	२	३	फट्ट	फट्टा
१०४	२	६	हर्प	हर्ष
१०५	२	१२	वसद	स्वाद
१०६	१	१४	नप	नृप
१०६	२	१३	तुमसा ॥	॥ तुमसा
१०७	२	१३	।जम	जिम
१०७	१	१४	दोसो	दोसी
१०७	२	४	फरू	फरू
१०७	२	१	फन	फने
१०९	१	४	मदनजी	मदनजीमदन
१०९	२	१३	सूता	सुता
१११	२	११	जाम्वा	वारम्वार
११२	१	३	।वजी	चढायेजी
११३	१	२	श्रभ	शुभ
११३	२	१४	दरिद्र	दारिद्री

११६	१	१	उपायजीपद्मकहे अवी॥हिवे॥१६॥	उपायनी॥हिवे॥ १६॥पद्मकहेअवी
११७	१	८	क।	कन्या
११८	१	१	मह	महा
१२०	२	३	अपर	अपार
१२१	१	१०	श्वर	श्वरू
१२१	२	१०	कह	कहे
१२२	१	६	च	।
१२२	२	१	थलगी	अलगीरही
१२३	१	८	सागन	सोगन
१२३	१	१४	पृरी सह	पुरिस हु
१२५	१	८	आपीयो	आपीये
१२५	२	१	भूपतोरे	भूप थीरे
१२७	२	१	जोगी	जोडी
१२९	१	८	। न	मन
१२९	१	१२	ज	जे
१३१	१	१	थोग	योग्य
१३१	१	१	लोभरे	लोभायारे
१३१	१	६	स्थिर	स्थिर
१३५	२	६	चरणवार	चरणवा
१३८	१	२	यणे	यरो ।
१३२	१	१०	आ ।	आया
१३५	२	१	निश्चय	निश्चय

१३६	२	५	निहली	निहाली
१३८	५	५६	भींगो	भागी
१४२	५	–	भकरी	डोकरी
१४३	२	९	चाल ।	चाल्या
१४४	१	६	घटहो	घटवो
१४९	२	९	सु०म	सु०
१४९	२	१०	सु०म	सु०
१४५	५	३	घर	भर
१४८	५	१४	वधेन	वदन
१४९	२	नोट	क्षाम	क्षान
१५०	२	६	घटावती	घटावता
१५१	२	५४	मस्तु	वस्तु
१५२	५	१०	कुंय.र	कुंवार
१५३	५	१३	मुत्री	मुनी
१५४	२	५	मुक्ता	भुक्ता
१५४	२	१३	आत ।	आतम
१५५	५	११	संमय	सयम
१५७	१	१४	कारा	कार
१५७	१	१४	श्रोकार	श्रेयकार
१५७	२	१४	ह्रों	ह्रीं
१५८	१	६	म्रं	मं
१५८	१	७	ह्रीं	क्ष्रीं

पृष्ठ ५७ की १२ मी ओलीमें १ गाथा कम है सो
नार हों ॥ म ॥ इसके आगे-
गिणतां दिन प आवीयो । फरी पिताजी विचार हो ॥ म ॥
॥ भ ॥ २२ ॥ इम दोनों भाइ बहनने । दियो हुकम नरेश हो
॥ म ॥ जावो-
पृष्ठ ६३, ओली ३ सा ॥ आगे-
चुप चाप ते प्रेमला कांइ । करती पश्चाताप ॥ उतरी-

सुचना—इस शुद्धी पत्र के मुजब सब प्रत में सुधारा कर फिर यत्ना पुर्वक पढियेजी.

खुशखबर.

सिंहल कुँवर चरित्र और भुवन सुन्दरी चरित्र ज्ञान खातेकी तरफसे छपकर थोडेही रोजमें अमुल्य भेटदि जायेंगीजी

पुस्तकों मंगाने वालेको टपाल खरच भेजने का जरूर ही ध्यानमे लेना चाहीयेजी,

॥ ॐ ॥

॥ परमात्मायनमः ॥

॥ श्री मदन श्रेष्ठी चरित्र प्रारंभ ॥

॥ दुहा ॥ परम ज्योती प्रमात्मा । अगम अगोचर शांत ॥ चिदानन्द नन्देशिव । करण सरण उपशांत ॥ १ ॥ अरिगंजण अरिहंतजी । सिद्धकिया सिद्धकाम ॥ आचार्य उपाध्याय संत । कोटी करुं प्रणाम ॥ २ ॥ श्री गुरु गुणोघ सिन्धूसम । विद्या चारित्र दातार ॥ सद्वाद समजाइयो ॥ तास करी नमस्कार ॥ ३ ॥ तीर्थेश वाणी शारदा । विमलत्ता वाहन हंस ॥ वुद्ध दाता कवी मातजी । प्रणमु भाव अवतंस ॥ ४ ॥ चरणांबुज गुण जेष्टका । प्रास्यू धारीखंत ॥ पुण्य रास प्रकाशवा । कीजो मुज बुद्धवंत ॥ ५ ॥ विश्वालयके जंतू को । सुख दाता एक पुण्य ॥ जेसंचीने लावीया । तास नहीं कुछ नुन्य

॥ ६ ॥ मानव भव जिन पद धर्म । पावे पुण्य पशाय ॥ ते कारण जिनेशजी । पुण्य भणी सरसाय ॥ ७ ॥ पुण्य करोरे प्राणीयां । चिंतित पामो सुख ॥ मदन कुँवर तणी परे । गमावेगा सब दुःख ॥ ८ ॥ नव रस कस पूर्ण भर्या । सप्त खन्डी एचरित्र ॥ सुणो प्रमाद सहू परहरी । होवे आत्म पवित्र ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ढाल १ ॥ समकित रत्न चिंता-मणी ॥ येदेशी ॥ पुण्य प्रकाश रास सांभलो । प्रकाश पुण्य करनारो हो ॥ सुख दाता वक्ता श्रोताने । दुःख दोहग हरनारो हो ॥ पुण्य ॥ १ ॥ सर्व द्विप मध्ये दीपतो । लघू जम्बूद्विप जाणो हो ॥ भरत क्षेत्र सहू गुण भर्यो । ताण्या धनुष्य संठाणो हो ॥ पुण्य ॥ २ ॥ देश बत्तीस हजारमें । पूर्व आधिक सोभावे हो ॥ अनेक ग्रामादि करी । मही मंडण मंडावे हो ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ अजुध्या नगरी भली । ऋद्धि सिद्धिये भरपूरो हो ॥ वण बेठी देश नायका । सर्व विघन से दूरोहो ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ लांबी जोयण बारेमा । नवं जोजन चोडाइहो ॥ अनेक पुरा थी परवरी । अलंकासी देखाइ हो ॥पुण्य॥५॥ गड उतंग नवरंगीयो । गगन लगेछे द्वारो हो ॥ उंच्च बुर्ज खाइ खोलेछे । फिरणी शोहे प्रकारों हो ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ उंच्च मेहल बहू रंगना । हवेलीयांने हाटो हो ॥ त्रीवट चौवट चौक शेरीयां । सोभे शेहर अजब थाटो हो ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ श्री वननामादिकरी ।

मनोरम्य वहू उध्यानोहो ॥ वृक्षलता गुच्छ मंडपे । सोभे नंदन वन मानोहो ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ रिपु मर्दन राजा तिहां ॥ शूर वीर शिरदारो हो ॥ तेज रुप वल वुद्व शिरे । न्याय नीतां गुण धारोहो ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ सज्जन परजन मन रंजणो । प्रजा पुत्र परे पालेहो ॥ शत्रू अन्याइने गंजणो । उदार प्रणामी सू चाले हो ॥ पुण्य ॥ १० ॥ श्री धरा आदी करी । नारी छेसँतं पांचोहो ॥ रुपे रंभा अचंभसी । सीयल लज्जा गुण सांचोहो ॥ पुण्य ॥ ११ ॥ सचीव सुबुद्धी कला निलो । राज धुरंधर शूरोहो ॥ राजा प्रजा मन रंजणो । न्याय निपुण गुण पूरोहो ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ तिण नगरी मांही वसे । सव थी शिरे वेपारी हो ॥ 'वसुदत्त' नामें दीपतो । ऋद्धि घरमे अपारीहो ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ दाता भुक्ता द्रव्य को । गुण माहीने उदारो हो ॥ दया धर्मी जंत पालणा । करता दुःखी की सारोहो ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ सेठाणी प्रियेवती । सील रुप गुण खाणीहो ॥ पतिव्रता नम्र जिमलता । विचूक्षण घणी शाणी हो ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ पुल चार तस दीपता । अनुक्रमें कहूं नामो हो । श्री धेर मेतारज भलो । अँगज मँदन अभीरामोहो ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ रुप कला गुण आगलो । विद्या वलथी पूराहो ॥ धर्म कर्म जाणे सहू । सुखद विनीत सनूराहो ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ योग्य स्थान देखी करी । कन्या वय सम रुपेहो ॥ लज्जा विनयादी गुण भरी । परिक्ष

गुण वर चूंपेहो ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ अति आडंबर करी तदा। चारुं भणी परणाइहो ॥ रुपश्री ने धन्नेसिरी । प्रियकंरी रतवंती बाइहो ॥ पुण्य ॥ १९ ॥ आणंद माहें रहे सहू। धन नत को ले लावोहो ॥ धर्म कर्म जीव निर्गमे । नित्य वृते ओछावो हो ॥ पुण्य ॥ २० ॥ पुण्य प्रकाशक रास को । मंडण पहली ढालो हो ॥ अमोल ऋषि कहे आगले । हैअधीकार र-सालो हो ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ अन्यदा वसुधर सेठ जी । उष्ण ऋतुने माथ ॥ सूता भवन नी छत्तपर । अर्धनिशा जब आय ॥ १ ॥ झूण झूणाट गगजे भयो । भूषण तणो ते धार ॥ शाहा अचंभी जागीया । जोवे-द्रष्ट पसार ॥ २ ॥ दशो दिशा प्रकासीयो । देखी देवी कोय ॥ वरवस्त्र भूषण सजी । रुप अनोपम सोय ॥ ३ ॥ विद्युत क्रांती सारखी । आइ उभी पास ॥ श्रे-ष्टी मधुर वयणे करी । इम करे प्रकाश ॥ ४ ॥ कुण तुम किहांथी आवीया । किण काज इण ठाम । जैसी इच्छाते कहो ॥ देवी बोली ताम ॥ ५ ॥ ढाल २ ॥ आउखो टूटा ने सांधोको नहींरे ॥ यहदेशी ॥ तिदशी कहे सेठ सांभलो हो । हूं कुलदेवी तुम सुख चावूं हो ॥ आइ छू थांरा हितभणी हो ॥ ज्ञाने जाण्यो ते जणावूंहो ॥ १ ॥ होणहार भव्य सांभलोहो । होणहार तेहीं थाय हो ॥ टाली टले नहीं कोइसेहो । इण तरे सुरी फरमाय

हो ॥ होण ॥ २ ॥ कुलस्वा तस जाधने हो । आसण छोड्यो तत्कालहो ॥ अजाण अपराध जे कियोहो ॥ तस क्षमा वक्षो माय हो ॥ होण ॥ ३ ॥ किण कारण पधारीया हो ॥ किस्यो दीठो ज्ञान माय हो ॥ कृपा करी फरमावीये हो । जिम मुजने सुखथाय हो ॥ होण ॥ ४ ॥ देवी कहे वच्छ कर्मथी हो । जबर न कोइ जग मांय हो ॥ हरीहर इन्द्र चन्द्र किन्नरु हो । कोइ न छूटा विने भुक्तथाय हो ॥ होण ॥ ५ ॥ अनादी कालथी जीवके हो । लार लाग्या हे यह हो ॥ शुभा शुभ काम करायने हो । पुनरपि दुःख ते देय ॥ होण ॥ ६ ॥ जड पण वलीया जीवथी हो । जेसे नशानो स्वभाव हो ॥ हर्षीने संचे प्राणीयां हो । भोगवे विन उत्साव हो ॥ होण ॥ ७ ॥ जिहां लग निज गुण भणी हो । चैतन्य चित न धरंत हो ॥ सन्मुख होवे नहीं कर्मके हो । तिहां लग दुःख न टलंत हो ॥ होण ॥ ८ ॥ श्रेष्ठ एता दिन तुम भणी हो । होतो सुकर्मको जोग हो ॥ तेहथी अहो निश नित्य नवा हो । मिल्यो सु भोग संयोग हो ॥ होण ॥ ९ ॥ सुख भोगवीया सहू परेहो। पण हिवे तजवा एह हो ॥ जिण पीवी मीठी भांगने हो । तेहीज लेहरां लेह हो ॥ होण ॥ १० ॥ इण कारण आइ इहां हो । तुमनें चेतावण काज हो ॥ पहलां जे चेते गुणी हो । तेहनी रहे जग लाज हो ॥ होण ॥ ११ ॥ आजथी दिन तीन अंतरे हो । तुमने

उदय होसी पाप हो ॥ धन सज्जन सब छूटसी हो । तिणथी चेतावुं साप हो ॥ होणा ॥ १२ ॥ पहला ही हूशार होयाने हो । बंदोबस्त करी घरमांयहो ॥ वस्त्र भुषण जापत करीहो । जिम रहेते एक ठाय हो ॥ होण ॥ १३ ॥ पुत्र वधूने पीयरे हो ॥ पहराइ भूषण पहोंचाय हो ॥ पछि विश्वासुनर भणी हो । घर माल संभलाय हो ॥ होण ॥ १४ नारी पुत्र साथे लही हो । रहो परदेशे जाय हो ॥ साहस राखजो मन विषे हो ॥ दुःख संकट जब आय हो ॥ होण ॥ १५ ॥ नेडा कठे रहजो मती हो । जिम न औलखे कोइ जात हो ॥ वेश बदल रहजो वेगला हो । जिम नहीं होवो विख्यात हो ॥ होण ॥ १६ ॥ एक युगने मायने हो ॥ मिलसी ऋद्धि सिद्धी जोग हो ॥ सुख संपत पासो घणी हो ॥ मिलसे सहू इच्छित भोग हो ॥ होण ॥ १७ ॥ इम उपाय किया थकां हो ॥ लाज रहसी जग मांय हो ॥ देश चोरी थी भीख परदेशकी हो । रुडी जगतमें कहवाय हो ॥ होण ॥ १८ ॥ इगहे कारण चेतावीया हो । हितकारक वाणी थाय हो ॥ मान सो तो सुख पावसो हो । आगे तुमारी इच्छाय हो ॥ होण ॥ १९ ॥ वयण प्रमाण कर्यो सेठजी हो । मान्यो घणो उपकार हो ॥ सुरी अदर्श हुइ तदा हो ॥ सेठ करे नमस्कर हो ॥ होण ॥ २० ॥ ढाल दूजी देवी सीखकी हो । सेठने हुवो विचार हो ॥ अमोलख ऋषी कहे

सांभलो हो ॥ आगल रसिक अधीकार हो ॥ होण ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ चिंतातुर हु-
या सेठजी । उंडो करे विचार ॥ अण चिंती या आपदा । किम आइ किरतार ॥ १ ॥ सुरी
वचन त्रिकाल में ॥ अन्यथा तो नहींथाय ॥ मुज कुल लज्जा रक्षवा । पहलां गइ चेताय
॥ २ ॥ तिण कारण दिन तीनमें । करी वंदो वस्त सव ॥ निज कुटम्ब साथे लही ।
जाउ विदेशे अव ॥ ३ ॥ इम अपसोस विचार थीं । निद्रा गइ रिसाय । सूता छे सुख
सेजमे । पण ते तो नहीं आय ॥ ४ ॥ जेजे युक्ती योजवी । निश्चय कीनो शाह ॥ ते
हीज कार्य साधवा । उग्या दिन का नाह ॥ ५ ॥ ढाल ३ ॥ थारो गयोरे जोवन पाछो
नहीं आवे ॥ यह० ॥ प्रात घरका सज्जन सहू । भोजनादि कर हुवा लहू । निश्चि-
न्त देख्या सेठ भावे ॥ पूर्व संचित जैसा फल पावे ॥ सेठजी सारा कुटंब
तांइ । वोलाया एकांत मांइ । सत्कारी नें वेठावे ॥ पूर्व ॥ २ ॥ कहे सुणजो सहू चित लाइ
। राते कुल देवी आइ । आपणा हितको चेतावे ॥ पूर्व ॥ ३ ॥ इत्ता दिन था सुख लीं-
ना । जैसा पूर्वे पुण्य कीना । हिवे पाप दिशा आवे ॥ पूर्व ॥ ४ ॥ चेतो तीन दिवस मां-
ही ॥ वहुवां पीयर दो पहोंचाइ ॥ घर भन अन्य ने भोलावे ॥ पूर्व ॥ ५ और कुटम्ब
साथे लेइ । दूर देशे जास्यां रेइ । तो लज्जा अपणी रहावे ॥ पूर्व ॥ ६ ॥ में तो मानी दे

वेनि अरजी । अब कहो थांरी मरजी । नारी पुत्र तब फरमावे ॥ पूर्व ॥ ७ ॥ कीजे आप की जे इच्छा । हम तिणने नहीं करां मिच्छा । करो जिम सहू सुख पावे ॥ पूर्व ॥ ८ ॥ इम सुंणी सेठजी हरख्या । सज्जन गुण वक्ते परख्या । देवी कह्यो जिम करावे ॥ पूर्व ॥ ९ ॥ घणा गैणा दे बहुवा तांइ । पीयरी ये दी पहोंचाइ । फिर मुनीम नै बोलावे ॥ पूर्व ॥ १० ॥ हम सहू देशाटन जावां । पर देशे फिरी पाछा आवां । घणा दिन वीतसी दावे ॥ पूर्व ॥ ११ ॥ थांरो पूरो विश्वास आणी । घरकी मालकी करां थाणी । इम कही सहू भोलावे ॥ पूर्व ॥ १२ ॥ पाछली राते निकलवा तणो । संकेत कीयो सहू सज्जनो । एकही ठिकाणे पोडावे ॥ पूर्व ॥ १३ ॥ गर्गो मह्रूर्त जव आयो । धन्न घणो लेइ साथ मांयो । पंच पर्मेष्ठी समरावे ॥ पूर्व ॥ १४ ॥ चाल्या मन मानी दिशा मांइ । छेइ जीव तिण वेलाइ । घर धन सज्जन छिटकावे ॥ पूर्व ॥ १५ ॥ गामांतरे जाइ रहीया । भोजन कर सुखे सोइया । राते चोर धन लेजावे ॥ पूर्व ॥ १६ ॥ जागी देख्यो धन नहीं पायो । मनमें पस्तावो घणो आयो । सुरी बयणथी धीरप लावे ॥ पूर्व ॥ १७ ॥ जो घरके मांही रहता । तो सर्व गमाइ दुःख सहता । इणी परे मन समजावो ॥ पूर्व ॥ १८ ॥ इत्तामें तडको थइया । संतोष कर इम रहीया । आगे गमन सहू करावे ॥ पूर्व ॥ १९ ॥

वाट पडा मार्गे मिलीया। धन वस्त्र सहू लूंट लिया। निराधार हुइ घवरावे ॥ पूर्व ॥ २० ॥ कर पस्तावो आगे चल्या। काँटा भाटा वहू दुःख फल्या। किहां ग्राम किहां वने रहावे ॥ पूर्व ॥ २१ ॥ चारी पुल ग्राम मे जाइ। मेहनत कर धन उपजाइ। खान पान वस्तु लावे ॥ पूर्व ॥ २२ ॥ मांजी देवे निपाइ। छेइ जीमी लस थाइ। मन चायो तो क्यांथी लावे ॥ पूर्व ॥ २३ ॥ इम करतां नित्य गुजारो। दुःख तणा दिन परहारो। कृत कर्म इम क्षपावे ॥ पूर्व ॥ २४ ॥ ढाल तीसरी अमोल भणी। जोवो करणी कर्म तणी। डरके रेवे ते सुखी थावे ॥ पूर्व ॥ २५ ॥ ० ॥ दुहा ॥ इम फिरतां भूमंडले। काल केताइ मांय ॥ वटपुर ग्रामज देखीयो। शेहर वडो सुखदाय ॥ १ ॥ सेठजी कहे कुटुम्बने। आया आपण दूर ॥ अव फिरवा शक्ती नहीं। इहां करां उद्र पूर ॥ २ ॥ काम कोइ लगसी इहां। ओलख से नहीं कोय ॥ दिन खुटावा पाप का। सहू मानी खुसी होय ॥ ३ ॥ शक्ती न भाडो देणकी। झोंपडी कर ग्रामवार ॥ मृतिका वरतन संग्रहीं। रहे सहू परिवार ॥ ४ ॥ चारूं भाइ वेपारने। फिरता ग्राम मझार ॥ अंतराय टूटे नहीं। सोचज व्याप्यो अपार ॥ ५ ॥ ढाल ४ ॥ गौतम रासा की देशी ॥ छेउं मिली आपससें। तव करे इसो विचार ॥ देखो कर्म गती आपणी। कैसी उदय

हुइ इण वारजी ॥ करता मोटा २ वेपारजी । उपराजता द्रव्य अपारजी । फिरता वस्त्र गेणे भार जी । हिवे थइ रह्या निरधार जी ॥ भवी भव्य तव्य ता सांभलो ॥ आं ॥ १ ॥ पूरो पेट भरे जितो भाइ । कमा सका नहीं अन्न ॥ अन्न वस्त्र रा सांसा पड्या । तेहथी दुःखी हुयोछे तन्नजी ॥ रहवा ने पूरा न जतन्नजी । किम कर समजावा मन्नजी । किण रीते पालां इत्ता जन्नजी । इम किण पर खूटसी दिन्न जी ॥ भवी ॥ २ ॥ कोइ तुच्छ वेपार थी जी । पालां अपणो परिवार ॥ द्रव्य लागे नहीं तेहमां । ऐसो करिये विणज इणवार जी ॥ नहीं चहीये बीजारो आधार जी । नरेवां कधी लाचार जी । नहीं कष्टसे जावां हार जी । ऐसो कोइ एक करो निराधार जी ॥ भवी ॥३॥ सेठ कहे भाइ एहवो तो । छे कठीयारा नो काम ॥ नित्य काष्ट लावो वन थकी । तिणरा नहीं लागे दाम जी ॥ कोइ खुशामदी नो नहीं काम जी । आपणी पण पूगसी हाम जी । पण कष्ट पडे घणो चाम जी ॥ चारूंबन्धू धरी ते हाम जी ॥ भवी ॥ ४ ॥ कोइक कष्ट करी तिहां जी । कमायो थोडो वित्त ॥ रस्सी कुदाली खरीद ने । काछडी वान्धी चारूं मित जी । जावे वन मांहे धर हित जी । दारुक भारी लावे नित्य जी । वेंची बजारमें लेवे वित जी । तेहथी माल लावे इच्छित जी ॥ भवी ॥ ५ ॥ नित्य

नवो नाणो गृही जी । नित्य नवो लावे धान ॥ नित्य पीसी निपजावइ । तेहनो सहू करे खान जी । इम दिन आवे मध्यान जी । क्षुधा व्यापे असमान जी । तृत होवे पी पान जी। इम चलावे गुजरान जी ॥ भवी ॥ ६ ॥ एक दिन गया चारि जणा जी । मोलो लेवा वन मांय ॥ सरीता उलंघी नीकल्या । गेहरी झाडीमें जाय जी ॥ कापी काष्ट ने भारी वंधाय जी । तव मेघ घटा उमंगी आय जी । वर्षण लागी मोटी धाराय जी । चारी भाईने चिंता भराय जी ॥ भवी ॥ ७ ॥ रखे पूर आवे नदीनो जी । रुकां आंपा इण जाग । मात तात दूरा रहे । उतरवानो जावे लाग जी । चाल्या चहू तिहां थी भाग जी । मोली सिरपर वोज अथाग जी । पण न गिणे चिंता नो छागजी । जोयो नदी में पांणी अमाग जी ॥ भवी ॥ ८ ॥ कांठे छक सरीता भरी जी । चउजणा जोइ नेण ॥ धस्को पड्यो छाती विषे । तव कहवा लाग्या वेण जी ॥ इणथी अलगा रहो सेण जी ॥ एलेटनी थइ वेरण जी ॥ क्षुधा भी लायी दुःख देण जी । किस्यो करणो कहो हेंगे जी ॥ भवी ॥ ९ ॥ समय २ वारी चडे जी । आयो चारांने पग ॥ पाछाते फिरवा लग्या । नहीं दीसे जावाको लग जी ॥ पाछा जावे किहां भग जी । जल उछाला खाय अथग जी । भय जागे सूनो लागे जग जी । तव जोवण लाग्या खगे जी ॥ भवी ॥ १० ॥

बट बृक्ष पासे आवीया । देखी चड्या उतंग ॥ मौली बान्धी एक डालपे । पडे नहीं ति-
म तंग जी ॥ ठन्डथी धूजे थर २ अंग जी । वेठा चारुंही धरत उमंग जी । ढाल चौथी
चडेत तरंग जी । कही अमोलख अभंग जी ॥ भवी ॥ ११ ॥ दुहा ॥ अब्बी पूर उतर
सी । जास्यां अपणें गेह ॥ तात मातने भेटस्या । इम चउ कल्पे तेह ॥ १ ॥ कृष्ण पक्ष
काली घटा । कृष्णंतम कृश चित ॥ नेणा निज करना लखे । विसर्या ते निज हित ॥ २
॥ अन्न नहीं उरने विषे । शीतल बाजे वाय ॥ सरण एक तरु डालनो । बीजलियां झबका
य ॥ ३ ॥ थाक तणा संजोग थी । सुस्ती व्यापी अंग ॥ आपसमें चारों वदे ॥ रहो हुंशारी
एढंग ॥ ४ ॥ प्राप्त कष्ट खुटाव वा । कोइक छेडो बात ॥ जिमए काल अ-
तिक्रमें । मिले तातने मात ॥ ५ ॥ ढाल ५ ॥ वण जारारे यह० ॥ सुणो भाईरे ॥ श्री
धर कहे एम । दुःख मां वात सी आवडे ॥ सुणो भाईरे ॥ सुणो भाईरे ॥ जीव चिंतामें
पूर ॥ अन्य कामे किम प्रवडे ॥ सुणो भाईरे ॥ १ ॥ सुणो भाईरे ॥ मेतारज कहे ताम
। चित माहे उपजे जेही ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ तेही कहो इणवार । जे जे मनमां आवही
॥ सुणो ॥ २॥ सुणो॥ अंगज कहे सल्लाठीक । किमही काल खुटाडवो ॥ सुणो ॥ सुणो ॥
जेजे मनमां चहाय ॥ तेते कही देखाडवो ॥ सुणो ॥३॥सुणो॥ मदन कहे हां गम्मत ।

इण सरखी दूजी नहीं ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ कहो पहली थे तीन ॥ पछे म्हारी कहस्यूं सही ॥ सुणो ॥ ४ ॥ सुणो ॥ श्री धर कहे भ्रात । शरम आवे कहतां मनरही ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ दुःख में ऐसी बात । न करवी पण कहूं सही ॥ सुणो ॥ ५ ॥ सुणो ॥ इण त्रिरीयांरे मांय । मेहल होवे सत खंडीयो ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ रोशनी सुख सेज । भोग जोग सहू मंडीयो ॥ सुणो ॥ ६ ॥ सुणो ॥ कुंवरी राजारी होय । रुपे रुडी संग करुं रली । सुणो ॥ सुणो ॥ यह मुज हिवडां विचार । प्रभू कृपा ए जासी फली ॥ सुणो ॥ ७ ॥ सुणो ॥ दूजो कहे ठीक बात । तुमने इण वेला आवइ ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ म्हारा मननी बात । तुमने देवुं दरशावइ ॥ सुणो ॥ ८ ॥ सुणो ॥ ऊनी चन्द्रावली होय । घृत पूरित दधीने संगे ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ मशालाए झगमग । गरमा गरम खावूं मनरंगे ॥ सुणो ॥ ९ ॥ सुणो स्त्रियादी परिवार । बेठूं गादी तकीया धरी ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ ओढू शाल दूशाल । यह होवे तो रान रली ॥ सुणो ॥ १० ॥ सुणो ॥ तीजो कहे अहो भ्रात । मुज मन यह नहीं चाहावइ ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ इच्छू माविलनी सेव । जो जोग वाइ मिलावइ ॥ सुणो ॥ ११ ॥ सुणो ॥ नित्य करूं माविल भक्ती । नर्म बीछोणा पाथरी ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ इच्छित भोजन वस्त्र । मांगे जोढेवुं अर्पण करी ॥ सुणो ॥

१२ ॥ सुणो ॥ सावित्र पावे सुख । तो फिर मुज दुःखको नहीं ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ कन
मिलसी ए जोग । जब मनसा स्थिर हो रही ॥ सुणो ॥ १३ ॥ सुणो ॥ मदन कहे
मुज विचार । मोटो छे सहू थी घणो ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ कह्यांस्यु हँस सो सर्व । मूर्ख
कही मुजने हणो ॥ सुणो ॥ १४ ॥ सुणो ॥ तेह थी किम कहवाय । सहू कहे तूं कपटी
घणो ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ सुणी हमारी वात । दाखे नहीं मन तुज तणो ॥ सुणो ॥ १५
॥ सुणो ॥ मदन कहे सुणो तब । मुज मनरी अश्चर्य चरी ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ जो कृपा
करे ईश ॥ तो मैं लेस्यूं इच्छित वरी ॥ सुणो ॥ १६ ॥ सुणो ॥ अधीपती होवूं मेय ।
मोटा २ चार राजनो ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ हय गय दल परिवार । ऊठे वरूदावली गाज
नो ॥ सुणो ॥ १७ ॥ सुणो ॥ वली राज पुत्री चार । परणु रूपे सुन्दरी ॥ सुणो ॥
सुणो ॥ मिले अक्षय मुज ऋद्धि । तो सब इच्छा लूं भरी ॥ सुणो ॥ १८ ॥ सुणो ॥
ऋद्धि सिद्धि नव निध । लेइ मिलू जो तात ने ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ तो देवुं सर्व सुख । शा-
वासी दीजो जातने ॥ सुणो ॥ १९ ॥सुणो॥ इम सुणी ॥ तीनों वात । हड २ कर हँसी
पडचा ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ वहावा मदन तुज मन । इम कहतां कर तस अडचा ॥
सुणो २० ॥ सुणो ॥ मदन वात धुंद माय ॥ असावध बेठा हूंतो ॥ सुणो ॥ सुणो ॥

धक्को लाग्यो तास। पडीयो पाणी मा खुतो॥ सुणो ॥ २१ ॥ सुणो ॥ उपकी ते तत्काल। वही चाल्यो मजधार ते ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ तीनों चमक्या ताम। करवा लग्या हा हा कार ते ॥ सुणो ॥ २२ सुणो ॥ हिवे जोवो वक्त की बात। कह्यां सहू सिद्ध थावइ ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ ढाल पंचमी सुविचार ॥ अमोलख ऋषि गावइ ॥ सुणो भाईरे ॥ २३ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ हाक सुणी भाइ तणी। वहता मदन कह एम ॥ कह्या कार्य सहू सिद्ध कर। फिर मिलस्यू भर क्षेम ॥ १ ॥ चल्या आगे मज्झ धारमें। चिंते जो आवे खाड ॥ कदाक तिण माहें पडूं। तो भांगे मुज हाड ॥ २ ॥ तब तिंहां दामनी तेजमें। काष्ट वहतो जोय ॥ साहस धर तेहने ग्रह्यो। आधार अधिको होय ॥ ३ ॥ चंड वेठ्यो तस ऊपरे। जिम घोडे असवार ॥ पाघडी बांधी काष्ट मुख। साही वाग तुखार ॥ ४ ॥ जल थल रचंना देखता ॥ गाता जावे गीत ॥ हिवे सानिध करता मिले। ते सुण जो धर प्रीत ॥ ५ ॥ ढाल ६ ठी ॥ कामणगारो कूकडोरे ॥ यह० ॥ तिण अवसर श्री पुरमारे। पद्म खाती गुण वंतरे ॥ रहे करे कुल वैपारनेरे। सोसा नारी सोहंतरे ॥ १ ॥ आखडी आइ खडी रहेरे ॥ आं ॥ पण पूर्व अंतराय थीरे। द्रव्य घणो नहीं पासरे ॥ दुष्कर करे आजीविका रे इम दिनवीते तासरे ॥ आखडी ॥ २ ॥ एकदा सूभाग्यो

दयेरे । धर्म घोष ऋषिराजरे ॥ बहू साधू संग परिवर्यारे । तारे जग जल झाजरे ॥ आं ॥ ३ ॥ आया श्री पुर उध्यान मांरे । उतर्या आज्ञा लेयरे ॥ तप संयम रत्त मुनीवरारे । सोक्ष सामे चित देयरे ॥ आ ॥ ४ ॥ माली लेइ भेटणारे । आया रिपुजय दरबाररे ॥ दीधी वधाइ मुनी आवीयारे । हर्ष्या सुणी अपाररे ॥ आ ॥ ५ ॥ चतुरंगणी शैन्या सर्जारे । राणी कुँवर सहू साथरे ॥ अन्य घणा चाल्या हर्ष धीरे ॥ दर्शण करण सनाथरे ॥ आ ॥ ६ ॥ खाती काष्ट लेवा जावतोरे । जाता देखी बहू लोकरे ॥ मुनी उपदेश सुणवा तणोरे । पक्षने जायो सोकरे ॥ आ ॥ ७ ॥ आया सहू मुनी वंधीयारे । धर्म श्रवण ने काजरे ॥ जग हित करवा कारणेरे । दे उपदेश मुनीराजरे ॥ आ ॥ ८ ॥ धर्म एक सुख दाय नोरे । जेहनो दया छे मूल रे ॥ ओलखो जीव अजीव नेरे । ज्यों होवे सुख को सूलरे ॥ आ ॥ ९ ॥ जीव कह्या छे कायना रे । पृथवी अप तेउवायरे ॥ विना शपति ने त्रस छेरे । सुख दिया सुख पायरे ॥ आ ॥ १० ॥ निजातम सम जाणी ये रे । जीव भर्या जह देहरे ॥ चार स्थावर में असंख्य छेरे । हरी में अनंता लेहरे ॥ आ ॥ ११ ॥ विनाशपति नर सारखा रे । कही श्री भगवान रे ॥ उत्पन तरुण ने वृधता रे । रोग संजोग सेनाण रे ॥ आ ॥ १२ ॥ कशाय सज्ञा चउ अछेरे । लाजणी अर्क देखायरे ॥

और अनेक हरी विषेरे । मनुष्य शादेष्य जणायरे ॥ आं ॥ १२ ॥ तिण कारण नहीं दुह वियेरे । जो इच्छो निज हितरे ॥ पद्म सुणी ने चमकियोरे । चिंते ज्ञान ते चितरे ॥ आ ॥ १४ ॥ मुज जाति कर्म एह छेरे । किजीये कांइ उपायरे ॥ ऋषिजी कहे हरीया काष्ट नेरे । वन्धव काटणो नायरे ॥ आ॥ १५ ॥ तेहीज लीधी आखडीरे । द्रढ चडेत प्रणामरे ॥ आगे चाल्यो कंतार मेंरे । एकदेव सौचेतामरे ॥आ॥१६॥ जात सुतारछे एहनीरे । किम पालीसके करारे ॥ परिक्षा करनी सही एह नीरे । तेलाग्यो तस लाररे ॥ आ ॥ १७ ॥ अन्य मनुष्य देशाना सुणीरे । करी शक्ते पच्चखाण रे ॥ आया तिणही दिशा गयारे । मन माहें हर्ष आणरे ॥ आ ॥ १८ ॥ अवसर जोइ मुनीवरारें । कियो जिनपदे विहाररे ॥ तारे भव्य उपदेश थीरे । करै आत्म उद्धाररे ॥ आ ॥ १९ ॥ परोप कारीं साधूजीरे । तीरे तारे संसार रें ॥ हलु कर्मी मारग लगेरे । जैसे पद्म सुताररे ॥ आ ॥ २० ॥ हिवे द्रढता त्याग कीरे । सुणीयों सह्रु नर नाररे ॥ ढाल छट्टी अमोलख कहेरे । आखडी होवे तैयार रे ॥ २१ ॥ दुहा ॥ त्याग परिक्षा पद्मनी । करण लग्यो सुर लार ॥ सह्रु कष्ट हारिया किया । शाकिये वन मझारं ॥ १ ॥ पद्म फिरे पण नामिले । सुखी लकडी तास ॥ रीतोही आयो घरे । सांज समय उदास ॥ २ ॥ नारी पूछे नाथ जी । खाद्यन लाया आंज ॥ तक-

हे सोगन मुज दिया । मिलिया गुरु महाराज ॥ ३ ॥ हरीयो काष्ट न काट वो । हरीये हरीको वास ॥ सूखो न मिल्यो लाकडो ॥ जोयो वन फिर खास ॥ ४ ॥ तेहथी रीतो आवीयो । जास्यूं फिर प्रभात ॥ भूखा सूता दंपति ॥ व्यतिक्रमी ते रात ॥ ५ ॥ ढाल ७ मी ॥ इम समकित मन स्थिर करो ॥ यह० ॥ त्याग निभावे वैरागीया । कष्टे द्रढ र-हाय ॥ ते निश्चय सुखीया हुवे । दोनो भव माय ॥ त्याग ॥ १ ॥ पद्म प्रभाते चालीया । कुहाडो लेइ हाथ ॥ आया वनते जोवता । हृदय जग नाथ ॥ त्याग ॥ २ ॥ निर्जीव दारुक पेखता । भमता हुइ श्याम ॥ अमर हाथ आवा देनहीं । हार्या तब हाम ॥ त्याग ॥ ३ ॥ ति महीं आया सांजका । पोताने घेर ॥ भारज्या औलंभो दीयो । किस्यो फंद भर्यो हेर ॥ त्याग ॥ ४ ॥ दुःख किहां लग भोगवूं । काटी दो दिन भूख ॥ अबतो रहनावे नहीं ॥ गयो तन सहू सूख ॥ त्याग ॥ ५ ॥ काल तो जरूर लावजो । जे जातां लगे हाथ ॥ नही तो घर आजो मती । सो वातां एक बात ॥ त्याग ॥ ६ ॥ पद्मतो चुपको सुइ रह्यो । दूजे दिन आयो वन । फिरतों २ थःकीयो । बेठ्यो उतरे वदन ॥ त्याग ॥ ७ ॥ चिंते घर जाइ स्यूं करूं । नारी करसीं क्लेश ॥ सूतो तिहांइ तरू तले । चित जपतो जिनेश ॥ त्याग ८ ॥ त्रिदश जोइ द्रढता । विप्र रूप घणाय ॥ अती बृध त्वाचा लटकती । कर काठी

सहाय ॥ त्याग ॥ ९ ॥ लांबी धोती पहरवा । जनोइ गल माल ॥ पांव खडावां खटकती । शिव तिलक छे भाल ॥ त्याग ॥ १० ॥ शंकर नाम उच्चार तो । आयो पद्मने पास ॥ आशीर्वाद देइ कहे । किम बेठ्यो उदास ॥ त्याग ॥ ११ ॥ पद्म कहे में ली आखडी । जैन मुनीवर पास ॥ हरीयो वृक्ष छेदू नहीं । तीन दिन हुवा तास ॥ त्याग ॥ ११ ॥ सूखो लक्कड न मिल्यो । क्षुध्या पीडे छे मुज ॥ तिण थी तन दुर्बल भयो । कह्यो वीतक तुज ॥ त्याग ॥ १३ ॥ विप्र कहे मुख बन्धीया । फरेबी घणा होय ॥ दुःखी करे संसार ने ॥ जगको बीज खोय ॥ त्याग ॥ १४ ॥ भोगोपभोगनी बस्तु जे । सरजी मानव काज ॥ नर देह नारायण समी । सुख दीजे घटणाज ॥ त्याग ॥ १५ ॥ खान पान सुख भोग में । नहीं पाप लगार ॥ आपणो शास्त्र इम कहे । छोड फंद निसार ॥ त्याग ॥ १६ ॥ सूतार कहे भूदेवजी । न कहो कूडो बचन ॥ जो शास्त्र इम ऊचरे । तो किम हुवा वामन ॥ त्याग ॥ १७ ॥ भक्षा भक्ष गिणवा तणो । रह्यो नहीं काम ॥ माता पत्नी एकसी । विष अमृत तमाम ॥ त्याग ॥ १८ ॥ जोसरज्या नर कारणे । वे स्वादी केम ॥ स्वर्ग नर्क कुण जावसी । झूटा शास्त्र नेम ॥ त्याग ॥ १९ ॥ जैन विना मत फैनसो । निग्रन्थ विन पाखंड ॥ दया विवेके धर्मछे । ए मुज श्रधा अखंड ॥ त्याग ॥ २० ॥

सुणी विबुध चुपकौ रह्यो । पाम्यों चित चमत्कार ॥ ढाल सात अमोलख कही ॥ धन्य २ पद्म सुतार ॥ त्याग ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ नभ में घुघरी घम घमी । दशो दिश हुयो प्रकाश ॥ देव आइ चरणें नम्यो । करे नम्र अरदास ॥ १ ॥ अज्ञ अधर्मी अजाण में । आयो डिगावा काम ॥ जेहथी तुम उपर्जीविका । तेमा धरी द्रढ हाम ॥ २ ॥ तीन दिवस कष्ट थां सह्यो । पण न चलायो मन ॥ उत्तर पण योगज दियो । थोडेही ज्ञान रमन ॥ ३ ॥ क्षमो अपराध कृपा करी । मांगो जे तुम चहाय ॥ धन्य जनक जननी जेह । तुम सरीखा जन्म्याय ॥ ४ ॥ पद्म प्रेक्षी अचंभीयो । प्रत्यक्ष धर्म के फल ॥ रंगाणो धर्म रग रगे । भइ श्रधा निश्चल ॥ ५ ॥ ढाल ८ मी ॥ राम आया जमाजा खोटा ॥ यह ॥ भाइ धर्म सदा सुख कारी । पूरे इच्छा पाले ज्यांरीरे ॥ भा ॥ आं ॥ पद्म कहे देव हूं किस्यो मांगू । हुइ मुजपर गुरु कृपारीरे ॥ भा ॥ १ ॥ सर्व मनोर्थ पूर्ण हारी । या आखडी अछे हमारीरे ॥ भा ॥ २ ॥ देव दर्शन निर्फल नंही जावे । तेहथी हुकम दो कोइ उच्चारीरे ॥ भा ॥ ३ ॥ इम अग्रह सुरतणो जाणी । पद्म कहे जो इच्छा तुमारीरे ॥ भा ॥ ४ ॥ सूको काष्ट म्हारे नित्य आवे ॥ जे इच्छुं ते जावे घडारीरे ॥ भा ॥ ५ ॥ दोनों वर सुर नवही स्मरप्या । अनेवली नीधी देखाडीरे ॥ भा ॥ ६ ॥ कर

प्रणाम गयो निज ठामे । पद्म जी चित हर्ष्यारीरे ॥ भा ॥ ७ ॥ दिन ऊगा गुरु देव समरीया । द्रव्य ते साथ लीधारी रे ॥ भा ॥ ८ ॥ आयो निज घर मन्थी बताइ । हर्षी जोइ घर नारी रे ॥ भा ॥ ९ ॥ कांइक तो आज लाया दीसे । उभी होइ सत्कारी रे ॥ भा ॥ १० ॥ रात रह्या था आप किहां जा । निज बालाने विसारी रे ॥ भा ॥ ११ ॥ घर अंदर जाइ पोटली खोली । अपार द्रव्य देखाडी रे ॥ भा ॥ १२ ॥ धर्म पसाये दुःख दूर टलीया । देव संतुष्ट थयारीरे ॥ भा ॥ १३ ॥ अब कोइ मेहनत करनी न पडसी । श्रास्ये मन चिंत्यारीरे ॥ भा ॥ १४ ॥ सूतारणी घणी हर्षानंदे । करे भोजन तैयारीरे ॥ भा ॥ १५ ॥अष्टम तप को परणो कीधो । लस हुइछे इच्छारीरे ॥ भा ॥ १६ ॥ सूखे समाधे सूता निद्रामें । तव देव स्वपन दिधारीरे ॥ भा ॥ १७ ॥ दिनऊगा नित्य सूखो लक्कड । नदीमें आवसी वह तारीरे ॥ भा ॥ १८ ॥ कर लम्बायां हाथमें आवसी । इच्छित लीजो वणारीरे ॥ भा ॥ १९ ॥ जाग्रत हुइ सत्य स्वपन संभार्यो । देवता दीधा जाण्यारी रे ॥ भा ॥ २० ॥ चल आया सरीताने कांठे । पूर जातो जोये वारीरे ॥ भा ॥ २१ ॥ लोक घणा जोवाने आया । तमाशा अश्चर्य कारीरे ॥ भा ॥ २२ ॥ आगल सूणीयों मदन चरित । ढाल आठ अमोल उच्चारीरे ॥ भा ॥ २३ ॥ ❁ ॥ दुहा

॥ तिण अवसर ते मही विषे । काष्ट तुरी ज्यों स्वार ॥ मदन जी जल क्रिडा करत । आया चल मज्झ धार ॥ १ ॥ श्री पुरने ढिग आवता । तब ऊग्यो दिन कार ॥ ठाठ जम्यो तट ऊपरे । जोयो मदन कुंवार ॥ २ ॥ सरल साद कहे कहाडीयो । कोइक मुजने बार ॥ उपकार होसी अती घणो । मान स्यूं में अभार ॥ ३ ॥ हा हा कार सहुकार रह्या । पडीन सके नद माय ॥ जीवित वाहलो सहू भणी । मरण मुखे कुण थाय ॥ ४ ॥ अंगुलीया पुन्य बहू करे ॥ जोइ मदन पुण्यवंत ॥ नल कुँवर ने सारीखो ॥ साहस वंत दीखंत ॥ ५ ॥ ढाल ९ मी ॥ इण सरवरीयारी पाल ऊभी दोइ नागरी ॥ यह० ॥ पद्म खाती हर्षाय । दीर्घ करत्तव कियो ॥ हो सुजाण ॥ दीर्घ करत्तव कियो ॥ सहायक देवने स्मर । ते काष्ट पे चित दियोहो ॥सु०॥ ते काष्ट ॥ तित्क्षिण मुडीयो काष्ट । आया कर पद्मने हो ॥ सु० ॥ आयो ॥ उतरी मदन तत्काल । ग्रह्या तस कद्मने हो ॥ सु० ॥ ग्रह्या ॥ १ ॥ तात जी महा उपकार । आज मुजपे कियो हो ॥ सु० ॥ आज ॥ मरण कष्ट छुडाय । दान जीतव दियो हो ॥ सु० ॥ दान ॥ तुम सम अवर न कोय । म्हारे इण जक्त में हो ॥ सु० ॥ म्हारे ॥ विनय वचन सुणी पद्म । हर्ष्यो मोह रक्त में हो ॥सु॥ ह० ॥ २ ॥ कहे धन्य २ मुज भाग । लाभ अचिंत्यो थयो हो ॥ सु० ॥ लाभ ॥ अपुत्र्या-

ने मिल्यो पुत्र । सकल गुण युक्त यो हो ॥ सु० ॥ सकल ॥ आणंदी चांप्यो उर । घरे
ले आवीया हो ॥ सु० ॥ घरे ॥ कहे नारीने ए पूत । पुण्य जोग पाइया हो ॥ सु० ॥
पुण्य ॥ ३ ॥ माता कही लाग्यो पाय । सुतारिण ने तदा हो ॥ सु० ॥ सुता० ॥ चिरं-
जीवो दी आसीस । मस्तक कर ठवी यदा ॥ होसु ॥ मस्तक ॥ जीमायो सु अन्न ।
भोजन निपावइ हो ॥ सु ॥ भोज ॥ उत्तम वस्त्र भूषण । तस पहरा वइ ॥ होसु ॥
तस ॥ एकांत बेठा सुतार । पूछे मदन भणी हो ॥ सु ॥ पूछे ॥ किम पडीयो जल धार ।
उत्पति कहे तुज तणी हो ॥ सु ॥ ४ ॥ मदन कहे हूं वाणिक । कर्म उदय आवीया हो ॥
सु ॥ कर्म ॥ कर्या कठीयारा को काम । काष्ट शिर वाहीया हो ॥ सु ॥ काष्ट ॥ ५ ॥ एकदा
भारी काज । गयो कंतार मे हो ॥ सु ॥ गयो ॥ वृष्टि अणाचिंती थाय । पड्यो जल धार
में हो ॥ सु ॥ पड्यो ॥ लाग्यो डूंडो हाथ । तिरी इहां आवीयो हो ॥ सु ॥ तिरी ॥
आप कियो उपकार । सुख सहू पावीयो हो ॥ सु ॥ सुख ॥ ६ ॥ सुनार सुणी हर्षाय ।
कहे सुण नंदना हो ॥ सु ॥ कहे ॥ ए छे तुज घर धन । जाणे मति फंदना हो ॥ सु ॥
जांणे ॥ निज इच्छा जिम तूं । इहां सदा राहीयेहो ॥ सु ॥ इहां ॥ सीखो हमारो कर्म ।
चहीये सो वणाइये ॥ होसु ॥ चाहीं ॥ ७ ॥ आणंद माहे मदन । रहे पदम घरे ॥ होसु ॥

रहे ॥ बुद्धि जोग ग्रही काष्ट । केइक वस्तु घडे ॥ होसु ॥ केइ ॥ देखी हर्षे सुतार । अहो बुद्ध सागरु ॥ होसु ॥ अहो ॥ थोडा में सीख्यो सर्व । हम काम कीनो सरु ॥ होसु ॥ हम ॥ ८ ॥ जाणवा तुज प्रतित । में काम कराइहो ॥ होसु ॥ में ॥ अपणे छे देव सहाय । करेते चावीयो ॥ होसु ॥ करे ॥ छोडीने सव कर्म । धर्म अब कीजीये ॥ होसु ॥ धर्म ॥ करो सद्गुरुकी भक्ती । अर्हत स्मरीजीये ॥ होसु ॥ ९ ॥ ए थइ दशमी ढाल । पुण्यवंत पग २ सुखी ॥ होसु ॥ पुण्य ॥ मदन तणी परे जोवो । कहे अमोलख ऋषि ॥ होसु ॥ कहे ॥ रसीलो मदन चरित्र । आगे भव्य सांभलो ॥ होसु ॥ आगे ॥ कारण थी पके काज । न रखींये आमलो ॥ हो ॥ सु ॥ १० ॥ दुहा ॥ एक दिन मोटो काष्ट ले । पद्म मदन बोलाय ॥ तूं कहे सो इण काष्ट की । देउं वस्तु बणाय ॥ १ ॥ मदन कहे म्हारे मने । गगन उडनरी आय ॥ शक्ती होवे तो करो । धारूं जहां ले जाय ॥२॥ पद्म तदा नीपाइयो । गरुड खग शिरदार ॥ कला रखी तिणरे विषे । उडे जे इच्छा चार ॥ ३ ॥ मदन कृष्ण का नंदना । थारो नाम मदन ॥ कृष्ण वाहन ए गरुड छे । कर तूं तेहवी चमन ॥ ४ ॥ कला सहु देखाइ तस । मदनजी हर्ष्या अपार ॥ अब म्हारा चाह्या हुसी । भलो कियो उपकार ॥ ५ ॥ ढाल १०मी ॥ कुँवरां साधू तणो आचार ॥यह०॥

देखो साहस वंत कुँवारा ॥ पुन्यवंत पग २ लहे सत्कार ॥ आं ॥ मदन कहे हूं लावू फिरा
इ । अव्वी अंतालिख मझार ॥ हूंश करुं मुज मन की पूरी । तत्क्षिण हुवा तैयार ॥
देखो ॥ १ ॥ कर प्रणाम सुतार तात ने । हुवा गरुड अस्वार ॥ यथा विधी से कला
फिराइ । उड्यो गगन तेवार ॥ देखो ॥ २ ॥ वन गिरी ग्राम अनोखा जोतो । फिर
तो इच्छा चार ॥ महंद पुर के पासज आया । दीठो शेहर मनोहार ॥ जो ॥ ३ ॥ ति-
ण वाहिर एक वनमें उतर्यो । गरुड कला संवार । वड की कोचर मांही छिपाइ । आया
गास मझार ॥ देखो ॥ ४ ॥ देव पुरी सम नगरी देखी । भवन विचित्र प्रकार ॥ ऋद्धि
सिद्धीये भरी पूरी । सूसोभित बजार ॥ देखो ॥ ५ ॥ एक हाट देखी अति मोटी । माल
मंड्याकेइ सार ॥ काम करे तिहां मालक वहुला । श्रृंगारे झलकार ॥ देखो ॥ ६ ॥
ऊंची गादी तकीया टेके । बेठा सेठ सिरदार ॥ दूंदाला रुपाला रंगीला । भूषण वस्त्र
श्रृंगार ॥ देखो ॥ ७ ॥ मदन जी ऊभा रह्या तिहां आ । जाणी श्रेष्ट उदार ॥ सेठ
सत्कारी पास बेठाया ॥ जोड़ दिव्य अनुहार ॥ देखो ॥ ८ ॥ मदन पुण्य प्रतापे हाटे
॥ थोड़ी वेर मझार ॥ खपीयो माल घणो ते अवसर । इच्छित नफे वैपार ॥ देखो ॥
९ ॥ ते देखीने सेठ चिंतवे । धरी अश्चर्य अपार ॥ इसो माल कदी नही खपीयो । आज

ही तूठा किरतार ॥ देखो ॥१०॥ या पुण्याइ इणीं कुँवर की । पगतणे प्रसार ॥ जो सदा रहेये मुज पासे । तो भराय भंड्डार ॥ देखो ॥ ११ ॥ प्रेम धरीने पूछे कुँवर थी । किणी ग्राम रह्नार ॥ जात पांत थाणी प्रकाशो । इहां आया किण द्वार ॥ देखो ॥ १२ ॥ मदन कहे हूं छूं प्रदेशी । वाणिक घर अवतार ॥ पेट भरणने फिरुं प्रदेशे । इहां न ओलखनहार ॥ देखो ॥ १३ ॥ विश्रामो जोवू इण ग्रामे । जो मिलै कोइ रखनार ॥ तो तिहां रही दिवस गुजारुं । आयो इहां इम धार ॥ देखो ॥ १४ ॥ इम सुणी शाहजी हर्षाया । फिर बोले धर प्यार ॥ किस्यो बदलो लेइने रहस्यो । ते करो शिघ्र उच्चार ॥ देखो ॥ ॥ १५ ॥ किस्यो काम करास्यो मुजस्युं । ते करो पहला जहार ॥ नहीं गुलामी करना इच्छूं । फिर कहूं मै पगार ॥ देखो ॥ १६ ॥ सेठ कहे बहू काम करनारा ॥ फिकर न किजे लगार ॥ सदा म्हारे पासज रहजो । साथ चलो दरबार ॥ देखो ॥ १७ ॥ सुणी मदन हर्षाइ बोले । लोभ न मुज लगार ॥ उत्तम अन्न नित्य पेट भरी दो । सजू सारो श्रृंगार ॥ देखो ॥ १८ ॥ यह कबूल जो आप करो तो । रहस्यु आपके लार ॥ मानी सेठ खुशी हो राख्या । मदन ने निज आगार ॥ देखो ॥ १९ ॥ षड रस भोजन धाप जीमायो । करी घणी मनवार । उत्तम वस्त्र गेणा पहराय ॥ वणिया देव कुँवार ॥ देखो ॥

२० ॥ पुण्य पसाय मदन सुख पाया रहे तिहां सुख मझार ॥ दशमी ढाल अमोल प्रकाशी । आगे मन्योग अधीकार ॥ देखो ॥२१॥❀॥दुहा॥ तेहीज मेहंद पुरी तणा । राजा केतूं सेण ॥ प्रेमला नमे सुन्दरी । नमण खमण मधू वेण॥१॥ तस उदरंसु ऊपनी। कंन्या रति अनुहार ॥ रंभा मंजरी रंभासम । मोहन गारी नार ॥ २ ॥ उपवय मद माती थइ । चहाय हुइ भरतार ॥ जोगी जोर्डी ना मिल्या । रही अवस्था कुँवार ॥ ३ ॥ एक दिन न्हाइ सज्ज थइ । कर सोले सिणगार ॥ इच्छित नर वरवा भणी । वैठी गोख मझार ॥ ४ ॥ सहेली साथे तिहां । जोवती पंथा चार ॥ जे जोगो आइ मिले । तस आगे आधिकार ॥ ५ ॥

ढाल ११ मी ॥ तूं जाय कहीये मांय ॥ यह ॥ तिण वेला राज मांय । वस्तु जोइ ए ॥ भट मेल्यो श्रेष्ठी घरेए ॥ नृपत जी मंग्गाए । ते ले चालीये ॥ सुणी हर्ष सेठजी धरे ए ॥ १ ॥ सज पोते सिणगार । राज सभा जिस्यो ॥ मदन ने पण सजावीयो ए ॥ नोकर ने सिर माला । दे इबहु परे ॥ ठाट बहु धरावीयो ए ॥ २ ॥ चाल्या मध्य बजार । मराय भवन तले ॥ मदन जी लारे संचरे ए ॥ राय कन्य तिण वार । कंतने कारणे ॥ देखती मार्गे जे फीरे ए ॥ ३ ॥ जोइ काम कुँवार । यौबन मद भर्यो ॥ सुन्दर सोम्यता मन वसी ए ॥ ए पर देशी कोय । राय कुँवर अछे ॥ फिर न मिले जोडी इसी ए ॥ ४ ॥

लेख लिखी तत्काल । मननी बातडी ।। थोडामें प्रिती घणी ए ।। देवे सहेली हाथ । हाथे दीजीयै । शिघ्र जाइ कुँवर भणी ए ।। ५ ।। तेतले आया नजीक । मदन मोहन तिहां ।। सहजे ऊंचो जोइयो ए ।। मार्या नेणना बाण । रायनी कन्या का ।। सेन करी ऊभो रह्योए ।। ६ ।। समजो चतुर सुजाण । कहे तब सेठने ।। आप आगे पधारी ये जी ।। मुजने कारण एथ । हमणा नीवेड ने ।। शीघ्र आवूं अवधारीये जी ।। ७ ।। लघूनीत करतो जाण सेठ आगे चल्या ।। दवी कुँवर ऊभा रह्या ए ।। सहेली दोडी आय । पत्र ते करदीयो ।। बांची भेद मदन लह्यो ए ।।८।। कहे दासी ने तेह । जाइने की जीए ।। तुज बाइने इण परे ए रात ।। गयां एक जाम । दार सहू वन्ध करी ।। रहजो मेहल ने उपरे ए ।।१०।। खिड की खुल्लि राख । रहजो जागता ।। हूं आस्यू अंतलिख थी ए ।। झूठी न मानो एह । अव्वी जाउं छूं ।। काज थसी ए सीख थी ए ।। १० ।। मदन फिर्या तत्काल । हर्षी सहेलडी । अश्चर्य करती ते गइ ए ।। कहे कुँवरी थी उमंग । बाइजी सूणो ।। करामाती ए नर सही ए ।। ११ ।। सुर विद्या धर एह । भरीयो गुण नीलो ।। बल रूप बुद्धि निपुणो जी ।। कही अचंभ की बात । प्रिती थी भरी ।। जेतो चित स्थिरे सुणो जी ।। १२ ।। आवसी व्योम मे उड । प्रहर निशागयां ।। बात ए झूटी नहुवे जी ।। कीजो इच्छा पूर्ण ।

बन्दोबस्त सहू । जोगो जोडो जग जुबेजी ॥ १३ ॥ सुण कुँवरी हर्षाय । धन्य घडी गिणे । चट पटी लागी मिलण कीजी ॥ कंन्या व्यावनी ताम । सामग्री सजी । गुप्त पणे पतिहां हिलणकी जी ॥ १४ ॥ ऊपर गौखडा मांय । मित्राणी संगे । प्रेम तणी वातां करे जी ॥ दिन लगे जुग सुमान । मुशकले आथम्यो । सहू दार बन्ध किया घरे जी ॥ १५ ॥ सजीया सहू सिणगार । छिपके सहू तिहां ॥ वणी रती अनुहारसी जी ॥ बेठी गोखे आये । द्रग नभ मे ठवी । आषाढ मेघ जल धार सी जी ॥ १६ ॥ लागी लग्न अतीमन ॥ कब आइ मिले । घडी जावे वर्षा समीजी ॥ जो जोवे सणकार । चमके चित मे ॥ नेणा जावे तिहां रमीजी ॥ १७ ॥ हिवे मदन करामात । श्रोता सांभलो ॥ ढाल थइ एकादशीजी ॥ जेहवो जेहनो लेख । तेह वो नीपजे । अमोल कहे हुइ जिशी जी ॥ १८ ॥ ● ॥ दुहा ॥ दरबारे दीधो घणो ॥ सेठजी तवही माल ॥ लाभ घणो उपराजीयो । मदन पुण्ये ते काल ॥ १ ॥ हर्ष्या सेठजी अती घणा । जाणी मदन पुण्य वंत ॥ पाछा आया निज घरे । मदन साथ धर खंत ॥ २ ॥ सन्ध्या समय सेठथी । मदन करे प्रकाश ॥ आज जामनी जाइने ॥ रहस्यू देवी आवास ॥ ३ ॥ साधन करस्यूं मंत्रनो ॥ छे जरुरी काम ॥ आज्ञा दीजे मुज भणी । प्राते आस्यूं आम ॥ ४ ॥ सेठ

सुणी कहे कीजीये ॥ जिम सुख तुम्हने थाय ॥ शिघ्रही प्राते आवीये । जिम हममन हर्षाय ॥ ५ ॥ ढाल १२ मी ॥ आठ कूवा नव बावडी पणी हरीरे ॥ यह० ॥ शिघ्र आया तब वागमें ॥ मदनेश्वरजी ॥ मनमें धरी आणंद ॥ हो मन मोहनजी ॥ अश्व कौचर थी कहाडीयो ॥ मदनेश्वरजी ॥ वेणु देव वसु नंद ॥ हो मन ॥ १ ॥ कला जमाइ तेहनी ॥ मद ॥ यथा योग्य तत्काल ॥ हो मन ॥ आरुढ हुवा सावध पणे ॥ मद ॥ गया गगन गत चाल ॥ होमन ॥ २ ॥ आया राय सदन परे ॥ मद ॥ चौगिरदा फिर जोय ॥ हो मन ॥ वंदोवस्त पुक्त देखीयो ॥ मद ॥ ज्यों भेद न प्रकट होय ॥ हो मन ॥ ३ ॥ खुल्ली वारीने मारगे ॥ मद ॥ पेठा मांय मदन ॥ हो मन ॥ कुँवरी झट ऊभी हुइ ॥मद॥ अमित हर्ष वदन ॥ हो मन ॥ ४ ॥ सत्कारी मधुरी लवे ॥ मद ॥ पावन कीधो भवन ॥ हो मन ॥ कृतार्थ करी मुज भणी ॥ मद ॥ देभल्लभ दर्शन ॥ हो मन ॥ ५ ॥ जब थी दीदार पेखीया ॥ मद ॥ तब थी आश अपार हो ॥ मन ॥ अब ते पूर्ण कीजी ये ॥ मद ॥ कर गृही सफल अवतार हो ॥ मन ॥ ६ ॥ सामग्री सहू सज्ज छे ॥ मद ॥ लग्न तणी इण ठाम ॥ हो मन ॥ गंधर्व लग्न करी इहां ॥ मद ॥ पुरी जे शिघ्र हाम ॥ हो मन ॥७॥ मदन कहे कुँवरी भणी ॥ सुणो कुँवरी जी ॥ तुम छो नरपति जात ॥हो मन॥

हूं वाणिक कुले उपनो ॥ सुणो ॥ कुँवरी ॥ किम अह्यो जावे हात ॥ हो मन ॥ ८ ॥ जोगी जोडी जो मिले ॥ सुणो कुँवरी हो ॥ तो जिवित सुख पाय ॥ होमन ॥ राय पूत्र राजा घरे ॥ सुणो ॥ रह्यांथी सोभा थाय ॥ होमन ॥ ९ ॥ तिण कारण पहली कहूं ॥ सुणो ॥ मत भूलो जोइ रुप ॥ होमन ॥ वाणिक ने घर दुःख घणो ॥सुणो कुँ॥ कहूंते सुणीये स्वरुप ॥ होमन ॥ १० ॥ उठणो पाछली रातरा ॥ सुणो ॥ धान चूरेणी फेर ॥ होम ॥ दिवस ऊगे जेतले ॥ सुणो ॥ लेघट जावे जलनेर ॥ होम ॥ ११ ॥ नीर लाइ अग्नीढिगे ॥ सुणो ॥ रुडो निपजावो अन्न ॥ होमन ॥ जीमावो परिवारने ॥ सुणो ॥ रखी प्रसन्न सहू मन्न ॥ होमन ॥ १२ ॥ सासू सुसरा जेठाणी दी ॥ सुणो ॥ भोलावसी घणा काम ॥ होमन ॥ ते तो सहू करना पडे ॥ सुणो ॥ विसामो नहीं नाम ॥ होमन ॥ १३ ॥ मांजणों लीपणों सींवणों ॥ सुणो ॥ इत्यादी घणा काज ॥ अहो निशी करवा पडे ॥ सुणो ॥ तिहां किमरहे तुम लाज ॥ होमन ॥ १४ ॥ पाछे पस्तावो पडे ॥ सुणो ॥ जन्म सौ झुरतां जाय ॥ होमन ॥ तेहथी मुजने सीखदो ॥ सुणो ॥ जाइ सोवूं निज ठाय ॥ होमन ॥ १५ ॥ उपवयमें तुम आवीया ॥ सुणो ॥ पिता नहीं परणाय ॥ होमन ॥ तिणथी इच्छो मुज भणी ॥ सुणो ॥ घणा उतावला थाय ॥

होमन ॥ १६ ॥ उतावला ते वावला ॥ सुणो ॥ धीरा गंभीरा हो ॥ होमन ॥ तिण कारण समता धरी ॥ सुणो ॥ कुल घर लज्जा जोय हो ॥ मन ॥ १७ ॥ राजा जी गुण वंतछे ॥ सुणो ॥ परणासी थोडे काल ॥ होमन ॥ जोगी जोडी मिलावसी ॥ सुणो ॥ अवसर जोवो हाल ॥ होमन ॥ १८ ॥ तुम हमनी औलख नहीं ॥ सुणो ॥ वली नहीं संबन्ध ॥ होमन ॥ गुप्त कार्य करतां थकां ॥ सुणो ॥ हृद्य होवे अन्ध ॥ होमन ॥ १९ ॥ हूंआयो तुम संकेत थी ॥ सुणो ॥ घदीधी हित सीख ॥ होमन ॥ रखे माठो लागे मन विषे ॥ सुणो ॥ नधरजो कोइ तखि ॥ होमन ॥ २० ॥ शिघ्र जवाव हिवे दी जीये ॥ सुणो ॥ जाउं निज ठिकाण ॥ होमन ॥ अमोल कही ढाल बारमी ॥ सुणो ॥ देखो मदन गुण ज्ञान ॥ होमन ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ रंभा सुणो बचनए । अश्चर्य पाइ अपार ॥ उभय तरुण एकांतमें ॥ मन राख्यो इण वार ॥ १ ॥ सरल संतोषी सील वंत ॥ इण सम अवरन नर ॥ चिंतामणी मुज कर चड्यो । कोइ पुण्य अनुसर ॥ २ ॥ रुप अनोपम काम सम । अमृत वयण उचार ॥ सुसंस्थान संथित तन । वुद्धिप्रबल गुण धार ॥ ३ ॥ जाती कुलथी काज स्यूं । मुजने गुणथी काम ॥ जो एहवा करथी गया । फिर दुर्लभ्य ए नाम ॥ ४ ॥ इम निश्चय मनमें कियो । गुणानु रागी होय ॥ रक जोडी

मधुरेश्वरे ॥ पभणे सुणजो सोय ॥ ५ ॥ ढाल ॥ १३ मी ॥ हूं तुज आगल सीं कहूं क-
नैया ॥ यह० ॥ कर जोडी विनंती करूं ॥ वालेश्वर ॥ लुली २ करूं अरदास हो ॥ केस
रिया लाल ॥ निष्ठुर वचन इम उच्चरी ॥ वालेश्वर ॥ नहीं कीजे नीरास हो ॥ केसरिया
लाल ॥ १ ॥ अवला नी अर्ज अवधारीये ॥ वालेश्वर ॥ आं ॥ मुजने तुमचो आधार
हो ॥केसरी॥ धन सुख राजमेंनहीं चहूं ॥वाले॥ हूं गुणीने इच्छनारहो ॥के॥अव॥२॥
यथा जोग जोडी मिली ॥वाले॥ धैर्यकिम धरे मनहो ॥के॥ पुनर्पी ते किम पामीये ॥वाले॥
परदेशी नो वतन हो॥के॥अ॥३॥ जाती कुलगुण थी लह्यो ॥वाले॥ पूछवा नो नहीं कामहो ॥के॥
हूं लो भाणी गुण देखने ॥ वाले ॥ अवर नहीं मुज हाम हो ॥ केस ॥ अव ॥ ४ ॥ कहे सो
सो करस्यूं सही ॥ वाले ॥ यथा शक्त में काज हो ॥ केस ॥ काम थी सुस्ती ना रहे ॥
वाले ॥ ते मांहे किसी लाज हो ॥ केस ॥ अव ॥ ५ ॥ अण विचार्यो जे करे ॥ वाले
॥ ते पाछे पस्ताय हो ॥ केस ॥ हूं तो परिक्षा कर ग्रहूं ॥ वाले ॥ चिंतामणी जाणी
पाय हो ॥ केस ॥ अव ॥ ६ ॥ हूं गुण जोइ आपका ॥ वाले ॥ निश्चय कर्यो मन माय हो
॥ केस ॥ वीजो नर वांछूं नहीं ॥ वाले ॥ जाणुं तात ने भाय हो ॥ केस ॥ अव ॥ ७ ॥
हिवे ताण नहीं कीजीये ॥ वाले ॥ ली मुज परिक्षा पूर हो ॥ केस ॥ वातां में वक्त घणी

गइ ॥ बाले ॥ हिवणा ऊगसी सूर हो ॥ केस ॥ अब ॥ ८ ॥ वरस्यों तो जीवस्यूं सही ॥ बाले ॥ सो वातां की एक बात हो ॥ केस ॥ इत्तापर छिटकाव सो ॥ बाले ॥ तो प्राण आपरे साथ हो ॥ केस ॥ अब ॥ ९ ॥ जब थी मुज दर्शन भया ॥ बाले ॥ तब थी तर से मन हो ॥ केस ॥ हिवे इच्छा पुरी करो ॥ बाले ॥ पावन कीजे वदन हो ॥ केस ॥ अब ॥ १० ॥ इत्यांदी सुणी मदन जी ॥ श्रोता जन ॥ चिंते ऊंडो अपारे हो ॥ विवेकी लाल ॥ ए निश्चय थइ रागणी ॥ श्रोता ॥ ताण्यामें नहीं सार हो ॥ विवेकी लाल ॥ अब ॥ ११ ॥ इच्छित लक्ष्मी आ मिली ॥ अवतो किम टेलाय हो ॥ विवेकी ॥ हूं-कारो तदा भर्यो ॥ श्रोता ॥ तव कुँवरी हर्षाय हो ॥ विवेकी ॥ अव ॥ १२ मिलाणी की साख थी ॥ श्रोता ॥ करार किया आप समाय हो ॥ विवे ॥ वरमाल मदन कंठे ठवी ॥ श्रो ॥ मदन मुद्रा पहराय हो ॥ विवेकी ॥ अव ॥ १३ ॥ इणाविध लग्न समाचरी ॥ श्रोता ॥ तिहां रह्या दोय जामहो ॥ विवे ॥ काल कर्यो काल आवस्यूं ॥ श्रोता ॥ गरुड सजायो जाम हो ॥ विवे ॥ अव ॥ १४ ॥ होश्यारी से रहजो तुमे ॥ श्रो ॥ वात रखे प्रगटाय हो ॥ विवे ॥ अवसर उचित करस्यां सही ॥ श्रो ॥ इणपरे मदन चेताय हो ॥ विवेकी ॥ अव ॥ १५ ॥ रंभा कहे कर जोडने ॥ बाले ॥ मुज आपनो आधार हो ॥

केस ॥ जोडी जिम निरवाह जो ॥ बाले ॥ जन्म भर एकतार हो ॥ केस ॥ अब ॥
असासन देइ संचर्यां ॥ श्रो ॥ व्योमें मार्ग मदनेश हो ॥ विवे ॥ प्रेमातुर कंन्या भइ ॥
श्रोता ॥ नेणा नीर वरसेश हो ॥ विवेकी ॥ अब ॥ १७ ॥ सहेली हाँसी करे ॥ श्रोता ॥
सिद्ध हुया सहू काम हो ॥ विवेकी ॥ हिवे हूं जावूं मुज घरे ॥ श्रोता ॥ दोपहेरे आव-
स्यूं आमहो ॥ विवे ॥ अब ॥ १८ ॥ सहेली गया पछे ॥ श्रो ॥ उजागराने जोग हो ॥
वीवे ॥ आलस आयो अंगमें ॥ श्रोता ॥ लोटी सेजमें छोग हो ॥ विवे ॥ अब ॥ १९ ॥
निद्रा आइ घेरो दियो ॥ श्रो ॥ करती उठण विचार हो ॥ विवे ॥ परबस हुइ ते तत्क्षिणे ॥
श्रो ॥ होवे जे होणहार हो ॥ विवेकी ॥ अब ॥ २० ॥ गम नहीं क्षिण अंतर तणी ॥
श्रोत ॥ ज्ञानी वचन प्रमाणहो ॥ विवे ॥ ढाल तेरे अमोलख कही ॥ श्रो ॥ ते सुणो
आगे बयान हो ॥ विवेकी ॥ अब ॥ २१ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ जक्त विषय प्रकाशतो ॥
ऊगो तब दिनराय ॥ राणी चिंते मन विषे । रंभा जागी नाय ॥ १ ॥ धाय ॥ मात भेजी
तिहां । ला बाइने जगाय ॥ सिरावणी वेला हुइ ॥ ते किम आइ नाय ॥ २ ॥ धाली
आइ जोइयो । गइ मनमें धस्काय ॥ हाय २ यो रातमां ॥ कुण कीधो अन्याय ॥३॥ एकरात रही
वेगली । तेमां थयो अकाज ॥ राय राणीने दाखवुं ॥ जिम रहे म्हारी लाज ॥४॥ थर २ अंग

धूजावती ॥ आइ राणीने पास ॥ नेण नीर बर्षावती ॥ ऊभी न्हांख निश्वास ॥५॥ ढाल१४मी ॥ राघव आवीया हो ॥ यहदेशी ॥ देख राणी घाबरी कहे ॥ छेबाइने कुशल ॥ इम किम भूंडीं थइ तूं ॥ कारण कांइ कले ॥ १ ॥ सुगणा सांभलो हो । होणहार श्वरुप ॥ आं ॥ शिघ्र कहे तें कांइ दीठो । पाछी आइ केम ॥ काल जो मुज थर २ छे । छे बाइ ने क्षेम ॥ सुगणा ॥ २ ॥ तोतलाती बोले दासी ॥ मा मुजथी न कहाय ॥ आप निजरे जोवो चाली ॥ वाइ कियो अन्याय ॥ सुगणा ॥ ३ ॥ धस्को पडीयो धाय बचने । शिघ्र जाइ जोय ॥ कुँवरी का कूचेन देखी । हीये प्रजालित होय ॥ सु ॥ ४ ॥ कहे वेगी ला राजाजी । देखावो एहाल ॥ पापणी पडदा में रेइ । किया कर्म चंडाल ॥ सु ॥ ५ ॥ दासी दोडी गइ भूपपे । राणी साव बुलाय ॥ बाइजी का मेहल माही । शिघ्र चलो महाराय ॥ सु ॥ ६ ॥ राजा सुण आश्चर्य पाइ । शिघ्रता तिहां आय ॥ राणी कुँवरीने वताये । देखो कियो अन्याय ॥ सु ॥ ७ ॥ राज सुक्ष्म द्रष्टे जोइ । विभ चारी ना चेन ॥ प्रजल्यो तव क्रोधानल थी । रक्त थइया नयन ॥ सु ॥ ८ ॥ अंग रक्षक धायथीं कहे । वोल सत्य एवार ॥ किण साथे इण कर्म फोड्या । नहींतो खासी मार ॥ सु ॥ ९ ॥ धाय कहे में रजा लेइ । गइ मित्राणी घेह ॥ प्रात आइ कह्यो मात ने । अनर्थ दीठो एह ॥ सु ॥ १० ॥

महारा देखत बाइ स्वपनें । न जाणे या वात ॥ एका एक किम वणीयो ॥ अचंभो
मुज आत ॥ सु ॥ ११ ॥ गुन्हेगार हूं नहीं मालक । पूछो बाइ थी आप ॥ झूठ साच
की खबर पडसी । जणासी सहु साप ॥ सु ॥ १२ ॥ क्रोधातुर नरेश्वर तव । ठोकर
सेज ने मार ॥ जगाइ कुँवरी भणी । घवरी ऊठी ते वार ॥ सु ॥ १३ ॥ अती शरमाइ
सेज छोडी । दूर ऊभी जाय ॥ वस्त्रथी अंग ढांक धूजे । नीची द्रष्ट ठहराय ॥ १४ ॥
राय कहेरे कुल खंप्पन । कलंकित निर्लज्ज ॥ किणर साथे कर्म फोड्या । वोल सत्यकू
कज्ज ॥ सु ॥ १५ ॥ उत्तम कुल में होइ उत्पन्न । किम सूज्यो ए काम ॥ पवित्र कुलने
पापणी थें । आज कीधो शाम ॥ सु ॥ १६ ॥ जन्मतां जो मरी होती । अथवा इत्ता
दिन ॥ तो एक वक्त रोइ रहता । न होतो ए रिने ॥ सु ॥ १७ ॥ इत्यादी बहू कटु
वचने । राय कर्यो तिरस्कार ॥ कुँवरी उत्तर देत नाहीं ॥ रही ते मौन धार ॥ सु ॥ १८
राणी कहे ए विष कंन्या । सांपण सम देखाय ॥ जीवती नहीं काम की । दो यम सदन
पहोंचाय ॥ सु ॥ १९ ॥ दास ने राय हुकम देवे । न्हांख खाडी माय ॥ कुँवरी कहे हूं
पडूं जाइ । जिम सब सुख पाय ॥ सु ॥ २० ॥ मेहल पाछल खाइ ऊंडी । गोखे ऊभी-
रय । सर्व क्षमाइ जप प्रमेष्टी । छुट्टी मूकी देह ॥ सु ॥ २१ ॥ पडी कूंवरी रोइ माता ।

आ बेठीं निज ठाम ॥ राजाजी पण गया सभामे ॥ परताइ मन ताम ॥ सु ॥ २२ ॥
प्रमेष्ठी स्मरण प्रभावे । आल न आयो रंच ॥ ढाल चउदे कही अमोलक । आगे जोवो
संच ॥ सु ॥ २३ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ राय तलार बुलाय ने । कहे धमकाइ एम ॥ जुल्म
होवे हे रात में । तूं नहीं जाणे केम ॥ १ ॥ राते परण्या नर तणी । चौकस कर पुरमांय
॥ पकडी लावो तेहने ॥ जेणे कियो अन्याय ॥ २ ॥ कोटवाल प्रणाम कर ॥ आयो
निज ठिकाण ॥ सगला मार्ग रोकीया । भागे नहीं को जाण ॥ ३ ॥ सुभट गुप्त पठा
वीया ॥ करो चौकस पुरमांय ॥ राते परण्या नर भणी । दो मुज कर झट लाय ॥ ४ ॥
डंडेरो पीटाइयो । प्रगट करी इनाम ॥ जो हम चोर छिपावसी । तस करस्या वदनाम
॥ ५ ॥ ढाल १५ मी ॥ तावडा धीमोसो पडजे ॥ यह ॥ कर्म गत टाली नहीं जाइ हो ॥
कर्म० ॥ आयु पुन्य प्रबल जिनोका ॥ बाल बांको न थाइ ॥ आं ॥ मदन रयण पाछली
उडीने । आयो बाग मांही ॥ वेणु देव नी कला संकोची । बड कोचर ठाइ ॥ कर्म ॥ १
॥ दिन उगंता सेठ तणे घर आया चलाइ ॥ मदन वदन शाहजी अवलोकी । अश्चर्य अती
पाइ ॥ कर्म ॥ २ ॥ देवी पूजा विध अनोखी । तुज अंग देखाइ ॥ परण्यो दीसे कोइ
सुन्दरी । मदन मुलकाइ ॥ कर्म ॥ ३ ॥ उत्तर कांइ न देतां मदनजी । कामे लग्याइ ॥ ते-

तले तो ढूंढी पीटाती । सेठ सदन आइ ॥ कर्म ॥ ४ ॥ कान लगाइ सुण सेठ । जे रात पर पयाइ ॥ ते हाजर होवो राज कचेरी ॥ छिप्या दंड थाइ ॥ कर्म ॥ ५ ॥ सुणी शाह घबराया तात्क्षिण । मदनने बोलाइ ॥ सज थावो जल्दी तुम जावो । नृपत तेडाइ ॥ कर्म ॥ ६ ॥ कहे मदन घबरा सो ना तुम । वे फीकरे रहाइ ॥ आल नहीं आवा दूं जरा भर । मुज थी तुम तांइ ॥ कर्म ॥ ७ ॥ नहीं करीमें चोरी जारी । तिणरो डर आइ ॥ राज कंन्या में परण्यो राते । अग्रह कराइ ॥ कर्म ॥ ८ ॥ इम सुणी शाह अती घबराया । नि-कल बाहिर भाइ ॥ थारी वात अनोखी सुणने । काल जो थराइ ॥कर्म॥९॥ करी प्रणाम चाल्या मदनजी । कहे भटने आइ ॥ में परण्यो छूं राते जाइ । कंन्या तांइ ॥ कर्म ॥१०॥ सुणी अश्चर्य सहू जन पाया । देखे सिपाइ ॥ रुप तेज बुद्ध साहस पूरो । विस्मयते पाइ ॥कर्म॥११॥ भेद वात कोइ नहीं जाणता । ते अव जाण्याइ ॥ राज कंन्यासे करी अनीती । मोटो ए अन्याइ ॥ कर्म ॥ १२ ॥ पण अचंभो यह छे भारी । जरा न डर पाइ ॥ उपती ने यो हाथे आयो । देखो सुराइ ॥ कर्म ॥ १३ ॥ इम अनेक वातां करता । पकडी लेजाइ ॥ न-गर रक्षक के पासे लाया । वात दी दरसाइ ॥ कर्म ॥ १४ ॥ कोत वाल फिर पूछयो तेहने । तिमहीज सुणाइ ॥ तलवर पण अश्चर्य अति पायो । साचो ए जणाइ ॥ कर्म ॥

१५ ॥ खबर पहोचाइ नृपने पासे । चोर जे पकडाइ ॥ आप कहो तो हाजर लांवा । हु केस ते करांइ ॥ कर्म ॥ १६ ॥ नृप कहे हम ऐसे द्रुष्टका । मुख न देखांइ ॥ परवारो वध स्थान लेजाइ । सूलीदो चडाइ ॥ कर्म ॥ १७ ॥ नृप हुकम जाणी भट पासे । मदनने बन्धाइ ॥ मदन कहे क्यों बन्धो कहो तिहां । चालूहूं भाइ ॥ कर्म ॥ १८ ॥ कणेर माल डाल गलेमे । रतांजणी लगाइ ॥ फूटो ढोल तस आगे बाजे । मशाणे लेजाइ ॥ कर्म ॥ १९ ॥ सहश्रागम जोवा ने मिलिया । देखी विलखाइ ॥ मदन मनमें फीकर न किंचित । रह्या मुख मुलकाइ ॥ कर्म ॥ २० ॥ पुण्य पसाये जोग वण्यो शुभ । ते सुणो चित लाइ ॥ ढाल पन्नरमी ऋषि अमोलिक । कर्म गती गाइ ॥ कर्म ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ तिण अवसर धर्म जय ऋषि । करण चरण गुण धार ॥ मांस २ तपस्या करी । करे आत्म उद्धार ॥ १ ॥ काननमें सदा रहे । मांस लगे करे ध्यान ॥ पारणे आवें ग्राम में । लेइ शुद्ध अन पान ॥ २ ॥ संतोषे मनु देहने । पुनः जावे वन मांय ॥ इम हिज तिण दिन आवीया ॥ मेहंद पुरीने पाय ॥ ३ ॥ गौचरी वक्त हुइ नहीं । जाणी रह्या तरु तल ॥ ज्ञान ध्यान मे रम रह्या । मेरु परे अचल ॥ ४ ॥ तिण अवसर तिण मारगे । मदन सह परिवार ॥ आया अचिंत्य ते पेखतां ॥ दीठो मुनी दीदार ॥ ५ ॥ ढाल १६ मी ॥

श्री जिन आया हो सोरठ देश मझार ॥ यह० ॥ मुनीवर दीठा हो ॥ तब तिहां मदन कुँवार ॥ रोम २ हुल्लसित थया ॥ धन्य घडी महारी हो । दीठा दीन दयाल ॥ चरण धरण मन उमया ॥ १ ॥ तब तलवरने हो ॥ कहे थंभो इण ठाम ॥ दर्शन लेवू गुरु राजना ॥ ते संग रहीयो हो । आया ऋषिवर पास ॥ पहली ही कीजे धर्म काज ने ॥ २ ॥ सविनय वंदन हो । नमन कियो तीन वार ॥ कर जोडी ऊभा रह्या ॥ धन घडी म्हारी हो । अंत समय महाराय ॥ दर्शन दीठाजी सहू पापजगया ॥ ३ ॥ इम सुण वाणी हो । साधु अश्चर्य पाय ॥ ध्यान पारीते इम उच्चरे ॥ अंतः सम्यो भाइ हो । किम दाखो इणवार ॥ किम ए मनुष्य गम किहां चेरे ॥ ४ ॥ मदनजी वीती हो । कही सहू साची जी वात ॥ जेजे पोते अनुभवी ॥ दया सागर हो । पर उपकारी महंत ॥ तेहने वचावा इम उच्चरे ॥ ५ ॥ सुणो कोतवाल जी हो । पामी मनु अवतार ॥ अकृत्य थी वारो आत्मा ॥ किंचित आयु हो । शेर आधा अन्न काज ॥ पापे बुडा वो भ्रातमा ॥ ६ ॥ सहू जीव मांही हो । मोटो पचेन्द्री जाण ॥ मनुष्य हित्या हो जबरी घणी ॥ सर्व समयनो हो । सार दयाही बखाण ॥ जे उपजे हो हलु कर्मी भणी ॥ ७ ॥ अहिंसा लक्षणहो । परम धरम दया होय ॥ मरम पेछाणो धर्म नो ॥ वैर विरोधहो । जीव

नरक में जाय ॥ भारो बान्धीहो मोटो कर्म नो ॥ ८ ॥ जिन रीते बान्धेहो । जीव कर्म अजाण ॥ भोगवे तिम दश भवलगे ॥ ऋणन हीं छूटे हो ॥ कदी बदलो विन दीध । द्रष्टांत जाणो ज्यों भरम भगे ॥ ९ ॥ खन्धक जीवे हो । तेरा क्रोड भव मांय ॥ सराइ कांचरो चीरीयो ॥ साधूने वेसेहो । तस भग्नीनो जी कंत ॥ चर्म उतारी बदलो लीयो ॥ १० ॥ गज सुख माले हो लाख निन्याणु भव मांय । शोक सूत रोट बन्धावीया ॥ सो-मल सुसरे हो ॥ सिर धर्या खेर अंगार । कर्म काटी मोक्ष सिधावीया ॥ ११ ॥ इम घणा छे हो ॥ उदारण शास्त्रने माय । श्री मद्भागवत अध्या तेरमें ॥ मांडव ऋषि हो । टीतोडी मारी कुशाग्र । सूली चडाया भव फेरमे ॥ १२ ॥ जीव हिंशाथी हो ॥ दालिद्री कुष्टि जी थाय । दोनु भवे संकट लहे ॥ इम सुणी कम्पो हो । दो भव दुःखथी हो भ्रात दया लावो हो जो निज हित चहे ॥ १३ ॥ जो कोइ देवे हो । दान सुवर्ण सुमेर । पृथवी भरीने हेमें थी ॥ कोइ छुडावे हो । मरतो एकही प्राण दयांके ते तुल्ये नथी ॥ १४ ॥ जिम निज आत्मज हो । सदा जीवणो चहाय ॥ तिमही ज जाणो सहू प्राणीया ॥ जो पोतापे हो । कधी संकट आय ॥ तो घबरावे तिम सहू जाणीया ॥ १५ ॥ कोइक सहायक हो । होइ संकट वचाय ॥ किसो गिणो हो तुम ते भणी ॥ इम

अंतरमे हो पेखो ज्ञान की द्रष्ट ॥ ए अवसरे आइ अणी ॥ १६ ॥ सुणी उपदेशज हो ॥ चमक्यो चित कोटवाल ॥ दीन दयाल धन्य आपने ॥ भलो वचायो हो । अनर्थथी मुज आज ॥ मरम जाण्योंजी धर्म पाप नो ॥ १७ ॥ जाणी जोइ हो । नहीं करूं मोटो अकाज ॥ धर्म वन्धव मदन माहेरो ॥ आप पसाये हो । दीधो अभय एठाय ॥ उपकार मानां दोनू थाँयरो ॥ १८ ॥ हिवे नहीं करस्यूं हो । कोइ पचेन्द्री की घात ॥ ए प्रतिज्ञा मुजने खरी ॥ आज थी आपने हो ॥ मान्या में गुरु देव । धर्म दयामे देव जिनवरा ॥ १९ ॥ मदन जी लीधा हो । ते वेलां पच्चखाण । पर नारीने जाणू वेनडी ॥ तस मात तातज हो । खुशी थी मुजने परणाय ॥ तेहीज मुज प्रिया खरी ॥ २० ॥ दोनो प्रतज्ञा हो ॥ लीनी इम उत्सहाय । वंदणा करी दोनु भावस्यूं ॥ मदन पसाये हो ॥ समकिती थया कोटवाल ॥ दया धर्मी उत्सहास्यूं ॥ २१ ॥ मुनी पधार्या हो । ग्राममें गौचरी काज ॥ तलवर मदन आगे चल्या ॥ लोकोंक राखण हो । मदन वन्धन मांय ॥ अंतस धर्म प्रेमे मल्या ॥ २२ ॥ धन्य २ मुनीवर हो ॥ करे मोठो उपकार ॥ मरण अणी थी उगारीया ॥ दोइने तार्या हो ॥ ढाल सोलमीरे माय ॥ अमोल वंदे गुण रागीया ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ थोडा दूरा जाय ने । सहू थी कहे कोटवाल ॥ देर घणी

हुइ मारगे। दिन थोडो रह्यो हाल ॥ १ ॥ आज घात नहीं होवसी । देख्यो जासी काल ॥ सहू जावो निज स्थान के । सहू गया होइ खुशाल ॥ २ ॥ कोटवाल कहे मदन थी । जो सद्गुरु प्रशाद ॥ दोनो भणी उगारीया । मेटी सहू विषवाद ॥ ३ ॥ हिवे जावो तुज वेगला ॥ फिरीन आवो ए ग्राम ॥ मदन कहे अवसर विना । नही आस्युं इण ठाम ॥ ४ ॥ ए उपकार थांको हुयो । भवो भव न भूलाय । शक्ती आया फेडस्यूं ॥ इम कही मदन सिधाय ॥ ५ ॥ ढाल ११ मी ॥ उग्रसेन की लली ॥ यह ॥ देखो धर्म पसाय । पुण्य प्रबल जीव सब सुख पाय ॥ आं ॥ कोटवाल खुशी हुइ । गयो निज ठाम ॥ धर्म भेद जाणी तो पायो आराम ॥ देखो ॥ १ ॥ वक्त गुजर्यां मारण । भूले पडी तेह ॥ सत्य जुग दया वंत । कुण लेवे छेह ॥ देखो ॥ २ ॥ धर्म ध्यान नित्य कर । रहे कोटवाल ॥ इम तेहने सुखे तिहां । बीते काल ॥ देखो ॥ ३ ॥ हिवे मदन जी आया । वाग मझार ॥ गरुड निकाली । तस लीयो सुधार ॥ देखो ॥ ४ ॥ हुइ रुवार तब फेरी कल ॥ सग गग गगन मे गयो ते चल ॥ देखो ॥ ४ ॥ राती पड्या थी आया कुँवरी के मेहल ॥ सहेली रूदंती देखी । पूछे खेल ॥ देखो ॥ ५ ॥ तिणरे बीतक सहू । दीयो दरसाय ॥ सुणीने पाछा फिर्या विलखाय ॥ देखो ॥ ६ ॥ होण हार ते तो

टाली । टले नाय ॥ प्रकाश करी जोइ । खाडी में जाय ॥ देखो ॥ ७ ॥ पतो नहीं लाग्यो पाछा । वाहिर आया ॥ श्री पुर भणी चाल्या । मन समजाय ॥ देखो ॥ ८ ॥ पन्न खाती तणे । आया घेर ॥ उतरीया मदन जी । देखे चउ फेर ॥ देखो ॥ ९ ॥ खाती खातणने । ते लागा पांय । दंपती देखी तस । घणा हर्षाय ॥ देखो ॥ १० ॥ आवो २ प्यारा पूत । लीनो उठाय ॥ उरथी चांपी घणो । प्रेम जणाय ॥ देखो ॥ ११ ॥ दिन घणा किहां तुम । लगाया भ्रात ॥ तुम नहीं सांजे आया । हम घबरात ॥ देखो ॥ १२ ॥ रखे गरुड थी पडे । झोकज खाय ॥ ओलंभा दीया घणां । कारीगरजी तां-त्र ॥ देखो ॥ १३ ॥ लाय लागी पेट मांही । दुःख्यो घणो मन ॥ रंग संग छूट्यो । नवी भायो अन्न ॥ देखो ॥ १४ ॥ आज मोटा भाग । पाया तुज दर्शन्न ॥ हृदय कमल हुयो । पेखी प्रसन्न ॥ देखो ॥१५॥ मदनजी कहे । मेहंद पुरगयो मेय ॥ सुखसाहे रह्यो तिहां । लक्ष्मी दत्त गेह ॥ देखो ॥१६॥ राज माहें जातां । मुज लगया संग ॥ राज कन्या देखी मुज । होगइ दंग ॥ देखो ॥ १७ ॥ रात गुप्त परण्यो । प्रात जाणी नृप वात ॥ कोटवाल साथे भेज्यो । करवा घात ॥ देखो ॥ १८ ॥ साधूजी महाराज मिल्या दीनो छोडाय ॥ नाशी ने गरुड चडी आयो इण ठाम ॥ देखो ॥ १९ ॥ साची वात कही ।

मदन विस्तार ॥ कम्पित हृदय ते । पाम्या चमत्कार ॥ देखो ॥ २० ॥ मिठी सीख देवे । नहीं कीजे एहवा काम ॥ इहां इज रहो । सहू पासो आराम ॥ देखो ॥ २१ ॥ सखि माजी मदन जी । रहे तिण घेर ॥ खाती खातीणरी भक्ती । करे बहु पेर ॥ देखो ॥ २२ पहले खंड पूरो हुयो । सतरे ढाल ॥ अमोलख कहे । मदन पुण्य विशाल ॥ देखो ॥ २३ ॥ ❀ प्रथम खान्ड सारांस हरीगीतच्छंद ॥ प्रथम खन्ड सम्मास मंन्डन । वसुपत विदेशे गया ॥ मदन सरीता पूरे वहाड । पद्म म्वासी घर रहया ॥ गरुड चड महंद पुर पतीनी । कंन्या वर केदी थया ॥ मुनी राज साजे ऊगर्या । इत्यादी ए चरित्र कह्या ॥ १ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराजके सम्प्रदाय के बाल ब्रह्माचारी
मुनी श्री अमोलख ऋषिजी रचित पुन्य प्रकाश मदन श्रेष्टी चरित्रस्य
प्रथम खन्डम् समाप्तम् ॥ १ ॥

॥ दुहा ॥ सिद्ध साधूको नमन कर । सिद्ध करनको काज ॥ द्वितीय खन्ड प्रारंभू दो शुद्ध बुद्ध को साज ॥ १ ॥ चंद पुरीमें ऊपन्या । चंद्र प्रभू महाराज ॥ चंदवरण प्रणमू सदा ॥ सारो इच्छित काज ॥ २ ॥ चंचल स्वभावी जे नरा । ते तो स्थिर नहीं रेय ॥ जे करवा निश्चय कियो । उपाय करे ते तेय ॥ ३ ॥ श्री पुरु में खाती घरे । रहे मदन कुँवार ॥ वेठा चेन पडे नहीं । करी कांइक विचार ॥ ४ ॥ फिरवा निकल्या शेहर में ॥ जोवे कोइ उपाय ॥ जेहथी इच्छित सिद्ध हुवे । देखे चित लगाय ॥ ५ ॥ विश्वेश्वर नामे तिहां ॥ कलाचार्य प्रवीन । राज पुल पढावतो । करीने विद्या लीन ॥६॥ पाठकशालाने विषे ॥ छल वहुला आय ॥ मदन तिहां आइ खडा । जोवे द्रष्ट लगाय ॥ ७ ॥ दो विभागते शाळना ॥ पट अंतर में डाल ॥ कुँवरी कुँवर भेगा भणें । राज कुल ना बाल ॥ ८ ॥ तिण में मतलव आपनो । होतो दीठो मदन ॥ चुप चाप फिर आवीया खाती केरे सदन ॥ ९ ॥ ढाल १ ली ॥ दया धर्म पावे तो कोइ पुण्यवंत पावे ॥ यह देशी मदन कुँवर निज कार्य साधनने । तुर्त ही बुद्धि उपावे जी ॥ जिम कोइ ओलखवा नहीं पावे । तिम निज रुप पलटावेजी ॥ मदन ॥ १ ॥ मेला फाटा लीरा लटकता । वस्त्र धार्या निज अंगोजी ॥ राख रज मेल डीले लगाइ । वहु तरह लगायो रंगोजी ॥ मदन

॥ २ ॥ खाती खातण ए तमाशो जोइ । आपसे हँसवा लागा जी ॥ आज किस्यो ए स्वांग बणायो । के भूत झोटिंग कोइ जागाजी ॥ म ॥ ३ ॥ हँसतो मदन कहे हूं गेलो। भूत देख भग जावे जी ॥ वे फिकर आप घर में विराज्यो । करूं जिम लेहर मुज आवे जी ॥ म ॥ ४ ॥ इम कही आया वजार के मांहीं । लोक देख अश्चर्य पाइजी ॥ गम्म जम्यों पूछे नाम तेहनो । ते "मूर्ख" वतलाइ जी ॥ म ॥ ५ ॥ मूर्ख २ सहू बतलावे । ते बोले हर्षाइ जी ॥ हँसे कूदेने ख्याल बणावे । लोक भणी हँसाइ जी ॥ म ॥ ६ ॥ इम भमतो ते गया शाळ में । पंडितसे इम बोले जी ॥ मुजने भणावो तो शाबाशी । कुण बुद्धवंत मुजतोले जी ॥म॥७॥ हँसी आचार्य भणवा बेठायो । दीधी हाथमें पाटीजी ॥ बोल भोले ते कहे हूं भोलो । पाटीपे पांडे चीरांटीजी ॥म॥८॥ पाठक सहू सुण हँसवा लाग्या । सहूने लागे गमतोजी ॥ मूंडे लाग्यो पांडयाजीने । नित्य तिहां आइ रमतोजी ॥म॥९॥ जो कोइ तस काम भोलावे । जाण ने समेज नाहींजी ॥ पांच सात वार तेह थी कहवावे । फिर शिघ्र देवे निपाइ जी ॥ म ॥ १० ॥ तेहथी सहूने प्यारो लागे । देवे जे ते मांगे जी ॥ सहूने सुहाती करे मस्करी । जिम जागे अनुरागे जी ॥ म ॥ ११ ॥ तिणही जाग्या राय नी पुत्री । नित्य प्रत भणवा आवे जी ॥ उपवस्य हुइ जोइ सचिव तनुजने ।

मनडो तास मोवावे जी ॥ म ॥ १२ ॥ नेण सेण करे तस सामें । जोवे धरी ने कटाक्षो जी ॥ सचीव पुत्र देखी शरमावे । मेले नही तेहथी आँखोजी ॥ म ॥ १३ ॥ एकांत मिलवा कन्या चावे । पण नही मिले ते जोगो जी ॥ डरतो नहीं मिले प्रधान पुत्तर । वैम धरसी कोइ लोगो जी ॥ म ॥ १४ ॥ कुँवरी पल देवग ने इच्छो । मनका भाव दरशावा जी ॥ तेतले मदन मूर्ख तिहां दीठो । एहथी करुं मुज चावाजी ॥ म ॥ १५ ॥ ततक्षिण तेहने पास बुलायो । ते शिघ्र दोडी आयो जी ॥ रे मूर्ख तुज नाम किस्यो छे । ते कहे तुम बोलायो जी ॥ म ॥ १६ ॥ किहां रहे? फिरुं ग्राम के मांही । काम न किस्यो मुज तांइ जी ॥ जे मिले ते रहूं हूं खाइ । इम कही हँस्यो तिण ठाइ जी ॥ म ॥ १७ ॥ में कहूं ते काम तूं करसी? । मूर्ख भर्यो हूं कारो जी ॥ तव प्रधान तनुज ने वतावे । इणरी ओलख धारो जी ॥ म ॥ १८ ॥ फिर पूछे तूं भण्यो के ठोटी? । ते कहे हूं तो ठोटीजी ॥ मूर्ख नाम बज्यो मुज तेहथी । सीधी मिलेछे रोटीजी ॥ म ॥ १८ ॥ इम सुणी कुँवरी खुश हुइ मन । डर मिटायो मन केरोजी ॥ विश्वासी लालच देइ तिणने । प्रगट करे मन लेहरोजी ॥ म ॥ २० ॥ में वताया तिनने पेछाण्या । मूर्ख आ हाथ लगायोजी ॥ एहीज छे प्रधान कुँवरजी । दोनो तव शरमायाजी ॥ म ॥ २१ ॥ गुप्त पत्र

तव लिखीयो कुँवरी । हूं मन थी तुमे चाहूंजी ॥ जरूर मिलो एकांते आइ । डरजो मत दरशावूंजी ॥ म ॥ २२ ॥ दीयो मूर्ख ते गुप्त दे कुँवरने । मूर्ख बाहिर आइजी ॥ वांची हरख्यो मनके मांहीं । उत्तर पोते लिख्याइजीं ॥ म ॥ २३ ॥ आइ बेठो प्रधान पुत्रकने । दूजी वातां बणाइजी ॥ तेहतो कछू भेदन पायो । मदन कुँवरी कने जाइजी ॥ म ॥ २४ ॥ निजहातको पत्र समार्प्यो । खोली तिणने वांच्योंजी ॥ में पण चाहूं अवसर मिलस्यूं । कुँवरी नो मन राच्योजी ॥ म ॥ २५ ॥ नेतले छुट्टी हुइ शाळकी । पोताना दफतर लेइ जी ॥ छत्र सहू निज २ घर पहोंता । मदन पुरमें फिरेइजी ॥ म ॥ २६ ॥ बीजा खन्ड की प्रथम ढालो । कही अमोल रसालोजी ॥ देखो मदन कैसो परपंची । करे नव नव ख्यालोजी ॥ म ॥ २७ ॥ दुहा ॥ राज पुत्री तणी लगी । सचीव पुत्रस्यु आँख ॥ ते जाणी पांडे तदा ॥ अंतर द्रष्टी राख ॥ १ ॥ मोटा घरका दोइए । तरुण पणें सम्रमस्त॥ इहां जो अकृत्य करे । होवे नम मुज अस्त ॥ २ ॥ हिवे लालच छोडी करी । सीख देवुं दोइ तांय ॥ तो लज्जा रहे शाळकी । इम निश्चय चितठाय ॥ १ ॥ जुदा जुदा दोन्या भणी ॥ लेगय निज तात पास ॥ भण्यो गुण्यो वताइयो ॥ राय प्रधान हुल्लास ॥ ४ ॥ वक्सीस दी पण्डित भणी । पहोंचाया निज घेर ॥ निज निज स्थाने सुखी रहे ॥

राय प्रधाननी मेहेर ॥ ५ ॥ ढाल दूसरी ॥ पांडव पांचू वंदता । म्हारेमनडामोर्योजी ॥ यह ॥ राय पुत्री गुण सुन्दरी । प्रधान पुत्र वियोगजी ॥ तडफडती अति मन धिये । हिवे किम घणे मिलवा जोग ॥ १ ॥ भविकजन सांभलो । बुद्धि पुण्य मदन कासराय ॥ चतुर नर संभलो । बुद्धि० ॥ आ ॥ रूप वय बुद्धिसारखी । मुजसचीव तनुज हित दायजी ॥ ते विन अन्य गमे नहीं ॥ राज घरे दुःख घणो थाय ॥ चतुर ॥ २ ॥ शोकाने परदा तणो । आसंजोगी दुःख होयजी ॥ वाणिक घर रहतां थकां । मुज हुकम न उलंघे कोय ॥ च ॥ ३ ॥ मनहर वसे सदा मनमे । क्षिणेक नाहीं भूलायजी ॥ ते पण इम चहाता हसे । करुं कांइक मिलण उपाय ॥ च ॥ ४ ॥ बीजो कांइ सूजे नहीं । मूर्खने राखूं दासजी ॥ तिण हाथे पत्र मोकलो । हूं तो पूरुं मह्यारी आस ॥ च ॥ ५ ॥ रजा लेवा तात मानकी । ते तो आइ तव तिण पासजी ॥ प्रणमी पद उभीरही । ते कहे करो इच्छा प्रकाश ॥ च ॥ ६ ॥ साकहे मुज काज करणने । चाहीये छे माणस एकजी ॥ वस्तु मंगावु बजारथी । वली अन्य कार्य छे अनेक ॥ च ॥ ७ ॥ अरीविद कहे तुज चाहीये । हूं राखूंनेतला दासजी ॥ कह तो भेजूं दरबारसे ॥ जे सदा रहे तुजपास ॥च॥८॥ मूर्ख भालो एक नर अछे । अन्न वस्त्रलेइ रेयजी ॥ फरमावोतो राखूं तेहने । तव रायजी

आदेश देय ॥ च ॥ ९ ॥ हर्षी जाइ निजघरे । भेजी दासी शाळरे मायजी ॥ मूर्ख्यो तिहां रमतो होसी । लावो तेह ने इहां बुलाय ॥ च ॥ १० ॥ मदन आयो शाळा वि-षे । राजपुत्री देखी नायजी ॥ पूछे पण्डित थी तदा ॥ राय कुँवरी कहां महाराय ॥ च ॥ ११ ॥ काम करायो मुजथकी । पइसा आथप्या चारजी । आज देवण तणो कह्यो । तेह-थी मिलावो इणवार ॥ च ॥ १२ ॥ पण्डित कहे ते घर गइ । अब नही आवे इण ठाण जी ॥ चिन्ता हुइ चित मदनने । अब कीहां जोवूं ठिकाण ॥ च ॥ १३ ॥ वेठो बाहिर आयने । तब दासी आइ तस पासजी ॥ चल शिघ्र मूर्ख मुजसंगे । बाइ बोलवे रखवा दास ॥ च ॥ १४ ॥ कहे मदन हूं तब चलू । चार पइसा मुजने अपायजी ॥ दासी हूं-कारो भर्यो । साथे हुयो अति हर्षाय ॥ च ॥ १५ ॥ नाचतो कूदतो मरगे । वली उ-डातो धूळजी ॥ चेटी जोइ चिंतवे । बाइ किन चाले लग्या भूल ॥ च ॥ १६ ॥ राय कुंवरी गोखे रही । मूर्ख आवंतो जोयजी ॥ खुशी हुइ मनमें घणी । इण थी कारज म्हारो होय ॥ च ॥ १७ ॥ हर्षे बुलाइ कने लियो । दीया खावाने पक्वानजी ॥ कहे सदा तुम इहां रहो । तुज कह्यो करस्यू प्रमान ॥ च ॥ १८ ॥ मूर्ख कहे हूं रेवस्यू । जो खवासो एसा मिष्टान्नजी ॥ रातरा रहवो नहीं बने । माबापकेरे छे तान ॥ च ॥ १९ ॥

कुंवरी कहे नित्य आपस्यू । माग्यो सरस मे अहारजी ॥ रातरो कांम न ओट्रे । फक्त मुक्तावा समाचार ॥ च ॥ २० ॥ खुशी हुइ मदन रह्यो । करवा इच्छित कामजी ॥ दूजी ढाल दूजा खडकी । कहे अमोल पूगे किम हाम ॥ च ॥ २१ ॥ दुहा ॥ गुणसुंदरी-एकांत मे । मूर्ख ने इम केय ॥ मुज मननी तुजने कहूं । ज्यों मदन दूजो लेय ॥ १ ॥ मूर्ख सोगनखा कहे । नहीं तुम हुकमने वार ॥ कहस्यो सो कहस्यूं सही । नहीं किहा करूं उचार ॥ २ ॥ कुँवरी कहे प्रधान को । ओलखे छे तूं गेह ॥ मूर्ख कहे जाणु अछु । ते दिन दाख्यो तेह ॥ ३ ॥ हां तेहीज कुँवर तणें । छाने जाइ पास ॥ ये पत्र लिखने देवुं । तूं गुप्त दीजे तास ॥ ४ ॥ दो तीन दा समजाइयो । तव भरीयो हूंकार ॥ प्रेम पत्र लिखवा लगी ॥ गुण सुदरी तेवार ॥ ५ ॥ ढाल ३ री ॥ में मुख देख्यो गोडी पारस को ॥यह०॥ देखो चतुरनार मदन परपंचने । करे है कैसो उपाय जी ॥ आं ॥ अहो प्राणेश्वर आप -ि-रह थी । तरशे महारो तन्न जी ॥ परवश पणे हूं घरमे रही छूं । पक्षी ज्यों उडे मन्न जी ॥ देखो ॥ १ ॥ पांड्याजीने वैम पड्याथी । पहोंचाडी मुज गहजी ॥ तुम मुज मन मन्दिरमा रमीयां । कैसे निभावुं नेहजी ॥ देखो ॥ २ ॥ आज लगण दिल खोल बोल णरो । अवसर मिलियो नाय जी ॥ हिवणा बाततो छे कागदथी । सोदे कोइ उपाय

जी ॥ देखो ॥ ३ ॥ दीयो कागद मूर्ख ने हाथे । ते आयो निज गेहजी ॥ बांचीने प्रमानंद पायो । उत्तर इण विध देयजी ॥ देखो ॥ ४ ॥ तुम विरह मुज साल समाणे । खटके हीया मांय जी ॥ तुम उपाव बतावो ते करूं । मुजनें न सूजे उपायजी देखो॥५॥ वंदी खामण कर धर्यो खीशे । नाणो ले कर मांय जी ॥ आयो राज पूत्री नें पासे ॥ कूदतो हर्ष भराय जी ॥ देखो ॥ ६ ॥ कहे मुजने इनाम दीधो ए । बुलायो नित्य एम जी ॥ कुँवरी उमाइ उत्तर किस्यो लायो । छे किस्यो मुज पे प्रेमजी ॥ देखो ॥ ७ ॥ मूर्ख कहे फरेब छे पूरो । कागद दीनो हाथ जी ॥ कह्यो एकांत जाइने बांचजो । मनमें राखजो बात जी ॥ देखो ॥ ८ ॥ प्रेम पत्र ज्यो कुँवरी हुल्लसाइ । खोली हृदय लगाय जी ॥ मुक्तामाल सरीखा अक्षर । मतलवी शद्ब जणाय जी ॥ देखो ॥ ९ ॥ सुभाग्ये मुज एहवा पतिमिले । जन्म जासी सुख मांय जी ॥ मुजने अंतःकरण थी चींवे । शिघ्र करुं हूं उपाय जी ॥ देखो ॥ १० इहां रह्यां मेलो नहीं होवे । रहणों प्रदेशे जाय जी ॥ तोमन मानी मजा भोगवां । पुनर्पि पत्र लिखाय जी ॥ देखो ॥ ११ ॥ प्यारा प्रेम सदाइ नीभाता । मात पिता प्रच्छन्न जी ॥ पर देशे चल सुख भोगवां । दाखवो आप को मनजी ॥ देखो ॥ १२ कर खामण दीधो मूर्ख ने । वांच्यो निज घर आय जी ॥ खुशी होइ ने

उत्तर लिखीयो । मुक्ती अजव मिलाय जी ॥ देखो ॥ १३ ॥ मुज घर सपत तात ने हाथे । पगथी नही चलाय जी । मोज मजा सव धनथी होवे । तेहथी सुणो चित लाय जी ॥ देखो ॥ १४ ॥ युगल अश्व चडवा ने चैये । खरचवा वहुलो धन जी ॥ चलवाको दिन कीजे कायम । किसे स्थान मिलन जी ॥ देखो ॥ १५ ॥ इण प्रश्न का उत्तर कारण । प्यासो छूं इणवार जी ॥ मनसा होवे तो दरशावो । तो होवूं हूं तैयारी जी ॥ देखो ॥ १६ लेइ कागद नवी धोती ॥ आयो कुँवरी पास जी ॥ नाचे कूदे धोतीं वतावे। वक्सीस दीये खास जी ॥ देखो ॥ १७ ॥ और समाचार किस्या तूं लायो । तेतो पहलां वताय जी ॥ तब पत्र मेल्यो मुख आगल । प्रेमोत्सुख हो उठाय जी ॥ देखो ॥ १८ ॥ खोली बांची आनंद पाइ । पाछो देवे जवाव जी ॥ धन तणी तो फिकर न करनी । लास्यू तुरंग सिरे अव जी ॥ देखो ॥ १९ ॥ अन्धारी चउदस प्रहर राते । मिलसां कालीका स्थानजी ॥ मूर्ख पत्र घर आइ वांची । हर्षायो अस्मान जी ॥ देखो ॥ २० ॥ लिख्यो उत्तर तैयार हमेछां । लेइ मोहर कर मांय जी ॥ पाछो कुँवरी पासे आइ । हँसतो दीनार वताय जी ॥ देखो ॥ २१ ॥ पत्र दीयो कुँवरी लियो झवकी । वांची मन उमंगाय जी ॥ उपाय करवा लागी चटपटी ॥ तुर्त दूं साज सजायजी ॥ देखो ॥ २२ ॥

उपाय सहू जमायां मदन जी ॥ ढाल तीसरी मांय जी ॥ दूजा खन्डकी कही अमोलख । आगे सुणो चितलाय जी ॥ देखो ॥ २३ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ गुण सुन्दरी घुड शालथी । अश्व दो उत्तम जोय ॥ लाइ निज घर बान्धिया । मूर्ख हाथे सोय ॥ १ ॥ गुप्त करे नित्य तेहनी । खान पान संभाल ॥ मूर्ख पास करावै ॥ निजरे निज निहाल ॥ २ ॥ हेम जडित रत्ना तणा । गेणा नगदी धन्न ॥ अल्प भार बहू मोलका । संग्रह कियो प्रच्छन ॥ ३ ॥ त्रयोदशी ने पत्र लिख । मूर्ख हाथ पठाय ॥ काल रातका निश्चय । आजो कालिका ठाय ॥ ४ ॥ तुम आज्ञा प्रमाण में । कियो वंदोवस्त सव ॥ पाछो उत्तर दे मदन । देरन म्हारे अब ॥ ५ ॥ ढाल ४ थी ॥ कुँवर अभय बुद्ध को भंडारी ॥यह०॥ मदन जी कलावंत भारी । निज कारज संपदन कारन । करे कैसी हुशीयारी ॥ आं ॥ काली चउदश आइ जिण दिन । मदन जी विचारी ॥ आज निशा अे कुँवरी आ-वसी । कालीक दुवारी ॥ मद ॥ १ ॥ हूं पहली जा रहूं तिहां अव । करी सहू तैयारी ॥ धन्न माल ते बहूलो लासी । मुज कर्मा कहू नारी ॥ म ॥ २ ॥ खाती खातण ने पगलाग्यो । रखजो कृपारी ॥ थोडा दिन में पाछो आस्यू । कास छे इणवारी ॥ म ॥ ३ ॥ पुछ्या अहुम बताइ । आयोग्राम वारी ॥ सूतो सुखे कालीका सरणे । वाट जोतो नारी

॥ म ॥ ४ ॥ मेहल में कुँवरी अवसर जोइ । कीनी तेयारी ॥ गेणो नाणो भया तोवरे । वस्त्र श्रेय कारी ॥ मद ॥ ५ ॥ मरदानी सिरे पाव सज्यो तन । धामर्जा अतिकारी ॥ शस्त्र वस्त्र सज हुइ अश्वपर ॥ कीनी सवारी ॥ म ॥ ५ ॥ गली गुंची गुप्त मार्ग फिरती । आइ गाम वारी । देवालय पासे ऊभी रही । मधुरी पुकारी म ॥ ७ ॥ चालो वल्लभ देरन करीये । पूरो इच्छा सारी ॥ हुकम प्रमाणें आइ ऊभी । नाथजी अवलारी ॥ म ॥ ८॥ सुणी मदन चुप चाप उठीयो । आयो कुँवरी ह्यांरी ॥ रीते घोडे आइ वेठो । वोल्यो न लगारी ॥ ९ ॥ आगल मदन पाछल कुँवरी । चाल्या आगारी ॥ कुँवर मन रींजावण कारण । कुँवरी उच्चारी ॥ १० ॥ दुहा छंद चोपाइ गुढार्थ । कह छे तेवारी ॥ पहेली में प्रश्नोत्तर पूछे । बुद्धि देखाडी ॥ ११ ॥ मदन चिंतवे चुप्प रेवणो । इहां छे गुण कारी ॥ मून रह्यो कछु उत्तर न दे ॥ कुँवरी विचारी ॥ म ॥ १२ निशा घोर तमे दीसे नांही । मार्ग चोर शाहारी ॥ न जाणे कोइ नेडो माणस । सुणे वोली यांरी ॥ म ॥ १३ ॥ औलखी जा कहे राज सचीवने । केकोइ आगारी ॥ तो कोइ लारे आइ पकडले । कर ते क्षुवारी ॥ म ॥ १४ ॥ इम जाणी बुद्धवंत कुँवर ए । रह्या मून धारी ॥ में मूर्खणी करुं छू वड २ । विगर विचारी ॥ म ॥ १५ ॥ नेडो घोडो लेइने पूछे ॥ हुइ जिम

इच्छारी । पाछो जवाप न आपे तबते । रही चुप्प धारी ॥ म ॥ १६ ॥ आज भाग धन म्हारा बाइ । तूठा कर्तारी ॥ बल बृद्धि वय रुप पुरंदर । पाइ भरतारी ॥ म ॥ १७ ॥ कोइक ग्रामें जाइ रहस्यूं । हो स्व इच्छारी ॥ इम अनेक तरंगा उपजे । ज्यों सिन्धूवारी ॥ म ॥ १८ ॥ कब दिन ऊगे कब मुख निरखूं । इम रही उमंगारी ॥ लारे २ अश्व च-लावे । करती विचारी ॥ म ॥ १९ ॥ मदन जी चिंते दिन उगाथी । थासी मजारी ॥ फिरतो घर जावण नहीं पावे । थासे मुज प्यारी ॥म॥२०॥ ढाल ए दूजा खंडकी चौथी । अमोल उच्चारी ॥ विचार दोन्यारा सिद्ध होण को ॥ दिन छे बहुलारी ॥ मदन ॥ २१ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ उभय जणा एकण दिशे । शिघ्रते चाल्या जाय ॥ खाड पहाड गुल्लंघता । साहस मन सवाय ॥ १ ॥ कार्य अर्थी मनुष्य ते । दुःख सुख गिणे न कांइ ॥ दुःख ने सुख करी लेखता । कामी काम उमाय ॥ २ ॥ इच्छा अती मुख दर्श की । कुँवरी ने मन मांय ॥ तेहना दुःख ने दाबवा । जाणे रवी दबाय ॥ ३ ॥ संध्या रंग जब प्रगट्यो । कुँवरी अश्व कुदाय ॥ आगे आइ मुख प्रेक्षती ॥ जोइ मूर्ख धरकाय ॥ ४ ॥ वृक्ष शाख छेद्या थकां । जिम पडे धरणी आय ॥ तिम कुँवरी पडी अश्वथी । वे शुद्ध हुइ मुरछाय ॥ ५ ॥ ढाल ५ मी ॥ आइरे पनोती जरा सिन्ध केरे ॥ ए० ॥ कुँवरी ने

पडी देखनेरे । मदनजी अश्चर्य पायरे ॥ मुजने जोइ मुरजा गइरे ॥ चिंत्यो न मिल्यो इणने आयरे ॥ १ ॥ जोवो करामात मदन कीरे ॥ आं ॥ करे अचिंत्य उपायरे ॥ मूर्ख पणो नहीं पलटणोरे ॥ जिहां लग ए नहीं चाहायरे जो ॥ २ ॥ दिशी विदिशी अवलोकनेरे । जलागोर तंतू भीजोयरे ॥ लेइ आयो कुँवरी कनेरे । मुख पर छांट्यो तोयरे ॥ जो ॥ ३ ॥ पवन जोग सावध हुइरे । बेठी करत विलापरे ॥ हाय दैव किस्यो कर्‌यरे । प्रगट्या पुराकृत पापरे ॥ जो ॥ ४ ॥ किणने धार्यो कुण आवियो रे । एतो मूर्ख सिरदार रें ॥ मनमोहन किहां रह्यारे । जे देता नित्य समाचार रे ॥ जो ॥ ५ ॥ हिवे आगल किम थावसी रे ॥ जन्म कुँवारेइ जायरे ॥ मननी इच्छा मनमें रही रे । हूं गइ पूरी छलाय रे ॥ जो ॥ ६ ॥ कुंवरीनें रोती देखनेरे । मदन बेठो आइ पास रे ॥ मूर्ख पणो भजाव वारे ॥ रोवे ठस्की भरी सास रे ॥ जो ॥ ७ ॥ मूर्खने रोतो देखनेरे । कुँवरीने आइ रीस रे ॥ किसो दुःख तुज जक्त मांरे ॥ जिमतूं पाडे चीसरे ॥ जो ॥ ८ ॥ ठसका भरतोते कहेरे । मुज पण आयो रोजरे ॥ थांरा सुख थी में सुखी रे । तुम दुःख मुजने हो जरे ॥ जो ॥ ९ ॥ कुँवरी कहे रोवुं तुज भणीरे । किम लाग्यो मुज लाररे ॥ दगो करी किहां चल्यो रे । वोल्यो न पहली गींवाररे ॥ जो ॥ १० ॥ ते कहे दगो सगो नहींरे ।

में छूं दुःखीयो अपार रे ॥ में लार किनेके नहीं लग्यो रे ॥ सुणो वीत्या समाचार रे जे ॥ ११ ॥ तुम मुज काले दिन छतांरे ॥ सीख दीवी घर जाणरे ॥ मुज घर ना पूछो सज्जनारे । मैं कह्यो कहाड्यो मुज हाण रे ॥ जा ॥ १२ ॥ सहू लडवा लाग्या मुज थकीरे ॥ कह्यो मुज मुढ शिरदार रे ॥ कोइ स्थान टिके नहींरे । जाव तिहां दे कहाडरे ॥ जो ॥ १३ ॥ कमावा ने कोडी नहीं रे । खावा दोडी आयरे ॥ मुफत में माल आवे नहींरे । निकली इहां थी क्यो नी जाय रे ॥ जो ॥ १४ ॥ कूटी कहाड्यो घर बाहिरे रे ॥ में करतो आर्त ध्यानरे ॥ कालि देवी देवालयरे । सूतो जो एकांत ठाणरे ॥ जो ॥ १५ ॥ फिकर थी नींद आइ नहीं जी । जितरे थे आया तिण जागरे ॥ बोली में थाणी ओलखीरे । पायो सुख अथागरे ॥ जो ॥ १६ ॥ में जाण्यो बुलावा आवीया रे । उठ आयो तुम पास रे ॥ तुम हुकमें अश्व चड्यो रे । साथ हुयो धर हुल्लास रे ॥ जो ॥ १७ ॥ अन्धारामें सूज्यो नही रे । तिण थी आयो इहां चाल रे ॥ तुम दड वड्या खाटी छाछ ज्यूंरे । में नहीं समज्यो सवाल रे ॥ जो ॥ १८ ॥ तो उत्तर किस्यो देवूंरे । में जाण्यो चितारे अभ्यास रे ॥ महारो दगो दीठो किस्यो रे ॥ ते तो करो प्रकाश रे ॥ जो ॥१९॥ कुँवरी सत्य जाण्यो सहू रे । करे अती पश्चाताप रे ॥ थारो अवगुण इणमें नहीं रे ।

म्हारा प्रगटचा पापरे ॥ जो ॥ २० ॥ चोरी करी में मात तात नीरे । तेहथी पामी ए दुःखरे॥ रजक श्वान जिसी थइरे। किणने देखाडू मुखरे ॥ जो ॥२१॥ रात होती तो पाछी जावतीरे ॥ हिवे तो नहीं जवायरे ॥ किस्यो लिख्यो छे मुज दैव मेरे । भोगवूं ते हिवे हायरे ॥ जो ॥ २२ ॥ इत्यादी आरत करेरे । गुण सुन्दरी ते वाररे ॥ बीजा खंड की पांचमीरे । अमोल ढाल उच्चाररे ॥ जो ॥ २३ ॥ ॥ दुहा ॥ गुण सुन्दरी चित चिंतवे । इहां रोयां स्यूं थाय ॥ ए मूर्ख शिर शेवरो । दुःख सुख समजे नाय ॥ १ ॥ गइ वक्त आवे नहीं । करूं आगे को उपाय ॥ नशीवे मूख्यो लिख्यो । मोहन क्यां थी आय ॥ २ ॥ धिक २ महारी बुद्धिने । धिक २ मुज अवतार ॥ छूटश्यो राज सज्जन सहू । हुइ हूं तो निराधार ॥ ३ ॥ हिवे किणहीक ग्राम में । एकांत स्थनक जोय ॥ रही जिंदगी पूरी करूं ॥ इण आधारे मोय ॥ ४ ॥ इम निश्चय करने कहे । चाल जिहो तुज मन ॥ कृत्य कर्म फल भोगवी । इमहीज होसी मरन ॥ ५ ॥ ढाल ६ ठी ॥ वडे घर ताल लागीरे ॥ यह ॥ सुणो भाइ मदन कहानी जी ॥ कला वंत गुणकी खानी जी ॥ आं ॥ चालतां २ आवीयो जी । पुर पयठाण सुस्थान । गढ मढ मेहल थी सोभ तो जी । मनोहर अइठाण ॥ सु ॥ १ ॥ शुभ महोर्त तिहां पेसीयाजी ।राय कंन्या शरमाय

॥ तंतू थी अंग ढांकने । मदन नी लारे जाय ॥ सु ॥ २ ॥ मध्य बजारे आवीयाजी । लोक बहू मिल्या जोय ॥ विके जागा पंच खंडनी । मोल घणो न लेवे कोय ॥ सु ॥ ३ ॥ मदन तिहां उभा रह्या जी । कुँवरी थी पूछे एम ॥ कहो तो ए जोगा लेवू । सब बात-रो पाव सो क्षेम ॥ सु ॥ ४ ॥ कुँवरी मुद्रा दी तेहने जी । बेंची जवेरीने जाय ॥ चाहीता दाम लेइ करी । बच्या ते जमा कराय ॥ सु ॥ ५ ॥ मोल लीवी तेह जायगाजी । शुभ महोर्ते ते वार ॥ छेली मजले सुंदरी ने । सुखथी दी बेठाय ॥ सु ॥ ६ ॥ जे माल कुँवरी मंगाइयो जी । ते तुर्त दीयो लाय ॥ दास दासी राख्या घणा । जे पोताने आ-या दाय ॥ सु ॥ ७ ॥ सवाइ नोकरी दीवी सबने । सहूने एकांते लेय ॥ मधुर वयणे सिक्ष दिये । वली लालच आधिको देय ॥ सु ॥ ८ ॥ काम करजो इच्छा जिसो । रह जो तस हुकमरे मांय ॥ महारी बात तिण आगलें । किंचित ही करनी नाय ॥ सु ॥ ९ ॥ सोगन करा पक्की करी । फिर आया दूजे मजल ॥ बेटक राखी आपणी । जिहां कुँवरी न आवे चल ॥ सु ॥ १० ॥ थापण राखी रकम थी जी । लाया सिरे पोशाक ॥ ग्रहणा वस्त्र ओपता जी । देव सरीखा पाक ॥ सु ॥ ११ ॥ दोय दास साथे लेइ जी । आय जवैरी वजार ॥ मौकाकी दुकान देखने । भाडे लीवी ते वार ॥ सु ॥ १२ ॥ गादी

तकीया जमा इया जी ॥ राख्या मुनीम हौंशार ॥ माल घणो खरीदियो । सहू शोभा करी अेकार ॥ सु ॥ १३ ॥ महिमा फेली शेहर मे । कोइ आया जवेरी कुँवार ॥ छे नहुला धननो घणी ॥ वली निघा वाज सिरदार ॥ सु ॥१४॥ वहोत कला में सीखीया जी जवेरातनी पेछाण ॥ तिण जोगे पुन्य प्रबलेजी जमी चोखी दुकान ॥ सु ॥ १५ ॥ एकही मुद्रा करोडनी जी । धन कमी नहीं कोय ॥ द्रव्य तिहां सर्व संपजे जी । पोलो हाथ जग मोहय ॥ सु ॥ १६ ॥ दुकान थी आइ निज घरे जी । दूजी मजलके मांय ॥ सेठ तणो वेश परहरी । लेवे मूर्ख स्वांग वणाय ॥सु॥ १७ ॥ पंचम महाले कुँवरी आगे। अचाणक पडे आय ॥ गेलायां करे घणी । पोते हँसने तास हँसाय ॥ सु ॥ १८ ॥ भोजन मांगे पेट हणी ने । ते धरे सन्मुख लाय ॥ शाक पेहली आरोग ले । पाछे रोटी जावे खाय ॥ सु ॥ १९ ॥ घडी दोघडी तिहां रही ॥ इम ख्याल करे बहू पेर ॥ दोडी ने नीचा उतरी ते । आछा वस्त्र ले पेहर ॥ सु ॥ २० ॥ उत्तम भोजन खाय ने जी । आइ चलावे दुकान ॥ उत्तम ज्ञान की पुस्तकां जी । देवे कुँवरी ने आन ॥ सु ॥ २१ ॥ कहे तुमतो तुमारे घरे नित्य । पढता ऐसी किताव ॥ तेहवी मिलती लाइ दी । हूं तो नहीं समज्यूं साव ॥ सु ॥ २२ ॥ यों बात भोल पे डालने जी । कुँवरी ने कामें

लगाय ॥ इम सुखे काल अति क्रमें । ढाल छट्टी अमोलक गाय ॥ सु ॥ २३ ॥ ❀ ॥
दुहा ॥ तिण अवसर कोइ देशथी । जोहरी माल वहू संग ॥ आया ते पयठाण पुर । व्यवसाये धर रंग ॥ १ ॥ मक्र केतू मही पाल ने । नमी निजराणो कीध ॥ सत्कारी नृपतेहने । योग्य स्थान तस दीध ॥ २ ॥ माल बतायो भूपने । मुक्ता फल वहू तैज ॥ विविध वरण अवलोकी ने । बृध्यो नृपनो हेज ॥ ३ ॥ दो दाणा नृप छांटीया । पूछे तेह नो मोल ॥ सवा क्रोड तिण उच्चर्यो । अटल एक ही बोल ॥ ४ ॥ अश्चर्य पाइ राजवी । ग्राम जवैरी बुलाय । देशां मोल चौकस करी । जे सहू जन ठेहराय ॥ ढाल ७ मी ॥
तावडा धीमो सो पडजे ॥यह०॥ दीपती मदन नी पुन्याइ जी॥दी०॥मुक्त फळकी साची कीमत। करी सभामांही॥ आं ॥ सामंत साथे शाह बुलाया । जवेरी कह वाइ ॥ नृप भेटने सज्ज थया सहू । मनमें हर्षाइ ॥ दी ॥ १ ॥ मदन अने पुरना सहू जोहरी । हिल मिल चाल्याइ ॥ आया सभामें नम्या नृपने । नम्र अति थाइ ॥ दी ॥ २ ॥ सत्कारी सहू नें वेसाया । तिहां योग्य ठाइ ॥ मोती ताशक धरी तस सन्मुख । ते दोइ मिलाइ ॥ दी ॥ ३ ॥ इण मेंथी उत्तम जोडी एक । कहाडी दो मुज तांइ ॥ साचो मोल विचारी कीजो । सहू बुद्ध मिलाइ ॥ दी ॥ ४ ॥ मोटा २ जोहरी वेठा । करवा परीक्षा तांइ

॥ दूरा वेठां जोवे मदन जी । सुक्ष्म द्रष्ट ठाइ ॥ दी ॥ ५ ॥ तेहीज दोनो मोती छांव्या । दीना भूप तांइ ॥ उत्तम थी उत्तम ए श्वामी । हम निजरे आइ ॥ दी ॥ ६ ॥ जे नृप पहलां छांव्या हूंता । तेहीज दीठाइ ॥ खुशी हुइ शावासी दीनी । कीमत कहो भाइ ॥ दी ॥ ७ ॥ परिक्ष कहो छे दोनू सरीखा । के कांइ जुदाइ ॥ दीर्घ विज्ञाने जोया सहू जन । इणपर दरसाइ ॥ दी ॥ ८ ॥ ए दोनू सम सीप तनुज छे । फरक नहीं कांइ ॥ सवा क्रोडनी कीमत दीसे । दीजे जै इच्छाइ ॥ दी ॥ ९ ॥ मदन जी वेठा मून धरी ने । जरा न वोल्याइ ॥ विन वोलायां उत्तम नरतो । दाखे न चतुराइ ॥दी॥१०॥ इम जोइ राजेश्वर चिंते । ए दीसे सुगुणाइ ॥ इन की मती सहू थी हे वेगली । पूछां इण तांइ ॥ दी ॥ ११ सहू सेठने पूछे भूधव । ये कोइ नवाइ ॥ किहां थी आया किस्यो करे छे । वोले किम नाहीं ॥ दी ॥ १२ ॥ बृद्ध जवैरी कहे नरमाइ । प्रदेशी आयाइ ॥ जवैरातरो धंदो इणरो । हिवणा जम्याइ ॥ दी ॥ १६ ॥ बुद्धवंत धनवंत इण सम । पुरमे न देखाइ ॥ कम सवाली छे शरमालू । तिणथी न बोल्याइ ॥ दी ॥ १४ ॥ धराधव तब दोनो मोती । मदन ने दीधाइ ॥ करी परिक्षा कीमत दाखो । जे तुमें जणाइ ॥ दी ॥ १५ ॥ मदन कहे सहू बृथ पुरुष है । साचीज फरमाइ ॥ में बालक अधिको सी

जाणू । भे दन इण मांही ॥ दी ॥ अने बूधने आगे बोलतां । अशातना थाइ ॥ सहू फरमावे तेहीज कीजे । ये मुज इच्छाइ ॥ दी ॥ १७ ॥ इम सुणी राय शंकित हुवो । भेद्ज दीखाइ ॥ अती अग्रह कर पूछे नरवर । कहो जे जणाइ ॥ दी ॥ १८ ॥ जुदा क पाले जुदी हे बुद्धी । न मोंटा छोटाइ ॥ सहू जवैरी कहे कहोजी । खुशी हस सगलाइ ॥ दी ॥ १९ ॥ सहू नी रजाले कहे मदन जी । मुज जे सुज्याइ ॥ एक ए मोती छे जी अमोलक । दूजा निकमाइ ॥ दी ॥ २० ॥ सुणी रायजी अश्चर्य पाया । ढाल सात मांह ॥ ए तो मनुष्य दीसे करमाती । अमोल ऋषि गाइ ॥ दी ॥ २१ ॥ दुहा ॥ सुणी वाणी इम मदनकी । सहू शाह भया उदास । ईर्षा लाइ इम कहे । आपो जमावे खास ॥१॥ बात कियां थी स्यूं हुवे । दो प्रत्यक्ष वताय ॥ ए अमुल्य ए कोडीनो । कीमत किण गुण पाय ॥ २ ॥ मदन कहे साची कही । एमाविवनीं रीत ॥ वालकने सुधारवा । धारे नारेली प्रीत ॥ ३ ॥ आज्ञा लेइ आपकी । मे प्रकाशी वात ॥ तैसेही कर दाखवुं । सहू समक्ष साक्षात ॥ ४ ॥ निकमो मोती वींदता । फूटसी ए तत्काल ॥ तीजा पडसां रेत छे । जोवो सहू कृपाल ॥ ५ ॥ ढाल ८ मी ॥ मथुरा आवी साधवी । हेक सजनी॥यह॥ इम सुण वाणी मपन नी ॥ हेके साजने ॥ सहूजन अश्चर्य पाय ॥ वात करे ज्ञानी जिसी।

हेके राजन ॥ जोयां परतीत आय ॥ के चतुरां सांभलो ॥ हेके साजन ॥ मदन बुद्धि प्रत्यक्ष ॥ आं ॥ १ ॥ अती चतुर सिकलीगरा ॥ हेकेसा० ॥ राजा लिया बुलाय ॥ कहे छेदो इण मोतीने ॥ हेकेसा० ॥ जिम फूटवा नहीं पाय ॥ के ॥ चतु ॥ २ ॥ तो इनाम देस्यूं घणो ॥ हेकेसा० ॥ कारीगर हर्षाय ॥ विविध मशाला लगायने ॥हेकेसा०॥ सार उपर चडाय ॥ केच ॥ ३ ॥ चतुराइ कीनी घणी ॥ हे० ॥ पण खंड्यो तत्काल ॥ सिकलीगर मुख ऊतर्यो ॥ हेके ॥ हर्षा तच नृपाल ॥ केच ॥ ४ ॥ ले रूपानी थालीमें॥ हेकेसा० ॥ जोया पड उघाढ ॥ चालू तृतियों पडमै ॥ हेकेसा० ॥ निकली देखी काहाड ॥ के च ॥ ५ ॥ अश्चर्य पाया सहूजणा ॥ हेकेसा० ॥ नृप कहे शाबास ॥ साचा जवेरी ए सही ॥ हेकेसा० ॥ सभाजन करे प्रकाश ॥ केच ॥ ६ ॥ राजेश्वर कहे सदनने ॥ हे केसा० ॥ अश्चर्य मोटो एह ॥ रेती किम मोती विषे ॥ हे केसा० ॥ दाखो कारण तेह ॥ केच ॥ ७ ॥ नरमाइ मदन भणे ॥ हे केसा० ॥ अवधारो महाराज ।' मुक्ताफल नी उत्पती । हे केसा ॥ होवे पांच जगाज ॥ केच ॥ ८ ॥ चक्रवती राजा तणी ॥हेकेसा॥ पत्न श्री देवी होय ॥ पुत्र न होवे तेहने ॥ हे केसा ॥ मोती प्रसवे सोय ॥ केच ॥ ९ ॥ जातीवंत ज वंशनी ॥ हे केसा ॥ गांठ में मोती थाय ॥ तीजा उत्तम नागनी ॥हेकेसा॥

फण में मोती पाय ॥ लेच ॥ १० ॥ मयंगैल उत्तम मस्तके ॥ हेकेसा० ॥ मोतीनो भं
डार ॥ ए चउस्थान किंचित मिले ॥ हेकेसा० ॥ इण हीज जक्त मझार ॥ केच ॥११॥
पंचमी जग प्रसिद्ध छे ॥ हेकेसा० ॥ सीप तणी पेदास ॥ तिणमें पण जाती घणी ॥
हेकेसा० ॥ करी ग्रन्थ प्रकाश ॥ केच ॥ १२ ॥ हिवे इणमें रेती तणो ॥ हेकेसा० ॥का-
रण देउं बताय ॥ स्वांत नक्षेत्र वसती ॥ हेकेसा० ॥ सीप जलवर आय ॥ केच ॥१३॥
तिण अवसर कोइ पक्षीयो ॥ हेकेसा० ॥ सागर वर उडजाय ॥ घेन वूठे तिण उपरे ॥
हेकेसा० ॥ नीचे पडे रडकाय ॥ केच ॥ १४ ॥ ते झेले कदा सीपडी ॥ हेकेसा० ॥ तेह-
नो मोती थाय ॥ पक्षी पाँखनी रज ते ॥ हेकेसा० ॥ मोती पडमें रहाय ॥ केच ॥१५॥
इत्यादी संजोग थी ॥ हेकेसा० ॥ इणमें रहगइ रेत्त ॥ हे ए उत्तम जातीनो ॥हेकेसा०॥
पण संग विगड्यो पेत ॥ केच ॥ १६ ॥ वींध्या विन ए सोभतो ॥ हेकेसा० ॥ वींद्या
प्रगट्या गुण ॥ गुरु गमे जे विद्या ग्रह ॥ हेकेसा० ॥ तेहीज जगमें निपुण ॥केच॥१७॥
इण कारण इण मोतीने ॥ हेकेसा० ॥ में निकमो कह्यो नाथ ॥ रूप देखी म राचीये ॥
हेकेसा० ॥ परखी जे गुण जात ॥ केच ॥ १८ ॥ क्षमा करीयो सहू जेष्ट जन ॥हेकेसा०॥
लोपी आपकी वाण ॥ सहू कहे धन्य छे तुम भणी ॥ हेकेसा० ॥ कीधी खरो पहछान॥

के ॥ १९ ॥ नानी वाय यह चातुरी ॥ हेकेसा० ॥ निज कुलमें अवलोक ॥ खुशी हुवा हम अति घणा ॥ हेकेसा० ॥ वधसी आगल जोख ॥ केच ॥ २० ॥ मदन दिस बुद्धि करी ॥ हेकेसा० ॥ सहूने वश में कीध ॥ वीजे खंड ढाल आठमी ॥ हेकेसा० ॥ कही अमोल भली विध ॥ केच ॥ २१ ॥ दुहा ॥ प्रमुदित नरवर भणें । अहो श्रेष्टी सिरदार ॥ एक तणी परिक्षा करी ॥ दूजानी करो उचार ॥ १ ॥ अमुल्य ए किण कारणें । इसो एमा सीं गुण ॥ ते हिवे शिघ्र प्रकासीये ॥ अहो जवैरी निपुण ॥ २ ॥ मदन कहे राजा भणीः । हूं यस गुण बताय ॥ हिवणा तो अवसर नहीं । चँउ संजोग जव थाय ॥ ३ द्रवे रूप घट नीर भर । क्षेत्र उंच अछांय ॥ काले शरद पूनम निशी । भावे पुज्य सवाय ॥ ४ ॥ सूणी भूपत खुशी हुवा । मिलसी सहू संजोग ॥ ठेरावो वैपारी ने ॥ देइ सहू सुख भोग ॥ ५ ॥ ढाल ९ मी ॥ भवीयण भाव सुणो ॥ यह ॥ राजाजी ने मदन जवैरी । दोन्यारी प्राती घणेरी हो ॥ पुण्यना फल मीठा ॥ वहूवार मदन ने बुलावे ॥ ए कीते बात वणावे हो ॥ पुण्य ना फल मीठा ॥ १ ॥ इम करतां शरद पूनम आइ । तब नृप कहे जवैरी तांइ हो ॥ पुण्य ॥ मुका फल गुण देखाडो । तुम मनची कूंची काहाडो हो ॥ पुण्य ॥ २ ॥ कहो ते वस्तु मंगावु । कहो ते साज जमावु हे

॥ पुण्य ॥ कहे जोहरी आजरी राते । मोती गुण थासी विख्याते हो ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ तांबा ना पत्रा मंगाइ । देवो चांदणी उंची मां वीछाइ हो ॥ पुण्य ॥ रज मेल कलंक हरीजे । बरोबर शुद्ध जाय पाथरीजे हो ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ सहू मध्ये रजत घट मेलो । स्वच्छ सूघाट उदक भरेलो हो ॥ पुण्य ॥ इम सामग्री जमवावो । इष्ट पूरसी आपणो उमावो हो ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ जेजे मदन बताइ । राय ते ते सहू कराइ हो ॥ पुण्य ॥ तब अस्त थया दिन राया ॥ नृप मदन ना मन उमाया हो ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ दोनो आया आकाशी मांइ । सहू दरवज्जा बंध कराइ हो ॥ पुण्य ॥ सुखासन त्या विछाइ ॥ दोनो आनंद घर निसीजाइ हो ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ बुद्धी गुण बृधी मांड्यो ख्यालो । जेहथी प्रमाद को होवे टालो हो ॥ पुण्य ॥ पूनम पूरा चांद प्रकास्या । भूमी व्यास तेम सहू न्हास्या हो ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ जिम २ शशी उंचो आवे ॥ तिम २ सौम्य प्रकाश बडावे हो ॥ पुण्य ॥ क्रांतीजमी मोती पे आइ । दोन्यारी एक जोती थइ हो ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ तब मोती बधतो देखावे । जिम २ इन्दू उच्चज आवे हो ॥ पुण्य ॥ मध्य अंतालिखे जब आवे । मोती कुम्भ प्रमाणे देखावे हो ॥ पुण्य ॥ १० ॥ तब तिण माहे थी पाणी छू-टो । जाणे बेवण लागो घडो फूठो हो ॥पुण्य॥ ताम्र पत्र पे बहाये । तेहने शीतल

वायू फेलायो हो ॥ पुण्य ॥ ११ ॥ तव मदन जी अवसर जोइ । ते घडो सरका ली
धोइ हो ॥ पुण्य ॥ तब मूल रुपे मोती थइयो । नृप मन अश्चर्य भइयो हो ॥ पुण्य ॥
१२ ॥ तव जवैरी कहे राय तांइ । रात्र बहू गइ निद्रा आइ हो ॥ पुण्य ॥ दोनो सूता
तिण ठामो । सुखे निद्रा आइ जामो हो ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ निशा वितिक्रंत थाइ ।
दिन कर तव प्रगटाइ हो ॥ पुण्य ॥ जागृत हुवा ते जामो ॥ मदन अने नरश्वामो हो
॥ पुण्य ॥ १४ ॥ जोवे चांदणी मांइ । सव पीली २ देखाइ हो ॥ पुण्य ॥ नरवर
अश्चर्य पाया । ताम्र पल लिया करम यां हो ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ उत्तम कंचन जोइ ।
अति हियडे हर्षित होइ हो ॥ पुण्य ॥ मदन कहे नरमांइ । एतो एकही गुण देखाइ
हो ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ एहवा गुण छे एमा सोला ॥ ते किम जाणे नर भोला हो ॥
पुण्य ॥ में सीख्यो गुरु पासे । ते आप आगे करूं प्रकाशे हो ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ पांचो
इन्द्रि ना रोग गमावे । स्थावर जंगम विष न्हशावे ॥ हो पुण्य ॥ पांचो स्थावर उपद्रव
टाले ॥ क्षुद्री जीवनो जोर न चाले हो ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ स्त्री शत्रु मोहवावे । सहू इष्ट
कार्य सिद्ध थावे हो ॥ पुण्य ॥ ते कारण अमोलक एह । बहू पुण्य संचित जन लेह हो
॥ पुण्य ॥ १९ ॥ इण कारण इने गुप्त राख्यो । भरी सभानें भाव न भाख्यो हो ॥

पुण्य ॥ इणने बहू यत्ने संग्रही जे । ए भेद न किण ने दीजे हो ॥ पुण्य ॥ २० ॥ कीमत मांगे तेहथी दूनी दीजे ॥ वली तेह कहे सो कीजे हो ॥ पुण्य ॥ पण इण ने मती गमावो । दुर्लभ्य ए जगमां पावो हो ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ ए दूजे खन्डे सुखदाइ ॥ ढाल नवमी अमोलिक गाइ हो ॥ पुण्य ॥ देखो बुद्धि मदन जी केरी । आगे पुण्याइ फेले घणेरी हो ॥ पुण्य ॥ २२ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ मदन जवैरी जे कह्या ॥ चन्द्र कान्तका गुण ॥ ते सहू धार्या राय जी । जाण्या मदन निपुण ॥ १ ॥ मंत्री ऐसा चाइये । म्हारा राज मझार ॥ तो फिर मुज कोइ कामकी । फीकर न रहे लगार ॥ २ ॥ इम निश्चय मनमें कियो । बृधी अधकी प्रीत ॥ सीक दीवी मदन भणी ॥ वसीया ते नृपचित ॥ ३ ॥ बुलाया शिघ्र आवजो । छे तुम थी बहु काम ॥ राते जे कोइ दुःख हुयो । तेक्षमजो गुण धाम ॥ ४ ॥ नमन करीने मदन जी । पहोंता निज दुकान ॥ खुशी हुवा मन में घणा । जे फली निज जबान ॥ ५ ॥ ढाल १० मी ॥ तूं हीर याद प्रभू आवेरे दर्दमें ॥ यह ॥ मदन कुँवर जी पुण्य का दरीया । निर्मल बुद्धि से यशः विस्तरीया ॥ आं ॥ पूरी मंडले नृप शभा भराइ । सचीव सामंत सहू भेला करीया ॥ म ॥ १ ॥ सभा मंडपे आछा विछोणा विछाया । और ठाठ पाट सहू श्रृंगारीया ॥ म ॥ २ ॥ सहू सुणी उमाया झट पट

आया । आज किसे काम दरबार भरीया ॥ म ॥ ३ ॥ यथा योग्य बेठा आसण आइ नृपती सोभे ज्यूं सिंह केसरीया ॥ म ॥ ४ ॥ देव सभा सम ते रही दीपी । राज बल तेज जो अैरीं जाय डरीया ॥ म ॥ ५ ॥ मोटा सन्मान थी मदन बुलाया । सामा भेज्या हर्य घेवरीया ॥ म ॥ ६ ॥ ठाट पाट जाइ लाया जवैरी तांइ । ते पण आया हर्ष उरभरीया ॥ म ॥ ७ ॥ नृपादि सहू आदर दीधी । नम्र वयणे अति सत्कारीया ॥ म ॥ ॥ ८ ॥ पोताने पास नृप मदन बेठावे । न बेठे जवैंरी उभा नमी ठरीया ॥ म ॥ ९ ॥ राय कहे म्हारे तीन सो प्रधानो । पण इण सम नही एक अवतरीया ॥ म ॥ १० ॥ तिण कारण ए तीन सो उपर । प्रधन पद्का दीधा जरीया ॥म॥ ११ ॥ मोहर स्मरपी उपर बेठाया । रायजी हुकम में मदन अनुसरीया ॥ म ॥ १२ ॥ मदन कहे हूं नहीं पद जोगो । पण हिवे किम जावे ना उचरीया ॥ म ॥ १३ ॥ जैसा बढाया वैसाही चडाया । निभालेसी नृप होइ मुज दरीया ॥ म ॥ १४ ॥ नमन करी बेठा संचीव आसने । सज्जन जन ना हृदय ठरीया ॥ म ॥ १५ ॥ हर्षा नन्दकी बटी वधाइ । दुशमण नो हदय आगे जरी या ॥ ग ॥ १६ ॥ मुक्ता फल ना वैपारी बुलाया । पास बेठाया नृप प्रेम घणा धरीया ॥ म ॥ १७ ॥ कहो मोती नी कीमत भाइ । नीती बंत तब इम उच्चरी-

या ॥ म ॥ १८ ॥ एकनी कीमत सव क्रोड दीनार । शिघ्र दीरावो अब जावां हम घ-
रीया ॥ म ॥ १९ ॥ राय कहे फूटा मोतीको कांइ लो । ते कहे फूटो गयो तेतो कचरी-
या ॥ म ॥ २० ॥ सत्यवंत संतोषी जोइ राय हर्ष्या । मदन ने कहे देवा वो जोग
चरीया ॥ म ॥ २१ ॥ तब सचिव कहै सुणो विदेशी भाइ । अमुल्य मोतीना न जाय
दाम भरीया ॥ म ॥ २२ ॥ थे निकल्या छो विदेशे कमावा । घरको धन तो न जावे
धरीया ॥ २३ ॥ फूटा जे मोती हम लीया फिर । तिणरी ही कीमत देस्या हम भ-
रीया ॥ म ॥ २४ ॥ पांच क्रोड सोनैया दीलाया । दाण माफ सहू तेहना करीया
॥ म ॥ २५ ॥ मार्ग खावण खरच सहू दीना । अति हर्ष गया ते निज घरीया ॥ म ॥
२६ ॥ ढाल दशमी अमोल ऋषि गाइ । इण गुणें मदन ना यश परसरीया ॥म॥२७॥
॥ दुहा ॥ पुण्य पसाये मदन जी । पाया निर्मळ बुद्ध ॥ राजा प्रजा मोहीया ॥ कीर्ती
पसरी शुद्ध ॥ १ ॥ पुरपयठाण ना नृप नो । पाया पद प्रधान ॥ प्रिती बधी घणी राय
की । देख मदन गुणवान ॥ २ ॥ क्षिण अंत्र चावे नहीं । करे एकांत सहवास ॥ स-
म्वाद केइ प्रकारना । करे बुद्ध प्रकाश ॥ ३ ॥ निरभी मानी मदन जी । ढोंग बधायो
नाय ॥ वैपार वक्त वेपारी हो । नित्य व्यवसाय चलाय ॥ ४ ॥ वणे प्रधान प्रधान वक्ते ।

दे धर्मी ने साहाय ॥ इम सुखे काल अति क्रमे । आगे अश्चर्य थाय ॥ ५ ॥ ढाल ११
मी ॥ आघा आम पधारो पुज्य ॥ यह० ॥ सुण जो होणहार गत भाइ । ते अचिरथ
गुजरे आइ ॥ आं ॥ तिण अवसर वसंत ऋतु आइ । वन वाडी फुलाइ ॥ कंद्रप मिल
अहलाद वधावा । वन क्रिडाने जाइ ॥ सुण ॥ १ ॥ राजा राणी सामंत महेली ओर
पुर का नर नारी ॥ हिल मिल आया वागके मांही । कर भोजन तैयारी ॥ सुण ॥ २ ॥
गोला रोटा वाटी वाफला । घ्रुने पूर्ण भरीया ॥ तेज मशाले दाल झोलकी । चतुराइ
स्यूं करीया ॥ सुण ॥ ३ ॥ ओर केइ पका नज लाया । जवेरी आरा वणाया ॥ गटकाइ
लोटा भर २ ने ॥ केफ मगनज थाया ॥ सुण ॥ ४ ॥ रंग गुलाल उडाइ गेरी । मिल
वरोवरीका साथे ॥ चंग मृदंग झालरी वाजे । गावे धमाल लटकाने ॥ सुण ॥ ५ ॥इम
रमंता नशोज उतर्यो । क्षुघ्या नव प्रगटाणी ॥ माल मशाला जीम्या सहु मिल । मन
मान्याः उरताणी ॥ सुण ॥ ६ ॥ लेइ तंवोल वेठा एक स्थाने । मिल सहेली परवरीया ॥
वुद्ध विनोद की करी मस्करी । मधुर गायन उच्चरीया ॥ सु ॥ ७ ॥ मक्र केतू भूप केतू-
मतिराणी । रूप सुन्दरी वाइ । रूप रंभा दीठा अचंभा ॥ सुर नर ने उपजाइ ॥ सु ॥
८ ॥ सुकुमाल वाला मोहन माला । सहेली संग संचरीया ॥ नाचे गावे नवरंगे । हेत

हियामें भरीया ॥ सु ॥ ९ ॥ सहेल्या बिचथी रायनी पुत्री । अदर्श थइ ते वारो ॥ स-
हेल्या नहीं देखंती कुँवरी । विस्मय पाइ अपारो ॥ सु ॥ १० ॥ बाइजी २ सहू पुकारे।
उत्तर नहीं कछु पायो । आस पास सहू ढूंढी जागा । तो पण नहीं देखायो ॥सु॥११॥
घबराइ तब सहू सहेली । हाहा कार मचायो ॥ दोडो २ बाइ किहां गइ । केइक रूदन
करायो ॥ सु ॥ १२ ॥ के तुमति राणी आइ दोडीं । आतुरी आइ पूछे ॥ किहां गइ
रूपी मुज प्यारी । रोवानो कारण स्यूं छे ॥ सु ॥ १३ ॥ हम सहू मिल इहां खेलती ।
विचमें हुंती बाइ ॥ रमती २ अदर्श हो गइ । एकाकी न देखाइ ॥ सु ॥ १४ ॥ नजाणे
पृथवीमें पेठी । को आकाश उडाइ ॥ गइ होवे तो ठाम बतावां । अश्चर्य येहो आइ
॥ सु ॥ १५ ॥ घबराइ मुरछाइ राणी । दास्या भागी जाइ ॥ अर्ज करी राजाजीं आ-
गल । तिहां अनर्थ निपज्याइ ॥ सु ॥ १६ ॥ रंगमें भंगथयो तिण अवसर । सहु दोडी
तिहां आइ ॥ किहां गइ बाइ पतोन पाइ । सहू रह्या घबराइ ॥ सु ॥ १७ ॥ गुप्त प्रसि-
द्ध जोया सहु स्थानक । ग्राम जंगल के मांइ ॥ स्वार प्यादा घणा दोडीया । मिली
नहीं किण ठाइ ॥ सु ॥ १८ ॥ आर्त रोद्र ध्यान करता । सज्जन पुरजन फिरीया ।
निज २ घर सहू चुप आबेठा । चिंताए मुख उतरीया ॥ सु ॥ १९ ॥ राणी ते समजाइ

राजा । हूं तस पतो लगास्यूं ॥ चिंता फीकर नहीं कीजे किंचित । थोडा दिने मिलास्यू ॥ सु ॥ २० ॥ धीरज धारी सहू परिवारी । मेहल मे आइ रहीया ॥ ढाल एक दश अमोल भाखी । कैसा अश्चर्य भइया ॥सु॥ २१ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ दूजे दिन मक्रकतू नृप। कियो दरबार तैयार ॥ मदन अने सामंत सहू । बेठा हो होंशीयार ॥ १ ॥ बीडो फेर राय जी । हे कोइ नर बड वीर ॥ लावे कुँवरी माहरी । कर उद्यम धर धीर ॥ २ ॥ आधो राज तेहने देउं । परणावूं ते बाल ॥ उपकार ए भूलूं नहीं । जावत जीवित काल ॥ ३ ॥ ऊठो २ सूरमा । कीजे एतो काज ॥ बेठा खाइ चाकरी । धरीये तेह तणी लाज ॥ ४ ॥ मजलस मे बीडो फिरे । सहू रह्या नीचो जोय ॥ खबर नहीं किहां गइ । लाय किहां थी सोय ॥ ५ ॥ ढाल १२ मी ॥ श्री रामजी नारन पाइहो ॥ यह० ॥ उत्तम थी बचन न क्षमा ही हो ॥ सूराते सुराइ जणाइ हो ॥ आं ॥ इम जोइ राय असुरत्त हो कहे । किहां गइ सहू नी सुराइ हो ॥ उंचा किम कोइ नही जोवो । किम रह्या छो मुरझाइ हो ॥ उत ॥ १ ॥ काम जरासो न होवे तुम थी । तो किम करशो लडाइ हो ॥ एकही हुकम म्हारो नहीं मानो । सीधी रोटया खाइ यो ॥ उत ॥ २ ॥ वक्त उपर कोइ काम न आया । पुन्नी हमारी गमाइ हो ॥ तिण विन राज पाट ए सायबी।

सुनी मुज देखाइ हो ॥ उत ॥ ३ ॥ मैं जाणतो बहू सज्जन म्हारे । म्हारे कमी नहीं काइ हो ॥ बक्त पड्या सहूना गुण जाण्या । मतलबी सहूनी सगाइ हो ॥ उत ॥ ४ ॥ इत्यादी नृप वयण सुणीने । सभा सहू अकलाइ हो ॥ निजथी काम न होतो देखी । पर पर रह्या गुडाइ हो ॥ उत ॥ ५ ॥ तुम प्रकाशी, तुम गुण वंता । तुम छो नृपने नेडाइ हो ॥ तुमने नृपने प्रिती घणेरी ॥ तुम जागीरी पाइ हो ॥ उत ॥ ६ ॥ इम कर तां बहू वक्त विहाणी । तव ज्यूंना मंत्री अकुलाइ हो ॥ इर्षा लाइ मदनने उपर । दाबी इण मुज ठकुराइ हो ॥ उत ॥७॥ चिंते इणने दुःखमें न्हाखु । राय राख्यो छे फुलाइ हो ॥ मुज थी एह मरोड़ घणी करे । पण अव थासी सीधाइ हो ॥ उत्त ॥ ८ ॥ उठ कहे सहू थी अपणी सभामें । मदन जवैरी सवाइ हो ॥ बलमें पूरा काम में सुरा । मुख्य प्रधान कहाइ हो ॥ उत्त ॥ ९ ॥ ए बुद्ध वंता पत्तो लगासी । निश्चय लांसी बाइ हो ॥ येही छे इण काम ने जोगा । जावे तो काम थाइ हो ॥ उत्त ॥ १० ॥ इम सुणी मदन जी समज्या । ए बोल्या इर्ष भराइ हो ॥ मुज ने दुःखमें न्हाख्या चावे । उंचा एम चडाइ हो ॥ उत्त ॥ ११ ॥ पण आपने तो सीधी लणी । काम जिन थी सिद्ध थाइ हो ॥ खम्भ ठपकारी उभा थइ या । नृपने सामे आइ हो ॥ उत्त ॥ १२ ॥ राय जी पण

समज्या मनमें। करे जवैरीनी इर्षाइ हो ॥ परदेश भेजे दुःख में न्हाखवा। पण धन्य जवेरी
तांइ हो ॥ उत्त ॥ १३ ॥ नामही लेता तत्क्षिण उभा थया । डरन जरा लायाइहो ॥
छे बुद्ध वंता काम सिद्ध करसी । जोइ ए आगे सीं थाइ हो ॥ उ ॥ १४ ॥ मुजरो करन
कहे मदनजी । श्वामी दो आज्ञाइ हो ॥ थोडा दिनमें कुँवरी सोदी । लाइ देस्यू तुम
तांइ हो ॥ उत्त ॥ १५ ॥ नरपत भाखे तुम पर देशी। इहां आइ ने रह्याइहो ॥ एदुक्का-
रज तुम सुख इच्छक । रजा किम देवाइ हो ॥ उत्त ॥ १६ ॥ माता पिता पण दूरा तु-
म थी । साथे छे खटलाइ हो ॥ एकली छोडी किम जवाय । विचारो मन मांइ हो
॥ उत्त ॥ १७ ॥ नमन करीने मदनजी बोले । सहु नी छे कृपाइ हो ॥ मुजने ऐसो काम
भोलायो । निश्चय थी ते थाइ हो ॥ उत्त ॥ १८ ॥ आप सहू के आसिरवा-
दे । अने मुज पुन्य सहाइहो ॥ तिणथी दुःख जरा नही थासे । सव संकट विरलाइ हो
॥ उत्त ॥ १९ ॥ इम सुणी राजाजी हर्षाइ । कहे धन्य २ तुम तांइ हो । महारी सभामें
तुमही मर्दछो । प्रत्यक्ष गुण दीठाइ हो ॥ उत्त ॥ २० ॥ शिघ्र जावो बाइ ले आवो । छे
प्रमेश्वर सहाइ हो ॥ धार्यों कार्य सिद्ध तुम थासी । मुज मन इम दरशाइ हो ॥ उत्त ॥
२१ ॥ इम सुणी हर्षाया मदनजी। ढाल द्वादश मांइहो॥ पुण्य वंतने सहू काम सुलभ ॥

ऋषि अमोलख गाई हो ॥ उत्तम॥२२॥⊛॥दुहा॥ रजा लेइ नृपात तणी । करी लुली प्र-
णाम ॥ बहु परिवारे परिवर्या । आया हाटे ताम ॥१॥ भोलवे मूनीमने । राखजो पूरी संभाल ॥
जोगा जोग बिचारने। लेजो देजो माल ॥ २ ॥ हूं राजानी रजा थकी । जावूंछूं परदेश
॥ पुती लास्यू रायनीं । करी चौकस धरी रेश ॥ ३ ॥ मुनीम कहे अश्चर्य करी । एतो दु-
क्कर काम ॥ बुद्धी बल साहस करी । पूर्ण करजो श्वाम ॥ ४ ॥ फिकर न कीजो पाछली
। सवाइ जोजो आय ॥ हाट बंदोबस्त सहू करी । फिर निज सदने जाय ॥ ५ ॥ ढाल
१३ मी ॥ उग्रसेणकी लली ॥ यह ॥ सुणो सभा चित लाय । मदन कुँवरी ने इम सम-
जाय ॥ आं ॥ आया हवेली निज औरी मांया ॥ मूर्खको तब रुप वणाय ॥ सुणो ॥१॥
फटी चिंदी का लीरा लटकाय । माथे बांधी बाल विखराय ॥ सुणो ॥ २ ॥ एक वांध
फाटी एक मूल नाय । फाटी अंगरखी घाली तन माय ॥ सुणो ॥ ३ ॥ ज्यूंनी फाटी
टोपी लीवी पेर । सरीरे लगायो धूल राख केर ॥ सुणो ॥ ४ ॥ इत्यादी भेष सज
दरपण जोय । श्रृंगार माहे खामी नहीं कोय ॥ सुणो ॥ ५ ॥ शिघ्र चड आया पांचमें
मजल । कुँवरी सामें दाखवे अपणी अकल ॥सुणो॥६॥हड २ हंसता पड्या सामे जाय ।
करी मुरखाइ कुँवरी ने हंसाय ॥ सुणो ॥ ७ ॥ अटकतो कहे सुणो अश्चर्य बात । आज

एक आयो मुज ग्राम को भ्रात ॥ सु ॥ ८ ॥ तिण पूछयो इहां तूं आयो केम । किण घर रहे । तुज सरीरनें खेम ॥ सु ॥ ९ ॥ में कह्यो म्हारा तात दीनो निकाल । रीस आइ इहां आइ । रहूं खुश हाल ॥ सु ॥ १० ॥ एक राज कंन्या पासे रह्यो छुं नोकर । चोखा वस्त्र अन्न भने आपे पेटभर ॥ सु ॥ ११ ॥ फिर ते मुजसे कहे थायरे वियोग । मात तात थायरा करे घणोसोग ॥ सु ॥ १२ ॥ एक वार तिणाथी तूं मिल जरूर जाय । थोडीक सातातस जीवने थाय ॥ सु ॥ १३ ॥ में कह्यो पूछस्यूं हूं मालकणीने जाय । ते हुकम देवसी तो मिलस्यूं हूं आय ॥ सु ॥ १४ ॥ तिहां थकी दोडी आयो तुमारे पास । आपनी जे इच्छा ते कीजे प्रकाश ॥ सु ॥ १५ ॥ कहो तो हूं जाइ मिलु कुटंब ने तांय । थोडो काल तिहां रही मिलुं पाछो आय ॥ सु ॥ १६ ॥ इम सुण कुँवरी ने नेणे आयो नीर । एक तूंही सेंदो मुज छोड जावे तीर ॥ सु ॥ १७ ॥ महारी उम्मर किम पूरी होसी एम । कर्मे चण्डालणी में किहां पाउं खेम ॥ सु ॥ १८ ॥ मूर्ख नि-श्वास न्हांखी आश्रू नेणे लाय । सोगन खा कहे पाछो आस्युं इण ठाय ॥ सु ॥ १९ ॥ कुँवरी कहे मिल पाछो आवजो सही । महारी वात किणने केवणी नहीं ॥ सु ॥ २० ॥ नहीं करूं वात कोइ आस्यूं पाछो सही ॥ वचन देइने चाल्या मदन जी तहीं ॥ सु ॥

२१ ॥ नीचे आइ सहू दास दासी ने बुलाय । विश्वासी कहे:एक थारो महारी वीय ॥
सु ॥ २२ ॥ थोडा दिन काज हूं तो जावूं प्रदेश । वंदोवस्त पाछलो राखजो विशेष ॥
सु ॥ २३ ॥ बाहीर कोइ तरह जाणे नहीं पाय । घर मांहे अन्य नहीं आवे चलाय ॥
सु ॥ २४ ॥ महारी कोइ वात जणा जो कदी मत । हुकम में रहजो दुःख न धर चित
॥ सु ॥ २५ ॥ छे महींना की पहला दी नौकरी चुकाय । नीती सर रह्यां देस्यूं इनाम
हूं आव ॥ सु ॥ २६ ॥ इम पुक्त वंदोवस्त कीनो मदन ॥ शुभ महोर्त चाल्य छोड सदन
॥ सु ॥ २७ ॥ हलका भार को लियो द्रव्य घणो लार ॥ जिम सहू सुख रहे विदेश
मझार ॥ सु ॥ २८ ॥ ढाल त्रयोदश अमोलख ऋषि कहे । पुण्य पसाय जीव सब
सुख लहे ॥ सुणो ॥ २९ ॥ ❀ द्वितीय खन्ड सारांस हरीगीत छंद ॥ दूजे खंड श्री पुर
पतिनी । करामाते कंन्या हरी ॥ पुर पयठाणे जवैरी होइ । मुक्ताफळ परिक्षा करी ॥
पयठाण पुर राजाकी कंन्या सोधवा वीडो गीरी ॥ चालीया आगे जवैरी । अमोल एती थइ
चरी ॥ २ ॥ परम पुज्य श्री कहान जी ऋषि जी । महाराज के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्म
चारी मुनी श्री अमोल ऋषि जी रचित पुण्य प्रकाश मदन कुँवर चरित्रस्य द्वितीय
खन्डम समासम् ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

॥ दुहा ॥ तिर्थङ्कर सिद्ध साधू को । वरम्वार नमस्कार ॥ शांती नाथ स्मरण करी । करूं तिउ खन्ड उच्चार ॥ १ ॥ मदन चरी छे मनहरी । अधिकाधिक सवाद ॥ ते सुणीयों श्रोता गणों । छांडी सहू विखवाद ॥ २ ॥ सत्य वडो संसारमें । आराधे पुण्यबंत ॥ प्राणांते हटे नहीं । तस होवे सहू कंत ॥ ३ ॥ पुर पयठाण थी मदन जी। करी सहू वंदोवस्त ॥ चाल्या आगे पीदेश में । पुण्य महूर्त परसस्त ॥ ४ ॥ आय ग्राम ने वाहीरे । सिद्ध करण ने काज ॥ वाणिक वेश छिपाइयो । वण्या जोगी महाराज ॥५॥ भगवा वस्त्र पहरीया । गले रुद्राक्ष की माल ॥ अनेन भभूती ओपती । काप्या सिर का बाल ॥ ६ ॥ झोली घाली बगल में । कर में सोटी सहाय ॥ कम्वल खन्धे लटकती । शिर शिव तिलक लगाय ॥ ७ ॥ विन आडंबर शांत चित । फिरे भूमंडल मांय ॥ ग्रामा रण्य शिखरी गीरी । ढूंढता सहूजाय ॥ ८ ॥ साधू रुपथी तेहने । हटकी न सके कोय ॥ वात घणी हाथे लगे । आदर सहू जगे होय ॥ ९ ॥ ढाल १ ली ॥ जंबू द्वीपरे भर्त वखाणीयेंरे ॥ यह ॥ मदन कुँवर जी बुद्धि आगला जी ॥ कुँवरी सोदण काम ॥ जोगी रुपे हो पृथवी उल्लंघाता जी । रहता शुभ जोइ ठाम ॥ मदन ॥ १ ॥ वहू पुर वहू स्थान चौकशं घणी करे जी। किहांइ पतो नहीं पाय ॥ तो पण साहस रति नहीं खन्डीयो

जी ॥ आगे आगे जी जाय ॥ म ॥ २ ॥ आगल जातां ते मार्ग भूलीया जी । पडया कंतार में जाय ॥ पन्थ विनाही ते दिशानुसार थी जी ॥ जोता पन्थ क्रमाय ॥ म ॥ ३ ॥ पहाड खाड तिहां मोटा आवीया जी । द्रुम दट महीतल सर्व ॥ कुश काँटाने तिक्षण काँकरा जी । लागे तन तिक्ष पर्व ॥ म ॥ ४ ॥ उतंग चडीने ते नीचा आवता जी । जोता गुफा झाडी मांय ॥ वनेचर खेचर क्षुद्री जीवडा जी । बहुला द्रष्टी जी आय ॥ म ॥ ४ ॥ आगल चौगान वन रलीया मणो जी । सुन्दर वृक्ष उतंग ॥ ताल तमाल न आंबू जांबू वाजी । दाडिम लिंबू सू चंग ॥ म ॥ ६ ॥ रायण केला सेंतूत ने आम लीजी । सहू भरीया फल फूल ॥ गेहरी सुखदा शीतल छांयडी जी । लागे मन अनुकुल ॥ म ॥ ७ ॥ धराजडी छे पंच रंग पहाणमें जी । केइ आसण आकार ॥ मध्य पुष्करणी वावी सोभती जी । मकराणा में ते सार ॥ म ॥ ८ ॥ निर्मळ नीर स्फटिक समाजिहां भर्यो जी । कमोदनी चौ फेर ॥ मध्य कमल बहू पद्म ने पुंडरी का जी । बहू रंग दीपे छे लेहर ॥ म ॥ ९ ॥ साता कारी ठाम ते जाण ने जी । दंड कमंडल ठाय ॥ थाक उता-रण तिहां मज्जन कियो जी । तुर्त ते बाहिर आय ॥ म ॥ १० ॥ वस्त्र धोइ सुकाइ पेहरीया जी । फिर कर तिणही ज स्थान ॥ मीठा पाका निरोगा फल लियाजी । ते

पुष्करणी पे आन ॥ म ॥ ११ ॥ रूचता भोगवी जल आरोगीयोजी । पाजे वेठा मन रंग ॥ चिंते इण वने ए किम नीपनाजी । वावी वृक्ष सूरंग ॥ म ॥ १२ ॥ झाडी झूडी स्वच्छ ए भोमीकाजी । कोण करी इण ठाय ॥ निश्चय संचरे इहां कोइ मानवीजी । पण ते किम न देखाय ॥ म ॥ १३ ॥ इम तरंग अनेक मन उपजेजी । चारोंही कानी ते जोय ॥ तेतले उतंग शिखरी थी उतरतोजी । जोगी देख खुश होय ॥ म ॥ १४ ॥ प्रचन्ड अंग तस उंचो छे घणोजी । रौम घणा तस अंग ॥ दाढी मूंछ जटा जुट तेहनेजी ॥ लंगोटी वान्धी छे तंग ॥ म ॥ १५ ॥ लोह कडो कर खडावां पेरमेजी । सिन्दूर तिलक लीलाट ॥ मृतिका घटले जलने कारणे जी । आवे तेहीज वाट ॥ म ॥ १६ ॥ मदन पद्मासण तिहां जमाइयोजी । नाशाग्र द्रष्ट ठाय ॥ प्रमेष्टी नाम जपतो मन विपेजी । ध्यानी मुनी ज्यों थयाय ॥ म ॥ १७ ॥ तेतले जोगी ते तिहां आवीयोजी । देखी मदन को जी रूप ॥ तरुण वयें यह वैरागी गुण निलोजी । ध्यानस्त शांत स्वरूप ॥ म ॥१५॥ इम विचार तो पेठो वावी मेंजी । जल डोहली कियो अंगोल ॥ वस्त्र धोतो ते ईश्वर भक्तीनाजी । गुह्य श्लोक रह्यो वोल ॥ म ॥ १९ ॥ मदनजी चिंते एकांत एरन्नमेंजी । ए एकलो किम रेय ॥ साचो जोगी के कोइ परपंची योजी । आवे मन संदेह ॥म॥२०॥

चौकस करणी जी इण साथे रही जी । इम कियो द्रढ विचार ॥ तीजा खन्डे पहली ढाल एजी । अमोल आगे चमत्कार ॥ म ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ जल घट भर जोगी तणा । आयो वावी बार ॥ ध्यान तजी तत्क्षिण उठी । मदन कियो नमस्कार ॥ १ ॥ सष्टांग दंडवत कर । कहे आज धन्य भाग । जंगल में मंगल भयो । साचो तुम वैराग्य ॥ २ ॥ अब चरण छोडू नहीं ॥ करस्यूं श्वामी सेव ॥ कृपा करी सेवक पर ! जल घट दो मुज देव ॥ ३ ॥ गुरु कृपा थी पामस्यू । आतम अनुभव ज्ञान ॥ पारस संग सुवर्ण वणु । पूर्ण जोग निधयान ॥ ४ ॥ इत्यादी करे विनंती । छोडे नहीं चरणार ॥ जोगी देख अश्चर्य भयो । यह विनीत सिरदार ॥ ५ ॥ ढाल २ जी ॥ गोपी चंद लडका ॥ यह० ॥ श्रोता गण सुणीये । मदन तणी करामात ने ॥ आं ॥ देख विनय भक्त भावना सरे । जोगी कहे सुणों बच्चा । हम जोगी एकांत में रहते । संग नहीं करते कच्चा हो ॥ श्रोता ॥ १ ॥ तूं कौण ह्यां कैसे आया । कहां जाणे की आसा ॥ यह जोगी के प्रश्न, सुण के मदन करे प्रकासा हो ॥ श्रो ॥ २ ॥ बाल वैरागी में हू श्वामी । गुरु नहीं मुज माथे ॥ फिरता २ आ निकलियो । अब रहूंगा तुम साथे हो ॥ श्रो ॥ ३ ॥ सत्य वचन हे श्वामीजी का । जोगी एकांत रहणा ॥ गृस्थी का कदा संगन करणा । ज्ञान ध्यान

चित धरणा हो ॥ श्रो ॥ ४ ॥ आप जैसे असंग्गी देखके । पाया में आणंद ॥ गुरु जी मुज एसे चाहीये । सदा सुखदाइ सम्बन्ध हो ॥ श्रो ॥ ५ ॥ जोगी कहे हमतो नहीं रखते । चेला मेला कोइ ॥ और जोगी हे बहोत जक्त में । करना गुरु तूं जोइ हो ॥ श्रो ॥ ६ ॥ मदन कहे सामे आइ गंगा । छोड दूर कोण जावे ॥ चैला तो गुण देख के करणा । मठ देखण मन चावे हो ॥ श्रो ॥ ७ ॥ एक दो दिन सेवा कर के । कहोगे तो फिरजास्यूं॥ पुण्य जोग मिल्यो संत समागम। मूक्यो जाय न महास्यूं हो ॥ श्रो ॥ ८ ॥ जल कुम्भ ए मुज ने आवी । मठ लगे पहोंचावूं ॥ महारे सामे आप उठावो । मैं तो घणो शरमावु जी ॥ श्रो ॥ ९ ॥ बल जोरी घट लियो छोडाइ । करी घणी नरमांइ ॥ जोगी देख के अश्चर्य पाया। चिंते करणो कांइ हो ॥ श्रो ॥ १० ॥ यो बाल ने वली इकेलो । करेगा क्या उत्पातो ॥ राते इसका मन समजा के । कल करूंगा जातो हो ॥ श्रो ॥ ११ ॥ महा विषम झाडी में चाल्या । मोठा शैल मझारे ॥ आगे पाछे फिरता आया । एक गुफा ने द्वारे हो ॥ श्रो १२ ॥ जोगी आगल माहे पेठो । मदन जी तस लारे ॥ पंक्तीया थी नीचा उतर्या । महान्ध कार मझारे हो ॥ श्रो ॥ १३ ॥ अन्ध गुफा में आगे चाल्या । थोडी दूरे जातां ॥ प्रकाश देख्यो चौगान आयो । सुन्धर सदन देखा

ता हो ॥ श्रो ॥ १४ ॥ घटार्यों मटार्यों निर्मळ । आरस पहाणें जडीया ॥ विछायत वि
छी तिहां निर्मळ । आसण वहू विध पडीया जी ॥ श्रो ॥ १५ ॥ तिणपे जा जोगीजी बे
ठा । कहे मदन से तारे ॥ जल घट इस ओटेपे धरदे । मदन धरदीयो जारे हो ॥
श्रोता ॥ १६ ॥ एकांते जा बेठा मदनजी । सरकत २ गुडीया ॥ कपट निद्रा ये घोरण
लागा । महीन वस्त्र पांघरीया जी ॥ श्रो ॥ १७ ॥ जोगी बेठो इष्ट पूज वा
। गोफणी थां नीकाल्या ॥ घंटा वजाइ गंध लगाइ । शंख पूर माहें घाल्या जी
॥ श्रो ॥ १८ ॥ मदनजी चिंते ए रचना । अश्चर्य कारी देखाइ ॥ रुप जोगीको काम
भोगीका । क्या ये ढोंग लगाइजी ॥श्रो॥ १९ ॥ ऐसी विषम जाय ए रचना । किण वि-
ध इण जमाइ ॥ किस्यो करेळे एकांते रही । देखूं रहने छाइ हो ॥ श्रौ ॥ २० ॥ एतो
जोगी है करामाती। सिद्धी साधन हारो । देखा आगे किस्यो करे ए । मौको मिल्यो ए
सारोजी ॥ श्रों ॥ २१ ॥ तंतूछेद माहें स्यूं मदनजी । देखी रह्या तमाशो ॥ तीजा खन्ड
की ढाल दूसरी ॥ अमोल करी प्रकाशोजी ॥ श्रोता ॥ २२ ॥ ❋ ॥ दुहा ॥ पूजन करी
निवृत हुयो । जे जोगी तेवार ॥ क्षुध्या लसी कारणें । भोजन करे तैयार ॥ १ ॥ एक
गुफा पट खोलने ॥ आटो दाल निकाल ॥ घृत सक्कार दी सहू ॥ तिन तणी ते काल

॥ २ ॥ दाल बाटीने चूरमो । कियो तदा तैयार ॥ घृत पुरित सजी साजते । देखी करे विचार ॥ ३ ॥ दो हमतो प्रत्यक्ष छां । करवा भोजन भोग ॥ किम निपाइ तीन की । देखूं ए संयोग ॥ ४ ॥ तीजाने देख्या विना । जाग्रत होणों नाय ॥ इम निश्चय कर सो रह्या । जो वो तीजो कुण आय ॥ ५ ॥ ढाल ३ जी ॥ आउखो टूटा ने सान्धो को नहींरे ॥ यह ॥ भुक्त तैयार हुयां थकांरे । जोगी मदनने जगायरे ॥ उठरे भोजन करी लहरे । सरल सादे बतलायरे ॥ १ ॥ पत्तो लागो कुँवरी तणोंरे ॥ आं ॥ मदन मन हर्षायरे ॥ उठायो उठे नहींरे । रह्यो नींद घुररायरे ॥ पत्तो ॥ २ ॥ उठाइ बेठो करेरे । ततो पड २ जायरे ॥ वड २ करे जोगी मनथीरे । एतो दारिद्रि देखायरे ॥ पत्तो ॥ ३ ॥ मांथा फोड इण थी कियांरे । कांइ न निकस सी साररे ॥ जड मुंढ ए कोइ जंगलीरे । उठसी मनथी कोइ वाररे ॥ पत्तो ॥ ४ ॥ भोजन शीतल क्यों करूंरे । लेवूं शिघ्र थी भोगरे ॥ उगयाँ ते मूकी देउंरे । इण पर कर मन्योंगरे ॥ पत्तो ॥ ४ ॥ उठी गयो गुफा विषेरे । जोवे मदन द्रष्ट पसाररे ॥ गुफा माहें थी सुणावीयोरे । जाणे रोवे कोइ नाररे ॥ पत्तो ॥ ६ ॥ अरे दुष्ट मुज छीवे मतीरे । क्यों लाग्यो म्हारे लाररे ॥ प्राण लेवण इच्छा दिखेरे ॥ नहीं करूं तुज संग प्याररे ॥ पत्तो ॥ ७ ॥ दूर रहे **म्हारा** थकीरे । जो जरा म्हारी

पीठरे ॥ हूं छू राजरी पुत्री कारे । तूं तो दीसे छे कोइ धीठरे ॥ पत्तो ॥ ८ ॥ जोगी
कहे मीठासथीरे । क्यो करे निकम्मो सोगरे ॥ भोजन तो भोगी लहेरे । जराक मुज
सामो छोगेरे ॥ पत्तो ॥ ९ ॥ दो मांस तुज इहा भयारे । अजु ओलख्यो मुज नांयरे ॥
मुज सम जगमां को नहींरे । विद्याबल में सवायरे ॥ पत्तो ॥ १० ॥ एक वार प्रसन्न
हुइरे । जो तूं म्हारा विलासरे ॥ तुज कृपाको तिरस्यों अछूंरे । पूर २ म्हारी आसरे ॥
पत्तो ॥ ११ ॥ चल तूं पहली जीमलेरे । इम कही लायो तस बाररे ॥ ते जोगीने अण
छीवतीरे । कर्यों थोडो सो अहाररे ॥ पत्तो ॥ १२ ॥ जोगी दूर बेठो थकोरे । वांतां
केइ बणायरे ॥ इम करसी तूं किहां लगेरे । कोण तुज सहायक थायरे ॥ पत्तो ॥ १३ ॥
ताप किणरी एहवी जगारे । मुज आज्ञाविन आयरे ॥ मोत जिणरी आइ लगीरे । ते
मुज सामे थाय ॥ पत्तो ॥ १४ ॥ कुँवरी कहे फूले मतीरे । जगमाहें घणा रतनरे ॥ मदन
जवैरी सारखारे । करसी महारा जतनरे ॥ पत्तो ॥ १५ ॥ फूल्यो फूल कुमलावइरे ।
तिम तुज आयो अंतरे ॥ मिलावो महारा कुटम्ब नेरे । जो तूं सुख चावंतरे ॥ पत्तो ॥
१६ ॥ निश्चय कियो मुज मनथीरे । करणो जवैरी भरताररे ॥ ते छोडी हूं अन्यनेरे ।
मरणांत नहीं इच्छनाररे ॥ पत्तो ॥ १७ ॥ ज्यादा जोर जो तूं कररे । तो प्राण तजु इण

वाररे ॥ जोगी कहे मरे मतीरे । तुज खुशी करूं कोइ वाररे ॥ पत्तो ॥ १८ ॥ पुनर्पि मेली गुफा विषेरे । सिल्ला मजबूत लगायरे ॥ विचार कंइ करता थकारे । अहार पेट भरखायरे ॥ पत्तो ॥ १९ ॥ बच्यो अहार पात्तल विषेरे । मेली दियो गुडालरे ॥ जाणे ए उठ खावसीरे । सदन पास ते डालरे ॥ पत्तो ॥ २० विद्याके प्रभावसेरे । उड गयो जोगी अकासरे । तीसरा खन्ड की तीसरीरे ॥ ढाल अमोल प्रकाशरे ॥ पत्तो ॥ २१ ॥ ❁ दुहा ॥ जोगी गया तदनंतरे । मदन हुवा सावधान ॥ हर्षित चित में चिंतवे । हुयो धार्या प्रमाण ॥ १ ॥ जेहने जोवा नीकल्यो । ते कुँवरी इण ठाम ॥ हिवे लइने चालीये । फिर पोताने गाम ॥ २ ॥ क्षुधा पण लागी अछे । छे ए भुक्त तैयर ॥ अन्न तणो आदर करूं । सुकन यह श्रेकार ॥ ३ ॥ जीमी ने तप्त हुइ । कुँवरी लेवा काम ॥ आया गुफाने बारणे । सिलपट नेडा जाम ॥ ४ ॥ लंबा कर करवा लग्या । मत २ शद्व सुणाय ॥ चमकी कर पाछौ लियो । जोता को न जणाय ॥ ५ ॥ ढाल ४ थी ॥ चार पहेर को दिन होवेरे लाल ॥ यह ॥ फिर तिहां छातथी वोलीयोरे लाल । भले पधार्या मदने शहो । जवैरी ॥ मार्ग जोतां तुम तणोरे लाल । वीत्या घणा दिनेश हो ॥ जवैरी ॥ १ ॥ काज विचारी कीजीयेरे लाल ॥ आं ॥ देखी पहलां निज जोर हो । जवैरी ॥ तो सगलो

सिद्ध थावसीरे लाल । नहीं तो बधसी और हो ॥ ज ॥ का ॥ २ चमकी मदन जोव उपरे लाल । वहू रंग पोपट देख हो ॥ज ॥ बेठो छे पींजरा विषरे लाल। रुपवंत सो वि- षेश हो ॥ ज ॥ का ॥ ३ ॥ मुजने किम ए ओलखेरे लाल । किम बोले नर भाषहो ॥ ज ॥ पूछी ने निर्णय करुंरे लाल । छेपशू के नर खास हो ॥ ॥का ॥ ४ ॥ पड्या देंख विचार मेरे लाल । फिर तोतो कहे एम हो ॥ ज ॥उतावल करासि तुमरे लाल ॥ तो थासो मुज जेम ॥ ज ॥ का ॥ ५ ॥ मदन कहे तुम कोन छोरे लाल ॥ किम हुया छो कीर हो ॥ ज ॥ ना किम कहो पट खोलतारे लाल। किम ओलखोमुज वीर हो ॥ ज ॥ का ॥ ६ ॥ फिर कहे पुर पहठाणनो रे लाल । दुरजय पूत भद्र सेण हो ॥ ज ॥ बीडो फिर्यो कुँवरी लाण कोरे लाल । में ते जोयो नेण हो ॥ ज ॥ का ॥ ७ ॥ तुम तिहां बीडो झेलीयोरे लाल । में उमायो वरवा नार हो ॥ ज ॥ थाणे आगल भागीयोरे लाल । पामी इहां ते कुँवार हो ॥ ज ॥ का ॥ ८ ॥ गुप्त रही जोइ कलारे ! जोगी गयो तिण वार हो ॥ ज ॥ रुप सुन्दरी ने लेववारे लाल । उघाड न लागो द्वार हो ॥ज॥ का ॥९॥ कर चेंटचा सिल्ला थकीरे लाला। खेंच्या नहीं छूटंत हो ॥ ज ॥ तब पस्तावो अती थयोरे लाल। फंदं आइ फंदत हो ॥ ज ॥ का ॥ १० ॥ सांजे जोगी आवीयारे लाल । मुज ने चेंटचो

जोय हो ॥ ज ॥ असूरत्त क्रोधे भयोरे लाल । कहे चोरी ऐसी होय हो ॥ ज ॥ का ॥ ॥११॥ जाणें नहीं तूं मुज भणीरे लाल । आयो लेवा माल हो ॥ज॥ मार मारी मुजने घणीरे लाल में जाण्यो आयो काल हो ॥ ज ॥ का ॥ १२ ॥ विनवणी कीनी घणीरे लाल । नहीं आइ तस पीरे हो ॥ज॥ तत्क्षिण विद्या प्रभावथीरे लाल।मुज ने बणायो कीरे हो ॥ज॥ ॥ फ ॥ १३ ॥ मंत्र थकी मुज बान्धीयोरे लाल। न जवाय वन्हीं उल्लंघ हो ॥ज॥ फिर आइ बेठू इहांरे लाल ॥ ध्यान तुमारो अभंग हो ॥ज॥ क ॥१४॥ मदन आसी मुज छोडसीरे लाल । करी कोइ दाय उपाय हो ॥ ज ॥ आज पुण्य प्रभाव थीरे लाल । तुम भेट्या मुज आ-य हो ॥ ज ॥ का ॥ १५ ॥ ना कह्यो इण कारणे रे लाल । रखो उलजो इण ठाम हो ॥ ज ॥ छोडन हार और को नहीं रे लाल । कुण करे सघला काम हो ॥ ज ॥का॥ ॥ १६ ॥ जोगी रूपे ढोंगी छेरे लाल । निर्दय हृदय कठोर हो ॥ ज ॥ रीयसायो बुरा-थी बुरोरेलाल । छे ए पक्को चोर हो ॥ ज ॥ का ॥ १७ ॥ लंपटी नारी तणो रे लाल अहंकारी अथाग हो ॥ ज ॥ विद्या पण जाणे घणीरे लाल । मरण स्थंभन मोह भाग ॥ ज ॥ का ॥ १८ ॥ एहनी विद्या आगले रे लाल । सुरासुर जावे भाग हो ॥ ज ॥ तो आपणो किस्यो दाखवूरें लाल । इण ने आगल लाग हो ॥ ज ॥ का ॥ १९ ॥ तेथी

चतावूं आपनेरे लाल । जो जाणो कराभात हो ॥ ज ॥ जीती सको इण धूतनेरे लाल ला लगावो हाथ हो ॥ ज ॥ का ॥ २० ॥ जाणूं छूं हूं आपथीरे लाल । बाइ में पासूं आराम हो ॥ ज ॥ ढाल चौथी अमोलख कहीरे लाल । हिवे जोवो मदन ना काम हो ॥ ज ॥ काज ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ मदन सुस्त होइ कहे । भलो कियो उपकार ॥ व्यन्तरी उपसर्ग थी । पण सोच भयो आपार ॥ १ ॥ में आयो महा शंकटे। रूप सुन्दरी काज ॥ विन लिया जातां थका । मुजने आवे लाज ॥ २ ॥ जास्यूं तो इण ने लइ । नहीं तो रहू अवधूत । दाय उपाय कोइ करी । शक्के मिलास्युं सून ॥ ३ ॥ सुक कहे चिंता तजो । दाखूं में उपाय ॥ कमवक्ती हुवे चोरकी । कुँवरी हाथे आय ॥ ४ ॥ काम अछे हिम्मत तणो । मदन कहे हर्षाय ॥ फरमावो कृपा करी । ते हूं करुं उपाय ॥५ जें॥ ढाल ॥ ५ मी ॥ प्रभू त्रिभुवन तिलोरे ॥ यह० ॥ मदन जी सांभलोरे । पूर्ण कीजे काम ॥ मद० ॥ राखीये आपणी माम ॥ म ॥ आं ॥ एक जोजन रे मायने जी । हूं जावूं फिरवा काज ॥ गिरी तरु वन जोवतो। मुज मन रखूं विलमाज ॥ म ॥ १ ॥ एक दिन ह्यांथी पूर्वमें जो । वटद्रुम मोटो निहाल ॥ विश्रांती लीधी तिहां । तिहां सुक टोला आयो चाल ॥ म ॥ २ ॥ बेठा जुदी २ डालीयेजी । सब पक्षि सिरदार ॥

टुकलगा मुज देख तोजी । मेखोंन्मेख निरधार ॥ म ॥ ३ ॥ वैम पड्यो तेहने मने ॥
त उड आयो मुज पास ॥ कुण किहां ना रहवासीया । इम पूछे ते विमास ॥ म ॥ ४ ॥
में कह्यो तुम पूछो किस्यों जी । तुमने कह्या स्युं थाय । तुम हम तो सरीखा मिल्याजी
बोल्यो व्यर्था जाय ॥ म ॥ ५ ॥ विस्मय हुयो ते इम सुणी जी । वली पूछे इण पेर ॥
तुम सागे तोता नहीं जी । छे कोइ दुःख की लेहर ॥ म ॥ ६ ॥ में चमक्यो मनने
विषेजी । ए छे चतुर सुजाण ॥ बोली में मतलब लख्यो जी । हा हा ! पशु निन्नाण
॥ म ॥ ७ ॥ में कह्यो तुम केवो जिकीजी । साची छे सहू वात ॥ पण दुःख जेहने
कीजीयेजी । जेहथी दुःख विरलात ॥ म ॥ ८ ॥ सुक कहे तुम किम जाणीयोजी । मैं न
करूं दुःख दूर ॥ पक्षी सरीखा जक्तमें जी । कुण नर लायक पूर ॥ म ॥ ९ ॥ वीर
मती शुकने कहेजी । पामी बहुली रिध्द ॥ कुसुम श्री शुक जोगथीजी । सील राख्यो
भली विध ॥ म ॥ १० ॥ दमदंती हँस पसायथीजी । कीधा बहुला काम ॥ विषथी
राय उगारीयो जी । जो वो पोपट का काम ॥ म ॥ ११ ॥ एकावतारी तीर्यंच हुवेजी ।
पाले बारा वृत ॥ भगवंत भाख्यो निज मुखेजी । जोवो पशुना कृत ॥ म ॥ १२ ॥
इत्यादी पस्यू तणाजी । द्रष्टांत वहु जग मांय ॥ निज मुखथी निज कीर्ती जी । करतां

लज्जा आय ॥ म ॥ १३ ॥ कहो पहली थांरी बीतीजी । किम थयो एह श्वरुप ॥ मैं जा णूसो बतावस्यूं जी ॥ जे उपाय तद्रुप ॥म॥ १४॥ मैं कह्यो पुर पयाठणकोजी । मे छूं क्ष- त्री पूत ॥ राय कंन्या को हरण करी ने । लायो ए अवधूत ॥म॥ १५ ॥ तस लेवण हूं आवियोजी । मार्ग सही बहुकष्ट ॥ इहां फंद फस्यो जोगी नेजी । ए निर्दय छे धृष्ट ॥ म ॥ १६ ॥ तेपापी मुज ने कर्यो जी । नरथी पशु अवतार ॥ लेणाथी देणो पड्यो । अब दुःख पावूं छू अपार ॥ म ॥ १७ ॥ मुज बीतक तुमने कह्यो । अब दाखो कोइ उपाय ॥ कि- म पाछो नरपद लहूं । वली कुँवरी हाथे आय ॥ म ॥ १८ ॥ उपायतो हूं जाणू छूं । पण तुमथी ते नही थाय ॥ दूजो सूरो जो मिलेतो । जोगीनो जोम गमाय ॥ म ॥ १९ ॥ ए जोगी ना धुर थकीहूं । जाणू छूं सहू कर्म ॥ करामाती जो मिले तो । खोले सगला भर्म ॥ म ॥ २० ॥ इम कही चुपको रह्यो ज्जी । ढाल पंचमी मांय ॥ तीजा खन्ड की कही अमोलख । शुक उपाय बताय ॥ म ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ कृतबी शुक कहे मदनसे । मैं तस कह्यो नरमाय ॥ इम निरास नहीं कीजीये । बान्ध आस फास माय ॥ १ ॥ पाछलथी आवे अछे । मंत्रीश्वर सुजाण । बुद्ध बल कला कौशल्य का । मदन जवैरी निध्यान ॥ २ ॥ जो मुज ने दर्शावसो । धूर्त विजय नो उपाय ॥ तो हूं कही मंत्रीशने ।

सिद्ध करास्यूं भाय ॥ ३ ॥ कह्यां विना नहीं चालसी ॥ जोगी जीतण बात ॥ उपकार
होसी अतिघणो । तीन मनुष्य सुख पात ॥ ४ ॥ इम अग्रह थी पूछतां । ते कहे सुण
धर ध्यान ॥ कहीजो जरूर मदन ने । ते करसी पुण्य वान ॥ ५ ॥ ढाल ६ ठी ॥ नहीं स
देह लगार निरोपम ॥ यह० ॥ सुणो मदन धरी हृदय सदन ए । कीजे सुख को उ-
पायो ॥ हिम्मत से कार्य सिद्ध होवे । शुकवर मुजने बतायो ॥ सुणो ॥ १ ॥ इण हिज
वने शिव शंकर नामे । जोगी था गुण वंता ॥ ध्यान ज्ञान सील संतोष वैराग्य । करीने
अधिक सोहंता ॥ सु ॥ २ ॥ तिण नो ए रूद्र शंकर नामे । चेलो छे अभी मानी ॥ बा-
ल पण गुरु प्रिती धरीने । सिखाइ विद्या छानी ॥ सु ॥ ३ ॥ हुवो प्रवीन यो योवन वंतो
। अनीती करवा लाग्यो । कांण मर्याद न माने गुरुंकी । अशुभों दय तस जाग्यो ॥ सु ॥
४ ॥ गुरु शिक्षा बहु देवे तेहने । ते नहीं माने लगारो ॥ अविनय घणो करवा लाग्यो
। तब दीयो मठ थी कहाडो ॥ सु ॥ ५ ॥ गुरुजी मन रमावा काजे । पाल्यो मुज धर प्रे
म ॥ कृपा करीने ज्ञान पढायो । नर भाषा आदी तेम ॥ सु ॥ ६ ॥ एकदा गुरु चिंतामें
बेठा । विसरी ज्ञानने ध्यान ॥ नरमाइ में पूछयो श्वामी । स्यूं विचार मन म्यान ॥ सु ॥
७ ॥ कहे गुरुजी रूठ्यो बिडडी । करी विषयकी ख्वारी ॥ अतीत को इण धर्म लजायो !

नीती बिगाडी म्हारी ॥ सु ॥ ८ ॥ मैं कह्यो चिंता कर्यां स्यूं होवे । उपाय कोइ बतावो । गुरु कहे पुण्य बलिष्ट जिहां लग । तिहां लग नहीं चाले दावो ॥ सु ॥ ९ ॥ मदनना मे श्रेष्टीको पुत्र । ईने विद्यासे हरासी ॥ तवही ये प्रपंच छोंडने । जोग आरम रमासी ॥ सु ॥ १० ॥ मैं पूछो किण नरथी हरसी । ते करामात बतावो ॥ होण हार से है कोण बलीयो । विगत वार फरमावो ॥ सु ॥ ११ ॥ कहे गुरु इहांथी उत्तरे । भीमा अटवी भारी ॥ फळ फूळ पत्र वल्ली वृक्ष वर । मनने रमावण हारी ॥ सु ॥ १२ ॥ तिण मध्ये एक देवालय वर । शिखर रयण में सोहे ॥ सुवर्ण स्थान मणी मय मूर्ती । काम यक्षनी मन मोहे ॥ सुणो ॥ १३ ॥ तिहां पुष्करणी निर्मळ जल । कमल कमोदनी छाया ॥ पाज पंक्तीया और सहू विध । देखत मन लोभाया ॥ सु ॥ १४ ॥ इण हिज भर्त क्षेत्रने मध्ये । गिरी वैताड सोहंतो । दक्षिण श्रेणी नटवर नयरे । मने वेग नृप मोहंतो ॥ सु ॥ १५ ॥ तस नारी रती सुन्द्री रंभा । विद्या बलमें पूरी ॥ सोले सहेली करने सो है । सर्व सुगुण सनूरी ॥ सु ॥ १६ ॥ ते सदा पुनम की राते । तिण देवालय आवे ॥ नाटक पाडी यक्षणीजावे । फिर बावडी में न्हावे ॥ सु ॥ १७ ॥ तिण वेला कोइ रती सुन्द्रीना ॥ लिलाम्बर हरी लावे ॥ देवलमें छिपे तिणथी छाने । तुर्त ही पट लगावे ॥ सु ॥ १८ ॥

किन्नरीयो आइ तास डरावे । जोनिडर स्थिररवे ॥ ते अभय वचन आपे तव । तेहना
वस्त्र तस देवे ॥ सु ॥ १९ ॥ ते कने मांगे ते वर आपे । रुद्रनो ते मद गाले ॥ ए
वात गुरूजी सुणाइ । करगया ते काल ॥ सु ॥ २० ॥ गुरु वियोगे हूं दुःख पावु । रहूं
छूं इण वनमांही ॥ इम साचे शुकेश्वर मुजने । हितकी वात चेताइ ॥ सु ॥ २१ ॥ कहे
मदन से वात सुणीये । महारो मन हर्षायो ॥ वाट तुम्हारी जोतो वेठो । तुम दर्शने
सुख पायो ॥ सु ॥ २२ ॥ ए कारज तुम हाथे थासीं । कीजे सहास धारी ॥ तीजा
खन्डकी ढाल ए छट्टी । ऋषि अमोल उच्चारी ॥ सु ॥ २३ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ मदन कहे
ए भली कही । अपणाहितकी वात ॥ हिम्मत धर निपजा वस्यु । थोडइ काले भ्रात॥१॥
तोता कहे कार्य हुयां । मुज मत जाजो भूल ॥ जिम कुँवरीने सुखी करो । तिम मुज
हो ज्यो अनुकुल ॥ २ ॥ मानव पुनः मुजने करी । मिलावो परिवार ॥ यह मुज इच्छा
पुरवा । हिवे तुमचो आधार ॥३॥ मदन कहें कार्य हुया । पहला छेद तुम दुःख ॥ कुँवरी मिलावु
राजनों तवमें पावूसुख ॥४॥ ए निश्चय चित राखजो। रहजो सदा हुंशीयार ॥ हूं रहू कार्य साधने।
पाछो आवूं इण वार॥५॥ढाल७ मी॥राग वेलावल॥रेघडी याला वावला ॥यह॥ साहस धारी
मदन जी । काज साधवा जावे ॥ जे साहसवंत ने उद्यामी । तेहना सहू सिद्ध थावे

॥ सा ॥ १ ॥ रम्य वन्न अटवी उल्लंघता । रहता तरु गिरी छांहे ॥ वनफळ योग्य आरोग्य ता । ते फीकर चल्या जावे ॥ सा ॥ २ ॥ काँटा कंकर पांवे चुबे । महा गीरे उल्लंघ ॥ दुःख किंचित नहीं वेदता ॥ घणा जोवा उमंगे ॥ सा ॥ ३ ॥ पुण्य प्रभावे वनचर तणो । जरा दुःख नहीं थावे ॥ देखी अनोखी वस्तुने । अति आणंद लावे ॥ सा ॥ ४ ॥ इम चलतां गिरी शिखरपे । चडीया घणा उंचा ॥ आगल जोवे तेतले । मन कार्य पहूंचा ॥ सा ॥ ५ ॥ मणी शिखर झगमग करे । जाणे गगने लाग्यो ॥ ध्वजा पताका चिन्हये । देख दुःख सहू भाग्यो ॥ सा ॥ ६ ॥ जे भद्रसेण शुक दाखव्यो । ते एही देवालय ॥ तिणहीज रस्ते चालीया । मनमें घणा गह गय ॥ सा ॥ ७ ॥ सम भूमी पर आवाता । वन रमणिक जोइ ॥ अनेक उत्तम वृक्ष वेलडी । फल फूल भर्योइ ॥ सा ॥ ८ ॥ स्वभावे जम्या पाषाण त्या । जाणे बिच्छा गलीचा । इम मनरंगे मालता । पोखरणीये पहोंचा ॥ सा ॥ ९ ॥ ते मकाराणी पाषाणमें । जाणे सुझे वणाइ ॥ यथास्थान रंग शोभतो । जाणे चतुरे भर्याइ ॥ सा ॥ १० ॥ भंड वस्त्र अलगा धरी । पुष्करणी में आया ॥ जल क्रिडा गमती करी । मदनजी न्हाया ॥ सा ॥ ११ ॥ भीने वस्त्रथी रही । कमलमही हाथ ॥ हर्षानन्द उत्सहाथी । भेट्या यक्ष नाथ ॥ सा ॥ १२ ॥ पूजा करी भक्त

आवसे । पग धोकज दीधी ॥ नाना विध स्तवनता । प्रेमांसुक कीधी ॥ सा ॥ १३ ॥ दीन वन्धव भक्त वत्सला । सरणागत सहाइ ॥ सामर्थ्य करवा सर्व तूं ॥ शक्ती सर्व पाइ ॥ सा ॥ १४ ॥ कीर्ती तुह्मारी सांभली । मुज मन उमायो ॥ संकट चीकट सहन करी । तुम सरणे आयो ॥ सा ॥ १५ ॥ न चाहूं धन संपदा । न चाहूं में नारी ॥ पर उपकार के कारणे । सहू संकट भारी ॥ सा ॥ १६ ॥ तिणमां सहाय कर सदा । ए उत्तम आचारो ॥ बुध विचारी आपको । मुज कार्य सारो ॥ सा ॥ १७ ॥ अर्ज एती अव धारीये म्हूं आसरो थांरो ॥ जो होवे कोइ असातना । गुन्हो क्षम जो महारो ॥ सा ॥ १८ ॥ जे आवे सोले किन्नरी । ते देखण नहीं पावे ॥ दुःख नहीं किंचित देसके । वस्त्र कर आवे ॥सा ॥ १९ ॥ वस होइ मुज किन्नरी । मुज कार्य सारे ॥ एही इच्छा सिद्ध करो । इम प्रणामी उच्चारे ॥ सा ॥ २० ॥ जावैठा मूर्ती पाछले । किन्नरी वाट जोइ ॥ ढाल सात अमोलिख कही । पुण्य थी सहू होइ ॥ सा ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ पूनम पूरो उगीयो । पूर्व दिशामे चन्द ॥ चांदणी पसरी चौकमे । नाशी गयो तव अन्ध ॥१॥ व्योम मार्गे सांभल्यो । घुंघर को घम कार ॥ प्रकाश पड्यो देवल विषे । मदन हुयो हुशीयार ॥ २ ॥ एटले सोले सांमटी । खेंचरी रुप अपार ॥ षोडश श्रृंगारे सजी । ऊभी देवल द्वार ॥ ३

॥ मन वच काय ने नम्र कर । आइ यक्ष सन्मुख ॥ कर प्रणामी स्तुती करे । बहू विनय ले-
वा सुख ॥ ४ ॥ मन रली पूर्ण करण । कला सुधारण काज ॥ एकांत स्थानक लखी ।
सजीयो नाटक साज ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ८ मी ॥ लावणी ॥ आश्चर्य जे कथा रसाल
थकी ॥ यह ॥ काम देव रीं जावण कारण । रंभा खडी ज्यों इन्द्र परी ॥ चार सारंगी
चारले तपले । चार मजीरे कर धरी । चार परीने पेहरा घाभरा । घेर दार बहू झलके जरी ॥
ओड पिताम्बर अतिही सुन्दर । रेशमी बहु रंग भरी ॥ बुलन्द अवाजी पाय घुघरी ।
बान्धी बरोबर सोले खडी ॥ होय पुण्य पूर्वले जिन के । जब जन को मिले ऐसी घडी
॥ आं ॥ १ ॥ धप मप २ वाजे मृदंग । थाप लगे है सम्मत से ॥ सण २ करे सारंगी
बोले । तान मिलाइ रम्मत से ॥ टन्नक २ वाजे मजीरे । हिला सीस को जम्मत से ॥
चारोंही श्री श्वर मिलाइ । राग अलापी गम्मत से ॥ प्रथम तो ध्रुपद उच्चारी । ध्वनी
जाय गगन चडी ॥ होय ॥ २ ॥ तीन तान और सप्त श्वर से । राग रागणी छत्तीसों ॥
योग्य वक्त सिर रीत रायसे । मिला ध्वनी उच्चारी सो ॥ घननन २ घाले घुमरी । टमक २
करती चाले ॥ लटक २ कर [illegible] तोडे । करी कटाक्ष ने निहाले ॥ छमक २ कर त्रिछि
या छमके । खणणण कर [illegible] डी ॥ हो ॥ ३ ॥ करी नाटक बतीस प्रकार । पूरी सहू

भनकी जी रली ॥ संत तंन परितंत हुइ तन । आपसमे मश्करी चली ॥ हार वेठी सब धरणी उपर । पसीनें के उतरे रेले ॥ सूर्त खुली गुल्याब कुसुमज्यू । मुल्के नूर नेणा खेले ॥ वायू उडावे शिखा पृष्टपे । जाणे नागन खेले पडी ॥ हो ॥ ४ ॥ कहे चलो पुष्करणी अन्दर । थाक समावां करां न्हावण ॥ नृत्य सामग्री मूकी त्यांही । कपडे बदले तन छावण ॥ आइ खडी बावडी पाजपर । उतार साडी तिहां रखे । सहू पडी निर्मळ नीरमें । जलक्रिडा करे भय पखे ॥ शंक न किनकी सहू मिली नारी । ख्याल गम्मत मे रही अडी ॥ हो ॥ ५ ॥ मदन देख कर आनंद पाया । आज मिला मौका भारी ॥ अपूर्व नाटक नेणे निरखा । क्या सोहे किन्नरी नारी ॥ क्या नृत्य? क्या गायन इनका? क्यातान? रहे अश्चर्य पा ॥ मजा अनोखा मुजको बताय । भद्रसेण शुकको कृपा ॥ अब वक्त कार्य साधन की कह्या प्रमाणे यह जंडी ॥ हो ॥ १६ ॥ पडी चरण यक्षराजके बोले । सरणोहै श्वामी थांरो ॥ लुपते २ चले अधर जब । छिपते झाड जो अन्धारो ॥ वस्त्र पास आ चन्द्र चांदणे लिलाम्बर ओलख लिया ॥ लघुलघवी कला प्रभावे । हरण करी देवळ में गया ॥ वेठ वे फीकर खुशहो दिलमें । दौनो पट को लिये जडी ॥ हो ॥ ७ ॥ जलक्रिडा कर सखी सुदरी । आइ तब बावडी वारे ॥ अनिल पवनंस अंग थरे २ । दोनों वहा भीडी जारे ॥

निज २ तंतू पहर लिये सब। रति सुन्दरी नग्न रही ॥ साडी मिली नहीं चौकस करतां ॥ कहो बेन किसने ए लही ॥ ऐसी हाँसी मत करो कोइ। यो बोले है नग्न खडी ॥ हो ॥ ८ ॥ शिघ्र बतावो सटिका मैरी। शीत अंग थर २ काँपी। और मस्करी बहु तेरी करी। तोभी जरा तुम नहीं धापी ॥ सहू कहे बाइ सम तुमारी। हम नहीं लीवी तुम साडी ॥ निज २ सहू तंतू झटकारी। अंग अंतर दीये देखाडी ॥ फिर कोण लगया मेरी ओडणी। येही फिकर है बहुतबडी ॥ हो ॥ ९ ॥ सहू मिल ढूंढे चारुं कानी। झाड खाड वावी में जाइ ॥ उंच नीच सहू स्थानक निरखे। तो भी लुगडा नहीं पाइ ॥ रती सुन्दरी पड पाणी में। ढूंढ लिवी वावी सारी। थर २ धूजत्ती वाहिर निकली। किहां गइ बाइ मुज साडी ॥ अन्य कोइ आणें नहीं पावे। केतो गइ हवा में उडी ॥ हो ॥ १० ॥ सब कहे जाणे दो साडी ॥ बहुत आपणे घर मांहीं ॥ क्यों निकम्मी महनत करती। रखे शरदी लगसी बाइ ॥ देवालय में वस्त्र आपणें। सो पहेरी घरको चलिये ॥ रखे अब्बी दिन ऊगी जासी। लडे पति उनसे डरीये ॥ आइ सहू देवालय पासे। जडे पट पर द्रष्ट पडी ॥ हो ॥ ११ ॥ अहो किंवाड किसने यह लगाये। कोण यह कैसे आया ॥ क्यों छिपा ये मन्दर अन्दर। ए साडी का चौर पाया ॥ बोल कौण है दान व मानव

क्यों तेने फंद मचाया ॥ जाणता नहीं है शक्त हमारी । क्यों तेने मृत्यूं चाया ॥ रीस भराइ बोले धाइ । जेसी भाद्रवकी पडे झडी ॥ हो ॥१२॥ मदन कछु उत्तर नहीं आवे। तवते मन में शरमांइ ॥ इसकी हिम्मत हद है वाइ । गुप्त रहा यह इहां आइ ॥ निडर होकर नाटक देखा । जो देवत को ना पाइ ॥ बोलाया बोले न जरा भर । क्या हे इसके मन मांइ ॥ रखे लेणासे देणा होवे। ले जावे अपणी गठडी ॥ हो ॥ १३ ॥ अहो वन्धव दो वस्त्र हमारे । ठन्डथकी रही है कॉपी ॥ कहो तुम्हारे मन में होय सो। अभय वचन दीना आपी ॥ मुफत में तुम नाटक देखा । तो भी नीयत नहीं धापी ॥ चोर वने हमारे सच्चे तो भी हम देती माफी ॥ कहो तुमारे मनने होय सो करे कार्य यह वक्त अडी ॥ हो ॥ १४ ॥ इम सुणी मदन हर्षाया । पट के आडे ऊभे रही । लीलाम्वर दीने बाहिर डाली । लेइ किन्नरी खुशी भइ ॥ तत्क्षिण मदन जी वाहिर आये । सहू जणी जो अश्चर्य पाइ । अल्पवये साहस वंत भारी । मानव पुण्यवंत देखाइ ॥ ढाल अष्टमी कही अमोलक पुन्यवंत की झुकती धडी ॥ हो ॥ १५ ॥ ❀ ॥

॥ दुहा ॥ हर्षी बोले अपच्छरा । अहो पुरुष महा भाग्य ॥ किण कारण इहां आवीया ॥ कीधी हम सें लाग ॥ १ ॥ चाहीये सो दरशाइये । हम सरीखो

कोइ काज ॥ मदन नरमाइ इम भणे । भाग्य भलो मुज आज ॥ २ ॥ दरसण दीठा आपका । पूगी सघली हाम ॥ काज एक छे आपथी । ते पूरो गुण धाम ॥ ३ ॥ रुद्र नाम एक जोगीयो । अदर्श्य करी कपट ॥ पुर पयठाण भूधव तणी । कँन्या लायो झपट ॥ ४ ॥ ते लेवण हूं आवीयो । जाण्यो जोगी बलिष्ट ॥ करामात कोइ दाखीये । पूरे म्हारो इष्ट ॥ ५ ॥ ❁ ढाल ९ मी ॥ श्री सीमंधर श्वाम सासण श्वामीरे ॥ यह ॥ खचरी कहे चित लाय । मदन जी सुणीयेंरे ॥ ते जोगी विद्या भंडार । जीत्यो न जाय किणीयेरे ॥ १ ॥ ए बहू विसमो काज । तुम दरसायोरे ॥ नहीं सहजे ते वस आय । दाखू उपायोरे ॥ २ ॥ तिण वस कीधा वडा देव । मंत्र प्रभावेरे ॥ जे तस सामें थाय । तस शान गमावेरे ॥ ३ ॥ तव मदन कहे हो सुस्त । सुणो सत्य वाइरे ॥ विन राज पुत्री लिया लार । घरे न जवाइरे ॥ ४ ॥ हूंती आप लग आस । थइ आज पूरीरे । इम नहीं कीजे निरास । होइ सनूरीरे ॥ ५ ॥ खग वलीनें कहे एम । उदास न थावोरे ॥ एक दुष्कर हे उपाय । तुम निपजावोरे ॥ ६ ॥ इहांथी जोजन वार । आनंद पुर ग्रामोरे ॥ ते हिवडां छे उजाड । मनुष्य विन ठामोरे ॥ ७ ॥ तेहने ईशाण कुण । वट उद्यानोरे ॥ तेहने मध्य वड वृक्ष । सत्त एक स्थानोरे ॥ ८ ॥ तिण विच में एक कूप । अन्धार्यो बाजेरे ॥ तेहनो

उदक लाय । तो सीजे काजेरे ॥ ९ ॥ मदन कहे आप प्रशाद । ए निपजावूंरे ॥ निश्चय हे मुज मन । ते जल लावूंरे ॥ १० ॥ तोतो थासी काम । महारा सहू सिद्धारे ॥ किन्नरी भयों हूं कार । वतास्यूं विधीरे ॥ ११ आवती पूनम रात । जल लेइ आजोरे ॥ मंत्री देस्यूं तेह । कुँवरी ले जाजोरे ॥ १२ ॥ हम ने हुइ वहु वार । अव हम जास्यारे ॥ आवती पूनम रात । निश्चय आस्यारे ॥ १३ ॥ देखी मदन पुण्यवंत । सहू हर्षाइरे ॥ रती सुन्दरी प्रेमवस । सीस करें हाइरे ॥ १४ ॥ होसी फते तुज काज । रखो हूंसीयारीरे ॥ इम कही चडी विमाण । सोलेइ नारीरे ॥ १५ ॥ मदन जी कियो प्रणाम । ते उड चालीरे ॥ धरती मदन ने चित । रहे घर मालीरे ॥ १६ ॥ मदन जी करे विचार । वध्यो वली कामोरे ॥ करस्यूं हिम्मत राख । प्रभू पूरे हामोरे ॥ १७ ॥ सूता देवल मांय । रात खुटाडीरे ॥ प्राते यक्ष सन्मुख । सीसन माडीरे ॥ १८ ॥ मान्यो घणो उपकार । रक्षा कीनीरे ॥ इम आगे हो ज्यों सहाय । हो ज्यों मुज चीनीरे ॥ १९ ॥ होइ सज तत्काल । आगे चाल्यारे । भयकर अटवी पहाड । नेणे निहाल्या रे ॥ २० ॥ ते नहीं डरे लगार । हर्षी चल्या जावेरे ॥ करता नित्य फळ अहार । झाड पर रहावेरे ॥ २१ ॥ थोडा दिन रे माय । नयर दिखायोरे ॥ मनहर तेहना भवन । देख हर्षायोरे ॥ २२ ॥ आतां तेहने

पास । लगे सुन्य कारोरे ॥ एक ही नहीं देखाय । पशू नर नारोरे ॥ २३ ॥ विस्मय थया अती मन । कारण कांइरे ॥ किण ने पूछूं जाय । कोइ न देखाइरे ॥ २४ ॥ इम केइ करंत विचार । आगे चल्या जावेरे ॥ नवमी ढाल रसाल । अमोलक गावेरे ॥ २५ ॥ ❁ ॥ ॥ दुहा ॥ तव तिहां दीठो आवतो । जोगी रुपे नर ॥ भगवा वस्त्र माल गल । रुप गुणे अपर ॥ १ ॥ मदन ने पास आइयो । कियो लुली नमस्कार ॥ धन्य भाग्य संत भेटीया । जंगल मंगला चार ॥ २ ॥ मदन पण नमन कर । पूछे तुम छो कोण ॥ इहां किहां थी आवीया । कहो नगर गत होण ॥ ३ ॥ सो कहे रमते राम हम । आ निकला इस जाय ॥ दर्शन संत के देखके । आनंद अंग न माय ॥ ४ ॥ चलीये नगर अवलोकीये । क्यों हुइ उजड एह ॥ कर धर दोनो संग चले । धरता अती स्नेह ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १० मी ॥ नमु अनंत चोवीसी ॥ यह ॥ नगर में पेसतां । राज पंन्थ सु विशाल ॥ वहु हाट हवेली । उतंग रंगी सू ढाल ॥ १ ॥ प्रजापत हाटे । मृतीक भंड वहू रंग ॥ ओला ओल जमाया । पढीया छे केइ ढंग ॥ २ ॥ महतर नीहाटे । भाजी फल वहुताय ॥ डाला भर धरीया । रखवाला को नाय ॥ ३ ॥ माली नी हाटे पुष्प वहु प्रकार । भूषण वहु रंगा । गजरा तुर्राहार ॥ ४ ॥ पसारी हाटे किरियाणा वहू भाँत ॥ वन्धा छुट्टा धर्या

। मार्ग चलतं देखात ॥५॥ भुशोर दुकाने । चोवीस तरह नो नाज । उंच ढगला लगी
या । कोठा थेला भर्योज ॥ ६ ॥ कसारा हाटे धातू पात्र. झलहल ॥ छे केइ भाँतना ।
चित्रित वरण विसल ॥ ७ ॥ खुडया नी हाटे । नाणा सिक्का अनेक ॥ ढगली कर धरीया
। सुवर्ण रुप वीशेक ॥ ८ ॥ मणीहार नी हाटे । कॉच कागद को माल ॥ मणियोंना
भूषण । चकित होवे नर भाल ॥ ९ ॥ वजाज वजारे । वस्त्र वहू प्रकार ॥ लटकता दीपे ।
केइ जरी जरतार ॥ १० ॥ सर्राप लोक तो । चांदी सोनो विस्तार ॥ भूषण वहु परेना ।
मेल्या वसणे पसार ॥ ११ ॥ जवेरीनी पेढीये । खुल्ला पडीया करंड ॥ जवेरात वहू परे
जढित भूषण मंड ॥ १२ ॥ हुन्डी वाला तो । गादी तकीया लगाय ॥ भरी रोकड भंडारे
॥ ठाठ घणो ही सोभाय ॥ १३ ॥ इम रचना वजार की । जोता हुया पार ॥ पण
तस रखवाला । दीठा नहीं नर नार ॥ १४ ॥ आगे आइ हवेल्या । श्रीमंत रहवा जोग ।
तिण मांही भाइ । साहती सामुग्री छोग ॥ १५ ॥ पड्या वस्त्र लम्वा । गेणा पण घणी
जाग ॥ जाणे पेहरता गया । सहूनर नारी भाग ॥ १६ ॥ शाख चूले चडीयो । रोटी चक्र
लोटे जोय । धरी थाल परुसी । जीमण हार न कोय ॥ १७ ॥ इम चमत्कार वहू ।
जोवता सर्व जाय । राज मेहल समीपे आया दोनो चलाय ॥ १८ ॥ पड्या प्रहरायत ना

। शस्त्र बहूतिण ठाम ॥ आगे कचेरी में । दफतर विखर्या तमाम ॥ १९ ॥ मेहल उपर चडीया । पेखंता आवास ॥ सहू पडी समभ्री । राज भोग सी खास ॥ २० ॥ अति अश्चर्य धरता। चडीया आगल जोय ॥ कहे ऋषि अमोलख । ढाल दश यह होय ॥ २१ ॥ ❁ ॥ ॥ दुहा ॥ कंन्या रंभा सरीखी । श्रृंगारी सोभित ॥ गलकर द्रष्टी भूपरे । वेठी सुस्ते चित ॥ १ ॥ देख मदन अश्चर्य भयो । सुरी नारी किन्नरी एथ ॥ सुन्य ग्राममे एकली । किण कारण ए रेय ॥ २ ॥ कंन्या पद मनुष्यना । सुणने ऊंची जोय ॥ इच्छित आया पेखने । हर्षित अतीही होय ॥ ३ ॥ उत्सहायें ऊभी रही । जोडी दोनो हाथ ॥ लज्जित नयण अधो करी । मदन के सामे आत ॥ ४ ॥ अश्चर्य चकित मदन हुवो । मोहाणो अतिमन॥ जेह ए रंभा परणसी । ते नर जगमे धन्य ॥ ५ ॥ ढाल ११ मी ॥ राम आया जमाना खोटा ॥यह॥ भाइ मदन पुण्यवंत भारी ॥ जहां जावे तहां पावे सत्कारीरे॥ भाइ ॥आं॥ मदन पास ते बाइ आइ॥ नीची नमी ने इम उच्चारीरे ॥ भाइ ॥ १ ॥ मदनेश्वरजी भला पधार्या । पूरी आस हमारीरे ॥ भाइ ॥ २ ॥ अपाडमेंघ ज्यूं मारग जोती । ते वूठ्यो चहायो वारीरे ॥ भा ॥ ३ ॥ इण सुखासने आप विराज्यो । आरोगे अन्नवारीरे ॥ भा ॥ ४ ॥ भक्ति प्रेम अतुल्य तस जोइ ॥ लाग्यो मदनने अश्चर्य कारीरे ॥ भा ॥५॥

मैं तो ओलखू इणने नाहीं ॥ इण किम नाम कियो जहारीरे ॥ भा ॥ ६ ॥ इत्ती खुशा-
मद करे किण काजे । नहीं दीसे छे एह ठगारीरे ॥ भा ॥ ७ ॥ अपणां पास से किस्यो
लेसी । मैं तो पहला छां त्रावारीरे ॥ भा ॥ ८ ॥ तिहां विराजी आणद पाया । थाक
सहू गली गयारीरे ॥ भा ॥ ९ ॥ दूजो जोगी वेठो पासे । रह्यो मून ते धारीरे ॥भा॥१०॥
पूछे मदन तिण कंन्या तांइ ॥ किण कारण रहो एक लारीरे ॥ भा ॥ ११ ॥ किण का-
रण पुर ए उजड । किहां गया नरनारीरे ॥ भा ॥ १२ ॥ महारो नाम थें किम पहचाणो
। किण काज मार्ग निहारीरे ॥ भा ॥ १३ ॥ तव कुँवरी कहे नरमाइ । भोजन जीम्यां
कहूं सारीरे ॥ भा ॥ १४ ॥ नहीं अंतर आपसे है कांइ । जीवां छां आप आधारीरे ॥
भा ॥ १५ ॥ मदन अचंभी अर्ज ते मानी ॥ तव उष्णोदक थयारीरे ॥ भा ॥ १६ ॥
पीठी तेल नो मर्दन कीधो । फिर शुद्धोदक नह्वारीरे ॥ भा ॥ १७ ॥ ते तले तिण
रसोइ बणाइ । अति चतुरता संवारीरे ॥ भा ॥ १८ ॥ शाल दाल घृत मिष्ट पक्वान ।
व्यंजनादी वहू त्यारीरे ॥ भा ॥ १९ ॥ रजंत पाट सोनारी थाली । मुखमली गादी वि-
छारीरे ॥ भा ॥ २० ॥ मेली रत्न जडित कटोरी । स्वादी तोय हेम झारीरे ॥भा॥ २१ ॥
अनुक्रमे सहु जीमाया । कुँवरी करी पुरस्कारीरे ॥ भा ॥ २२ ॥ वीजा जोगीने भेला वे-

ठाया । जीमाया कर मनवारीरे ॥ भा ॥ २३ ॥ वस हुइ सुखासने विराजा । तंबोल मन्योंग आरोग्यारीरे ॥ भा ॥ २४ ॥ ढाल एकादश तीजा खन्कीड । ऋषि अमोल उच्चारीरे ॥ भा ॥ २५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ अपार भक्ती भाव जो । हर्षा मदन अपार ॥ किण कारण ए एवडो । करे म्हारो सत्कार ॥ १ ॥ भाव भेद समजे नहीं । कांइक छे गुढ भेद ॥ ते जाणवा मदनने । जागी घणी उम्मेद ॥ २ ॥ तेतले कंन्या निवृती । आवेठी मदन पास॥ साता है सहू वातरी । पूछे धरी हुल्लास ॥ ३ ॥ मदन कहे तुम जोगथी । पायो घणो आणंद ॥ हिवे उत्कंठा एतली । दाखो तुम स्मबन्ध ॥ ४ ॥ विनय युक्त कुँवरी भणे । इहवृत सुणो नाथ ॥ दया करी हम उपरे । सुखी करो सहू साथ ॥ ५ ॥ ढाल १२ मी ॥ तारा प्रत्यक्ष मोहणी ॥ यह ॥ भव्यतव्यता भवी सांभलो ॥ दोष न किणरो देवाय हो। मदनजी ॥ कृत्य कमाइ आपरी । सुख दुःख जगमें पाय हो॥ मदनजी ॥ भव्य॥ १ ॥ कर जोडी कुँवरी भणे । सुणी यो श्री मदनेश हो ॥ म ॥ कहाणी हम करमां तणी । जे भो-गवां हम क्लेश हो ॥ म ॥ भय ॥ २ ॥ आनंद पुर वर नयर ए । श्री जसोधर नृपाल हो ॥ म ॥ श्रीमती राणी, गुण भरी । धर्म कर्म मे खुशाल हो ॥ म ॥ भव्य ॥ ३ ॥ दत्त सेण नामें कुंवरये । जोगी रूपे आप साथ हो ॥ म ॥ कन्वगवती मुज नाम छे । कंन्या

तास कहवात हो ॥ म ॥ ४ ॥ राज जोग सहू सायवी । सुखे निर्गमे काल हो ॥ म ॥
एकदा अचिंत्य रुठीयो । इण पुर पर वेताल हो ॥ म ॥ भव्य ॥ ५ ॥ कोप्यो सुर अति
आकरो । कर्यो रुपविकाल हो ॥ म ॥ आयो इहां चलायने । जाणे आयो जग काल हो
॥ म ॥ भव्य ॥ ६ ॥ अरराट शद्द कियो अति । रोषे पाडी चीस हो ॥ म ॥ धूज़ा तो
भूं पग मारथी । करड २ दांत पीस हो ॥ म ॥ भव्य ॥ ७ ॥ हाट हवेली धूजीया । पडी-
या ज्यूना प्रशाद हो ॥ म ॥ लोक सहू भय भ्रंत थया ॥ पस्या वणो विखवाद हो॥ म॥
॥ भव्य ॥ ८ ॥ छोडी घर धन सज्जना । न्हाठा लेइ जीव हो ॥ म ॥ कोइ न जोवे
कोइने । हाहा करता रीव हो ॥ म ॥ भव्य ॥ ९ ॥ राजाजी भय भ्रंत थइ । लेइ निज
परिवार हो ॥ म ॥ भागा वन में जा रह्या । करता सोच अपार हो ॥ म ॥ भव्य ॥
॥ १० ॥ स्थिर थइ पायदल मूकीया । जे जे भागा लोक हो ॥ म ॥ चउकानी थी बु-
लाइया । दियो घणो संतोष हो ॥ म ॥ भव्य ॥ १२ ॥ खान पान मकान को । कियो
सहू वंदोवस्त हो ॥ म ॥ वन वासी सहू जन वण्या । सहता दुःख ने कस्त हो ॥ म ॥
॥ भव्य ॥ १२ ॥ पशु पक्षी पण ग्रामका । महा भय थी गया नाश हो ॥ म ॥ मनु-
ष्य तिर्यंच सर्वां घणा । एसी व्यापी त्रास हो ॥ म ॥ भव्य ॥ १३ ॥ इण कारण इण

शेहरका । ऐसा हुवा छे हवाल हो ॥ म ॥ विचित्र गति छे कर्मकी । न रहे सहु सम काल हो ॥ म ॥ भव्य ॥ १४ ॥ हम सहू हमणा तिहां रहां । सही शीत तापादी दुःख हो ॥ म ॥ गया दिन संभारता । कब मिलसी ते सुख हो ॥ म ॥ भव्य ॥ १५ ॥ एकदा नैमितिक आवीया । अष्ट अंग का जाण हो ॥ म ॥ देखी सहु जन हर्षिया । जाण्यो सुख मंडाण हो ॥ म ॥ भव्य ॥ १६ ॥ राजा दिक वृधजन मिली । दीयो घणो सत्कार हो ॥ म ॥ उंच आसण बेसावीया ॥ पूछे करी नमस्कार हो ॥ म ॥ भव्य ॥ ॥ १७ ॥ कृपाकरी फरमावीये । ये हम संकट पूर हो ॥ म ॥ किण दिन किण संयोग थी । किण विध होसी दूर हो ॥ म ॥ भ ॥ १८ ॥ विबुद्ध कहे अहो नर पति । वद्य पंचमी वुद्धवार हो ॥ म ॥ पाल्गुण पूरी मंडले । आनंद पुरने मझार हो ॥ म ॥ भ ॥ ॥ १९ ॥ पूर्व दिशी ना द्वारथी । जोगी रुपने मांय हो ॥ म ॥ मदन नामे पुण्यात्मा । आसी पयदल चलाय हो ॥ म ॥ भ ॥ २० ॥ ते वस करसी असुरने । नगरी देसी वसाय हो ॥ म ॥ पर णसी पुत्री तुम तणी । कन्कावती जे कहवाय हो ॥ म ॥ भ ॥ ॥ २१ ॥ इम कही नैमितिक गया ॥ हर्ष्या सहु नर नार हो ॥ म ॥ जावो तुम नगरी विषे ॥ आज आसी मदनेशहो ॥ म ॥ भ ॥ २३ ॥ ताता ज्ञाये आवीया । मुजने मे-

ली इण ठाम हो ॥ म ॥ जोगी तणो रुप धारने । बन्धव गया आप साम हो ॥ म ॥भ॥ ॥ २४ ॥ नैमितिकना कहेण थी । पैछाण्या हम आप हो ॥ म ॥ द्वादश ढाल अमोल कही । टलीया सहू संताप हो ॥मदन॥ भ ॥ २५ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ दर्शन दीठा राजरा। हुयो घणो आणंद ॥ वीत्यो वृतांत हम तणो। कह्यो सर्व सम्बन्ध ॥१ ॥ हिवे कृपा हम पर करी । एतो कीजे काज ॥ सरणे आया राजके । रखीये हमारी लाज ॥ २ ॥ मदन कहे मुज शक्त थी । जो थासी उपकार ॥ तो पाछो हटस्युं नहीं । करस्यु काम विचार ॥ ३ ॥ संध्या हुइ तिण अवसरे । भग्नी बन्धव दोय ॥ नरमाइ कहे मदनने । अब रह-णो नहीं होय ॥ ४ ॥ असुर आवण वेला हूइ । पधारो वन माय ॥ रयणी तिहां सुख थी रही ॥ प्राते आवस्यु ह्यांय ॥ ५ ॥ मदन कहे जावो तुमे । हूं रहस्यू इण ठाम ॥ राते मिलस्यु असुर थी । करस्यू थाणों काम ॥ ६ ॥ प्राते तुम सहू देखजो । इम सु-णी हर्षाय ॥ प्रणामी पद मदन तणा ॥ दोनू ते तव जाय ॥ ७ ॥ ❁ ॥ढाल १३ मी॥ कपूर होवे अति उज्जलो रे ॥ यह ॥ उभय गया तदनंतरे जी । मदन चिंते मन माय ॥ असुर आवण अजू वार छेजी । किस्यो करूं इण ठाय ॥ चतुर नर । साहस वंत मदन ॥ आं ॥ १ ॥ जिण कामें इहां में आवीयो जी । ते करूं पहली जाय ॥ सत वट वृक्ष

मध्य कूप क्यां जी । जोवूं पहली ते ठाय ॥ च ॥ २ ॥ जल लाइ संग्रही धरुंजी ।
फीकर टले एक एय । महीना नो अवकाश छे जी । करस्यु काम सव जेह ॥ च ॥ ३ ॥
इम चिंतवी तिहां थी चल्याजी । आया ग्राम ने वार ॥ किन्नरी कह्या अनुसार थीं जी।
सेनाणी जोइ जहार ॥ च ॥ ४ ॥ पेठंता अगड विषेजी । देव वाणी इम होय ॥ मत
पेशो इण कूपमें जी । पहलां चेतावू तोय ॥ च ॥ ५ ॥ अश्चर्य पाइ मदन तिहांजी ॥
चौवाजू जोवे तत्काल ॥ कोइ दृष्टी आयो नहीं जी । तव चाल्या पाताल ॥ च ॥ ६ ॥
पुनर्पि शह्द इशो हुयो जी । नहीं माने मुज वेण ॥ मत पेसे इण कुपमें जी । जो तूं वां-
छे चेन ॥ च ॥ ७ ॥ मदन सुण्यो असुण्यो करीजी । शिघ्रं उतर्यो कूपमांया ॥ देव उ-
छार्लो तत्क्षिणे जी । वाहिर दीधो ढाय ॥ च ॥ ८ ॥ अश्चर्य पाया अती घणो जी ।
हुइ वेठा सावधान । कहे कुण तुम प्रगट हुवोजी । दाखू मुज वयान ॥ च ॥ ९ ॥
छिप्या तुम किण करणे जी । मुज वालक थी डर ॥ इम डरायां में ना डरूं जी । प्रगटो
झट मेहर कर ॥ च ॥ १० ॥ क्षिणभर रहा जोइ तेहनी जी । उत्तर न आप्यो कोय ।
तव मदन सावध हुयाजी । तूंवो लीधो सोय ॥ च ॥ ११ ॥ पुनर्पी चाल्या कूप में जी
॥ पुनर्पी हुइ इम वाण ॥ वीती तोइ समजे नहींरे ॥ नहीं माने मुज काण ॥ च ॥

१२ ॥ मदन कहे इम ना कह्या जी । नहीं मानूं में वात ॥ ना कहो किण कारणे जी
कहो होइ साक्षात ॥ च ॥ १३ ॥ इम कही कूप में चालीयाजी । देवने आइ रीस ॥
उठाइ न्हाख्यो वाहिरे जी । पूगी नहीं जगीस ॥ च ॥ १४ ॥ मदन सावध हुइ कहे
जी । इम करणों नही जोग ॥ तुच्छ वस्त जल सारीखी जी । किम नहीं करवा दो
भोग ॥ च ॥ १५ ॥ बिन कारण तुम मुज भणीं जी । क्यों न्हाखो दुःख माय ॥ एह
उदक लिया विनाजी । मुज थी नहीं जवाय ॥ च ॥ १६ ॥ इम कही उठ्यो ततक्षिणे
जी । चाल्यो कूप मझार ॥ देव कहे धीटा थनेरे । लज्ज डर न लगार ॥ च ॥ १७ ॥
कमवक्ती आइ थायरीरे । क्यों तूं वांछे मोत ॥ पण मदन जी सुणें नहीं जी । कहे इम
कर्यां कांइ होत ॥ च ॥ १८ ॥ असुर तव असुरत्त थयो जी । ततक्षिण मदन उठाय ॥
वट शाखाने चेंटावीयो जी । हाल्यो चाल्यो नहीं जाय ॥ च ॥ १९ ॥ मदन चिंते रूडो
वण्यों जी । करणों किस्यो उपाय ॥ होणहार तिम थावसी जी । चिंता कियां काइ
थाय ॥ च ॥ २० ॥ मदन लटक्या वट शाखने जी । ढाल तेरमी मांय ॥ अमुल्य
अश्चर्य आगे घणों जी । सुणा जो चित लगाया ॥ च ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ क्रोधे
व्याप्यो व्यंतरो । महा वायु चलाय ॥ मूल सहित वट उपडी । उडी देशांतर जाय ॥

१ ॥ जोयण पच्चासने अंतरे । जयंती पुरने बाहर ॥ ते वट जाइने स्थंभीयो । व्यंतर गयो आगार ॥ २ ॥ मदन बडने चेंटी रह्या । वीत्याछे चउपहरे ॥ वदन सहू अकडावी-यो ॥ जाणे टूट हुवेढेरे ॥ ३ ॥ उपाय कुछ चाले नहीं । छूटणरो ते वार ॥ अकुलावण आवे घणी । चिंता व्यापी अपार ॥ ४ ॥ किहां हूं आयो उडो । काम स्थान रह्या दूर ॥ कुण छोडे ए दुःख थीं । के होसी आयु पूर ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १४ मी ॥ श्री अभीनंदन दुःख नीकंदन ॥ यह ॥ पुण्य संजोग सुजोग मिलेजग । पुण्य थी होवे सुख दाइ जी ॥ दुःख दोहग दूरा विरलावे । ते सहू पुण्य वडाइ जी ॥ पुण्य ॥ १ ॥ तिहां थी थोडी दूरने मांइ ॥ सावत सहा वेपारी जी ॥ सहू परिवारे तिहां उतरीया । जाता विदेश मझा-री जी ॥ पुण्य ॥ २ ॥ पिछली राते सेठ तिहां आया । करवा भणी निहारो जी ॥ तिण हीज वट हेटे आइ बेठा । छांया नो अन्धारो जी ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ ठसको सुणीयों मदन तणो तव । अतिही अश्चर्य पाया जी ॥ सुची करी मदन कने आया । मधुर वयणे बो-लाया जी ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ सत्यकहे तूं कुण इण समेंह्यां । व्यंत्र के मानव जातो जी ॥ किम बेठो तूं वृक्ष चडीने । किण कारण ठसकातो जी ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ नरम वयण तव मदन पयंपे । नहीं हूं निश्चय देवो जी ॥ कर्म संजोगे फंद फसाणो ॥ महारी दया तुम लेवे

जी ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ मेहर निजर म्हारा पर कीजे । जीवित दान मुज दीजे जी ॥ मर-
णातिक उपसर्ग मुकाइ । अभय दान फल लीजे जी ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ उपकार मुजपे
मोटो थासी । मानव जान वच जासी जी ॥ इत्यादी विनंती करी कह्यो । छोडावो मुज
फासी जी ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ सेठजीने दया दिल आइ । मदन तणों कर साइ जी ॥
खेंची तत्क्षिण नीचें न्हाख्यों । तेतले अश्चर्य थाइ जी ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ सेठजी लटक्या
बडने जाइ । मदन जी अश्चर्य पाइ जी ॥ सावंत शाहतो अती घबराया । हे प्रभू अब
करूं कांइ जी ॥ पुण्य ॥ १० ॥ ए नर नहीं कोइ छे इन्द्र जल्यो । मुजने फंद में डाली
जी ॥ आप छूटीने किहां अब जावे । सेठजी पाडी किकाली जी ॥ पुण्य ॥ ११ ॥
धावोरे धावो दुष्ट जे पकडो । इण कीधो अन्यायो जी ॥ उपकारनो वदलो इण दीधो ।
अपकारी ए सवायो जी ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ मदन कहे सेट दोष नहीं महारो । हूं नहीं
जाणू भेदो जी ॥ उपकारी आपपे संकट जोइ । हूं पावूं छूं खेदो जी ॥ पुण्य ॥ १३ ॥
सेठकहे कर छूटको ह्मारो । तो तूं जीवतो जासीजी ॥ नहींतो फिर फजी ती पुरी । था-
री इण ठाम थासी जी ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ मदन सेठ नेडो नहीं जावे । रखे पाछो जावूं
चटी जी ॥ उतारे सेठनो साद सुणीयो ॥ थी थोडीसी छेटी जी ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ सहू

जणा जोइ बड तले आया । लटकता सेठ देखाया जी ॥ रीसाणा सेठ अंगुली करीने । मदन भणी बताया जी ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ तत्क्षिण पकडी मदन ने तांइ ॥ धक्का मुक्का लगाया जी ॥ यो जादूगर बडो अन्याइ । अरे क्यों सेठ टंगाया जी ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ छोडरे दुष्ट सेठने वेगा । स्यूं टग मग रह्यो जोइ जीं ॥ छोडया विन जावा नहीं देस्यूं । कमवक्ती तुज होइ जी ॥ पु ॥ १८ ॥ मदन कहे निश्चेनहीं जाणू। छूटण बांधण उपायोजी॥ क्यों विन कारण मुजने मारो । कीजे रूडां न्यायोजी ॥ पु ॥ १९ ॥ लोक कहे अरे मीठा ठगारा ॥ क्यों बणे अब भोलोजी ॥ सेंठो पकडी उभा मदनने । जरान मूके पोलोजी ॥पु॥२०॥ घणा लोककी गरदी थाइ । हाहा कार मचाइजी ॥ ढाल चतुर्दश कही अमोलक । मदन सहाय कुण आइजी ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ अम्बिका नामे देवीनो । देवल घणो मनोहार ॥ विश्रामो पन्थी जना । लेवे तेह मझार ॥ १ ॥ तिण अवसर तिण मंदिरे । बहु विद्याका जाण ॥ जोगी एक जुगती करी । बेठा लगाई ध्यान ॥ २ ॥ कोलाहल सुणी करी । ध्यान पार तत्काल ॥ आया देवल बाहिरे । विसम्या नेण निहाल ॥ ३ ॥ पुन्य वंत एक बालने । घेर रह्या घणा लोक । वृध नर लटक्यो वटतले । किस्यो जम्यो ए थोक ॥ ४ ॥ तत्क्षिण चल आया तिहां । लोक देख हर्षाय । आदर

देइ अति घणो ॥ हुइ वात दर्शाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ डाल १५ मी ॥ कोयल टहुक रही मधुवन में ॥ यह ॥ गुणी की संगत गुणी जन पावे । गुणी ने गुणी मिल्या हर्षावे ॥ आं ॥ मदन गुणवंत जोगी जोइ । मन माहे खुसी घणो होइ ॥ गु ॥ १ ॥ ततक्षिण आइ पड्यो जोगी चरने । स्तुती करी रह्यो उलसहा धरने ॥ गु ॥ २ ॥ हिवे सरणो छे नाथ तुमारो । ए महा संकट महारो निवारो ॥ गु ॥ ३ ॥ हूं निराधार पड्यो फंद मांड । मुज अपराध इण में कुछ नाइ ॥ गु ॥ ४ ॥ सेठ जी मुज पे कियां उपकारो । अशुभो उदय थी थयो अपकारो ॥ गु ॥ ५ ॥ सहू कहे यो मीठो कपटी । मन चाले लागो देवेला चपटी ॥ गु ॥ ६ ॥ मदन की दया जोगी ने आइ । सहू जनने विश्वास दी याइ ॥ गु ॥ ७ ॥ घोटा की ततक्षिण वट के लगाइ ॥ सेठ जी ततक्षिण पड्या हेटे आइ ॥ गु ॥ ८ ॥ उठीने जोगी चरणे लागा । गुरु दर्शन थी सहू दुःख भागा ॥ गु ॥ ९ ॥ सहू जन जोगी की करे वडाइ । ऐसा करामाती जग विरलाइ ॥ गु ॥ १० ॥ नमन करी सहू जोगीने तांइ । निज २ उतारे सुखे आ रह्याइ ॥ गु ॥ ११ ॥ मदन जी चाल्यो जोगी की लारो । चिंते काम होसी याम्ने महारो ॥ गु ॥ १२ ॥ ए करामाती पाणी अपासी । तिण थी राय कंन्या दुःख जासी ॥ गु ॥ १३ ॥ आनंद पुरने येही वसासे ।

सहू मन वांच्छित यां थी थासे ॥ गु ॥ १४ ॥ जोगी मदन अम्बिका स्थान आया । नेडा मदन बेठी सीस नमाया ॥ गु ॥ १५ ॥ कहे हूं श्वामी जी शिष्य तुमारो । सेवा करस्यूं सदा रही लारो ॥ गु ॥ १६ ॥ आपकी आज्ञा प्रमाणे रहस्यूं । तिळ मात्र कधी दुःख नहीं देस्यूं ॥ गु ॥ १७ ॥ इम सुणीने जोगी हर्षाया । कुण छे तूं किहां थी आया ॥ गु ॥ १८ ॥ नरमी कहे हूं वैस्य नो पूतो । जल लेवाने अगड पहूं तो ॥ गु ॥ १९ ॥ देव दीयो मुज बडने चेंटाइ । आप कृपा थी ते दुःख गयाइ ॥ गु ॥ २० ॥ उपकार आप कियो अति भारी । जीवित दान तणा दातारी ॥ गु ॥ २१ ॥ हिव हूं आपकी वंदगी करस्यूं । तेहथी दुःख महोदधी तरस्यूं ॥ गु ॥ २२ ॥ सहू गुण संपन्न चेलो जोइ । जोगी का रोम २ खुश होइ ॥ गु ॥ २३ ॥ प्रेम धरीने राख्यो पास । मदन जी रह्या धर हुल्लास ॥ गु ॥ २४ ॥ गुणीने गुणवंत इमा आ मिलिया । दोनु जणारा मनोर्थ फलीया ॥ गु ॥ २५ ॥ आगे करामात करसी घणेरी । ते सुण जो सहू हित चित देरी ॥ गु ॥ २६ ॥ तीजो खन्ड समाप्त थाइ । ढाल पन्नर ऋषिं अमोलख गाइ ॥गु॥२७॥७॥

तृतीय खन्ड सारांस हरीगीत छन्द ॥ वन जोगी घर मिली कंन्या । शुक उपाय वतावीया ॥ जो खेचरी नृत्य बचन ले । उजड पुर में आवीया । चेंटीवट उड गया जयंती ।

जोगी करामाती पाइया । एती चरी खन्ड तीसरे । अमाले ऋषि दरसावीया ॥ ३ ॥

परम पुज्य श्री कहान नी ऋषि जी महाराज के स्मप्रदायके बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री अमोलख ऋषि जी रचित पुण्य प्रकाश मदन कुँवर चरिलस्य तृतीय खन्डम् समात ॥ ३ ॥ ◌ ◌ ◌ ◌ ◌

॥ दुहा ॥ अर्हंत सिद्ध साधू धरम ॥ गृही यह सरणा चार ॥ नेमी नाथ नमन करी ॥ कहूं चोथो अधीकार ॥ १ ॥ मदन कथन अति मन रमन । सुणता विकसे हुल्लास ॥ वक्ता मन वधे उमग तिम । करेगुणी गुण प्रकास ॥ २ ॥ बुद्धिवल सहूथी अधिक । जो साहस वंत होय । अश्चर्य चकित सहूने करे । सुण जो ते सहू कोय ॥ ३ ॥ रही मदन जोगी कने । सेवा साधे हमेश ॥ चिंते जोगी परखीये । देइ को आदेश ॥ ४ ॥ एकदा रयणी अर्ध मे । जोगी अने मदन ॥ विनोद वात करता थका । बेठा अस्व सदन ॥ ५ ॥ रुदन शब्द सुणीयो तदा । जोगी कहे कुण रोय ॥ मदन कहे नारी अछे । कहो तो आवुं जोय ॥ ६ ॥ साहस पेखी मदन को । जोगी हुकम फरमाय ॥ जावो खबर आवो लही । किण कारण अरडाय ॥ ७ ॥ तत्क्षिण उठी मदन जी । जोगीने पग

लाग ॥ शब्द तणे अनुसार थी । चाल्या शिघ्र ते भाग ॥ ८ ॥ अन्धारो छायो अति । प्रथवी नहीं देखाय ॥ साहस धारी मदन जी । स्मशाण में आय ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ढाल १ ली ॥ गाय २ घांटा रया ॥ यह ॥ प्रजल मशाण प्रकाश थी । तिहां देखे द्रष्ट पसार ॥ साहस वंत मदन जी । सूली एक उतंग तले । ते बेठी रोवे नार ॥ साहस वंत मंदन जी ॥ १ ॥ जवान नर सूली परे । ते मृत्यूक हुयो देखाय ॥ साह ॥ निरखे नारी सब ते । तब दया मदन ने आय ॥ सा ॥ २ ॥ मदन पूछे मीठा सथी । वाइ रोवो छो किण काम ॥ सा ॥ वीतक तुम मुजने कहो । जो होवे तुम मन हाम ॥ सा ॥ ३ ॥ इम सुण नारी खुशी । हुइ । कहे घुंगट पट उघाड ॥ सा ॥ नेणा नीर नितार ती । स्यूं पूछो मुज प्रकार ॥ सा ॥ ४ ॥ दुःख तो जेहने कीजीये ॥ कांइ जे नर दुःख गमाय ॥ सा ॥ अन्य आगे कहतां थकां । ते वयण प्रलाप कहाय ॥ सा ॥ ५ ॥ मदन कहे मुज शक्तसम । में तुजने देस्यूं साज ॥ सा ॥ योग्य काम करस्यूं सही । तुम कहोते छोडी लाज ॥ सा ॥ ६ ॥ हर्षाइ प्रेमला भणे । तुम सुणजो साहस वंत ॥ सा ॥ इण सूलीरे उपरे छे । महारा प्यारा कंत ॥ सा ॥ ७ ॥ द्वेषी जन दगो करी । विन मोते न्हाख्या मराय ॥ सा ॥ प्राणेश्वर विरहथी । मुज प्राण रह्या अकुलपाय ॥ सा ॥ ८ ॥

हुं रोवूं इण कारणे । मुज जमवार जासी केम ॥ सा ॥ म्हारो रक्षण कुण करे । विण प्यारे म्हारो प्रेम ॥ सा ॥ ९ ॥ मदन कहे गत वातनों । वाइ पश्चाताप अजोग ॥ सा ॥ थांरे प्यारे सम्बन्ध को ॥ वाइ इत्ता दिन संजोग ॥ सा ॥ १० ॥ समता धारी विरमीये वाइ । अण हूंतो ए विलाप ॥ सा ॥ महीला कहे इम किम कहो छो । सत्पुरूष हो आप ॥ सा ॥ ११ ॥ मदन कहे किस्यो करुं ॥ कांइ मूवा न जीवता होय ॥ सा ॥ ओर कहो सो में करूं । तुम उपाय वतावो सोय ॥ सा ॥ १२ ॥ कांता कहे मुज कंत नो । मन मुख जोवा नी हाम ॥ सा ॥ मनडो अति तरसी रयो । ते किम होवे मुज काम ॥ सा ॥ १३ ॥ सूली तो उंची घणी । कांइ मुज थी नही चडाय ॥ सा ॥ १४ ॥ कृपा करी मुज उपरे । आप दर्शन देवो कराय ॥ सा ॥ ॥ १५ ॥ मदन कहे पर नार ने तन । कर लगावा पच्चखाण ॥ सा ॥ पण उपाय एक दाखवू । तिम देखो तुम प्राण ॥ सा ॥ १६ ॥ नमीने सें उभो रहूँ वाइ ॥ इण सूलीके पास ॥ सा ॥ तुम चडी मुज पीठपे । सहु पूरो मन की आस ॥ सा ॥ १७ ॥ खुशी हुइ नारी भणे कांइ । ठीक वताइ रीत ॥ सा ॥ मदन नम्यो नारी चडी । तव करवा प्रीतम प्रीत ॥ सा ॥ १८ ॥ प्रेम धरीने निरखथी । तव मुरदे मुख दीयो फाड ॥ सा ॥

जाण्या आइ प्रेममें । प्रीतम मुज इच्छे प्यार ॥ सा ॥ १८ ॥ सबे ना मुखने ढुंकडो ।
तब भामनी मुख लेजाय ॥ सा ॥ नाक काट मुखमें लियो । नारी दुःख पा घबराय ॥
सा ॥ उतरी नीचे मुख ढांक ने । रक्त पड्यो मदन पे तदाय ॥ सा ॥ २० ॥ चमकी
मदन मुख पेखीयो । तिहां अग्नीने प्रकाश ॥ सा ॥ अश्चर्य पायो मन विषे कांइ । किम
काटी इण नाश ॥ सा ॥ २१ ॥ पुछे बाइ तुम तणी । सहू पुगी मनकी आस ॥ सा ॥
नारी कहे पुगी सही । अब जावूं निज आवास ॥ सा ॥ २२ ॥ नारी तो निज घर चली
। मदनजी सब मुख जोय ॥ सा ॥ नाक देख नारी तणों ते । अतिही अश्चर्य होय ॥सा
॥ २३ ॥ पाछा तिहाथी चालीया । ते अम्बा देवले आय ॥ सा ॥ बंदन कीधो प्रेमसु ।
सन्मुख बेठा हुल्लाय ॥ सा ॥ २४ ॥ चौथा खन्ड तणी कही । अमोले पहली ढाल ॥
सा ॥ परिक्षा दी जोगी भणी । छे आगे सम्मास रसाल ॥ साहस ॥ २५ ॥ ❀ ॥
॥ दुहा ॥ जे जे विरतंत वीतीयो । ते सहू दीयो संभलाय ॥ साहस देखी मदन को
जोगी अति हर्षाय ॥ १ ॥ अर्धरातमें एकलो । महा भयंकर ठाम ॥ किंचित जातो न
डर्यो । कियो कीयो मुज काम ॥ २ ॥ मुज विद्या साधन भणी । सूर पुरुष की क्षप ॥
बहू दिन थीं थी म्हार । ते आवी मिल्यो टप ॥ ३ ॥ ए छे पुण्यवंत प्राणीयो । सूरो

वहू हुंशार ॥ इण स्हाये साधन करूं । फळ सी विद्या सार ॥ ४ ॥ इम चिंता कहे म-
दन स्यूं । सुणो वच्छ गुप्त वात ॥ विद्या म्हारे साधवी । जो सहायक तुम थात ॥ ५ ॥
॥ ❀ ॥ ढाल ॥ २ जी ॥ श्री जिन अजित नमु जय कारी ॥ यह ॥ मदन सेण महा
पुण्यवंत प्राणी । सुणीयो जोगी वचनजी ॥ कर जोडी ने इण पर बोले । हर्षित करीने
वदनजी ॥ म ॥ १ ॥ सुखथी विद्या साधोश्यामी । करस्यूं शक्ती सारु सेवजी ॥ महारा
जोगो हुकम फरमावो । ते करस्यूं तत्क्षेवजी ॥ म ॥ २ ॥ हर्षाइ जोगी तब बोले । का
ली चतुरदशी रातजी ॥ मशाणे जाइ विद्या साधवी । जेहथी चिंतित थातजी ॥ म ॥ ३ ॥
इम वातां करतां दिन उग्यो । विद्या साधन सराजाम जी ॥ कहे जोगी चालो गाम मांइ
ले आवां सहू आमजी ॥ म ॥ ४ ॥ जोगी मदन दोइ जोगी रूपे । सोभित वेस सजाय-
जी ॥ नयर जयंती माहे पधार्या । मध्य वजारे आयजी ॥ म ॥ ५ ॥ तेतले सामे वंदी-
जन एक । ठाट थी आ तो देखायजी ॥ रतांजणी चरचित तस अंगे । कणेर पुण्य पह-
रायजी ॥ म ॥ ६ ॥ आगल फूटो ढोल बाजाता । सूभट शद्द उचारे जी ॥ इण रा स्हा-
यक कोइ मत होवो । इणरा कर्म इने मारेजी ॥ म ॥ ७ ॥ तेहनें देखण उंचे स्थाने ।
उभा मदन जोगी दोइजी ॥ वंदीजन औलखी तो प्रेक्षी । मदन जी हर्षित होइजी ॥ म ॥

॥ ८ ॥ चिंते थाने किण काज बान्ध्या । कांइ गुणो इण कीधोजी ॥ गुरूजी से कहे हुक्म होय तो । छोडावूं काल सुख दीधो जी ॥ म ॥ ९ ॥ जोगी कहे उपकार ए कीजे । तब ऊभो सहू आडोजी ॥ अहो किहां ले जावे इण ने । कांइ अन्याव देखाडोजी ॥ म ॥ १० ॥ राय भट कहे यह अन्याइ । विन गुणे इण पापीजी ॥ पोतानी नारी नो नाक काट्यो । झूटो बोले तथापी नी ॥ म ॥ ११ ॥ बंदीवान कहे म्हाराजा । म्हारी अर्ज सुण लीजोजी ॥ न्याय अन्याय हीयामें तोली । गुन्हेंगारने दंड दीजोजी ॥म॥ ॥ १२ ॥ में छूं रत्न पुरीनो वासी । सेठ सुदर्शन नो पुतोजी ॥ अंगज महारो नाम कहीये । व्याव इहां मुज हूंतोजी ॥ म ॥ १३ ॥ आणो लेवा बहूदा आयो । नारी न चाले मुज घेरो जी ॥ दोइ स्थान हँसी हुवे महारी । खायो घणोही फेरोजी ॥ म ॥ १४ ॥ एकदा में मन माहें विचार्यो । उपवय हुइ मुज नारी जी ॥ किंचित प्रिती किम नहीं मुजथे । क्यों नहीं चाले लारी जी ॥ म ॥ १५ ॥ इम चिंती परस्यूं नी राते । मुज ने नींद न आइजी ॥ अर्ध निशामें म्हारी नारी । उठी ने किहां जाइजी ॥ म ॥ १६ ॥ में पण गुप्त पणे हूयो लारे । एकना घर माहे पेठो जी ॥ तरूण पुरूष मुज नारी संगाते । क्रिडा करतां दीठोजी ॥ म ॥ १७ ॥ जार कहे खोटो प्रेम है थारो । तूं अब सा-

सरे जासी जी ॥ थारे वियोगि प्यारी ह्मारो । अकाले मृत्यू थाजी ॥ म ॥ १८ ॥ नारी कहे प्यारा इण भव माही। छोडू नहीं तुज साथो जी ॥ ते मोल्यो मुज गिणती में नाही॥ तुमही छो मुज मथो जी ॥ म ॥ १९ ॥ सदातो वेगो मरतो (जानो) घरकानी । अ-वके हट घणी लीधोजी ॥ देखूं जावे नहीं तो उपावे । पर भव पूगा स्यूं सीधो जी ॥ म ॥ २० ॥ इम सुणी जार अति हर्षाया । काम क्रिडा करवा लाग्या जी ॥ सुणी वात अजोग कृतव्य जो । म्हारो क्रोधानल जाग्या जी ॥म॥ २१ ॥ लल कायों में रे दुष्ट अ-न्याइ । आज लग्यो तूं हाथेरे ॥ इत्ता दिन मुज घणो सतायो । लुब्धी नार मुज साथे जी ॥ म ॥ २२ ॥ ते दुष्ट म्हारे साम थइयो । करवा लाग्यो लडाइ जी ॥ हाक हमारी सुणने तिहां तत्र । लोक घणा आया धाइ जी ॥ म ॥ २३ ॥ राज सूभट पण दोडी आ-या । पूछी हकीगत सारी जी ॥ जाण अन्याइ कब्ज कियो झट । पकडी लेगया जारोजी ॥ म ॥ २४ ॥ नारी शरमाइ घर गइ भागी । ए थाइ दूजी ढालोजी ॥ रुषि अमोलख क-हे अत्र आगे । नारी चरित्र निहालो जी ॥ म ॥ २५ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ प्रात समय ते जारने । उभो कियो नृप पास ॥ वीती वारता रात की । कीनी सहू प्रकाश ॥ १ ॥ मुज ने पण बोलावी यो । अं फही शाची वात ॥ इण नर मुज मारण भणी । रच्यो हूंतो उ-

त्पात ॥ २ ॥ आप पासाये में बच्यो। दीजे इण ने दंड ॥ लोक सुणी सहू थर हरे । फिर न हुवे ये भंड ॥ ३ ॥ प्राणांत शिक्ष करी । दियो सुलीये चडाय ॥ पाप कट्यो मैं इम कही । हर्ष्यो मनरे मांय ॥ ४ ॥ मन उतर्यो इण नार थी । कियो जावण विचार ॥ दिवस थोडो जाणी करी । रह्यो रात ए वार ॥ ५ ॥ ढाल ३ जी ॥ कमलदल लोचना ॥ यह ॥ चतुर जन प्रेक्षीए । एतो चरित्र पूर्ण भरी नार ॥ च ॥ आं ॥ तिण अवसर मुज श्वसुर सासु । जो पुली विभचार ॥ च ॥ १ ॥ शरमाया घणा मनके मांइ । दियो तास धिक्कार ॥ च ॥ २ ॥ लोक देखावु ते पण शरमी । नरमी करे उच्चार ॥ च ॥ ३ ॥ चूक ए म्हारी मोटी घणी हुइ । क्षमा करो हितकार ॥ च ॥ ४ ॥ हिवे कधी इसो काम न कर स्यूं ॥ बोली दीन हो लाचार ॥ च ॥ ५ ॥ सुसरा मुज मनाइ लेगया । तेपडी पग मझार ॥ च ॥ ६ ॥ सासु सुसरे करे नरमांइ । मुज हीयो दीयो ठार ॥ च ॥ ७ ॥ बुरी भली पण एछे तुमारी । हिवे लेवो संभार ॥ च ॥ ८ ॥ जो उंडो विचार न करसो तो । पस्तासो कोइ वार ॥ च ॥ ९ ॥ नाम घणो जगमाही भंडासी । लोक देशी फिटकार ॥ च ॥ १० ॥ दाबी बुरी बात इहांहीं राखो । लेजावो इने लार ॥ च ॥ ११ ॥ इत्यादी सुण क्रोध समायो । वीती बात विसार ॥ च ॥ १२ ॥ खा पी राते जाइ सूता । मैं

हुयो नींद मझार ॥ च ॥ १३ ॥ पाछली थोडी रात रही जव । सुणी में किलकार ॥ च ॥ १४ ॥ छोडो२ रे मुजने छोडा वो । मारे मुज भरतार ॥ च ॥ १५ दचकी उठ्यो में तव जोयो । देखूं तो मुज नार ॥ च ॥ १६ ॥ में तस पूछ्यो क्यों तूं चिल्लावे । कुण तुज दुःख देनार ॥ च ॥ १७ ॥ ते मुज गाल्या देवा लागी । अरे दुष्ट अविचार ॥ च ॥ १८ ॥ महारी नाक तें नींद में कापी । भोलो वणे इण वार ॥ च ॥ १९ ॥ तव अती में अश्चर्य पायो । घ्राण न जोयो तस ठार ॥ च ॥ २० ॥ कुण काट्यो नाक घरमें आइ । गुंग्यो में भर्म मझार ॥ च ॥ २१ ॥ तेतले मुज सयन घर वारे । लोक आ जम्या अ-पार ॥ च ॥ २२ ॥ सासु सुसरा मांये आया । तेकिमाड उखाड ॥ च ॥ २३ ॥ असूरत्त हो मुजने पकड्यो । देवा लाग्या मार ॥ च ॥ २४ ॥ कुंदी खूब करी तिहां महारी । लाया सिपाइ सिरकार ॥ च ॥ २५ ॥ नकटी नाक सहूने देखाडे । सहू रह्या सत्य धार ॥ च ॥ २६ ॥ मुज वान्धी आया राज पासे । न्टप कोप्यो धर क्षार ॥ ज ॥ २७ ॥ काल दूजाने शिक्षा दिलाइ । आज थे कियो अनाचार ॥ च ॥ २८॥ म्हारो वोल्यो का-न धरे नहीं । दीयो हुकम पुकार ॥च॥ २९ ॥ जावो एने सूली चडावो । एमोटो गुन्हेगार ॥ च ॥ ३० ॥ विन इन्साफ मुज वान्ध ले जावे । किस्यो करुं हूं लाचार ॥ च ॥

३१ ॥ श्वामी जी कहूं हूं प्रभू साक्षे ॥ मैं नहीं लियो नाक उतार ॥ च ॥ ३२ ॥ विना गुन्हे में मार्यो जावूं । कीजे म्हारी बहार ॥ च ॥ ३३ ॥ ढाल तीसरी चौथा खन्डकी । अमोल करी उच्चार ॥ च ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ महारी वीती वारता । दीधी श्वामी सुणाय ॥ जगदाधार जोगी श्वरा । सोचो न्याय अन्याय ॥१॥ छोडावो ए कष्टथी । थास्ये बहू उपकार ॥ धर्मी धर्म रक्षा करो । एहीज आप आचार ॥ २ ॥ सुणवाणी आगंदकी । चिंते मदन ते वार ॥ राते जोइ मशाणमें । तेहीज नकटी नार ॥ ३ ॥ एक यह सज्जन माहेरो । दूजो छे सतवंत ॥ तीजो धर्म ए उगरे । चोथो होय साहायंत ॥ ४ ॥ छोडावू हूं इण भणी । देखाइ चमत्कार ॥ अभय दियो वंदी भणी । ते हर्ष्यां ते वार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ४ थी ॥ राज ग्रही तो नगरी जी ॥ यह ॥ मदन तदा सुरा थाइ । जोगीनी आज्ञा पाइ । कांइ फरमाइ । अहो सुणीयों तुम सूभटो जी ॥ इण नर नाही गुन्हो कीनो । राजा खोटो दंड दीनो । हम मन चीनो । सहू दूरा यहा थी हटोजी ॥ १ ॥ सूभट तव माने नाहीं । छोडे नही अंगजताइ । रीस ज आइ । कहे तुम विच नहीं आइये जी ॥ जिणरो निमक हमने खायो । तिण ए हुकूम फरमायो । हम उठायो । ते खोटो नहीं थावइजी ॥ २ ॥ नहीं हम मूका त्रिकाले । तुम क्यों

पड्या इणरे चाळे । किस्यो भालै । हट्ट जावो इहां थकीजी ॥ मदन वहू पर समजावे । सूभटने नहीं मन भावे । धूम मचावे । हीण वचन रह्या वकी जी ॥ ३ ॥ तव जोगी घोटो उठायो । रोशे सुभटने वतायो । सहू मुरछायो । धरणी को सरणो लियो जी ॥ लोक सहू अश्चर्य पाइ । जीव लेइ न्हाठा जाइ । हा कार थाइ । कोइ राजाने जा कियो जी ॥ ४ ॥ सचीव ने नृप पठाया । वजारमें दोडी आया । जो तिण ठाया । भेद नगर जनथी लयोजी ॥ राय आगल जाइ कह्यो । जोगी कोप थी इम भयो । अश्चर्य थयो । जोगी शांत करो नृप कयो जी ॥ ५ ॥ सचीव सासंत साथे लेइ । जोगीने आप्रणमेइ । कर जोड केइ । इच्छित हुकम फरमावीयो जी । सहू समोह भेगो भयो । तत्क्षिण तिहां देखी रह्यो । मदन कह्यो । अहो सुणो न्यावसी फावीयो जी ॥ ६ ॥ न्याय आसणे विंराजी । किस्या न्याय कीनो गाजी । कहो ते मांजी । मरण मुखे इंने क्यों दीयोजी ॥ राजा इश्वर सारखा । करे बुद्धि थी पारखा । जे हांरीखा । फिर शिक्षा देवो कियो जी ॥ ७ ॥ पूछ तल्लास कीनी नांहीं । नाक खन्ड नही को लाइ । किहां पड्याइ । रक्त चिन्ह वली जोइये जी ॥ शस्त्र वली ते मंगावो । वक्त वार वली पूछावो । इम हुवे न्यावो । उतावला नहीं होइ ए जी ॥ ८ ॥ सचिव कहे साची कही । भूल्यो हूं शुद्ध ना

रही । चालो सही । राय भवनरे मांयने जी । मान बात साथे थया । जोगी मदन आ
गल भया । सभामें गया । लोक घणा जुडचा आयने जी ॥ ९ ॥ क्षेमा सहा बोलावी
या । पुत्री संग ले आवीया । बतावीया । निर घाण सब प्रजा भणीजी ॥ मदन नारी
थी पूछे त्यारे किस्यो वैर पतिथी:थारे।नाकउतारे।किहां किण वेलां लेत्रि अणीजी॥१०॥शाहाजी
बातमांडी कही।मुज कंन्याचूकी गइ।आज निशमइ।मुज जमाइरोसे भरीजी॥।निंद्रामें नाककापी
यो । और शद्द नहीं भाखीयो । मदन कियो । एनाण लावो ढूंढी करी जी ॥ ११ ॥
सामंत्त साथे भेजीयो । ओरो चउ बाजू पेखीयो । नहीं देखीयो । रक्त टीप ने हाडको
जी ॥ मून धरी फिर आवीया । मदन भणी दरसावीया । नहीं पावीया । सेनाण जोवो
ताडको जी ॥ १२ ॥ नृप पूछे तब किम भयो । नाशिक एनो किण लियो । सहू विस्म-
यो । हिव न्याव चौकस थावसी जी ॥ मदन कहे चौकस करो । नहीं अपराधी ए नरो
। निश्चय धरो । नारी खोटी स्वभावथी जी ॥ १३ ॥ चालो नाक हूं देखाडूं । मुर्दाना
मुखथी कहाडूं । असत्य झाडूं । राजादी सुण अश्चर्य भयाजी । सहु मदन साथे गया ।
जोगी राज सभामें रया । सहू आगया । स्मशाणे सूली जिहां जी ॥ १४ ॥ सबु मुख
थी नाक कहाडीया । सहू लोकाने देखाडीया । सहु चालीया । राज कचेरी आवी याजी

॥ रातनी वात मदन वीती । कही सहू थइथी जेती । हुइ फजीती । नारी चरित्र गवा-
वीया जी ॥ १५ ॥ राय नारीपें कोपीयो । मारण को हुकम दीयो । मदन कह्यो । इम
तो नहीं होवे कधी जी ॥ लोकने भास्ती कारणे । कहाडो देशने वारणे । ते धारने । क-
री सजाइ यथा विधीजी ॥ १६ ॥ मुख कालो कराइयो । लमेंवा कुरण मंगाइ यो । बे-
ठावीयो ॥ ढोल फूटो आगे वाजतो जी ॥ धूल मट्टी उछालता । मध्य वजार चालता ।
निहालता । हुर राट्यो कुण थागले जी ॥ १७ ॥ ठाम २ उभा रही । रायजी नो हुक-
म कही । कुमत गही । तेहनी ए गत थावसी जी ॥ जे विभचारे राचसी । मिथ्या भा-
पण भाषसी । इण साक्षसी । दोनो भव दुःख पावसीजी ॥ १८ ॥ निकाली गामने
वाहीरें । कर्मोदय कुण सहाइरे । देखाइरे । अनाचारण गत एह बीजी ॥ सहू धिकार
तस देवता । जोगीनः गुण केवता । आइ रेवता । निज २ सदने तेहस वीजी ॥ १९ ॥
क्षेमासा गया निज घरे । अपयश थी आरत धरे । किस्यो करे । कूगाल पाने पड्यांजी
॥ ते नार वनमें आथडी । मरीने नरके पडी । ते दुःख घडी । भव
भ्रमण इम बहू नड्या जी ॥२०॥ मदन कीर्तो विस्तरी।रुडी न्याय रीती करी।ए उच्चरी।चौढाल
चौ खन्डे सिरीजी । अमोल ऋषि इण पर कहे । सत्य सील जे द्रढ गहे । ते सुखलहे ।

जोवो मदन तणी चरी जी ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ तिहां रहवा जोगी भणी । करे विनं ती राय ॥ ते कहे नर वस्ती विषे । हमसे नहीं रह वाय ॥ १ ॥ एकांत वास पसंद हम । रहां इश्वर मे लीन ॥ क्या प्रयोजन जक्त से । जिसका संग तज दीन ॥ २ ॥ सहू प्रणम्या जोगी पदे । तेदे आशीर्वाद ॥ चाल्या यश विस्तार ता । राखी तिहां ते याद ॥ ३ ॥ अंगज पण साथे हुयो । जोगी मदन कहे एम ॥ हमतो रमते राम हैं । तूं संग ला गा केम ॥ ४ ॥ ते कहे हूं शिष्य आपको । रहस्यूं आज्ञा मांय ॥ मदन कहे साथे लियो । करसी सजन स्हाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ५ मी ॥ मोटी या जग मांहें मोहणी ॥ यह ॥ पुण्य संजोगे सजन मीले । अण चिंत्यो हो अणंद प्रगटाय ॥ गुणवंत थी गुण वंत मिल्या । चमत्कारी हो केइ करे उपाय ॥ पुण्य ॥ १ ॥ जोगी कहे मदन भणी । आपा आया हो जिण कारज काज । ते तो अजू कर्यो नहीं । थें फसाया हो इण झगडा माज ॥ पुण्य ॥ २ ॥ नरमाइ मदन भणे । गुरु राय जी हो इम फरमावो केम । जीवित दीयो गुणी नर भणी । भयो चेलोहो ए अर्पेसी क्षेम ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ ए उपकार मोटो हुयो । हिवे करस्यां हो सहू आपणो काम ॥ चालिये लहीये बजार थी । जेलागे हो ते सहू सराजाम ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ मध्य बजारे आवीया । बहू लोकज हो उठ करे प्रणाम

॥ लापरवाही निर्लोभीया । बुद्धवंता हो विरलाजग श्वाम ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ सामग्री जाच तिहां । ते लोकज हो दोडी २ लाय ॥ दुगुणी आपे कहेण थी । वरा जोरी हो तस पल्लें वन्धाये ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ दाम दे तेतो लेवे नहीं । कहे आपको हो सहू छे प्रताप ॥ लेवां यथा नरने ठगी । और चाहीये हो सो सुखे लेवो आप ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ देखी भक्ती उदारता । जोगीश्वर हो अतिही हर्षाय ॥ चिंतवे मनरे माय ने । ए प्रताप हो मदन को कहवाय ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ चायती वस्तु लेयने । तीनु आया हो लव ग्राम ने बार ॥ वेठा आम्बिका देवले । आपसमें हो करता वात विचार ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ रंग रुप सैंठाण जो । अंगज हो करे मन में विचार ॥ मुज वेन्योइ सारखा । अन्य कोइ छे हो यह तस आकार ॥ पुण्य ॥ १० ॥ अंगज पूछे मदन स्यूं । तरुण वयमे हो किम लीनो जोग ॥ किसा गाम का वासीथा । इहां आया हो किसडे संजोग ॥ पुण्य ११ ॥ उभय पक्ष संसार का । प्रकाशो हो कृपा कर नाम ॥ संशय मुज मन उपज । ते फिटसी हो पासूं अराम ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ मदन कहे शावास छे । थोडे अंतर हो गया मुज भूल ॥ हूंनसुदत्त नो मदन छूं । अजुध्याय हो उपनो मुजे कूल ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ अंगज सुण हर्ष्यो घणो । बेन्योइ जीं हो मिल्या मोटे भाग । दर्शन थी दुःख मेंटीया । आप की-

भो हो उपकार अथाग ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ किहां अछे कुटम्ब सहू । आप निकल्या हो देशाटन काज । घणा वर्ष वीती गया । पाछो पत्तो हो लाग्यो छे आज ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ मदन कहे सहू वट पूरे । कर्म जोगे हो हूं आयो इण ठाम ॥ ठीक हुयो तुम मुज मिल्या । हिवे करस्या हो आपण सहू काम ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ जोगी जो अश्चर्य भयो । साला बेन्योइ नो मिल्यो जोडो आय ॥ गंभरिाइ धन्य मदन की । इत्ती वारमें हो जरा भेद न जणाय ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ अंगजने जोगी कहे । मदन ए हो कियो किस्यो उपकार ॥ छोडाइ साला भणी । खुशी कीधी हो पोतानी नार ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ मदन तदा प्रणमी कहे । गुरु राया हो सहू आप उपकार ॥ हम दोइना जी तब तणा । श्वामी आपज हो एक छो दातार ॥ पुण्य ॥ १९ ॥ आप पुण्य प्रताप थी । श्वामी पग २ हो वरते आणंद ॥ आगे इछित पूरजो । सदा रह,जो हो आप चरण सम्बन्द ॥ पुण्य ॥ २० ॥ इम वातां विनोद में । गुजारे हो सुख २ काल ॥ अमोल सजन मिलापनी ॥ चौउ खन्डे हो कही पंचमी ढाल ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ हिवे विद्या साधन भणी । साधक थइया दोय ॥ बुद्ध बल गुण गौरव लखी । जोगी मन खुश होय ॥ १ ॥ परिक्षा बहू विध करी । सहू में पडिया पार ॥ तब तो मंत्र पढावीया । विधी युक्त

धर प्यार ॥ २ ॥ पक्का साधक तस किया । हटे नहीं को ठाय ॥ ग्रामात जोवा तर्णा । ढोन्यारे मन चाय ॥ २ ॥ कृष्ण चतुर्दशी सोम दिन । सद्रू सामर्म साज ॥ आया तिहु स्मशाण में । विद्या साधन कज्ज ॥ ४ ॥ जिम २ जोगी दाखवे । तिम २ करे सहूकाम ॥ प्रमाद भय चिंता तजी । काम सिद्धकी हाम ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल ६ ठी ॥ श्री सीमंदर श्याम सासण श्यामीरे ॥ यह ॥ चुलो मोटो खोदाय । कढाइ चढाइरे ॥ तल पूरी तत्काल । आंच लगाइरे ॥ १ ॥ जोगी मदन ने केय । उतावल कीजेरे ॥ कोइ लावो सेव तुम ढूंढ । जे थी काज सीजेरे ॥ २ ॥ कहे अंगज ने वार । हूं लेइ आवूंरे ॥ मुरदो सूली पर जेह । वेर गमावूंरे ॥ ३ ॥ मदन जोगी तिण ठाम । अंगज चाल्यारे ॥ निज रिपु निर्जीव । सूली ए भाल्यारे ॥ ४ ॥ युक्ती थी कहाडी तेह । खांदे धरीयारे । वजन घणो तिण माहे । जावे न चलीयारे ॥ ५ ॥ विसामा ने काज । तरु तल आइरे ॥ मृत्युक भूइये ठाय । क्षिण वेठाइरे ॥ ६ ॥ तेतले कलेवर तेह । व्यंब उडायोरे ॥ ते हीज तरुनी डाला । तस चिटकायोरे ॥ ७ ॥ अंगज चालवा ताम । करी तैयारीरे ॥ मृत्युक तिहां नही जोय । अश्चर्य पाया भारीरे ॥ ८ ॥ इत उत घणाइ जोय । तेह न देखावेरो । तेतले तरुनी डाल । लटकतो पावेरे ॥ ९ ॥ चढीया लेदण वृक्ष । साहस धारीरे ।

छोडाइ ते डाल । नीचे दीयो डारीरे ॥ १० ॥ आया नीचे उत्तर । निघा नहीं पडीयोरे ॥ जोवे उंची द्रष्ट । तरु डाले अडीयोरे ॥ ११ ॥ विस्मय घणो ही पाय । कुण उडावेरे ॥ मृत्युक किम उड जाय । ठेठ किम आवेरे ॥ १२ ॥ चडिया पुनः पादोप । बुद्धि उपाइरे ॥ छोडी लियो पीठ बान्ध । फिर उतर्याइरे ॥ १३ ॥ ले आया जोगी पास । वीतक दरसायोरे ॥ देखी साहस तास । जोगी हर्षायोरे ॥ १४ ॥ जोगी कहे रहो हूंसी-यार । भग नहीं जावेरे ॥ मदन अंगज दोइ तास । गाडो सावेरे ॥ १५ ॥ करतां तस उपचार । छोडी दीनोरे ॥ तेह सब तिण वार । रस्तो लीनोरे ॥ १६ ॥ मदन नस भगतो जोय । अश्चर्य पाइरे । लार भग्या ले तरवार । दीनो गुडाइरे ॥ १७ ॥ टांगडी पकडी तस । घींसता लायारे ॥ न्हाख्यो भट्टी पास । अंगज स्हायारे ॥ १८ ॥ कराइ तस अंगोल । चंदन चरच्योरे ॥ पेराइ कुसुम सुवास । पूज्यो अर्च्योरे ॥ १९ ॥ बल व्याकुल निप जाय । पासे मूक्यारे ॥ मंत्र थी बान्धयो तास । जरा नहीं चूक्यारे ॥ ॥ २० ॥ कर में दी करवाल । दियो सुवाइरे । दूजो उदड कणिक । का पूतलो वणाइरे ॥ २१ ॥ ते मनुष्याकार । श्रृंगार सजायोरे ॥ मुरदाने पग पासा । लाइ बेठायोरे । २२ ॥ पूतला लारे अंगज । दव नै बेठारे ॥ सब - ना मसाले पाय । सान्ध रही

संठारे ॥ २३ ॥ मदन अस्सी ले हाथ । प्रहरो देवेरे ॥ कोइ उपसर्ग करने न पाया। चकोरे तै गेवेरे ॥ २४ ॥ पद्मासने जोगी तह । जपता मंतोरे ॥ हो मादी यथाविध । करता तंत्रोरे ॥ २५ ॥ प्रगट्या व्यंत्र अनेक । चेष्टा करतारे ॥ मदन भणी ने मंत्र । त्राकला देतारे ॥ २६ ॥ ते गया विरलाय । जाप पूरो थाइ रे । सव उ-ठ्यो तत्काल । खड्ग कर साइरे ॥ २७ ॥ पीसतो जोरे दांत । अस्सी घुमातोरे ॥ अंगज पूतल लार । दवी मंत्र ध्यातोरे ॥ २८ ॥ काणिक पूतलानो ताम । सीस उडायोरे ॥ उछली पड्यो तत्काल । कढाइ मांयोरे ॥ २९ ॥ उकलता तेल मांय । गोता खाइरे ॥ जोगी ते इम जोय । आणंद पाइरे ॥ ३० ॥ ढाल छट्ठीके मांय । सिद्ध थयो मंतोरे ॥ मदन पुण्य की वात । अमोल कहंतोरे ॥ ३१ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ पूर्व दिशामें प्रगट्यो । सूर्य जाज्वल्य मान ॥ पूतलापर प्रभा पडी । दीसे सोवन वान ॥ १ ॥ जोइ दोनु हर्षी-या । जोगीकी करामात ॥ निज मेहनत सफली हुइ । जोगी पण हर्षात ॥ २ ॥ प्रण-म्या दो जोगी पदे । जोगी दी आसीस ॥ थाणे स्हाये माहारी। पूरी हुइ जगीस ॥ ३ ॥ मदन के कृपा आपकी । देखी अपुर्व वात ॥ मुज थी सीं सेवा सदी ॥ सहू आपकी करा-मात ॥ ४ ॥ ढांकी पुतलो लावीया । देवी देवल मांय ॥ भुक्त पान इच्छित करी । सु-

खथी सयन कराय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ७ मी ॥ कोयल टहुक रही माधुवनमें ॥ यह ॥
पुण्य पसाय जीव संपत पावे । अचिंती लक्ष्मी कर आवे ॥ आं ॥ शाहासिकता बुद्ध मदन
की जोइ । ते जोगी तब संतुष्ट होइ ॥ पुण्य ॥ १ ॥ जाग्या मदन तब जोगी चेतावे ।
सुण भाइ मुज मनसा जे चाहावे ॥ पुण्य ॥ २ ॥ हमतो है निष्प्य रिगृही साधू ॥ कन्क
कान्तासें रहे अलाधू ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ फक्त मंत्रकी सत्यता जोवा । कार्य कीधो पोरषो
होवा ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ तुमने जे मुज भक्ती बजाइ । तिण बदले ये देवुं तुम तांइ ॥
पुण्य ॥ ५ ॥ मदन कहे तब अलि नरमाइ । आप पसाय कमी कछू नाहीं ॥ पुण्य ॥
६ ॥ आपनी वस्तु आप पास राखो । मुजने तो कभी छेह न दाखो ॥ पुण्य ॥ ७ ॥
सेवक तो खुशी सेवा मांइ । सब ऋधि आपकी कृपा जणाइ ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ जोगी कहे
हमतो नहीं राखां । तुजने जोग देखी ने भाखां ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ जो रहसीये थारे पासे
। तो उपकार बहु लो थासे ॥ पुण्य ॥ १० ॥ इम जोगीनी कृपा जाणी । वराण सीस
चडायो ते टाणी ॥ पुण्य ॥ ११ ॥ कंर जोडी पूछे नरमाइ । किस्ये काम ये पोरसो
आइ ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ कृपा करीने गुण फरमावो । पूरसूं वक्त पे महारो चाहावो
॥ पुण्य ॥ १३ ॥ जोगी कहे यह जापते राखीजे । कहूं गुण ते कोइने न भाखीजे ॥पुण्य॥

१४ ॥ जिण वक्त होवे द्रव्य की चाहाइ । तब पोरषानी करी पुजाइ ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ गरदन नीचलो अंगज कापे । चेंची काम करे निरालापे ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ काट्यो अंग पाछो तिम थावे । जिम औषध से घाव रुंजावे ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ इम अखूट ऋद्धि यह जाणी । छेह न आवे कल्पांत दानी ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ इम सुणी मदन हर्षाया । जोगी वयण सत्य सिरे चडाय ॥ पुण्य ॥ १९ ॥ कहे आवी रखूं एकांत जाइ । काम पड्या लेजास्यूं आइ ॥ पुण्य ॥ २० ॥ तत्क्षिण गिरी किन्नरी में आया । जिहां खीका दर्शन पाया ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ विकट पन्थ मनुष्य नहीं आवे । तिहां उंडो घणो ग्वाडो खोदावे ॥ पुण्य ॥ २२ ॥ पोरसो पूर दियो तिण मांइ । उपर मजबूती पकी कराइ ॥ पुण्य ॥ २३ ॥ सेनाण भणी गोळ पत्थर जमायो । तेल सिन्दूर्यां देव वणायो ॥ पुण्य ॥ २४ ॥ पाछा आया जोगी पासे । किया काम सहू किया प्रकाशे ॥ पुण्य ॥ २५ ॥ मदन अंगज सुखे करे जोगी सेवा ॥ शिष्यने ते संभाले अह मेवा ॥ पुण्य ॥ २६ ॥ देखो मदनकी प्रबल पुण्याइ । अल्प प्रायस अखूट ऋद्धि पाइ ॥ पुण्य ॥ २७ ॥ कहे अमोलख चरित्र रसालो । पूरी हुइ चउखन्ड सप्त ढालो ॥ पुण्य ॥ २८ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ करामात जो जोगीकी । मदन करे विचार । इणही जोगी प्रशादस्यूं । काम पाडस्यूं पार ॥ १ ॥ उजड

पुरी वासावणो । मे दीधों छे बचन ॥ ते इण पुरुष पसायथीं । पडसी पार को दिन ॥ २ ॥ करे भक्ती भला भाव थी । अंतर नहीं जणाय ॥ जे मन कार्य साधवो । ते कधी न दर्शाय ॥ ३ ॥ तिहूं फिरता भूमंडले । जोता अनोखा ठाम ॥ चंगला नगरी आवीया । तिहां लियो विश्राम ॥ ४ ॥ नगरी जोवा चालीया । मध्य बजार के मांय । नर समोह मिलियो घणो । जोवा ऊभा रहाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ८ मी ॥ धन्य २ मेतारज मुनी ॥ यह ॥ झगडा दोमोटा जक्तमें । कन्क कान्ता केरा ॥ जे नर इण फंदे फस्या । कहूं चरित्र जेरा ॥ झ ॥ १ ॥ वैस्या अने विप्र त्तणी । तिहां लागी लडाइ ॥ विप्र कर घर्यो नारनो । छोडायों छोडे नाहीं ॥ झ ॥ २ ॥ लोक सहु ठठा करे । देवे विप्रने साजो । उस्ताद एक तूंहीं मिल्यो । भली लीधी लाजो ॥ झ ॥ ३ ॥ विप्र कहे अजू स्युं थयो । हिवे मजा देखाडू ॥ धूती खायो जगत ने । ते धन सहु कहाडू ॥झ॥४॥ गणिका अति घबरावती । जोडे कर पडे पायों ॥ एकवार मुज छोडीयो । नहीं करूं अन्यायो ॥ झ ॥ ५ ॥ इम जोइ नरमाइने । दया मदनने आइ ॥ छोडावूं हूं इण भणी । कहे गुरुजी तांइ ॥ झ ॥ ६ ॥ जोगी तव आज्ञा दीवी । झट करी नमस्कारो ॥ आयो विप्र वैस्या कने । इम करे उच्चारो ॥ झ ॥ ७ ॥ कूलीन नरने चोहटे । गृही नारीनो

हाथो ॥ विवाद करो निर्लज्ज थइ । ये जोग न वांनों ॥ झ ॥ ८ ॥ तुम छो भूदेव
सरीखा । गुरु जक्त का वाजो ॥ मनुष्य वृन्दे नारी थकी । झगडता लाजो ॥ झ ॥ ९ ॥
जोगी रुप जोइ करी । विप्र इम प्रकाशे ॥ साची कही म्हाराज जी । आपने इम भापे
॥ झ ॥ १० ॥ जाणो नहीं इणनी चरी । ए गणिक भूतारी ॥ जीव लिया घणा मर्दका
। चिलकती कटारी ॥ झ ॥ ११ ॥ आप अछो प्रदेशीया । कांइ भेदन जाणो ॥ पूछो
ग्राम का लोक थी । जरा इणरा वखाणे ॥ झ ॥ १२ ॥ मैंहीज उस्ताद इण तणो ।
अब नश ठाम लास्यूं ॥ आप अने सहू समक्षे । इणरो कूड कडास्यूं ॥ झ ॥ १३ ॥ सहू
कहे सदन भणी । श्वामी मत पडो चाले ॥ एनो रांडके एहवी । ब्रह्म मार्ग चाले ॥
झ ॥ १४ ॥ जाणी दयाल मदन भणी । वैश्य घबराइ ॥ पांव पकड मदन तणा । कहे
अति नरमांइ ॥ झ ॥ १५ ॥ श्वामी मुज रॉकडीपरे । जरा दया कीजे ॥ छोडाइ इण
दुष्टथी । मुज अभय दीजे ॥ झ ॥ १६ ॥ हूं तो छू अनाथणी । थइ छूं निराधारो ॥
आप जैशा गुरु मिल्या । दुःख समुद्र तारो ॥ झ ॥ १७ ॥ आप विना महारा इहां ।
रक्षक नहीं कोइ ॥ छोडायां विन जावोतो । ईश सोगन होइ ॥ झ ॥ १८ ॥ मदन कहे
धैर्य धरो । घबराइयो नांहीं ॥ मुज उपाय जो चालसी । तो छोडास्यूं वाइ ॥ झ ॥

१९ ॥ कारण कोइ समज्या विन । हूं कि किणने दबावूं ॥ धीरपे न्याव निवेडने । सहू रस्ते लावूं ॥ झ ॥ २० ॥ इम सुण सहू विस्मय हुया । वैस्या धैर्य लाइ ॥ ढाल आठ चौथा खन्ड की । अमोलख गाइ ॥ झ ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ मदन कहे तब विप्रने । घबरावो मत चित ॥ धैर्य लाइ सच्ची कहो । हूं जे पूछूं मित ॥ १ ॥ कर किम झाल्यो एहनो । किस्यो कियो अन्याय ॥ ते तुम कहो सहू मांडने । जिम मुज समजण थाय ॥ २ ॥ फिर गुरु प्रशादसे । करस्यूं यथा योग्य ॥ मन दोइका राखस्यूं । खुशी होसी सहू लोग ॥ ३ ॥ धीर वीर बुद्धि निलो । मदन ने जाणी तेह ॥ विप्र कहे श्वामी सुणो । न्याव निवेडो एह ॥ ४ ॥ इण ठगीयो मुज मिलने । में ठगी इण तांय ॥ करतव्य कहूँ विस्तारने । जे इण कियो अन्याय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ९ मी ॥ गाफल मत रहरे ॥ यह ॥ संग तज दोरे । सहू सुज्ञ संग तज दोरे ॥ वैस्या नहीं हुइ किस कीनारी । बात कहू वीती विस्तारी ॥ सं ॥ आं ॥ चंपानगरी मझारी । वसे कमल सेठ धन धारी । तस भोगवती छे नारी । बृधवय नन्दन एक थैयो । गुण चन्द नाम तस दैयो ॥ संग ॥ १॥ लाड कोड घणा कीधाइ। पूरी विद्या नाहीं पढाइ ॥ रुपवति नार परणाइ ॥ भोगवे भोग मन माना ॥ जाता काल नहीं जाना ॥ संग ॥ २ ॥ एकदा बेठा गौखां मांइ ॥ वहू

सेठ जाता दीठाइ। पूछे भटने तब बुलाइ ।कोणये किहां थकी आया ॥ दीसे सहू हर्ष में भराया ॥ संग ॥ ३ ॥ तब सेवक कहे सुणो श्वामी । ए सेठ सुदोदन नामी । तास घर में कछु नहीं खामी । वेपार काज विदेश सिधाया ॥ लाभ उपराजी आज आया ॥ संग ॥ ४ ॥ सहू सज्जन ये तसथावे । वधाइ घर ले जावे । कमावु सहू मन भावे । सुणी इम दास तणी वाणी । कूमर के मन में भेदाणी ॥ संग ॥ ५ ॥ हूं तो कमाइ नहीं जाणूं । खावूं छू ठन्डो खाणू । किम माविल ने मन मानू । अब तो विदेश जाइ ॥ लावू धन घणो कमाइ ॥ संग ॥ ६ ॥ इम भाग परिक्षा थाइ । सज्जन मुज लासी वधाइ । सहू लोक मने सरसाइ । इम करी पुक्त विचारो ॥ माविल कने आया तत्कालो ॥ संग ॥ ७ ॥ आतुर कुँवर ने जोइ । सेठ अश्चर्य मन अति होइ ॥ मिष्ट वयणे पूछे सोइ । कुँवर कहे अर्जी सुण लीजे ॥ इच्छा म्हारी पूर्ण कीजे ॥ संग ॥ ८ ॥ मैं विदेश कमावा जावूं । पूंजीने द्रव्य कुछ चावू । दूंगाजे कमाइ लावूं ॥ उमंग उपजे मे मुज मन में । लेवूंगा यशः सहू जन में ॥ संग ॥ ९ ॥ पिता कहे सुण मेरी भाइ । अपणे घर कमी कुछ नांही । खरचो विलसो जे चित चाइ ॥ कारण कमावा का नहीं कांइ । जाण के दुःखी न होणाइ ॥ संग ॥ १० ॥ इम बहु परे समजावे । पण कुँवर मन नहीं भावे ।

जावण को हट लगावे ॥ करण मन प्रसन्न तब पूतो ॥ दियो घणो धन और सूतो ॥
संग ॥ ११ ॥ वली ग्राम दंडेरो पीटायो । गुण चन्द वीदेशे जायो । तस संगे जे नर
थायो । साज दे शक्ती प्रमाणे । काल ते थासी रवाने ॥ संग ॥ १२ ॥ सुण बहुनर
साथे थावे । साकट में माल भरावे । तब पिता सीख फरमावे । धार जो बेटा हित
लाइ । सुखे ज्यों पाछो घर आइ ॥ संग ॥ १३ ॥ संतोष खरो सिव जाणो । सील
औषध छे सुख दानो । नरमाइ माता मानो । सत्य छे सहू स्थान साखी । मधुरता
पूंजी अखुट भाखी ॥ संग ॥ १४ ॥ सहु से हिल मिल रहीजे । परनारीपे द्रष्ट नदीजे ।
पर धन की इछा नहीं कीजे । हूंशारी से रहो सदाइ । वेगा आवजो सब भाइ ॥
संग ॥ १५ ॥ बहू मुनीम गुमास्ता दीधा । नोकर भी बहू संग लीधा । भोलवण दी
बहु विधा ॥ सिन्धू कंठ लग पहोंचाइ ॥ वाहण आछो सजवाइ ॥ संग ॥ १६ ॥ शुभ
महोर्ते चालू थइया । सज्जन फिर घर सब गइया । वाहण नीर में वहीया ॥ सुखे श्रीपुर
चाली आया ॥ शेहर छटा देख हर्षाया ॥ संग ॥ १७ ॥ तज वाहण गाडा सजाया ।
बहू माल तिण में भराया । दाणीका दाण चुकाया ॥ फिर सहू आया शहर मांइ ॥
भाडे जगा मौकाकी गहाइ ॥ संग ॥ १८ ॥ हाट रंगीली जमाइ । सोभित वस्तु

सो भाइ । सहू जुदा २ तिहां रहाइ ॥ करे वेपार मदछोडी ॥ धन कमाचा चित जोडी ॥ सं ॥ १९ ॥ लाभ देवे प्रमाणे उपावे । संतोप तहीमें पावे । संकोचे काम चलावे । धर्म पण करे वक्त पाइ ॥ इम सुखे काल गमाइ ॥ सं ॥ २० ॥ नीती छे सदा सुख दाता । अनीती कियां दुःख पाता । ते सुणीयो आगे भ्राता ॥ ढाल नवमी पूर्ण थाइ । अमोलख ऋषि एह गाइ ॥ सं ॥ २१ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ इणहीज नगरीने विषे । वैश्या पाडा मांय ॥ सव वैश्यामें शिरोमणी । कपट कलाए सवाय ॥ १ ॥ अनंगनी नामें यह । वस्त्राभूपण रुप ॥ कला कोश्यल्यता ए करी । वश कीधा था भूप ॥ २ ॥ धन घणो उपराजवा । रचीयो एक प्रपंच ॥ दगा थी पासा रमण । ठगी कर्यो द्रव्य संच ॥ ३ ॥ केइ धूर्त हरावीया । जीती न सके कोय ॥ जे जे इण भवने चडया । ते गया इज्जत खोय ॥ ४ ॥ इयाँ कला जो एहनी । को इन आवे पास ॥ इम घणा दिन वीतीया । आगे सुणो अरदास ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १० मी ॥ मांग २ वर मांगनी ॥ यह॥ वेश्या संग निवारीये । जो चाहो सहु सुख हो ॥ जोइणेरे फंदे पडया । जोवो जिणरा दुःख हो ॥ वे ॥ १ ॥ एकदा ते गुण चन्द्र जी । क्रिडा करवा काम हो ॥ आया गणिका मोहले । दीपंता रुप वाम हो ॥ वे ॥ २ ॥ इणरा भवन के ढूंकडे । जाय ते चालंत

हो ॥ ठगणी ए बोलावीया । मुख मटके मोहवंत हो ॥ वै ॥ ३ ॥ भोला ते समज्या नहीं । पडीया इणरी फास हो ॥ मुनीम हटक्या अतिघणा । भूल्या तातनी भासहो ॥ वै ॥ ४ ॥ आपण आया कमाववा । नहीं फसवाने फंद हो ॥ जो इण रस्ते लागसो । तो किम करस्यां धंद हो ॥ वै ॥ ५ ॥ इम सुणी फिरवालाग्या । गणिका दिया चिडाय हो ॥ मान मरोडचो द्रढ थयो । पेठा सदंन नेमांय हो ॥ वैं ॥ ५ ॥ मेहतो तव विलखो भयो । आयो उतारे ताम हो ॥ बात कही निज साथमें । ए थयो खोटो काम हो ॥ वै ॥ ७ ॥ दो मोटा सहाजी मिली । आइ कुँवर समजाय हो ॥ कपटण वैश्याए कहीं । चालण न दे उपाय हो ॥ वै ॥ ८ ॥ सहू समजाइ थाकीया । सुस्ताइ रह्या स्थिर हो ॥ गुण चन्द लुब्ध्या भोगमें । जांयो नहीं घर फिर हो ॥ वै ॥ ९ ॥ रमवा लाग्या जूवटो । धन चहीये सो मंगाय हो ॥ दिन केत्ताइ पुरीयो । मुनीम तव घबराय हो ॥ वै ॥१०॥ चाकर नोकर छूटीया । साथी दिया छिटकाय हो ॥ निज २ धंदे सहू लग्या ॥ वैपार पण वन्धथाय हो ॥ वै ॥ ११ ॥ वैस्या प्यारी वितेनी । जाणी निरधन तास हो ॥ कहे निकलो मुज गेहथी । नहीं तो पासो त्रास हो ॥ वै ॥ १२ ॥ ओह लंपट ते न तजे । तब कियो अपमान हो ॥ देइ धक्का कढाइया । नोकर हाथे तान हो ॥वै॥१३॥ चल

आया दुकानपे । सूना देख्या धाम हो ॥ शरमाया घणा मनमें । कच्चो रह्यो दीसे काम हो ॥ वे ॥ १४ ॥ मेहता देख कुँवार ने । आदरदे लिया मांय हो ॥ नरमांइ कहे कुँवरने । चंपा चलो हिवणाय हो ॥ वे ॥ १५ ॥ हूं कारो कूँवर भयो । मेहतो विश्वास लाय हो ॥ रह्यो माल कुँवर भणी । दियो तव संभलाय हो ॥ वे ॥ १६ ॥ धामनीये लेइ द्रव्य ते । पहोंता वैस्या गेह हो ॥ द्रव्य लाया तस देखने । दरशाव ते नेह हो ॥ वे ॥ १७ ॥ क्षमीए मुज अपराधने । थइ नशे वे भान हो ॥ गुन्हो कियोमें मोटको । कियो प्यारा अपमान हो ॥ वे ॥ १८ ॥ भोला भाइ समज्या नहीं ॥ पुनः पड्या तस फंद हो ॥ वीसरीया ते दुःखने । कामी नर महा अन्ध हो ॥ वे ॥ १९ ॥ मुनीम जाणी बात ए । रह्या मनमें परताय हो ॥ धन्नगयो इजत गइ । चाले नहीं उपाय हो ॥ वे ॥ २० ॥ जो दुर्व्यश्नी नीरीतडी । सुज्ञ तजो सुख चाय हो ॥ दशमी ढाल अमोलख । वेस्या व्यश्नी नी गाय हो ॥ वे ॥ २१ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ गुण चन्द लुब्ध्यो नारसे । जुवापे अतिमन ॥ थोडा दिनरे मायने । खोयो सघलो धन ॥ १ ॥ मतलव पूग्यो रांड नो । पूर्व परे करे तेह ॥ धका मुक्का मारने । छोडायो निज गेह ॥ २ ॥ कर जोडी गुण चंद कहे । खास्यु थारी ऐंठ ॥ दर्शन ले लस तो थइ । रहू दरवज्जे वेठ ॥ ३ ॥ पड्यो रहे

घर बाहीरे । जे न्हाखे ते खाय ॥ प्रसन्न मुख जो नार नो । आप घणो हर्षाय ॥ ४ ॥ तो पण नही गमे रांडने । मारण चिंते उपाय । कुबुद्ध करे जे आगलै । ते सुण जो चितलाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ११ मी ॥ मत करना परतीत रांडकी ॥ यह ॥ लावणीमें ॥ मत करो वैस्या संग मानलो मेरी सीख भाइ ॥ दगा दार या नार थइना किसकी अब थाइ ॥ आं ॥ वसंतऋतु दरम्यान । फूली है सबही बनराइ ॥ कंद्रप केरी वहार लूंटने लोक घणा धाइ ॥ आये वागके मांय । खेलते खातें मिठाइ ॥ नाच रंग विनोद ख्याल बहू । रहे जो लगाइ ॥ यह अनंगी नार । यार ले सेहल करण जाइ ॥ म ॥ १ ॥ राजा राणी दासी सहेली । संग सब सज आया ॥ यथा योग्य सज्जन संघ रम्मत । गम्मत लगाया ॥ राणी कंठे हार । हीरा तारांगण सोभाया ॥ नाचत कूदत झलक पडे । जाणे इन्द्र छांया ॥ द्रष्ट पडी गणिकाकी उसपे । मन गयो ललचाइ ॥ म ॥ २ ॥ जो मिले ऐसा हार । जीया सफल मेरा थावे ॥ इस विना शिणगार अलूणा । मुजको लखावें ॥ किम आवे यह हात । वात विषमी बहू देखावे ॥ राजा तणी ए प्यारी । दर्शन दुष्कर से पावे ॥ हूइ चित उदास । गइ तव सूरती विलखाइ ॥ म ॥३॥ वंद किया रंग राग । देख इम साती सहू पूछे । किम हुये उदास । कहो तुम

मनमांये स्यूं छे ॥ ते कहे पूरण हार । थार इच्छा का हे कोइ ॥ कहूं उसेमें वात । पार कर दे चहाइ मोई ॥ न तजू जीवित जान । राख स्यूं कंत उम्मर तांइ ॥ म ॥ ४ ॥ सुणी प्यारीकी वात । गुण चन्द ततक्षिण ढिग आइ ॥ कहो होवे जो मनसा । ततक्षिण पूरुं क्षिण मांइ ॥ मरणांतिक नहीं डरुं । करुं दुष्कर हूं उपाइ ॥ तुम मन चावे सो हुं करस्यूं । दूं कहो सो लाइ ॥ इम सुण गणिका हर्षा कहे तुम सम प्यारा नाहीं ॥ म ॥ ५ ॥ देखायो ते हार भलकतो । राणी कंठे सारो । लादो करी उपाय राखूंगा । प्राणसे कर प्यारो ॥ नहीं देवूं कभी छेह । बचन लो पहलां तुम म्हारो ॥ करो इच्छा पूरण बचन नहीं लोपूंगा थांरो । सीस चडाइ बचन । चल्यो ते करवा उपाइ ॥ म ॥ ६ ॥ रही तस्कर के पास । सीखीयो चोरी करण ज्यारे ॥ हुवो कला प्रवीन । के शस्त्र लीधा संग ज्यारे ॥ राज मेहल में आयो जोया पेहरायत द्वारे । कला करी पेठो ते अन्दर । हिम्मत मन धारे ॥ निद्रा वस नृप नारी देखी ते सूती सेजे मांइ ॥ म ॥ ७ ॥ ग्रीवामें पड्यो हार । के लेवण मति तब उपाइ ॥ शस्त्रे तोडे डोरी । राणी जाग्रत तब थाई ॥ देखी तस्कर पास । अति गइ मनमें घवराइ ॥ दोडो २ चोर । किलकारी जोरसें लगाइ । सुणी राणी की हाक के । सुभट आया तब

धाइ ॥ म ॥ ८ ॥ गुण चन्द गयो घबराय । बचण उपाय न देखाइ ॥ पड्यो राणीके चरण । रोवतो कहे सुणो मांइ ॥ अब आंपको सरण । करी में पूरी अन्याइ ॥ अहो प्रथवी पाल । उगारो मेरी दया लाइ ॥ इम सुण राणी वयण । अचंभो मनमें अति पाइ ॥ म ॥ ९ ॥ चोर तणा नहीं चेन । बचन पण बोले ए मीठा ॥ कोमल अंग सुरंग । भोल पण अंगमें बहु दीठा ॥ पूछे कहे तूं सच्च । इहां तूं आयो किम धीठा ॥ अब करे नरमाइ । कर्म तें कर्या पहली चीठा ॥ कर जोडी कहे तेहा दया कर छोडावो मांइ ॥ म ॥ १० ॥ चंपा नगरी कमल सेठ को । बाजूं हूं बेटो ॥ उपा जणने द्रव्य । हटकर विदेश मां पेठो ॥ रह्यो आपने शेहर । वैश्या फंद रह्यो सेंठो ॥ लूट लियो सब द्रव्य । कर्म दुःख मुज हृदय पेठो ॥ न मानी में सीख । जे दीधी तातजी म्हराइ ॥ म ॥११॥ वसंत रमण गया बाग । हार आपको रांड जोइ ॥ भरमाइ मुज कहे । लाइदो हार मुजे सोइ ॥ मोह अन्ध मानी बात । आप के मेहले आयोइ ॥ न जाणू चोरी कर्म । रांड मुज फंदे न्हाख्योइ ॥ कही में साची बात । जीवित दान दो मुज तांइ ॥ म ॥ १२ ॥ सुणी गुण चन्द चरित्र । दया राणी के मन आइ ॥ बेठायो निज पास फेर दिया आया सिपाइ ॥ गुण चन्द से कहे राणी । अब कहे तुज जे इच्छाइ ॥ जाणो वैश्य । घर-

के करणी धनकी कमाइ ॥ जो तूं छोड विश्वजवितो राखूं तुज तांइ ॥ म ॥ १३ ॥
गुण चन्द कहे कर जोड । मात जी सुणो इच्छा म्हारी ॥ हूं छूं वाणिक जाता नहीं हुइ
थोडी मुज क्ष्वारी ॥ अब प्रतिज्ञा निश्चल मन थी । में लीधी धारी ॥ नहीं जोवूं तस मुख।
कोइ उपाय कोइ वारी ॥ इम सुणी राणी वयगा पुत्र परपासे राख्वाइ ॥ म ॥ १४ ॥
एक दीन देखी उदास । राणी ने गुणचन्द बतलावे ॥ कहे राणी मुज प्यारी । पुरी ग-
मगइ नहीं पावे ॥ गुणचन्द कहे हूं पतो लगास्यूं । राणी हर्षावे ॥ वार नाम पूछ्याथी
। ते गुणसुन्दरी दरसावे ॥ ते दे मुज मिलाय । उपकार भूलूंगा नहीं भा ॥ म ॥१५॥
सुख रहे गुणचन्दा राणी पासे हित चहार॥ खान पान वस्त्र भूषण तस राणी [illegible]आर ॥
सुणी वैस्या की रीत । प्रित कोइ सुगणा मत कीजो ॥ कहे विप्र महाराज वांत और
आगे सुण लिजो ॥ ढाल चतुर्थे खन्ड एकादश अमोल ऋषि गाइ ॥मत॥१६॥ दुहा ॥
बोलाइ मुनीम ने । राणी ओलंभो देय ॥ संभाल्या नहीं कुँवरने । मरजाताथा एय ॥ १ ॥
मुनीम कहे । करजोडी नहीं नाजी मुज दोष ॥ वार्या घणा मान्यो नहीं । करी रह्यो
अपसोष ॥ २ ॥ कहे राणी जावो तुमे । चंपाए सेठ ने पास ॥ मिलाइ परिवारने । पूरो
सहू नी आस ॥ ३ ॥ विदागिरी मांहे दियो । राणी कंठ को हार ॥ सागर लग पहों-

चावीयो । देइ सूभट लार ॥ ४ ॥ वाहना रूढ घर पहोंचीया ॥ वीतक कियो प्रकाश ॥ उपकार मान्यो राणी को । सज्जन हुय हुल्लास ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १२ मी ॥ रंगीला सुडा ॥ यह ॥ विप्र मदन से करे उच्चारो । गुण चन्द्र छे मंत्री महारो । एकांते मिल्यो ते वारो हो ॥ मदन जी सणीये ॥ १ ॥ मे पूछरे कमावा सिधाया । पण कंगाल होइ किम आया ॥ तब गुण चंद घणा शरमाया हो ॥ म ॥ २ ॥ वीतक हाल दरसायो । सुणी मुजने क्रोध भरायो । मर्म वैश्यां नो पाया हो ॥ म ॥ ३ ॥ तव में कह्यो सुण भाइ । हिवे हूं जास्यूं तिण ठाइ । गमावु वैश्यानी गुमराइ हो ॥ म ॥ ४ ॥ थारो धन पाछो लावूं । तो में ब्राह्मण कहलावुं । नहीं तो पाछो नहीं आवुं हो ॥ म ॥ ५ ॥ गुण सुन्द्री नो पत्तो लगास्युं । श्री पुर राय राणी ने मिलास्युं । एता कारज कर घर आस्युं हो ॥ म ॥ ६ ॥ गुण चन्द मुज समजाइ । ते वस्या से नहीं जीताइ ॥ वडा भूपत तिण स्युं हार्या हो ॥ म ॥ ७ ॥ में तिणरो वचन अपनानी । आयो निज घर मावित्र कानी । आज्ञा मांगी वीदेश जावानी हो ॥ म ॥ ८ ॥ मावित्र पण समजाया । चलवाना साज सजाया । ले द्रव्य घणा सीधाया हो ॥ म ॥ ९ ॥ लियो श्री पुरमां विश्रामो । धरी वैस्यां मिलणरी हामो । पूछ्यो ले नाम तस धामो हो ॥ म ॥ १० ॥ णरे घर

आयो चलाइ । ए ग्राहक जो हर्षाइ । अति आदरे मुजने लोभाइ हो ॥ म ॥ ११ ॥ खेलण
बेठा पासा सार । तब तत्क्षिण गयो मेंहार । । कियो में मन उंडा विचार हो ॥ म ॥ १२ ॥
मुज डाव पड्यो थो सीधो । पण कुण करदीधो उंधो । दीर्घ द्रष्टीये उपीयोग दीधो हो ॥म॥
१३॥ दूजी वार दाव न्हाख्यो । तब गणिका कपट मुज भाख्या । आनंद मन प्रकास्यो हो ॥म॥
इण मूशो पाली भणायो । राखे दीपक नीचे छिपायो । ते देवे पासाने गुडायो हो ॥ म
॥ १५ पासो नर जब डाले । ते हँसी नर सामे भाले । नर मोही सुखडो निहाले हो
॥ म ॥ १६ ॥ जित्ते उंदर आइ । देवे पासाने गुडाइ । इम हार तेहनी थाइ हो ॥ म ॥
१७ ॥ ए सहू कलामें जाणी । पण जाणीने हुवो अनाणी । प्राजय करण मन ठाणी हो
॥ म ॥ १८ ॥ हारी निज घर आयो । सोचत उपाय एक पायो । तत्क्षिण तेही निपा-
यो हो ॥ म ॥ १९ ॥ में बिल्ली पाली ताजी । सिखाइ सर्व कलाजी । हुइ इछित देवा
ते साजी हो ॥ म ॥ २० ॥ वस्त्र में गुप्त छिपाइ । जिम वैश्या न समज पाइ ।
चाली गयो इण घरे माइ जी ॥ म ॥ २१ ॥ खेलण ने दोइ बेठा देखण नर भराया
सेंठा । हार जीने जोवण खेटा हो ॥ म ॥ २२ ॥ कोल करी जे पेली । या बाजी जाण
जो छेली । कांइ देणो रहे देणो गेली हो ॥ म ॥ २३ ॥ वेश्या कहे कसर न राखो ।

विप्र कहे में मेल्यो स्वेय आखो । अब थारा मन की भाखो हो ॥ म ॥ २४ ॥ वैश्या कहे जे महारो । ते धन देस्यूं हूं सारो । वली हुकम न लोपस्यूं थारो हो ॥ म ॥ २५ ॥ सहू लोक ने साक्षी राखी । पक्का कौल किया प्रभू साखी । फिर बाजी जमाइ पाखी हो ॥ म ॥ २६ ॥ रम्मत गम्मत चलाइ । गोडा नीचे बिल्ली दबाइ । वैश्या जाणे धन थेली थइ हो ॥ म ॥ २७ ॥ तत्क्षिण पासो गुडायो । वैश्या ऊंदिर सरखायो । नख-राथी मुख मलकायो हो ॥ म ॥ २८ ॥ महारी मंजारी धाइ । बिच उंदर गइ गटकाइ । वैश्या ते खबर न पाइ हो ॥ म ॥ २९ ॥ तत्क्षिण पासो निहाल्यो । पोबारा पडीयो भल्यो । वैश्या को चित तब चाल्यो हो ॥ म ॥ ३० ॥ में सहू ने दीवी वताइ । देखो जीत हुइ मेरी भाइ । अब देवो सहु द्रव्य दीराइ हो ॥ म ॥ ३१ ॥ करार करी ए छट की । धन लेइ गुप्त तिहां थी सटकी । इहां आइ रही खुल्लो घर पटकी जी ॥ म ॥ ३२ ॥ में पण पत्तो लगायो । इण लारे भागो आयो । हिवे सटकीने किहां जायो जी ॥ म ॥ ३३ ॥ ए सहू धन मुजने आपे । मुज हुकम में मन तन थापे । कर ए छुटे तदापे हो ॥ म ॥ ३४ ॥ ए वीतक विप्र सुणाया । मदन जी सुण मुलकाया ॥ ढाल ग्यारे अमोलख गाया हो ॥ मदन ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ विप्र कहे में सहू कही । महारी वीती

बात ॥ इण में जो खोटी हुवे । तो साक्षी साक्षात ॥ १ ॥ हूं मागूं छूं एटलो । जे इण कीधो कोल ॥ धूर्तीमें दूती भणी। प्रगट । हुइ सहू पोल ॥ २ ॥ दूजा को धन लेवता । जिम एं पाइ सुख ॥ तिमही इणारो धन लियां । हर्षासी मुज मुख ॥ ३ ॥ घणा जीव संतापतां । इण नहीं कियो विचार ॥ तो कहो दुःखीयो कुण हुवे । जोइ ईने निराधार ॥ ४ ॥ सहू को वदलो में लइ । इण ने करूं सहू पेर ॥ तो सुख पावे आत्मा । ले धन जावुं घेर ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १२ मीं ॥ कमल दल लोचना ॥ यह ॥ बुद्धिवंत मदन जी । एतो न्याय कियो इण पेर ॥ बु ॥ आं ॥ गंभीर वदने कहे मदन जी । करो भूदेव अब मेहर ॥ बुद्धि ॥ १ ॥ बात साची सहूछे जी तुमारी । ए कुटिला जग जेहर ॥ बु ॥ २ ॥ सहू लोक तब कहे मदन से। करी ने उंची देर ॥ बु ॥ ३ ॥ ए कुटीला नहीं दया ने जोगी । धन्य २ विप्र बुद्ध घेर ॥ बु ॥ ४ ॥ इण विना और कोइ न जीत्यो । इण पापणी की लेर ॥ बु ॥ ५ ॥ हमतो जाणता जादू टोणा । कोइ देवता करे खेर ॥ बु ॥ ६ ॥ हिवे एहनी कुंदी करो पुरी । फिर न करे इणपेर ॥ बु ॥ ७ ॥ वेश्या घबराइ कहे नरमाइ । अब नहीं रमू जूवा जेर ॥ बु ॥ ८ ॥ गुणी कातो सहू सहायक होवे । महारो तुम करो खेर ॥ बु ॥ ९ ॥ मदन कहे तुम मत घबरावो । प्रभूजी करसी

हर ॥ बु ॥ १० ॥ कहे विप्रसे बात सुणो मुज । संतोषे लेवो मन फेर ॥ बु ॥ ११ ॥
मूर्ख ने संग मूर्ख मा बनो । लावो ज्ञानकी लेहर ॥ बु ॥ १२ ॥ तुम छो ब्राह्मण
ज्ञानी धरमी । ए वैस्या जात छेरे ॥ बु ॥ १३ ॥ इणरो धन अपणे किस्या काम को ।
जरा विचारो ठेर ॥ बु ॥ १४ ॥ विप्र कहे सत्य उपदेश श्वामी ॥ पण इणरी नहीं वेर
॥ बु ॥ १५ ॥ ए विवहार संसारको श्वामी । म्हारे निभावो घेर ॥ बु ॥ १६ ॥ मदन
कहे एक म्हारी मानो । कहूं उभय सुखदा हेर ॥ बु ॥ १७ ॥ तुम आया मित्र धन
लेवाने । तेही लीजे इण वेर ॥ बु ॥ १८ ॥ तुमारो और गुण चन्द को । लो हिवे
माल अँवेर ॥ बु ॥ १९ ॥ इण ने अब प्रातिज्ञा करावो । न खेले जूवा फेर ॥ बु ॥ २० ॥
वहबाइतो इण से थासी । तुम जीत्या जग जाहेर ॥ बु ॥ २१ ॥ दोनो लोके संतोष
सुख दाइ । कहूं पुकारी टेर ॥ बु ॥ २२ ॥ इम बहू परे विप्र समजायो । म होवो वकरी
पे शेर ॥ बु ॥ २३ ॥ विप्र कहे मानू आप हुकम में । देवावो तेही नहीं देर ॥ बु ॥
२४ ॥ मदन वैस्या से कहे शिघ्र देवो । जो तूं इच्छे खेर ॥ बु ॥ २५ ॥ नहीं तो फिर
फजिती पूरी । वैश्या ए मानी ते वेर ॥ बु ॥ २६ ॥ जोइ चोपडा हिंशाव प्रमाणे ।
खरच ही तिण में उमेर ॥ बु ॥ २७ ॥ द्रव्य दिलायो सहू की साक्षी । माफी मंगाइ

फेर ॥ बु ॥ २८ ॥ वैस्या कों निज घर पहोंचाइ । वहा २ करे सहू टेर ॥ बु ॥ २९ ॥ विप्र कहे कर जोडी मदन से । एक चिंता मिटी आप मेहर ॥ बु ॥ ३० ॥ हिवे ढूंढू श्री पतिनी पुत्री । मदन कहे सुणो फेर ॥ बु ॥ ३१ ॥ इहांथी तुम श्री पुर जावो । राणी जी के घेर ॥ बु ॥ ३२ ॥ कह जो मास छे धैर्य धारो । ब्रह्मचारी यहां आसी नयेरे ॥ बु ॥ ३३ ॥ नाग कुँवार देवालय रहसी । पूछ जो कंन्या की हेर ॥ बु ॥ ३४ ॥ तेतो लघलो पतो वतासी । मिला देशी कर मेहर ॥ बु ॥ ३५ ॥ इम सुणी विप्र राजी हुवे आते । नमन करी वेर २ ॥ बु ॥ ३६ ॥ श्रीपुर आइ वात जणाइ । फिर गयो निज घर ॥ बु ॥ ३७ ॥ जोगी मदन अंगज ए तीनो । चंगला नयर गया ठेर ॥ बु ॥ ३८ ॥ जोइ करामात मदन की जोगी । मिटायो क्षिणासे केर ॥ बु ॥ ३९ ॥ जाण्यो ए छे पुण्यवंत प्राणी । राखे आतिही मेहर ॥ बु ॥ ४० ॥ ढाल दुवादश कही अमोलख । चौथे खन्डे सुसेर ॥ बु ॥ ४१ ॥ खन्ड सारांस हरीगीत छन्द । पाणी ग्रहतां वडन देंटी उडी जयंती ए आवीया ॥ जोगी छुडाया साला बचाया । सुवर्ण पोरष निपाइया ॥ विप्र वैश्या राड तोडी । चंगला पुरी में राहीया ॥ ए अधिकार चतुर्थ खन्डे । ऋषि अमोल दरशावीया ॥ ४ ॥

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री अमोलख ऋषि जी रचित पुण्य प्रकाश मदन चारित्रस्य चतुर्थ खन्डम् समाप्त ॥४॥

॥ दुहा ॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य जी । उपध्याय अणगार ॥ प्रारंभता खन्ड पांचमो। करूं पंचने नमस्कार ॥ १ ॥ मदन चरी छे रस भारी । करी मन हुल्लास ॥ नवल विनोदे उभारी । प्रगटे गुण की रास ॥ २ ॥ अनेक गुण के आगले । साहस पण कहवाय ॥ वीर्यात्म प्रबलता । तस दुःख कोण कराय ॥ ३ ॥ विकट दुष्कर काम जे । साहस थी सिद्ध होय ॥ देवादिक सेवे सदा । ते सुण जो सहू कोय ॥ ४ ॥ चंगला नगरीने विषे । रहे सुखे तिहूं जन ॥ नव २ कौतक देखवा । करे नित्य पुर में गमन ॥ ५ ॥ एकदा फिरतां पुर विषे । सुण्यो घुघर घमकार । जोवे अंतः लिखने विषे । उभा रही तेवार ॥ ६ ॥ पंचरंग प्रकाश तो । जाणे द्वितिय सूर ॥ आइ स्थंभ्यो तिणपरे । जोवे ते हर्षि-नूर ॥ ७ ॥ तिण माहें थी उतर्यो । नर नारी नो जोड ॥ वस्त्र भुषण बहू मिलका । दिव्य स्वरूप अखोड ॥ ८ ॥ प्रणमें पद आमदन ना । प्रेमातुर ते वार ॥ जोगी अंगज

देखने । अश्चर्य पाया अपार ॥ ९ ॥ ● ॥ ढाल १ ली ॥ चंपा नगर निरोपम सुन्दर ॥ यह ॥ खेचर नमी मदन ने पाया । कर जोडी उभा रहाइ ॥ वहावा मदन जी दगो इम देवो । आपने जुगतो नाही हो ॥ वाहाला ॥ मदन जी पुण्य का दीया । घणा गुणा करी भरीयारे ॥ वहाला ॥ मदन ॥ आं ॥ १ ॥ आप वयण हम शिरपे चडाया । निशी में नगर वसा सी । आप हुकम हम वन में पहूंता । पूर्ण करवा आसी हो ॥ वहाल ॥ मदन ॥ २ ॥ दूजे दिन सहू परिवारे आया । नयर ते सुन्य देखाया ॥ आपने जोया पण नहीं पाया ॥ तव मन वेम भराया हो ॥ व ॥ म ॥ ओलंभो अति दीधो पिता जी । किम तस एकला छोड्या ॥ पुण्य पसये इहां आया था । मिलिया नाता तोड्या हो ॥ व ॥ म ॥ ४ ॥ ते हिवे किम आप ने करे आवे । कुण ए नगर नसावे ॥ निरास बचन भूप उचारे । सहू हम दोष जणावे हो ॥ व ॥ म ॥ ५ ॥ तव हम कह्यो कछु फिकर न कीजे । हम ने दोष न दीजे ॥ वयण विश्वासे हम ठगाया । हिवे विचारी कीजे हो ॥ व ॥ म ॥ ६ ॥ ते पुण्यवंत मार्या नहीं जावे । कँही प्रदेश सिधावे ॥ होसी कहीं मेही मंडने उपर । ढूंढ्या थी क्यों नहीं पावे हो ॥ व ॥ म ॥ ७ ॥ हम दोनो तस जोवाने जास्यां । जरूर पत्तो लगास्यां ॥ थोडा काल में लेइने आस्या । तव हीज हम

स्थिर थांस्या हो ॥ व ॥ म ॥ ८ ॥ इशो वचन देइ हम निकल्या । एक मास तो गली
या ॥ आज हमारा सुभाग्य जोगे । आचिंत्य आप इहां मिलियारे ॥ व ॥ म ॥ ९ ॥
निरास होइ घरजाता था । इण नगरी में आया ॥ नीचे जोतां आप दिखाया । अति
ही आणंद पाया हो ॥ या ॥ म ॥१०॥ सफल मेहनत मुख उज्वल आजे । आप हमारा
कीधा । सर्व काज थया औरभी थासी । आप जोया सहू सिद्धा हो ॥ व ॥ म ॥ ११ ॥
ओलंभो किस्यो आपने दीजे । सहू प्रताक्ष दिखावे ॥ आप जैसाने इसो नहीं छाजे ।
अश्चर्य हम मन आवे हो ॥ द ॥ म ॥ १२ ॥ दारद्रीने चिंतामणी परे । आप हमारे कर आ
या ॥ भूल नहीं करस्यूं पहलां परे । घणी मेहनत थी पाया हो ॥ व ॥ म ॥ १३ ॥ मदन
कहे तुमकहो सो साची । ओलंभो सीस चडावुं ॥ कारण तुम जाण्यो नहीं जे वण्यो । ते में
आज जणावुं ॥ व ॥ म ॥ १४ ॥ तुम गया पीछे दिन धणो जो । मुज पूरो करवा
कामो ॥ सात वड मध्य कूपमें पेठो । नीरे लेवानी हामो हो ॥व॥म॥१५॥ आचिंत्य मुज
ने कोइ उडायो । एक बडनें चेंटायो ॥ ते वटवृक्ष गगन उड चाल्यो । जयंती वारे ठायो हो
॥व॥म॥१६॥ तिहां पण एक कौतक निपज्यो । एक शाह मुजने उतार्यो ॥ तेतों चेंट्यो तेहीज
बडने । तस कुटंब मुज मार्यो हो ॥ व ॥ म॥ १७ ॥ ए गुरु मुज महा उपकारी । विद्या गुण

का दरीया ॥ हम दोनुरका प्राण बचाया । उपकार केइ करीया हो सवा ॥ म ॥ १८ ॥
सत्संग मिले पुन्यने जोगे । तेहिवे नहीं विछडाइ ॥ गुरुजी साथे आयो हूं फिरतो । मि-
लिया तुम इहां आइरे ॥ व ॥ म ॥ १९ ॥ वचन पार पाडण हूं आतो । आनंद पुर
अब चाली ॥ भाग्य जोग मिलिया तुम विचमें । कहे इम वचन, रसाली हो ॥ व ॥ म
॥ २० ॥ इम सुणी दोनु हर्षाया । मदन चरित्र त्रिसालो ॥ कहे अमोलक खन्ड पांचनी ॥
प्रथम ढाल रसालो हो ॥ व ॥ मदन ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ जोगी अंगजं जो चरी ।
अश्चर्य पाया अपार ॥ सागर सम मदन ए । झलके नहीं को वार ॥ १ ॥ काम किस्या
२ इण किया । और भी करना केय ॥ ते ए कही न जणावीया । अश्चर्य मोटो एह ॥२॥
खेचर पत एहने नमें । धरता मोटो प्यार ॥ मोटा नर नारी तणी । प्रभा नहीं लगार
॥ ३ ॥ आनंद पुर ए किहां अछे । उजड किम थयो तेह ॥ हिवे किम ए वसावसी ।
जोवानो छे एह ॥ ४ ॥ उमंग धरता दोड इम । रहीया उभा जोय ॥ पेखी मदन चरि
त ने । अश्चर्य कोण न होय ? ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २ री ॥ प्रभू त्रिभुवन तिलोरे ॥यह॥
भविक जन सांभलोरे । मदन चरित्र रसाल । भवी ॥ आं ॥ कर जोडी खेचर भणेरे ।
सांभलो अर्जी श्वाम ॥ विराजीये विमाणमें । जिम ले चालां इम गाम ॥ म ॥ १ ॥ भूमंडे

फिरवा तणोजी । आप पाया घणो दुःख ॥ हिवे दुःख नहीं देखीयेजी ॥ आप सुखे हम सुख ॥ भ ॥ २ ॥ मदन कहे गुरू देव से जी । अरजी कीजे तुम ॥ ए हुकम जिम आपशी जी । तिण परे करस्यां हम ॥ भ ॥ ३ ॥ जोगी पदें दोना नम्या जी । कहे अर्जी सुणो नाथ ॥ पावन हम पुरकीजीये जी । लेइ मदनजी साथ ॥ भ ॥ ४ ॥ जोगी तब खुशी हुइजी । कहे मदनसे एम ॥ तुज इच्छा तिहां चालीये जी । तुज क्षेमे हम क्षेम ॥ भ ॥ ५ ॥ आज्ञा पाइ जोगी नी जी । मदनादी हर्षाय ॥ पांचहीं बेठा विमाण में जी । उत्सहा धर मन मांय ॥ भ ॥ ६ ॥ विद्या बले उडावीयोजी । चाल्या नभे मझार ॥ कौतुक नाना देखताजी । भूपर द्रष्ट पसार ॥ भ ॥ ७ ॥ आया आणंद पुर विषेजी । तिण हीज मेहल मझार ॥ भोजन भक्ती पूर्वली पर । करे कुँवरी तेवार ॥ भ ॥ ८ ॥ मदन अवसर देखने जी । दोनोसे कहे ताम ॥ तुम जावो निज स्थानके । हम करस्या युक्तो काम ॥ भ ॥ ९ ॥ जो अवी आवस्ये देवता । तुमने जोइ इण ठाम ॥ वैर भाव संभालने ते । रखे करे निकाम ॥ भ ॥ १० ॥ दोनो कहे नरमायनेजी । करां हूकम प्रमाण ॥ पण पहली पर न हुवे । हम देवा जीवरी आणं ॥ भ ॥ ११ ॥ आसरो एक छे आपकोजीं । हिवे नहीं कीजे निरास ॥ हम जाइ सहू साथमां जी ।

यथाइ करां प्राकाश ॥ भ ॥ १२ ॥ मदन कहे निश्चय करोजी । हमसे अजोग न होय । परवसकी कहणी नहीं । कल आइ लीजो जोय ॥ भ ॥ १३ ॥ इम सुणी चरणे नमी ते । हुइ यान असवार ॥ आया वन वस्ती विषे । तस जोया सहु परिवार ॥ भ ॥ १४ ॥ चरण नम्या ते रायना । सहू दोडी आया पास ॥ मदन मिल्या किहां अछे । इम पूछे रायजी तास ॥ भ ॥ १५ ॥ ते कहे धैर्य धारीये । सहू शुभ होवे पुण्य पसाय ॥ वहू चौकसथी ढूंढता । आज गया मदनजी पाय ॥ भ ॥ १६ ॥ लाया विमाणे बेठायने । मेल्या आनंद पुर माय ॥ वचन ते पको आपी यो । ते विन मिल्या नहीं जाय ॥ भ ॥ १७ ॥ पास नहीं हमने रख्याजी । दाख्यो असुर को डर ॥ राते करवा जोगो करस्युं । इम कह्यो कर धर ॥ भ ॥ १८ ॥ दो जणा और संग थाजी । सूर वीर गुण धाम ॥ जाणा छां राते थसे जी । आपणो इच्छित काम ॥ भ ॥ १९ ॥ प्राते सहु मिल चालस्यां जी । धैर्य धरो चउ प्रहर ॥ इम संतोषी राखीया जी । इच्छित सहु तस खर ॥ भ ॥ २० ॥ निर्मिती वयण प्रमाण थीजी । सहू ने बंधाइ आस ॥ अमोल ढाल दूजी कही । अब जो वो मदन अइयास ॥ भविक ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥

उभय गया तदनंतरे । मदन करे विचार ॥ हिवे ग्राम वसाववा । करणो किस्यो उपचार

॥ १ ॥ तब ते जोगी बोलीया । फरमावो मदनेश ॥ एह रचना किण विध हुइ । मुज मन संशय विशेष ॥ २ ॥ किण नगरी उजड़ करी । निपज्यो किस्यो अन्याय ॥ चरित्र वीत्यो मुज कहो । पीछो करस्युं उपाय ॥३॥ मदन कर जोडी भणे। रूठ्यो छे कोइ देव ॥ रुप करे विहां मणो । इहां आवे नित्य मेव ॥ ४ ॥ हाक करे अलखामणी । त्रासो सगला लोक ॥ वन मांहीं जाइ वस्या । कीजे सुख कोथोक ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ३ जी ॥ भूमीसर अलवेसर साहीब ॥ यह ॥ मदन महा बुद्ध वंत करे छे । यक्ष वस लावा उपाय ॥ बुद्धिने साहसने आगल । सहू कार्य सहज थाय ॥ म ॥ १ ॥ यक्ष सयन की सेज निहाली । सुख माल घणी सुखदाय ॥ कहे जोगीसे इणपर विराजो । सीधी रखीछे विछाय ॥ म ॥ २ ॥ सुखे शयन इण पर करो जी । था क्या होसो श्वाम ॥ हम बेठां जा मेहल वाहिरे । देखां देवका काम ॥ म ॥ ३ ॥ आप प्रशादे देव समजाइ । लावशां आपके पास ॥ ते तो सेवा आपकी करसी । आप समजा जो तास ॥ म ॥ ४ ॥ जोगी विराज्या सेज्या उपर । मदन प्रणम्या पाय ॥ जोगी कर दोनो सिरपर फेरी । कहे वच्छ डरीये नाय ॥ म ॥ ५ ॥ देव दावव मानव को आपणे पर । चाले नहीं कछु जोर ॥ सत्य सलि तप जप प्रभावे । सब वस होय नीठोर ॥ म ॥ ६ ॥ वैम धरी घणा धोखा

खावे । देखी देव चरित्र ॥ विन कारण ते नहीं सतावे । ते होवे मन पवित्र ॥ म ॥ ७ ॥ सिखामण दोनो मन धारी । प्रणम्या जोगी पाय ॥ आप पसाये भय नहीं हमने । देखीये करांजे उपाय ॥ म ॥ ८ ॥ आया मेहलने वाहिर दोइ । वोले आपस माय ॥ कहो अंगज जी किस्यो करां अव । देवत जिम वस थाय ॥ म ॥ ९ ॥ अंगज कहे आप छो बुद्धिवंता । कहो सो करूं प्रमाण ॥ डर नहीं किंचित किणरो मुजने । न राखूं देवकी काण ॥ म ॥ १० ॥ गुरु राजने आप जैसा की । कृपा मुजपे पूर । देखी सके कुण वांकी नजरे । छे किणकी मगदूर ॥ म ॥ ११ ॥ देखुं यक्ष तो हिवणा पकडी । लावूं आप हजूर ॥ इत्यादी साहस वयण सुण । हरख्यो मदन को नूर ॥ म ॥ १२ ॥ मदन कहे तो आप विराज्यो । नगर तणी जिहां पोल ॥ देखी जो किण तरह आवे । करी सुर्त से तोल ॥ म ॥ १३ ॥ जोग होय तो जाइ मिलजो । कर जो वहू सत्कार ॥ आपण अण ओलखीता तेहने ॥ तेहथी नहीं करे क्षार ॥ म १४ ॥ कर धरी लाजो मुज पासे । हूं वेठू इण ठाम ॥ आज तो थाने करूं आगे वाणी । जाणी मोटो काम ॥ म ॥ १५ ॥ अंगज कहे यह सहज काम है । लावूं अव्वी पकड ॥ वयण सीस चडाइ चाल्यो । मदन ने पांये पड ॥ म ॥ १६ ॥ सूरज पोल ने उपर आइ । वेठा

जोता बाट ॥ देव पेखणरी हूंश घणी मन । आवसे किसडे थाट ॥ म ॥ १७ ॥ मदन जी बैठा राय भवन के । मुख्य दरबज्जे मांय ॥ ते पण मार्ग जोवे यक्ष को । अंगज किण विध लाय ॥ म ॥ १८ ॥ जोगी यक्ष की सेजे सूता । करता योग विचार ॥ इम तीनौं तीन स्थाने रहीया । साहस वंत शिरदार ॥ म ॥ १९ ॥ तीनो निडर निश्चित तीनो । तीनो छे पुण्य वंत ॥ पर उपकार की द्रष्टी राखी । काज करे धर खंत ॥ म ॥ २० ॥ हिवे किम देवता वश थावे । ते सुणियो चितलाय ॥ पांचम खंडकी ढाल तीसरी । ऋषि अमोलख गाय ॥ म ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ दिन कर पहोंता पश्चिमें ॥ दिशा हुइ तब लाल । गर्जारव वन में हुयो । शब्द महा विक्राल ॥ १ ॥ गूंज्यो वन शिखरी गिरी । पाया प्राणी त्रास ॥ केताइ पर भव गया । के ताइ गया नाश ॥ २ ॥ धरा थर २ थर हरे । ज्वाला गगने जाय । जाणे महा प्रलय थइ । विश्व भणी गट काय ॥ ३ ॥ अंगज देख चरित्र यह ॥ सावध हुयो तत्काल ॥ जाण्यो आगम यक्ष को । जेह नी थी मन माल ॥ ४ ॥ जोवे द्रष्ट पसारके । दशो दिशा ते वार ॥ किण दिश थी ते आवइ ॥ करूं जाइ सत्कार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ४ थी ॥ श्रावक श्री वीरना चंपाना वासी जी ॥ यह ॥ दीसे दूर थी आव तो जी । जाणे महोटो पहाड ॥ कृष्ण वदन

आभा समो । धमका थी पूरे खाड ॥ भविक जन सांभलोजी । साहस वंत कुँवार ॥
आं ॥ गिरी कूंटने सारीखो जी । मस्तक जास उतंग ॥ कावरा वावरा बाल ते । उडे
वायू थी ज्यों त्रण ढंग ॥ भ ॥ १ ॥ कडेला ने सारीखो जी । दीपे जास लिल्लाड ॥
आँख्या तो भेंसा जिसी । ते उंडी वक्र कराड ॥ भ ॥ ३ ॥ भमुहा मोटा कावरा जी ।
लटके उडता केश ॥ नाक ठिया चूला तणा । चपटा झरे श्लेपम शेष ॥ भ ॥ ४ ॥
कान तो जाणे सूंपडा । भूषण तस नवल ने कोल ॥ मुख तो गिरी किन्नरी समो ।
बोले वच्र ज्यूं खारा बोल ॥ भ ॥ ५ ॥ दाढी मूंछ लाम्बी घणी । ते लागी गोडे जाय
॥ पित श्वेत कृष्ण रोमावली । बोलता बहू हलाय ॥ भ ॥ ६ ॥ दाँत कुदाला पावडा
सम । निकल्या मुख थी वार ॥ आँका बाँका तिक्षण पीला । जणाय तेह भयंकार ॥ भ
॥ ७ ॥ धम्या लोहा सारखी तस । लम्बी जिभ्या लाल ॥ अही तणी परे लटकतीने ।
झरती मुख से लाल ॥ भ ॥ ८ ॥ हाथ घणा वधावीया । ग्रह्या शस्त्र विविध प्रकार ॥
झल हलता विहा मणा । छे केइक हाथ मे झाड ॥ भ ॥ ९ ॥ दूंद पेट नगार/ जिसीने
। मोटो आगल वीट ॥ चालंतो हलावतो ते । अकडाइ वण्यो धीट ॥ भ ॥ १० ॥
काछ तंग खसी घणी ने । रोम विद्रुप गुक्षंग । पग लम्बाछे ताडसा । नख पावडा

चाले छे भंग ॥ म ॥ ११ ॥ गले हार आजगर तणाने । मकर मोटा साँप ॥ कर पग केडना आभरण । गोयरा विच्छू उंदर थाप ॥ भ ॥ १२ ॥ इत्यादी श्रृंगार थी । तस दीसे रुप विक्राल ॥ कायर जो धस्की मरे । आयो जाणे सागे कली काल ॥ भ ॥ १२ ॥ नगर सन्मुख चल आवतो जी ॥ अंगज औलख्यो तेह ॥ सत्कार करवा तत्क्षिणे । उठ्या निर्भय सस्नेह ॥ भ ॥ १४ ॥ साहस धर सन्मुख चल्या । कियो लुली २ प्रणाम ॥ मामाजी छो सुखमां । इम बोल्यो हर्ष में ताम ॥ भ ॥ १५ ॥ उम्मेद मुज हूंती घणी जी । दर्शन करवा आप ॥ आज भलो दिन उगीयो । मुज भइ छे खुशी अमाप ॥ भ ॥ १६ ॥ इम कही प्रेमे कर ग्रह्यो । यक्ष जोवे द्रष्ट पसार ॥ ए नरके कोइ देवता । इण ने डर नहीं आवे लगार ॥ भ ॥ १७ ॥ मुज ने जोइ इन्द्र डगे । पण ए नहीं डगीयो केम ॥ क्रोधन जागे माहेरो । उलटो जागे छे प्रेम ॥ भ ॥ १८ ॥ पूछे भाइ तूं कोण छे । लागे किण दिनरो भाणेज ॥ किण कारण कर झालीयो । किम करे छे एतलो हेज ॥ भ ॥ १९ ॥ श्वामी हूं छूं मानवी । मुज मात पतिवृता होय ॥ सहू बंधवछे तेहना । इम मामा जी आप छो मोय ॥ भ ॥ २० ॥ बुद्धि बचन इम सांभली । यक्ष तुष्ट्यो अति हर्षाय॥पहले मोरछे जय हुइ ।ढाल चौथी अमोलख गाय ॥भ॥२१॥❀॥

॥ दुहा ॥पूछे यक्ष तुम कौण हो । एकला के कोइ लार ॥ अंगज कहे हम तीन छां । रह्या इण पूरने मझार ॥ १ ॥ बडा हमारे शिरगुरु । विद्यागुण भन्डार ॥ दूजा लघुभाइ बडा । मदन नाम जयकार ॥ २ ॥ परसंस्या सुण आपकी । आया मिलवा काज ॥ मुजने भेज्यो सन्मुखे । आप तणे महाराज ॥ ३ ॥ चमक्यो यक्ष यों सांभली । ऊबूजो साहस एह ॥ मोटा गुरु नो छे किस्यो । डरप्यो मनमां तेह ॥ ४ ॥ जोवूं तो सही तीन ने । इम कही चाल्यो साथ ॥ ग्राम के मांही आवीयो । मदन देख हर्षात॥५॥

ढाल ५ मी ॥ चौपाइ ॥ यक्ष ले अंगज आवतो जोइ । मदन हर्षित हृदय होइ ॥ देखी साहस अंगज केरो । जोड मिल्या नो हर्ष घणे रो ॥ १ ॥ तत्क्षिण सामे चल आया । अंगज नम्या मदन के पाया ॥ मदन यक्षने नमन कीनो । चिरंजिवो आसिर्वाद दीनो ॥ २ ॥ प्रमधरी कर साह्यो दूजो । पछे बातां नी कांइ बूजो ॥ मदनजी तो बुद्ध का दरिया । बातां मे यक्ष का मन हरीया ॥ ३ ॥ उच्चस्थाने यक्ष बेठाइ । ढोन ढिग रही मशाले पाइ ॥ कहे मदन लेहरमे आइ । मामाजी की सूर्त सुहाइ ॥ ४ ॥ देव हूइ इसो रुप वणावे । अश्चर्य मुज मन येही आवे ॥ देव कहे भाइ किसी कहूं कहानी । जे हूइ छे हकीगत म्हानी ॥ ५ ॥ अश्चर्य मुज मन ए भारी । तुम डरीया नहीं देख

लगारी ॥ केइ जीव धरकाइ मरीया । इण रुपे उजड गाम करीया ॥ ६ ॥ मदन कहे जोगी के तांइ । भूतल में डर एकही नाइ ॥ मृत्युने जोगी राज हरावे । तो कहो डर किशका मन लावे ॥ ७ ॥ हमारे गुरु करामाती भारी । हम डर सब दिया विडारी ॥ ऐसे महा पुरुष भाग्य जोग पावे । धन्य भाग जिनके घर आवे ॥ ८ ॥ अमर कहे कि-हा ते गुरु देव । हूं पण करवा चाहूं सेव ॥ जिणरा शिष्य ऐसा सौभागी । तिणरा गुरु होसी बड भागी ॥ ९ ॥ मदन कहे गुरु दर्शन चलवो । पण ए रूप नहीं लागे वरवो ॥ सच्ची आपकी हम ने बतावो । मूलगो रुप ने शिघ्र बणावो ॥ १० ॥ देव कहे जैसी इच्छा तुह्मारी । पलटू रुप हूं इणवारी ॥ इम कहतां ही रुप पलटाया । मनोहर रुप तत्क्षिण बणाया ॥ ११ ॥ तीनु मिल मेहल मांहे चाल्या ॥ देव निज सेज पे जोगी भाल्या ॥ तप तेजे नूर धणो दीपे । ज्ञान ध्यान मन इन्द्रि जीपे ॥ १२ ॥ द्रढासन बेठा ध्यान धारी । योग क्रिया यांरी दीसे सारी ॥ १३ ॥ इत्यादी विचार मन करतो जोगी कोप थकी देव डरतो ॥ मदन अंगज जोगी पाय धरीया । तिमही देव तस वंदन करीया ॥ १४ ॥ जोगी आशिर्वाद जद दीनो । आत्म परमात्म तुम चीनो । तीनो बेठा सामे आइ ॥ यथा योग्य सेवा करताइ ॥ १५ ॥ मदन अंगज कहे ते

वारी । आज इच्छा पूरी हमारी ॥ प्रत्यक्ष निर्जर दर्शन दीठा ॥ ए तो गुणवंत लागे छे मीठा ॥ १६ ॥ जोगी कहे यह सरल दर्शावे । तज्यो अहं पद तव इहां आवे ॥ छे येही ज जगमे सारो ॥ जे सुधारो निज जमारो ॥ १७ ॥ जिस आगणी आत्म सुख चहावे । तिम सघला ने सुख सुहावे ॥ जे किणही ने नहीं सतावे । ते देव तणो पद पावे ॥ १८ ॥ जो करणीं मे कसर करसी । ते भटक तो जग माहे फिरसी ॥ फिर गइ बाजी हाथ न आवे । जे पाइ सामग्री गमावे ॥ १९ ॥ केइ विगडी भणी सुधारे । तो पण होवे खेवा पारे ॥ जे करशो ते निज हित काज । गुरु उपदेश छे हित साज ॥ २० ॥ इत्यादी उपदेश सुणायो ॥ देव सुण ने अति हर्षायो ॥ ढाल पंचम खन्ड की पांच । कहे अमोलख गुण राच ॥ ११ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ सुण उपदेश जोगी तणो । असुर अति नरमाय ॥ सत्पावणी छे आप की ॥ सुख दिया सुख पाय ॥ १ ॥ मदन कहे नरमाय ने ॥ बुरो न मानो लगार ॥ एसा ज्ञानी होय ने । किम कियो शेहर उजाड ॥ २ ॥ देव कहे इण ने विषे । महारो नहीं छे दोष ॥ अन्याइ नृपलाल ची । सहू पाया अपशोष ॥ ३ ॥ मदन कहे इण पुर पति । किस्यो कियो अन्याय ॥ दीसें उपदेशिक कथा । सुणवा नी मुज चहाय ॥ ४ ॥ लालच बुरी बलाय छे । सुणो मित्र

मदनेश ॥ उजड पुर होवे तणो । कारण कहूं अवशेष ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ६ मी ॥ सुणो चंदा जी । श्री मन्दिर परमात्म पासे जाव जो ॥ यह ॥ सुणो गुणवंत जी । साच झूट को न्याय हिया में तोलीये ॥ अहो बुद्धवंत जी । निरापक्ष हो साच होवे सो बोलीये ॥ यह ॥ आनंद पुर यह नयर भलो । नृप यशोधर नगर तिलो । श्री मतिराणी गुण निलो ॥ तस पुत्र गुण सेण शुभमिलो ॥ सु ॥ १ ॥ इहां धन दत्त नामे सेठ रहे । तस द्रव्य तोल कोइ नहीं लहे । दाने माने पर दुःख देहे । रुप श्री नार तस गुण गृहे ॥ सु ॥ २ ॥ पतिवृताते शीलवती । दम्पतिजी भणी धर्म रंती । जिन देव गुरु निग्रंथ यति ॥ दया धर्म धर सति पति ॥ सु ॥ ३ ॥ सुख भोगवतां पुत्र भया । नंदसेण हरीसेण जया । नाम शुभ ए गुणे रया । ॥ शुक्र शशीपर वृध भया ॥ सु ॥ ४ ॥ विज्ञान अवस्था जब आइ । वहोत कला तस भणाइ । वली धर्म ज्ञान घणो पढाइ । जिनमत से भींजी भींजाइ ॥सु॥५॥ यौवने आया परणाया । गृह कार्य तस संभलाया। मातिल धर्मे मनरमाया । दोनो लग्या करणने कमायां ॥सु॥६॥ विदेश जावण मन थावे । रजालेवा जनक कने आवे । तब मात पिता इम फरमावे । किण कारण तूं परदेश जावे ॥ सु ॥ ७ ॥ धन घणो छे घर मांइ ॥ लागे सो खरचो भाइ ॥ तुम से अधिक कुछ

छे नाहीं । जाणी क्यों पडो छो दुःख मांइ ॥ सु ॥ ८ ॥ कुंवर कहे गयां प्रदेशे । कम परिक्षा थइरेशे । चातुरी कला गणी लेशे । देवो आज्ञा जावां हम जेसे ॥ सु ॥ ९ ॥ नहीं मानंता तस जाणी । दी आज्ञा मन मोह आणी । द्रव्य घणो लियो संग ठाणी । वली दासादो जे सुख दाणी ॥ सु ॥ १० ॥ पुर जन साग घणा थइया । खपता माल साथे गहीया । सकटे भर सिन्धू तटगइया ॥ जोगा वाहण साथे सइया ॥ सु ॥ ११ ॥ आधे दरीये भूला पड्या । उवट मार्ग जाइ चड्या । पविण जल खुट्या दुःख नड्या । सिंघल द्विपे जाइ अड्या ॥ सु ॥ १२ ॥ द्विप देखने खुशी भया । जल भरवा जल स्थान गया । दो भाइ द्विप देख रह्या । मोटो भवन जो आपस में कह्या ॥ सु ॥ १३ ॥ ए मनो रम्या भवनने पेखीजे । किसी रचना इणमें देखीजे । कुण इण मांहे ते निरखीजे । दोइ चाल्या शिघ विशेखीजे ॥ सू ॥ १४ ॥ सदन के नेडा जव आइ । तस उपर पूतली देखाइ । ते हाथ हला कहे आवो नाहीं । ते शानी में नहीं समज्या भाइ ॥ सु ॥ १५ ॥ महलरे भीतर चल्या गया । सिंघला सुन्दरी जो खुशी भया । देवांगना हर्षी आदर दिया । भले भाग्य पधार्या तुम इंया ॥ सु ॥ १६ ॥ लटके मटके बत लावें । हाव भाव नेण जणावे । तुम दर्शन मुज मन मोहवांवे ॥ पूरो वांछा हिवे भले भावे

॥ सु ॥ १७ ॥ ते कर जोडी कहे कहो बाइ । किसी इच्छा छे तुम तांइ । हमसे पूरी तैं किम थाइ । देवो कृपा करते फरमाइ ॥ सु ॥ १८ ॥ सुरी कहे तन धन ए तुमारो । थाणी मुज्ज समजो नारो । माइ बाइ मत उच्चारो । सुख विलस सफल करो जमवा-रो ॥ सु ॥ १९ ॥ इम कही धरणी पग चेंटाइ । दोनु भाइ हलण जरा नहीं पाइ ॥ असुरी ते दरिया कंठे आइ । लोक भरमां त्रण रुप बणाइ ॥ सु ॥ २० ॥ सिंहणी महा विकाल वणी । सबं रुप करी दो भाइ भणी । भक्षण कर रही मन खुशी घणी । ये माया चारीं देवी तणी ॥ सु ॥ २१ ॥ सार्थी खबर करण आया । सिंहणी देखी डर लाया दोनो मुरदा देखी घवराया । ततृक्षिण पाछा जाइ जणाया ॥ सु ॥ २२ ॥ सज्जन रोवं-ता आइ । दीवी वाघण ने भगाइ । मृत्युक दोनो जलाइ । ते विजोग घणो लागे दुःख दाइ ॥ सु ॥ २३ ॥ अति अपशोष मनमें करता । मिठा नीर मिल्या फिरता । ते सं-गृही वाहण भरता । आगल गमन अनुसरता ॥ सु ॥ २४ ॥ कुँवर विना सूनो लागे । स्युं कहस्या सेठ जी आगे । अनेक वातां इम जागे । ढाल ठटी अमोल चौक रागे ॥ सु ॥ २५ ॥ दुहा ॥ पांवचेंटाया देखने । दोनो चिंता तुर थाय । ए देवी चोखी नहीं । करण धाया अन्याय ॥ १ ॥ इण कारण वरजती । कला पूतली तेह ॥ आपण

मुढ समज्या नहीं । आइ फसीया एह ॥ २ ॥ त्याग अछे पर नारका । ते तो भंगन थाय ॥ मरणो तों एकवारछे । अधिको करसी कांय ॥ ३ ॥ इम निश्चय मन थी करी। रह्या द्रढता धार ॥ चिंता लागी पाछली । करणो किस्यो उपाचार ॥ ४ ॥ साथी रहा जोता हसे । देवी गइ किण ठाय ॥ आगल इहां होसी किस्यो । इम चिंता घणी आय ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ७ मी ॥ बण जारा ॥ सखी पणीयां भरण कैसे जाणा ॥ यह ॥ तुम सुणीयों वात हमारी । नहीं कीजे विगर विचारी ॥ आं ॥ देवी सुन्दर रुप बणाइ । सोले श्रृंगार सजाइ जी । आइ नेपुरने झणकारी ॥ नहीं ॥ १ ॥ कुँवरां स-न्मुख ठाडी । मोहे अंगो पांग देखाडी जी ॥ बोले अतिही करी लाचारी ॥ नहीं ॥ २ ॥ हूं विरह वन्ही थी दाजी । सींची संभोग जल करो राजी जी । विलसो सुख इहां सुरसारी ॥ नहीं ॥ ३ ॥ तव कुँवर नरमांइ बोले । देवीकी खटपट खोलेजी । थें छो देव अवतारां ॥ नही ॥ ४ ॥ महा दुर्गन्धी हम काया । यह उदारिक तन पाया जी । मल मुल अशुची की क्यारी ॥ नहीं ॥ ५ ॥ वली क्षिणिक भोगेछे म्हारा । कि-म ललचाया मन थांरा जी । किस्यो देखी रह्या छो मोहारी ॥ नहीं ॥ ६ ॥ देवी कहे ए तन मे सुधारूं । सहू अशुची पणो निवारुंजी । सागे वणावु देव जिसारी ॥ नहीं ॥

७ ॥ वलि देव भोजन जिमाइ । देस्यूं अति बलिष्ट वणाइजी । विलसो मुज सरखी नारीं ॥ नहीं ॥ ८ ॥ तव कुँवर कहे सुणो शाणी । थे अबी वणो जरा ज्ञानी जी । छे भोग महा दुःख दारी ॥ नहीं ॥ ९ ॥ क्षिणेक सुख वताइ । नर्क तिर्यंचमें लेजाइजी । करे भवो भवमें हांक्ष्वारी ॥ नही ॥ १० ॥ इम सुणी देवी रीसावे । विकाल रुप वणावे जी । जाणे डाकण जावे गटकारी ॥ नही ॥ ११ ॥ अरूण नेल रोशाला । वचन वदे जिम भालाजी ॥ कर करवाले भलकारी ॥ नही ॥ १२ ॥ तुम महारो वचन नही मानो । तो जाणो मृत्यु आयो थाणोजी । करूं चउ टुकडा एक घारी ॥ नही ॥ १३ ॥ इम देखी कूँवर नही डराया । वोलण लागा रोशमें भराया जी । हम मरणसे नहीं डरपांरी ॥ नही ॥ १४ ॥ नही थांरा वचन में मानां । जे भवो भव में दुःख दानाजी ॥ एक भवमें मरी छूटांरी ॥ नही ॥ १५ ॥ पर स्त्री भोगण त्यागे । ते प्राणांते नही भागे जी । कर जे जे इच्छा थारी ॥ नही ॥ १६ ॥ हम होतव इसडो होसी । तो प्राण हमारा तूं खोसीजी । नहीं तो नहीं थारी सत्तारी ॥ नहीं ॥ १७ ॥ देवी कहे इष्ट संभालो । इम कदी गारो करवालो जी ॥ जाणे हो जासी टुकडारी ॥ नही ॥ १८ ॥ शील प्रभाव नही लागी । जेसे पुष्प छडी तन वागी जी । देख देवी रही अचंभारी ॥

नहीं ॥ १९ ॥ जाण्यो इणरे धर्म छे सहाइ । गइ देवी की सहू गुमराइ जी ॥ अति गइ मन में शरमारी ॥ नहीं ॥ २० ॥ मूलगो रुप वणाइ । कहे कर जोडी नरमांइ जी । करो मुज अपराध क्षमारी ॥ नहीं ॥ २१ तुम सरीखा मुज नहीं मिलिया । तुम दर्शन मुज पाप टलीया । जी हूं तो चेली हुइ छूं तुमारी ॥ नहीं ॥ २२ ॥ पूछे कुँवर तूं कुण छे वाइ । देव हुइ किम कर नरमांइ जी । दाखो नी हकी गत थांरी ॥ नहीं ॥ २३ ॥ सुरी कहे पाप उदे भाइ । या नीच गति में पाइ जी । नहीं छीवे कोइ देवतारी ॥ नहीं ॥ २४ ॥ जे नर भूली इहां आवे । ते मुज ने सुख उपजावे जी । देखी वैभव जावे लौ-भारी ॥ नहीं ॥ २५ ॥ पण धन्य २ तुम तांइ । राखी इण समे द्रढताइ जी । हिवे मांगो जे तुम इच्छारी ॥ नहीं ॥ २६ ॥ कुँवर कहे हम आगे । करो नर मारन का त्यागे जी । तो गया हम सहू भरपारी ॥ नहीं ॥ ६७ ॥ देवी कहे त्याग नहीं होवे । हिवे जन्म कुण विगोवे जी । सत्पुरुप मिल्या तुम सारी ॥ नहीं ॥ २८ ॥ एक भेट म्हरी स्विकारो । दीयो रत्न नो वहू मुल्य हारो जी ॥ ए राखो करी कृपारी ॥ नहीं ॥ २९ ॥ अवसर जोइ ते राख्यो । तव सुरी तस गुण दाख्यो जी । ए टूटे जो किण वारी ॥ नहीं ॥ ३० ॥ जिण पासे ए सन्धासी । ते पँट मासे मरजासी जी ॥ ए राख जो मन

में धारी ॥ नहीं ॥ ३१ ॥ ए ढाल सात मी गाइ । पंचम खन्ड सुख दाइ जी ॥ अमुल्य शील छे सहारी ॥ नहीं ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ दोनु कुँवर जाजण लग्या । निर्जरी कहे ते वार ॥ किहां पधारो भाइ जी । ते कहे हम परिवार ॥ १ ॥ उभा तटनी पत ढिगे । जोता होसी वाट ॥ देर घणी हम ने हुइ । टालां तस औचाट ॥ २ ॥ सुरी कहे ते तो गया । देखी महारो चरित्र ॥ जे करीयो ते सुणावीयो । सुणी हुया ते त्रिचित्र ॥ ३ ॥ त्रिदंशी कहे चिंता तजो । मेल्हू हूं झाज मांय ॥ तत्क्षिण वाहण में ठव्या । लोक देख विस्माय ॥ ४ ॥ वीतक कही विबुधी चरी । टलीयो सहू संदेह ॥ धर्मात्मा लखी कुँवर ने । धन्य २ सहू केह ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ८ मी ॥ तारा प्रत्यक्ष मोहणी ॥ यह ॥ लालच बुरी बलाय छे । लालच सें दुःख पाय हो ॥ मदन ॥ दोनो कुँवर तिहां थकी । तत्क्षिण फिर घर आयहो ॥ म ॥ लाल ॥ १ ॥ वेगा आया जाण ने । सहू सज्जन विलखाय हो ॥ म ॥ वाहण भागा के दुःख हुवो ॥ खाली सहू किम आया हो ॥ मदन ॥ लाल ॥ २ ॥ सामा आया पूछीयो । सहू कह्यो देवी चरित्र हो ॥ मदन ॥ सुण हर्षाया साजना । जाणी कुँवर ने पवित्र हो ॥ मदन ॥ लाल ॥ ३ ॥ निजस्थान सहू आवीया । देवी दीयो ते हार हो ॥ मदन ॥ भेट दीयो भूपत भणी ।

कही बात विस्तारहो ॥ म ॥ ला ॥ ४ ॥ राजा सभा वहवा करे ॥ तुम हम पुरे सिण-
गार हो ॥ म ॥ लक्षी पोशाक वक्षावीयो । नगदी द्रव्य अपा रहो ॥ म ॥ ला ॥ ५ ॥
लेइते घर आवीया । पोशाक धरीं घर माय हो । म । द्रव्य दियो सहू वाँटने । जे साथे
जन थाय हो ॥ म ॥ ला ॥ ६ ॥ सुख थी रहे सहू इहां । कीर्त कुँवरकी गवाय हो ॥
म ॥ नृपहार दियो राणी भणी । गुण तेहनो दर्शाय हो ॥ म ॥ सा ॥ ७ ॥ एकदा
अचिंत्य नींदमे । टूटी गयो ते हार हो ॥ म ॥ जाणी नृपती दुःख धर्यो । ठपको दियो
ते वार हो ॥ म ॥ ला ॥ ८ ॥ राणी कहे परवस भयो । सन्धावी देवो झट मोय हो
। राजिंदा । राजा पटवा बुलाइया ॥ प्रकास्यो गुण सोय हो ॥ म ॥ ला ॥ ९ ॥ खुल्ही
बात छे हम तणी । देव नेमी यह हार हो ॥ म ॥ सान्धे ते मरसी सही । षटे मांस ने
मझार हो ॥ म ॥ ला ॥ १० ॥ सहू कहे धाया बाप जी । नहीं इसा धनरी आस हो
हो ॥ रा ॥ मरीया धन किसा कामको । उठ्या सहू हो निरास हो ॥ म ॥ ला ॥ ११ ॥
राय कहे जोरी नहीं । दवू मूह माग्य दाम हो ॥ म ॥ एक वृध चित चिंतवे । राखुं
महारो नाम हो ॥ म ॥ ला ॥ १२ ॥ भरोसो नहीं श्वाशको । षट मास कुण जोय हो
॥ म ॥ धन लेइ देवू सज्जन ने । ते तो सुखीया होय हो ॥ म ॥ ला ॥ १३ ॥ लक्ष

दीनार मांगी तिणे । राय जी हुया कबूल हो ॥ म ॥ हार लेइ घरे गयो । पोवा जमा यो सूल हो ॥ म ॥ ला ॥ १४ ॥ मोती रखीया ओलस्यूं । छिद्रस्यु छिद्र मिलाय हो ॥ म ॥ मधूलगायो छिद्रने । जोडी दियो छिद्र ठाय हो ॥ म ॥ ला ॥ १५॥ पिंपलीका आइ तिहां । ग्रही सुत छेडो मुख हो ॥ म ॥ पेठी मुक्ता छिद्र मे । पार हुइ सहू दुःख हो ॥ म ॥ ला ॥ १६ ॥ गांठ देइ फुंदो दीयो । बहू मोल्यो मनोहार हो ॥ म ॥ दीधो जाइ राज ने । देव निमित ते हार हो ॥ म ॥ १७ ॥ लक्ष सोनैया मांगीया । राय कहे देस्यूं फेर हो ॥म॥ फेरही फेरमें करदिया ॥ मांस छे राय जी तेर हो ॥म॥ला॥१८॥ ते पट वोमर में हुयो । व्यंतर जाते देवहो ॥ म ॥ लार थी तनुंज मोहरो । मांगे धन नित्य मेव हो ॥ म ॥ ला ॥ १९ ॥ एक दिन नृप बोलीयो । लेवो सहंश्रे दीनार हो ॥ म ॥ मेहनत कुछ कीनी नहीं । तो कुण ज्यादा देणार हो ॥ म ॥ ला ॥ २० ॥ महारे पुत नरमी कह्यो । कबूल्या देवो दाम हो ॥ रा ॥ ज्यादा थी धाया बाप जी । मर्या तात इण काम हो ॥ म ॥ ला ॥ २१ ॥ ललकारी तस काढीया । ते आया मध्य वजार हो म ॥ वृतांत कह्यो सहू लोकसे । देवावो हम दीनार हो ॥म॥ला॥२२॥ सहू कहे कर्म गति थांयरी राजा सामे कुण थाय हो ॥ म॥ । पस्ताइ आया घरे । घणा गया घवराय हो ॥ म ॥ ला ॥ २३ ॥ खान

होमें विचार ॥ म ॥ आसण चलीयो हुं गयो । तीन दिव-
पान तजी सहु । करीयो म्हारो ध्यान हो ॥ म ॥ जाणी वृतांत कोपीयो । राजा प्रजा जाण्या दुष्ट
सने म्यान हो ॥ म ॥ ला ॥ २४ ॥ जाणी वृतांत कोपीयो । राजा प्रजा जाण्या दुष्ट
हो ॥ म ॥ विकाल रुप तिसो कियो । हुयो सहु पे रुष्ट हो ॥ म ॥ ला ॥ २५ ॥ अर-
डाट शद्द कियो अति । भूंइ पछाडयो अंगहो ॥ म ॥ ग्राम सहु थर्रागयो । केइ भवन
हुवा भंगहो ॥ म ॥ ला ॥ २६ ॥ राजा प्रजा भय भ्रंत भया । पुरी पाया त्रास हो
॥ म ॥ निज २ जीव लेइ करी । गया वनमें न्हाश हो ॥ म ॥ ला ॥ २७ ॥ में लारो
तस छोडीयो । इहां नित्य आवूं एम हो ॥ म ॥ आवण कोइ पावे नहीं । कह्यो वृतांत
भयो जेम हो ॥ म ॥ ला ॥ २८ ॥ न्याय द्रष्टी थी सोचीये । किण कियो अन्याय हो
॥ म ॥ पंचम खन्ड ढाल आठमी । ऋषि अमोलख गाय हो ॥ म ॥ ला ॥ २९ ॥ ॐ ॥
॥ दुहा ॥ सीस हलाइ मदन कहे । नृप नो खरो अन्याय ॥ तृष्णा तुर होइ करी । वद-
ल्यो कही मुख वाय ॥ १ ॥ विना गुणे संतापीयो । न्याइ तुम परिवार ॥ शिक्षा तेहनी
तुमदीवी । हिवे लेवो मन वार ॥ २ ॥ कीधा का फळ भोगव्या ।
नहीं तुम्हारो दोष ॥ तुम सामर्थ्य छो सहु विधे । स्युं
कीडी पर रोष ॥ ३ ॥ क्षमा वडे को होत है । हलके को उत्पात । वडा वडाइ न तजे।

जोग मिले कम जात ॥ ४ ॥ अर्ज म्हारी अवधार ने । निवारो सहू रोष ॥ सुखी करो सहू जीवने । घर धन दे संतोष ॥ ❀ ॥ ५ ॥ ढाल ९ मी ॥ इण वाने केशर उडरही ॥ यह ॥ जोगी मुणी सहू सुर कथा ॥ जाण्यो ए सरल स्वभावी जीवके ॥ इम सुधारो कीजीये ॥ तस मन वैर निवारवा । दे उपदेश तजावा रीवके ॥ इम सुधारो कीजीये ॥ १ ॥ अहो सुणो अमर हम तणी । होण हार टाले नही कोयके ॥ इम ॥ सेठ पुत सुरी वस पडे । हार देवे नृप भेट ते होयके ॥ इ ॥ २ ॥ ते टूटे तुमही गृहो ॥ लालची राज बचन विग्रोय के ॥ इ ॥ ३ ॥ तिणथी अनर्थ निपजे । हो तवता लेवो तुम जोयके ॥ इम ॥ ३ ॥ मरण कोइ इच्छे नहीं । तुम कुटम्ब के मोहमें आयके ॥ इम ॥ लक्ष दीनार ने कारणे । हार पोयो तिब्र बुद्ध उपाय के ॥ इ ॥ ४ ॥ तिमहीं लोभ राजा कियो । नहीं जाणे इम विप्रा आय तो ॥ इ ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह । कटा शत्रु कह्या जिनराय तो ॥ इम ॥ ५ ॥ इनके वश पड्या जीवडा । अनेक विप्त रह्या जग भोगके ॥ इ ॥ नही छुटे ते दुःख थी । जिहां लग न मिटे जालम रोगतो ॥ इ ॥ ॥ ६ ॥ वैरानु वन्धन जक्त में । महा भयंकर कह्यो जग नाथ तो ॥ इ ॥ फजीती भवोभव ए करे । सार तेने कछु हाथ न आथ तो ॥ इ ॥ ७ ॥ कुण पुत्र कुण तात छे ।

नासा सहु हुवा वार अनंत तो ॥ इ ॥ एक भणी संतोष वा । घणा सज्जन को आणे छे अंत तो ॥ इ ॥ ८ ॥ ए आज्ञानता अवलोने । ज्ञानी जन हांसो मन लाय तो ॥ इ ॥ किम छुटसी येह प्राणीया । कर्म फास में रह्या फसाय तो ॥ इ ॥ ९ ॥ एक अन्याय राजा तणो । तुम संताप्यो खवलो ग्राम के ॥ इ ॥ जुदो २ वदलो लहे । तो किस्यो होवे तुम परिणाम के ॥ इ ॥ १० ॥ द्रव्य घात तुम ना सही । तो किम सहसो दुःख अघात के ॥ इ ॥ दीर्घ द्रष्टी ये विचारीये । नहीं करीये निज प्राण को पात तो ॥ इ ॥ ॥ ११ ॥ सम द्रष्टी धारण करी । काटो सहु ए विरोध की जड तो ॥ इ ॥ जिम आगे दुःख न लहो । आत्म हित ने लेवो पकडतो ॥ इ ॥ १२ ॥ धग २ तो लोह भणी । शीतल लोहो न्हाखे छे काट तो ॥ इ ॥ शत्रु ता उभय लोककी । क्षमा तिमही देवे दाटतो ॥ इम ॥ १३ ॥ गुण पर गुण तो घणा करे । वली हारी करे अवगुणे गुण तो ॥ इम ॥ पूजे पिशुन पांव संतना । ज्ञानी गुणी तस कहे निपुण तो ॥ इम ॥ १४ ॥ निज हितेच्छू हो मानीये । कहण हमारी जो लगे सुख कार तो ॥ इम ॥ नरम्यो श्रव-णी देवता । कहवा लाग्यो कर नमस्कार तो ॥ इम ॥ १५ ॥ सत्य उपदेश योगीशाजी । रूचीयो महारा मन मझार तो ॥ इम ॥ वैर तजूं अंतर थकी । जगमें को नहीं मुज

गुनेगार तो ॥ इम ॥ १६ ॥ सुखे सहु रहीये इहां । राज कियो ए आपकी भेट तो ॥ इम ॥ अन्यने राज ए नहीं मिले । रखे ते पुंनः करे अखेट तो ॥ इम ॥ १७ ॥ जोगी कहे त्यागी हमें । राज्य दौलत लिया नहीं चाय तो ॥ इम ॥ हम तो रमते राम है । नहीं फसे किसी फंदके मांभ तो ॥ इम ॥ १८ ॥ देणासो देवो मदन को । यह है सब निर्वाहने जोगतो ॥ इम ॥ देव कहे दियो मदन ने । सुख सें कीजीये जेह मन्योंग तो ॥ इम ॥ १९ ॥ तेतले रवी प्रगटीयो । देव बहु रुप वैक्रय करतो ॥ इम ॥ राज देवण उत्सव रचे । जाणे ए नयर सहु गयो भरतो ॥ इम ॥ २० ॥ आनंद पुरमें आनंद भयो । पंचम खन्डकी नवमी ढाल तो ॥ इम ॥ अब आगम पुरजन तणो । कहे अमोल सुणो श्रोता रसाल तो ॥ इम ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ वन वासे नृप सुत मुखे । सुणी थों सारा लोक ॥ राते नयर वसावसी । करसी मदन सहु थोक ॥ १ ॥ चटपटि लागी चितमें । हुइ छे मासी ज्युं रात ॥ सहु साज सजी रह्या । चालां हुयां प्रभात ॥ २ ॥ ते तले तो रवी उगीयो । मिलियो सारो साथ ॥ शिघ्र आइ ऊभा रह्या । जिहां अछे नर नाथ ॥ ३ ॥ वेठ विमाणे चालीया । आया नयर नजीक ॥ वाजिंत्र बहु शब्द सांभली । लागी मनमां पीक ॥ ४ ॥ जोयो सहु नगर भर्यो । देव रुपे नर नार ॥ चिंते आइ सुर

वस्या । किस्यो भयौं ए प्रकार ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १० मी ॥ सासण देवत आवोनी
हमारे घर पावणां ॥ यह ॥ व्योम में रही विचारीयोरे । यो छे देव चरित्र हो ॥ मदने
श्वर ॥ पुण्यवंता जग सोभतारे लाल ॥ १ ॥ मदन जी इहां होसी सहीरे । करे छे तास
मनहार हो मदनेश्वर ॥ पुण्य ॥ २ ॥ कनकावति कंन्या भणीरे । देइ कुँवरने लार हो
॥ म ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ भेजे जोवण कारणेरे । किम होइ रह्या जयकार हो ॥ म ॥ पुण्य
॥ ४ ॥ उंभा रही ने पेखीयारे । राज सभाने मझार हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ राज
सिंहासण [illegible]रे । वेठा मदन सिरदार हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ जय २ करे सहू देव-
तारे । [illegible] नृप ने तेह हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ जाण्यो मदन समजावीयोरे ।
[illegible] इकको नेह हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ राजासण दियो मदन नेरे । टलियो सहू
संदेह हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ मंगल गाती किन्नरीरे । नर करता जय कार हो ॥ म
॥ १० ॥ राय आंगण मां उतरीयारे । स [illegible] ते वार हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ११ ॥
औलखी मदन ए लाणथीरे ॥ उभा हुवा [illegible] हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ प्रणम्यां
जसोधर रायनेरे । राय पण कियो प्रणाम हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ सहू जन प्रणमें
मदननेरे । जाणी उपकारी तास हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ तुम प्रशादे पामीयारे । हम

सहू घर सुख जोग हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ मदन जी नमन सहू थी कियोरे । दीयो सत्कार यथा योग्य हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ उंचेश्वर मदन कहेरे । सुणीयो साराही साथ हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ हूंतो कांइ करी नहीं सक्योरे । सहू प्रताप गुरु नाथ हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ लालच थी दुःख पावीयारे ॥ जे सुरी दीयो मुक्ता हार हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ १९ ॥ टूटयो सन्धायो पटवाकने हो ॥ कही नृप लाख दीनार हो ॥ म ॥ पूण्य ॥ २० ॥ ते तस नहीं दी राज वीरे । कियो कुटम्ब अपमान हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ ते पटवा हुवा देवतारे । कोप्या जोइ अत्याचार हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ २२ ॥ तिण थी सहू ने दुःखी कियारे । अमर दोष नहीं कोय हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ २३ ॥ हिवे इसो करजो मतीरे । जिम फिर दुःख नहीं होए हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ २४ ॥ प्रणमो गुरु अने देवनेरे । क्षमावो सहू अपराध हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ २५ ॥ यां की कृपासे आं-पा सहू जी । पाया अक्षय समाध हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ २६ ॥ राजा दिक सहू नम्यारे । पहलां जोगीका पाय हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ २७ ॥ फिर पग लाग्या देवनेरे । निज अपराध क्षमाय हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ २८ ॥ राय विचक्षण समजीयारे । देव दीयो मदन ने राज हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ २९ ॥ युक्ती करी राखी लहूंरे । यश प्रेम सुख ने लाज हो

॥ म ॥ पुण्य ॥ ३० ॥ तिणही हगामां मांयनेरे । करी जग विवहार हो ॥ म ॥ पुण्य ३१ ॥ कनकावती परणा दीवीरे । मदन भणी तेवार हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ३२ ॥ दायचा मांय आपीयोरे । आनंद पुर को राज हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ३३ ॥ ओर यथा उचित कियोरे । करणो जो थो काज हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ३४ ॥ फिर वैराग्य मन आणनेरे । मिलाइ स्थैवर संयोग हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ३५ ॥ दिक्षाली जिनराजकीरे । तोडवा कर्मका भोग हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ३६ ॥ ज्ञान भणी करणी करीरे । तप जप क्षप कर संत हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ३७ ॥ आयु अंते श्वर्गे गयारे । करसी भवको अंत हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ३८ ॥ मदन जी पाले राज ने हो । करे प्रजाको पोप हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ३९ ॥ अमरी पडह वजार्वायोरे ॥ सहू ने दियो संतोप हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ४० ॥ मठ वन्धायो मनोहररे । रह जोगी तिण मांय हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ४१ ॥ सेवा सादे नित्य मदनजीरे । कहे सो हुक्म उठाय हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ४२ ॥ प्रधान किया अंगज भणीरे । करे सहू की संभाल हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ४३ ॥ इछित खरच राज पुलनेरे ॥ देइ गुजारे सुखे काल हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ॥ ४४ ॥ वस्ती आवद हुइ सहूरे । अलंका पुरी सम वास हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ४५ ॥ पंचइन्द्री सुख भोगवेरे । मदन का पुंन्य प्रकाश हो ॥ म ॥ पुण्य ॥

४६ ॥ ढाल दश पंचम खंडकीरे । ऋषि अमोलख गाय हो ॥ म ॥ पुण्य ॥ ४७ ॥ ❀ ॥
दुहा ॥ एकदा निशी में मदन की । निंद्रा वीतिक्रंत थाय ॥ कुटंब जागरणां लागता ।
वीतक यादज आय ॥ १ ॥ एक पूनम वीती । गइ । बीजी आइ चाल ॥ जिण कामे
हूं निकलीयो । तेहनो नहीं कीयो ख्याल ॥ २ ॥ अब प्रमाद तजी करी । बचन पाड
वो पार ॥ पुर पयठाण राय पुत्री का । पहोंचावी तस द्वार ॥ ३ ॥ जोगी की कृपा
थकी । सप्त बड कूप को तोय ॥ लेजावूं वनदेवले । जहां लग पूनम होय ॥ ४ ॥ प्रात
थी आरंभ भो । तब वक्ते होवे काम ॥ इत्यादी विचार में । वीती रात तमाम ॥ ५ ॥
❀ ॥ ढाल ११ मी ॥ पद्म प्रभू पावन नाम तुमारो ॥ यह ॥ प्राते मदन कहे त्रियाने,
रह जो सुख मझारो ॥ कार्य कोइ निज देशे जाउ । पाछो आस्यु थोडे कालो ॥ देखोरे
भाइ मदन पुण्य भल कारो । होवे दिन २ तेज वधारो ॥ देखो ॥ आं ॥ १ ॥ सा कहे
हूं जावा किम देस्यूं। कार्य किस्यो सो उचारो । पधारसो तो साथे चालस्यूं । निश्चय मुज
विचारो ॥ दे ॥ २ ॥ मदन कहे इम हट नहीं करनो । अवसर उचित विचारो ॥ में आयो
कोइ काम के काजे । बिच मिल्यो जोग तुमारो ॥ देखो ॥ ३ ॥ दिवस बहू लोभायो तुम
थी । हिवे मन उचक्यो म्हारो ॥ कार्य सिद्ध थयां होसी । हटक मांय मत डारो दे ॥ ४ ॥

सहु कार्य सिद्ध करी आस्युं । विलंबन करस्यूं लगारो ॥ थोडा में समजो इम शाणी । अवसर येहीज सारो ॥ देखो ॥ ५ ॥ सा कहे ठीक आप फरमाइ । हूं नहीं कहूं नाकारो ॥ वचनानु सार दर्श वेगो दीजो । कार्य सिद्ध करो थांरो ॥ देखो ॥ ६ ॥ लिया समजाइ सभा मे आइ । बोलाइ राज कुँवारो ॥ तिणसे कहे ए राज संभालो । सुख थी प्रजा पालो ॥ देखो ॥ ७ ॥ ते अश्चर्य धर कहे नरमाइ । किम ए वचन उचारो ॥ आप कृपा ए सब सुख मुज ने । अवरन चाहा लगारो ॥ देखो ॥ ८ ॥ मदन कहे स्वदेशे सिधावुं । जरुरी काम हमारो ॥ ते करी हूं पाछो आस्युं । तिहां सुधी राज संभारो ॥ देखो ॥ ९ ॥ कुँवर कहे हुकम सीस चडावु । करो वंदोवस्त सारो ॥ मदन कानून वांध्यो तत्क्षिण । भोलाव्यो कार भारो ॥ देखो ॥ १० ॥ फिर मिलिया अंगजने केवे । रह जो सुख मझारो ॥ गुरु महाराज की सेवा कर जो । नित्य हुकम सिरधारो ॥ देखो ॥ ११ ॥ ते कहे आज उधारा क्यों बोलो । केवोनी गुन्हो हमारो ॥ मुशाफरीना मजा लूंटवा । किहां इकेला पधारो ॥ देखो ॥ १२ ॥ मदन कहे इसोमत समजो । आप से अद्वेत न धारो ॥ काम जरूर को करणो म्हारे । जे मेल आयो हूं लारो ॥ देखो ॥१३॥ नहीं छोडी ने जातो तुम ने । पण नहीं तुमसा हूंशारो ॥ गुरु भक्ती राज वंदोवस्ती ।

कर सो तुम श्रेय कारो ॥ देखो ॥ १४ ॥ तस समजाइ जोगी पास आया । कियो
लुली नमस्कारो ॥ नेनाश्रुत होइ बोले । राख जो कृपा आधारो ॥ देखो ॥ १५ ॥ जो-
गी कहे आज किस्यो करो इम । उपज्यो किस्यो विचारो ॥ सूर वीर ने कायरता जो ।
अश्चर्य आय अपारो ॥ देखो ॥ १६ ॥ मदन कहे आपसे मुज श्वामी । गुप्त न बात
लगारो ॥ आदी अंत आज तांइ की वीती । कह दियो सहू सारो ॥ देखो ॥ १७ ॥
हेवे श्वामी जल लेइ आगड थी । जावो खेचरी द्वारो ॥ राज पुत्री पुर पयठाण मेली।
बचन पाहू मुज पारो ॥ देखो ॥ १८ ॥ अंतराय दर्शन नी पडसी । एही लगे मुज
खारो ॥ अन्य कायरता कोइ नहीं चित । आपको मुज आधारो ॥ देखो ॥ १९ ॥ कर
सिरधर जोगी प्रेमा तुर । कहे सिद्ध काम छे थारो ॥ तूं पुन्यात्म जक्त जेष्ट छे । आगे
वढसी विस्तारो ॥ देखो ॥ २० ॥ इम सुणी मदन हर्षाया । ढाल हुइ ये इग्यारो ॥ कहे
अमोल नव २ रंमी । मदन कथा मनहारो ॥ देखो ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ जोगी अवसर
देखने । दीनो दंड तस कर ॥ जा ला पाणी कूपथी । न रख कोइ को डर ॥ १ ॥ मदन
मन आनंद ने । दंड तुम्बी करधार ॥ निशंके चल आया तिहां । पेठा कूप मझार ॥२॥
असुर कहे फिर आवीयो । रे धीठा सिरदार ॥ मदन कहे धार्यो करो । हूं लेवू जल इण

मूंछे ताव देता थका।
वार ॥ ३ ॥ जोर न चाल्यो देव को। मदन शिघ्र भर तोय ॥ इष्ट साधवा
ले चाल्या खुश होय ॥ ४ ॥ दे दंड जोगी ने नमी। आया निज आगार ॥ रूप कीधो
जाववा। हुवा शिघ्र तैयार ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १२ ॥ मी ॥ लालना हो राम पाय। श्रोता हो।
भलो ॥ यह ॥ श्रोता हो। पुण्य थकी इच्छित फले। अभी नव वस्तु सुन्दरी कर
पुण्य शाली मदनेशजी। कार्य करवा उमाय ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥ १ ॥ कन्क जावा को काम ॥
जोडने। पूछे प्रकाशो श्यामा ॥ श्रो ॥ उतावल दीसे घणी। किहां ॥ श्रो ॥ तव प्रेमे
श्रो ॥ पुण्य ॥ २ ॥ यहां थी जोजन द्वादशे। जावो पूनम शाम साधीये। वि-
भणे प्रेमला। एतो क्षिणनो काम ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ गगन गामनी ॥ श्रो ॥ पुण्य
त्या जे मुज पास ॥ श्रो ॥ इच्छित स्थान पधारीये। नही देखीये लास पसांयी जीव
॥ ४ ॥ विद्या गृही साधन करी। ततक्षिण हुइ ते सिद्ध ॥ श्रो ॥ पुण्य आवीयो। प्रितम
ने। दुष्कर नहीं कोइ रिद्ध ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ पूनम को दिन ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥
भक्ती काम ॥ श्रो ॥ विद्या प्रभावे निपाइयो। कनकावतीये विमान नाचती।
६ ॥ पंच घुमंट रत्नातणा ॥ सुवर्ण स्थंभ सुचंग ॥ श्रो ॥ पूतली या सजी भोजन जलका
चित्र विचित्र बहू रंग ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ सयनासन स्थान जुजुवा।

कीध ।। श्रो ।। सामग्री सजी सहू । वक्ते साधे सहू विध ।। श्रो ।। पुण्य ।। ८ ।। अर्पण किंयो पती भणी । विराज्यो इणमांय ।। श्रो ।। नाथ मुशाफरी कीजीये । जिम दुःख अंगन पाय ।। श्रो ।। पुण्य ।। ९ ।। विराज्या मदन जी तेह में । दे नारीने विश्वास ।। ।। श्रो ।। प्रणमी वनीता पभणे । वेगी पूर जो आस ।। श्रो ।। पुण्य ।। १० ।। विद्या वलथी चलावीयो । अंतः लिख में विमाण ।। श्रो ।। जाणे दूजो रवी प्रगट्यो । गति वायु समान ।। श्रो ।। पुण्य ।। ११ ।। थोडी वार में आविया । काम देवने स्थान ।।श्रो।। तेतले रवी छिप्यो पश्चि में । स्थंभाव्यो विमान ।। श्रो ।। १२ ।। उतर्या मदन जी हर्ष थी । प्रणम्या यक्षका पाय ।। श्रो ।। इच्छा पूरक आज भेटतां । हिवडे हर्ष न मांय ।। श्रो ।। पुण्य ।। १३ ।। पूनम पूरो प्रगट्यो । पूर्व दिशी मे चन्द ।। श्रो ।। तेतले तिहां प्रगटी । षोडश खेचरी सम्बन्ध ।। श्रो ।। पुण्य १४ ।। प्रणमी पद ते यक्षका । मदनेश्वर तिहां जोय ।। श्रो ।। पेछाणी मन हुल्लस्यो । बोली हर्षित होय ।। श्रो ।। पुण्य ।। १५ ।। मदन नमन तिणस्यू कियो । कहे आज धन्य भाग्य ।। श्रो ।। दर्शन चित प्रसन्न हुयो । बोली जगावे अनुराग ।। श्रो ।। पुण्य ।। १६ ।। रती सुंदरी कहे तुम तणी । घणी जोइ हम वाट ।। गइ पूनमें आया नहीं । हुयो चित उचाट ।। श्रो ।। पुण्य ।। १७ ।।

वैस केइ चितमें उठ्या । कियो घणो पश्चाताप ॥ श्रो ॥ आज दर्श जो तुम तणा । टलीया सहू उंचाट ॥ पु ॥ १८ ॥ मदनजी वीती निज कथा । कही सहू विस्तार ॥ श्रो ॥ सौलेइ सुणी विस्मित हुइ । धन्य २ तुम अवतार ॥ श्रो ॥ १९ ॥ बात विनोद नी ए करी । ढाल द्वादश माय ॥ श्रो ॥ अमोलख ऋषि ए रची । खन्ड पंचम सुखदा य ॥ श्रो ॥ २० ॥ दुहा ॥ मदनजी तब आपीयो । जे लाया संग नीर ॥ रती सुंदरी ह- र्षीयों कहे । शावास नरवीर ॥ १ ॥ यथा विधी मंती दियो । कहे राखीजो संभाल ॥ इण थी तुम इच्छित थसी । उतरे योगी व्याल ॥ २ ॥ तुम अंग पहले पाखालके। खो- लजो गुफा ना पट ॥ बाइ बाहिर काहाडने । इणथी न्हवावजो झट ॥ ३ ॥ फिर न्ह- वावजो शुक भणी । ते थासी नर रुप ॥ बेठ विमाणे जाव जो । न दे को दुःख धूप ॥ ४ ॥ जोगी आइ मस्ती करे । तो छांट जो ए जल ॥ निर्बल हो पडसी धरा । भूल- सी सहू हल फल ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १३ मी ॥ जंबू द्विप मरूस्थल देशे ॥ यह ॥ आनन्द धरी मदनजी उडीया । आइ बेठा विमाणो ॥ नाटक जोवा तिहां रह्या ऊभा । जिहां लग प्रगटे भाणो ॥ मदनजी सुणीये । हम दुःख दोहग धुणीये ॥ म ॥ आं ॥ ॥ १ ॥ विद्याबले विमाण चलायो । जोगीकी गुफापे आया ॥ चिंतित स्थान देखीने

हर्ष्या । जोगी तिहां नहीं पाया ॥ म ॥ २ ॥ तज विमाण ने नीचे उतर्या। पोपट मदन जी जोइ ॥ नाच्यो कूद्यो लुलीने नमीयों । हर्ष उमावे होइ ॥ म ॥ ३ ॥ किम साहेब आपछो आणंदमा । कार्य सिद्धकर आया ॥ धन्य भाग हम पुन्य संजोगे । आपका दर्शन पाया ॥ म ॥ ४ ॥ मदन कहे भाइ धर्म पसाये । सहू काम रुडा थासी ॥ धैर्य धारो बचन संभालो । हिवणा सब दुःख जासी ॥ म ॥ ५ ॥ तिण जल थी मदन जी न्हाइ । शिल्लापे छांटो मार्यो । पटपड्यो नीचे खुल्लो मार्ग । हर्ष्या मदन हुया धार्या ॥ म ॥ ६ कीर कहे मुज पहली छोडो । म्हारो जीव अकुलावे ॥ पाछे कुँवरी वाहिर लाजो । ज्यों उपद्रव्य न थावे ॥ म ॥ ७ ॥ झट उड आयो मदन जी पासे । तुम्बी जले न्हवायो ॥ तत्क्षिण मूलगो रुप ते पायो । चरणे सीस लगायो ॥ म ॥ ८ ॥ रखवाली वाहिर तस राखी । गुफामें मदन पधार्या ॥ अन्धारे कुँवरी न पेछाण्या । जोगी आया धार्या ॥ म ॥ ९ ॥ तटकी बोले कंन्या तत्क्षिण । पापी दूरो रहीजे ॥ जो जीव लेवा इच्छा होवे तो । म्हारा तनने छीजे ॥ म ॥ १० ॥ किम अबलाने लारे लागी । विना गुन्हे सतावे ॥ जाणे नहीं मुज पाछल वलीया । जे थारो अंत लावे ॥ म ॥ ११ ॥ धावोरे धावो मदन जवेरी । इण दुष्ट करथी छुडावो ॥ इम कही ते रोवा लागी । किहां लग सहूं दुःख भावे।

॥ म ॥ १२ ॥ नाम सुणी निज चमक्या मदनजी । मठासे तस संतोषी ॥ मदन हूं तुम लेवा आयो । मत समजो ते दोषी ॥ म ॥ १३ ॥ जल्दी निकलो गुफाने बाहिर । रखे ते पापी आवे ॥ बोली सेंदी सुण विस्माइ । हर्ष उमाले बतलावे ॥ म ॥ १४ ॥ अहो खरोखर जवैरी छो तुम । महारे कारण आया ॥ धन्य भाग्य आज दुःख गयो सब । प्यारा का दर्शन पाया ॥ म ॥ १५ ॥ तत्क्षिण दोडी बाहिर आइ । दोन्याने देख सुखपाइ ॥ दुःख संभाया हीयो उ मंगायो । नेणा नीर वहाइ ॥ म ॥ १६ ॥ तुम्बी जले कूँवरी ने न्हवाइ । स्वच्छ वस्त्र पहराइ ॥ कहे अब किंचित डरमत राखो । जोगी को चाले न कांइ ॥ म ॥ १७ ॥ दोंनाको करग्रही मदनजी । विद्या मन में ध्याइ ॥ उड आया अंतलिख वीमाणे ॥ सुखथी तिहूं बेठाइ ॥ म ॥ १८ ॥ विद्या बले विमाण चलायो । वायू वेग ते चाल्याइ ॥ तीनी ने मन आनंद घणेरो । आज सहू फंद छूट्याइ ॥ ॥ म ॥ १९ ॥ उपकार दोनो माने मदन को । जीवित यां दीधाइ ॥ निज २ वीती बात प्रकाशवा । इच्छा उभय की थाइ ॥ म ॥ २० ॥ जित्त जे जे होवे रचना । ते सुणजो चित्तलाइ ॥ ढाल तेरमी पंचम खन्डकी । ऋषिअमोलख गाइ ॥ मदन ॥ २१ ॥
॥ दुहा ॥ लारे जोगीं आइ यो । गुफाते खुली जोय ॥ अश्चर्य पा शंकावीयो । तुर्त मां-

य गयोसो ॥ १ ॥ राज कंन्या दीठी नहीं । सूवटो नहीं दखाय ॥ इत उत जोया घणा ॥ घणो गयो घबराय ॥ २ ॥ मुज सिरपर कुण जन्मीयों । जेणे कीधा ए कर्म ॥ मुज विद्या फोकट करी । न लायो कुछ शर्म ॥३॥ जोम उतारुं तेहनो । देखाडी करामात ॥ तो चेलो सद्गुरु तणो । नहीं तो लाजे जात ॥ ४ ॥ तत्क्षिण उडीयो गगन में चारुं कानी जोय ॥ रवी किरण ने सारीखो । जातो विमाण अवलोय ॥ ५ ॥ ❀ ॥

ढाल १४ मी ॥ कांइरे गुमान करे रसीया ॥ यह ॥ कांइरे गुमान करे गेला ॥ आं ॥ हांरे गर्भ किणारो पारन पडीयो । जिण कीधो तिणने आइ नडीयो ॥ कांइ ॥ १ ॥ जोंइ विमाण क्रोधे धम धमीयों । इण दुष्ट हर्यो म्हारो गमीयो ॥ कांइ ॥२॥ ठग जोगी अभीमान में छांयो । शिघ्र गतिये उड तिण पास आयो ॥ कां ॥ ३ ॥ देख्यो आतो जोगी तिणवारो ॥ कहे मदन डरीये न लगारो ॥ कां ॥ ४ ॥ इणरो जोर चलसी नहीं कांइ । खोटा की कमवक्ती आइ ॥ कां ॥ ५ ॥ ललकारी जोगी कहे उभा रहो पापी । जाणो नहीं मुज शक्ती यदापी ॥ कां ॥ ६ ॥ छल करी किम भागी जावो । अकाले किम मरणो चावो ॥ कां ॥ ७ ॥ संभालो तुम इष्टने तांइ । हिवे जीवता छोडूं हूं नहीं ॥ कां ॥ ८ ॥ मदन विमानने धीरो पाड्यो । खेचरी मंलयो जल देखाड्यो ॥ कां ॥

९ ॥ मदमातो जोगी गिणती न लावे । ढोंग धूम घणी सामे मचावे ॥ कां ॥ १० ॥ मदन कहे इम कर्यां कांइ होवे । क्यों तूं व्यर्थ बाचा खोवे ॥ कां ॥ ११ ॥ होवे करामात सब ते देखाडो । सोगन गुरु जी की कसर जो पाडो ॥ कांइ ॥ १२ ॥ जोगी सहू मंत्र अजमाइ भाल्या । पण तिण उपर एक न चाल्या ॥ कांइ ॥ १३ ॥ मदन कहे जावो निज घर भाइ । किम मरवा की तुज मन आइ ॥ कां ॥ १४ ॥ ए कही छांटो जो जलनो देस्युं । तो थारी शक्ती सहू हरलेस्यूं ॥ कां ॥ १५ ॥ समजायो धूर्त समजे नाही । तब तो मदन मनरीस ज आइ ॥ कां ॥ १६ ॥ तुम्बी थी जल लेइ छिडकायो । जोगी को सहू जोर भगायो ॥ कां ॥ १७ ॥ पहाड कूँट ज्यों पड्यो धरा आइ । हड्डी नशा सहू ढीली थाइ ॥ कां ॥ १८ ॥ अरटाड पाडी रोवा लाग्यो । विद्या बल सघलो तस भाग्यो ॥ कां ॥ १९ ॥ तब जोगीडो अति पस्तायो । व्यर्था में इण लारे आयो ॥ कांइ ॥ २० ॥ पश्चतापे अब होवे कांइ । किया कर्म उदय जब आइ ॥ कांइ ॥ २१ ॥ ठसकतो २ गयो घर चाली । सहू करामात खोइ कपाली ॥ कां ॥ २२ ॥ इसो जाणी कोइ दगोन करीये । ढाल चउदे अमोल सीख वरीये ॥ कांइ ॥ २३ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ जोगी पडया तद नंतरे । तीनू हुवा खुशाल ॥ करामात जो मदन

की । जाण्या पुण्य विशाल ॥ १ ॥ पूछे मदन कँवरीं थकी । अन्ध गुफा ने मांय ॥ मुज नाम किम सांभयों । कुँवरी कहे शरमाय ॥ २ ॥ राय आंगण में खेलती । जो-वती तात ने पास ॥ रुपे मुज मन मोहीयो । सुणी गुण प्रकाश ॥ ३ ॥ निश्चय मन थी तब कियो । बीजा तात समान ॥ प्रतज्ञा ए माहेरी । पूरसी श्री भगवान ॥ ४ ॥ जे जन होवे आपणा । दुःख में सुख ते आय ॥ सहायतापण तेही करे । इम कही मुल की रहाय ॥ ५ ॥ ❀ ढाल १५ मी ॥ सुमत का साहेबारे ॥ यह ॥ सुगड नर सांभ-लोरे । मदन का पुण्य चडता दिन कार ॥ आं ॥ भद्र सेण पूछे तदा । अब कहो आप विरतंत ॥ करामात किम पामीया । दो मास किहां वीरतंत॥ सु ॥ १ ॥ मदन कहे हिवे सांभलोरे । कहूं म्हारा सहू हाल ॥ पुर पयठाण वीडो झल्यो । लेवा कुँवरी निकल्यो ततकाल ॥ सु ॥ २ ॥ भटक तो आयो तुम कने जी । तुमे बताइ युक्त ॥ ते करवा आगल चल्यो जी । होवा वयण थी मुक्त ॥ सु ॥ ३ ॥ काम देव ने मंदिरे जी । कि-न्नरीयां मिली मोय ॥ तिण वली नीर मंगावीयो । हूं आगे चल्यो खुश होय ॥ सु ॥ ४ ॥ उदक लेतां चौंटाबीया जी । बढ ने देवता मुज ॥ उडायो गयो वेगलो । तिहां भोगी मिल्या कहूं गुज ॥ सु ॥ ५ ॥ मरतो नर बचावियो । सिद्ध सुवर्ण पुरुष निपाय

॥ फिर आया चंगला पुरी । तिहां कीधो विषम न्याय ॥ सु ॥ ६ ॥ उजड पुर वसावी यो । लियो तिहां को राज ॥ राय कंन्या परण्यो तिहां । योगी पसाये सिद्ध काज ॥ सु ॥ ७ ॥ फियों देवले मिली किन्नर्यां । तिण मली दीधो नीर ॥ तिण जोगे तुम हम मिल्याने । गइ जोगी की पीर ॥ सु ॥ ८ ॥ अव जाइ सोंपी राय ने । हूं होवूं वयण उरण ॥ आगल इच्छा इण तणी । कांइ करसी इम पूरण ॥ सु ॥ ९ ॥ इम वात विनोद में जी । सुख थी मार्ग खुटाय ॥ थोडी देरने माय ने ते । पुर पयठाणे आय ॥ ॥ सु ॥ १० ॥ देखी गढ खुशी हुया जी । उतर्या बाग में तब ॥ खान पान सुख थी किया जी । भद्रसेण जो जब ॥ सु ॥ ११ ॥ लेइ रजा मदन तणी जी । आगल ग्राम मे आय ॥ राज तणी सभा विषे । सहू जोइ जन विस्माय ॥ सु ॥ १२ ॥ जय विजय वधाइ ने कहे । सुणो वधाइ राजान ॥ मदन सेन रुप सुंदरीले । आया वाग के स्थान ॥ सु ॥ १३ ॥ वाइ को आगम सुणी जी । सहू सभा हर्षाय ॥ अश्चर्य पाया राज वी । किम लाया कंन्या तांय ॥ च ॥ १४ ॥ उमाया जोवा भणी जी । सहू हुया तब ही तैयारा ॥ राय राणी शैन्या संगाते । चाल्या स परिवार ॥ च ॥ १५ ॥ पुर जन रायने आगले जी । गया भग जोवण आस ॥ ठाठ जम्यो घणो वाग मे । सहू देखे धरी

हुल्लास ॥ च ॥ १६ ॥ वीमाण जाणे रवी दूसरो जी । करी रह्यो झल हल ॥ बाइ बीठो माय ने जी । सील गुण वीमल ॥ च ॥ १७ ॥ सहू बडाई करे मदन की जी । अहो २ गुण भंडार ॥ कष्ट सही दुःख नष्ट किया । जे लाया राज कुँवार ॥ च ॥ १८ ॥ तेतले राजिंद आवीया जी । हर्ष निशाण घुराय ॥ वीमाण आदी ऋद्धि देखी । अश्चर्य अतिही पाय ॥ च ॥ १९ ॥ ए जवैरी के देवता जी । पुण्य प्रबल नर एह ॥ इम मन में अनु मोदता जी । धरता अधिक स्नेह ॥ च ॥ २० ॥ सहू जन ने मध्य थी जी । आवे श्री नृपाल ॥ अमोल हर्षानंदकी ए । भाखी पन्नरे ढाल ॥ च ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ नर वर आया देख के । मदन घणा हर्षाय ॥ दोडी सामे आवीया । नमिया छुली २ पाय ॥ १ ॥ राजा कंठे लगावींया । आणी अधिक स्नेह ॥ धन्य जवैरी तुम भणी । कियो उपकार अछेह ॥ २ ॥ अहो नरोंशिर सेहरा । सूर वीर सिरदार ॥ असक्य कार्य तुम कियो । हुयो मुजपे अभार ॥ ३ ॥ कर जोडी मदन भणे । मुज में शक्ती न कोय ॥ आप कृपा प्रसाद थी । सहू यह कामा होय ॥ ४ ॥ सेवक योग्य सेवा करी । नहीं इण में अभार ॥ सुणी नृपादी हर्षिया । धन्य २ रह्या उच्चार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ डाल १६ मी ॥ श्री जिन अजित नमुं जय कारी ॥ यह ॥ धन्य २ मदन उच्चरे सहू जन । कीधे

अणहूंतो काम जी ॥ स्वजन मिल्या सहू हर्षाया । पूरी हुइ छे हाम जी ॥ धन्य ॥ १ ॥
कुँवरी हुलसित आइ तात ढिग । प्रेमे प्रण में पाय जी ॥ स्मरित दुःख नेणे नीर वर्षे ।
विरह हीयो दर्शाय जी ॥ धन्य ॥ २ ॥ प्रेमोत्सुक नप लीनी खोला म । वुचकारी धर
प्रेम जी ॥ आज सफल दिन वाइ हम छ । तुज भेटां पाया क्षेमजी ॥ धन्य ॥ ३ ॥
रुपवती कहे आप विरह थी । हूं तड फडती दिन रेन जी । मोटो उपकार जवैरी को
छे । मिलाया मुज ने सेण जी ॥ धन्य ॥ ४ ॥ मुज काजे यां दुःख सह्यो घणो । कह
सी सहू भद्र सेण जी । अब जाउं माता जी पासे । दरसणे तरसे नेण जी ॥ धन्य ॥
५ ॥ उठी तत्क्षिण आइ जननी कने । प्रेमे लागी पाय जी । उठाइ ली खोल माहीं
। प्रेमे हिये चिपकाय जी ॥ धन्य ॥ ६ ॥ नेणा नीर न्हांखंती बोले । करी अचंभो मात
जी । थोडा मांसरे माइ वाइ । सूखयो सहु गात जी ॥ धन्य ॥ ७ ॥ किहां किमगइ
रही किहां किम । सह्यो दीसे घणो दुःख जी ॥ कुँवरी कहे माजी मुज दुःखडा । किम
कह वावे मुख जी ॥ धन्य ॥ ८ ॥ उडा मंलसे लेगयो जोगी । राखी महागिरी मांय
जी ॥ अहो निश एकली झुरती रहती ॥ ते पापी नित्य सताय जी ॥ धन्य ॥ ९ ॥
धन्य२ जवैरी जी तांइ । मुज काज भम्या प्रदेशजी ॥ महा कष्ट सही सुखी करी मुज ॥ हूं

फेडी न सकूं रेश जी ॥ धन्य ॥ १० ॥ सहेल्या घेरी बाइ ने आइ ॥ मधुर बचने बतलाय जी । सज्जन मेले हर्षी होइ । गत दुःख दूर कराय जी ॥ धन्य ॥ ११ ॥ शुभ महोर्त जोवायो नरपति । सहू सजाइ सजाय जी ॥ एकण मयंगल मदन ने भूपत । बेठा आणंद माय जी ॥ धन्य ॥ १२ ॥ मध्य बजारे होइने चाल्या । देखण प्रजा उमाय जी ॥ मार्ग हाट हवेली चांदणी । नर नारी थी भराय जी ॥ धन्य ॥ १३ ॥ मदन तणा गुण सहू जन गावे । शावास नरवर बीर जी । महा बीकट काम कैसो उठायो । तै सोही पहोंचायो तीर जी ॥ धन्य ॥ १४ ॥ उतर्या आइ राज सभा में । सिंहासणे बेठा राय जी ॥ मदन ने खेंची पास बेठायो । अरी गया शरमाय जी ॥ धन्य ॥ १५ ॥ सहू सभा ठाम ठिकाणें बेठी । महीला पडदा माय जी भद्रसेण उभो होइ बोले । सुणो सहू चित लाय जी ॥ धन्य ॥ १६ ॥ अश्चर्य वीतक जवैरी जी को । जे हुयो षट मांस माय जी ॥ सुणवा जैसी बात हे साहेब । तिण थी कहवा चाय जी ॥ धन्य ॥ १७ ॥ सहू श्रवण करे एकाग्रता थी । जोगी विद्या प्रभाव जी ॥ उडा लेगयो रुपवतीने । गुफा में राखी छिपाय जी ॥ धन्य ॥ १८ ॥ मदन जी बीडो ग्रह्यो जारे । मैं गयो आगे भाग जी ॥ चेंटयो सिल्ला ने तोतो वणायो । मदन जी आया में थाग जी ॥ धन्य

१९ ॥ सुणी जुक्ती कही जवेरी ने । ते गया आगे चाल जी ॥ देव समजाइ पुरव साया
। राजा हुया परण्या नार जी ॥ धन्य ॥ २० ॥ वड ने चेंटी उडगया दूरा । मरतो
मनुष्या छोडाय जी । कर।माती जोगी मिलिया । सुवर्ण पुरुष निपाय जी ॥ धन्य ॥
२१ ॥ पाछा आया विद्या पाया । विमाण केरीगत जी ॥ हन ने छोडाया जोगी हराया
। इहां लाया देखो सत जी ॥ धन्य ॥ २२ ॥ चमत्कार सहू हृदय पाया । सुणी मदन
विरतंत जी ॥ धन्य कार सहू मुख्य थी निकल्या । ए नर महा पुण्यवंत जी ॥धन्य॥२३॥
वटी वधाइ दीनी मीठाइ । वृत्य जय २ कार जी ॥ ढाल सोलमी कहे अमोलख ।
पंचम खंड मझार जी ॥ धन्य ॥ २४ ॥ ॥ दुहा ॥ शभा वरकास हुइ तदा । नृपत
आज्ञा लेय ॥ आया मदन दुकान निज । सत्कार सहू देय ॥ १ ॥ मुनी मादी संतोषी
या । सहू जन पाया सुख ॥ मालक पुण्यवंत पाभीया । धन्य २ कहे मुख ॥ २ ॥ वक्
सीस देइ मदनजी ॥ कम कर सहू संतोष ॥ गुण सुन्दरी ने मिलण । उठीया मंगत पोष
॥ ३ ॥ आया हवेली आपणी । नफर दियो सत्कार ॥ धन वचने संतोष ने । पूछा
सहू समचार ॥ ४ ॥ जिम आंप छोडी गया । तिमही सब सुख मांय ॥ वंदोवस्त पुक्तो
रह्या । इम सुणी सुख पाय ॥ ५ ॥ ॥ दुहा १९ मी ॥ इंडारे आंबा आंवलीरे ॥यह॥

गुण सुंदरीने मिलवा भणी जी । हवेली उपरं आय ॥ नियामित स्थान पहलां तणो जी । तिहां रुप पलटाय ॥ श्रोता गण जोवो मदन करामात ॥ आं ॥ गेहणा वस्त्र उतारीया जी । मेला फट वस्त्र पेहर । धूल खाक तन ने मली जी । सिरका बाल विखेर ॥ श्रो ॥ २ ॥ सागे मूर्ख सरखा बण्या जी । चडीया उपर तेह ॥ हँसीया झीणा मांय थी जी । जगावण भणी नेह ॥ श्रो ॥ ३ ॥ कुँवरी जाण्यो आवीयो जी । मिली मूर्ख परिवार ॥ हर्ष प्रेम उभराइ ने जी । बोलावे धर प्यार ॥ श्रो ॥ ४ ॥ दिवस घणा लगावीयारे । आसींग्यो नहीं मोय ॥ याद आती घडी २ रे । हर्षी आज जोइ तोय ॥ श्रो ॥ ५ ॥ मदन कहे हूं किस्यो करुं जी । लार लाग्यो परिवार ॥ घणा दिना माही गयो जी । तेह थी मिलण आया द्वार ॥ श्रो ॥ ६ ॥ खान पान किया घणा जी । मीठी रोटी दी मुज ॥ उंच्च स्थान बेठावीयो जी । और करी घणी गुज ॥ श्रो ॥ ७ ॥ थोडा दिन रही करी जी ॥ आवण हुवो तैयार ॥ सहू पूछे भेल हुइ जी । किम करे तूं गुजार ॥ श्रो ॥ ८ ॥ मैं कह्यो राज पुत्री भणी जी । छोडी आयो निरधार ॥ याद महारी करता हुसी जी । ज्यास्यूं तिहां एकवार ॥ श्रो ॥ ९ ॥ सहू कहेरे मूर्ख्यारे । तुज थी कोण मोहवाय ॥ क्यों दुःखी होवे जाइनेरे । इम घणो परिचाय ॥ श्रो ॥ १० ॥

मे नहीं मानी एक कीजी । मन लाग्यो इण ठाम ॥ गुप्त भागीने आवीयो जी । नकि-यो किहां मुकाम ॥ श्रो ॥ ११ ॥ आज दर्श देख्या तुम तणां जी । मोठा म्हारा भाग ॥ तुम तो खुशी मांही रह्या जी । इत्ता दिन इण जाग ॥ श्रो ॥ १२ ॥ कुँवरी दासीने कही जी । मंगायो भलो आहार ॥ पहला पीगयो दाल ने जी । फिर भात खायां ने-वार ॥ श्रो ॥ १३ ॥ कूदे आंगण मांय ने जी । चरित्र बहू बताय ॥ हँसावी पेट दुःखावीयो जी । कुँवरी ना कही वेठाय ॥ श्रो ॥ १४ ॥ सुन्दरी निश्वास न्हाख ने जी । कहे तुज रुडो रुप ॥ पण गुणतो किंचित नहींरे । हूं सहू विरहनी भूप ॥ श्रो ॥ १५ ॥ जोड़ मूर्खाइ थायरीरे । खुशी करूं मुज मन ॥ अन्य किस्यो तू काम नोरे । खुटावुं म्हारा दिन ॥ श्रो ॥ १६ ॥ चाकर सहू अचंभो धरे जी । क्यों इम करे शिरदार ॥ सहू गुण थी पूर्ण भर्या जी । क्यो इण आगे होवे गिंवार ॥ श्रो ॥ १७ ॥ जोडी युक्ती एहनी जी । होसी कारण कोय ॥ प्रगटे नहीं तस सामने जी । पूछे न डर थी सोय ॥ श्रो ॥ १८ ॥ गंभीरता सतूयुग तणी जी । वाहिर नहीं करे वात ॥ मालक कही करे चाकरी जी । अश्चर्य मन में पात ॥ श्रो ॥ १९ ॥ कुँवरी ने परचाय ने जी । नीचे आया कुँवार ॥ वस्त्र भुपण तन सजी जी । करे हाटे जा वैपार ॥ श्रो ॥ २० ॥ अवसरे राज सभा

आइ जी । करे योगो काम । राजा प्रजा में विस्तरी जी । मदन महीमा तमाम ॥ श्रो ॥ २१ ॥ इम सुख थी मदन रहे जी । अमोल सतरे ढाल ॥ पंचम खंड पूण हुवो । मदन पुण्य विशाल ॥ श्रोता ॥ २२ ॥ ❀ ॥ खन्ड सारांश हरींगीत छंद ॥ असुर समजा आनंद पुर वसा । कनकावति का पति थया ॥ नीर ले मिल्या खेचरी । मंत्रियो जल ले गुफा में गया ॥ रुपवति भद्रसेण संग ले । जोगी ने अशक्ती किया ॥ पयठाण पुर आ रहे सुख में । अमोल पंचम खन्ड भया ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ❀ ❀

परम पुज्य श्री कहान जी ऋषि जी महाराज की सम्प्रदाय के
बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री अमोलख ऋषि जी रचित
पुण्य प्रकाश मदन चरित्र पंचम खन्डम
समाप्तम् ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ प्रणमू अर्हंत सिद्ध को । आचार्य उवझाय ॥ साधू साधवी सरण थी । षष्ठम खन्ड रचाय ॥ १ ॥ मदन चरी रस कस भरी । करी ने विविध वसाद ॥ हित

चित दे श्रोता सुणो । छांडी सहू विखवाद ॥ २ ॥ चमत्कार जग वल्लभो । जो कोइ जाणे कर ॥ चमत्कार सिद्ध जस हुवे । सत्य ब्रह्मवृत धर ॥ ३ ॥ मदन सत्यसीले करी । पाया निर्मळ बुद्ध ॥ चमत्कार जेजे किया । ते सुण जो चित शुद्ध ॥ ४ ॥ एकदा पुर पायठाण में । राय भवन मझार ॥ नृप राणी ने कुँवरी । एकांत करे विचार ॥ ५ ॥ जब्बर पुण्याइ आपणी । अपना पुर के माय ॥ पुण्यवंत मदन जिसा । वसिया सहू सुख दाय ॥ ६ ॥ महा शंकट सेहन किया । सुख पाइ न लोभाय ॥ रुपवती लाइ दीवी । उपकार किम पुराय ॥ ७ ॥ अधो द्रष्टी कुँवरी भणे । सत्य आप फरमान ॥ अन्य नर वरवाताण । म्हारे छे पच्चखाण ॥ ८ ॥ सुणी ने हर्ष्या राजवी । पूरो करूं बचन ॥ अर्ध राज कंन्या दइ । प्रीती पूरुं मदन ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ढाल १ ली ॥ अलबेलीरे अम्बा मात ॥ यह ॥ पुण्यवंत मदन कुँवार । पग २ सुख लहे ॥ जे लाया पुण्य धन संच । तेहने सहू चहे ॥ आं ॥ सचीव बोलावण भणी भेज्या । लावो जवेरी बुलायरे ॥ लेइ आडंबर मंत्री चाल्या । मदन की पैढी आय ॥ पग ॥ १ ॥ नरमी कहे राजा जी बुलावे । मदन सुणी हर्षायरे ॥ सज्ज हो आया राजिंद पासे । लुली २ नमन कराय ॥ पग ॥ २ ॥ नप आदर दे पास बेठाइ । प्रेमे बात जणायरे ॥ करो तैयारी ब्याव तणी । हूं पार

पाडू मुज वाय ॥ पग ॥ ३ ॥ मदन कहे केह ने परणावो । कहो जोडा को नामरे ॥
राय हँसी कहे इम किम बोलो । तुम दुल्हा वणो काम ॥ पग ॥ ४ ॥ दुःख थी
उवारी तनुजा मिलाइ । कियो मोटो उपकाररे ॥ वा तन मन थी तुम ने चाने । जन्म
का साथी दार ॥ पग ॥ ५ ॥ मदन कहे तेतो वालक छे । आप अछो बुद्धवंत जी ।
जोगा जोग विचारी कीजे । जेहथी कुल सोहंता ॥ पग ॥ ६ ॥ हूं तो छूं वाणिक की
जाती । वली वस्यूं प्रदेश जी । राय कंन्या हम घर किम सोहे । सुग्व किम पावे नरेश
॥ पग ॥ ७ ॥ हम घरे नारी अन्न निप जावे । पाणी पण भरलाय जी । मर्यादा न रहे
न्यात पांत मे । चेन किणी परे पाय ॥ पग ॥ ८ ॥ राय जी सुण ने अश्चर्य पाया ।
प्रत्यक्ष ए गुणवंत जी । लालच नहीं मन राज नारी नो । पर उपकारे क्षपंत ॥ पग ॥
९ ॥ कहे धरा धव बचन वृत ने । तुमहीज दीसो श्रेष्ट जी । तुम कहे सो सो करसी
वाइ । न रखसी पद जेष्ट ॥ पग ॥ १० ॥ में तो वचन दीधो छे पहली । जो मुज
पुली लायरे ॥ आधा राज संग्घाते तेहने । ते देश्यू परणाय ॥ पग ॥ ११ ॥ ए तो बात
होवे नही मिथ्या । वली तुमने ते चायरे तुमसा ॥ सुगुणा मिलणा दुल्लभ । मानो हमारी
वाय ॥ पग ॥ १२ ॥ मदन कहे जो हुकम राजरो । सो मुज करणो भागरे ॥ इच्छा

ाजम अनुसर स्यूं स्वामी । देखी आप प्रेम लाग ॥ पग ॥ १३ ॥ इम सुणी राजा राणी कुँवरी । पाया हर्ष अपारेरे ॥ औत्सव मंडाणा तिहां बहू विध । कीर्ती जिसो विवहार ॥ पग ॥ १४ ॥ लेइ सीख ने बहू आडंबरे । मदनजी आया दुकानरे ॥ चिंते वात गुण सुन्दरी जाणे तो । विगडे सहू मंडाण ॥ पग ॥ १५ ॥ करणो गुप्त रही ए कार्य । नहीं जाणे जिम भेदरे ॥ जुदा मकान में ठाठ जमायो । तिहां सहू पूरे उम्मेद ॥ पग ॥ १६ खान पान सभा मंडप की । तिहां सजाइ सजायरे ॥ वस्त्र भूषण उगटणादी । जग की रीत कराय ॥ पग ॥ १७ ॥ द्रव्य तिहां सर्व संपजे आइ । सज्जन होय अनेकरे ॥ न्याती गोती भाइ बेनडी । भिलिया आइ सेश ॥ पग ॥ १८ ॥ वाजिंत्र थी अम्बर गाजे । गायन किन्नरी लाजेरे ॥ देव पुरीसो पयठाण पुरको । लोक सजायो साज ॥ पग ॥ १९ ॥ मेघ धारा पर द्रव्य वावरे । दोइ घर कमी नहीं कांयरे ॥ आनंद रंगे सहू हाले माले । जोडी जुगती गवाय ॥ पग ॥ २० ॥ छट्टे खन्डे प्रथम ढाले । मंडीयो लग्न मंडाणरे ॥ अमोल कहे पुण्य वंत जीवने । पग २ नव निध्यान ॥ पग ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ से दिन मदन जी चिंतवे । आज लग्न की रात ॥ इण हीज बजारे हुइ । निकलसी बरात ॥ १ ॥ गुण सुन्दरी ते जोवसी । होसी मन नाराज ॥ तिणने पहली पर चाइ ने । पाछे

करु ए काज ॥ २ ॥ आइ हवेली ने विषे । मूर्ख रुप वणाय ॥ हँसता रमता कुँवरी कन । पड्या मदन जीर जाय ॥ ३ ॥ मिथ्या लापे गप्प थी । खुशी कियो तस मन ॥ फिर कहे आज मुज काम छे । आस्यूं काल के दिन ॥ ४ ॥ गुण सुन्दरी कहे मूरख्या । थारे छे किस्यो काज ॥ तब मूर्ख कहे सांभलो । कहूं हूं तजेन लाज ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल २ जी ॥ कर्म तणी कथनी रे किहां जाइने कहूं ॥ यह ॥ इणहीज नगरीरे मांये रहे । प्रभुत धन नामे एक सहू कारजो ॥ धन धान घणो छे तस घरने विषे । राजा परजा सहू देवे सत्कार जो ॥ सुणियो मदन जी चरित्र करे छे केहवा ॥ आं ॥ मदन नामें नंदन छे एक छे तेहने । रुपेतेतो अतिघणो सोभाय जो ॥ बोलणरी कुछ शुद्ध नहीं छे तेहने । तिणथी प्रिति धरी कोइ न बोलाय जो ॥ स ॥ २ ॥ मंत्रवादिये हरण करी राय पुत्री का । तिणथी उपज्यो राजा प्रजाने त्रास जो ॥ बीडो फेर्यो पुत्री लावे जे माहेरी ॥ परणावी दूं तेही कुँवरी तास जो ॥ सु ॥ ३ ॥ सेठ पुत्र ते मदन बीडो झेलीयो । पर देशे फिर सहन कर्यो घणो दुःख जो ॥ सोधी लायो राय पुत्री प्रयास थी । तिणथी पाया राजा परजा सुख जो ॥ ४ ॥ वचनानु सारे परणावे राय पुत्री का । दोनो घरमें मडीयो हर्ष उत्सहाय जो ॥ पण तसु तात ने चिंतामनमें उपजे । मुज तनुज में बोलणरो नहीं लहा-

य जो ॥ सु ॥ ५ ॥ रखे हांसी करावे तिहां हम गेहनी । राय रोपाइ करे कोइ अयोग जो ॥ इम चिंतामें दिन घणा वीतावीया । आज मार्गमें जाता मुजेन छोगजो ॥ सु ॥ ६ ॥ हर्ष्यो मीठे वचने मुज बोलावीया । मीठा २ भोजन मुजने कराय जो । एकांते लइ कहे सुण महारी वातने । कहूं हूं तुजेन जो तूं सोगन खाय जो ॥ सु ॥ ७ ॥ महारी कही हूइ बात किहां करजे मति । में पण सोगन खाया कया प्रमाण जो ॥ ते कहे तूं पण छे मुज पुत्र ने सारीखो । रुप गुण मां लेहथी अधिक विनाण जो ॥ सु ॥ ८ ॥ मुज पुत्र ने राय जी आपे पुत्रिका । आज लभको दिनछे एही भ्रात जो ॥ बोलणरो ढंग मदन में जरा नहीं । तिणरे ठामे तूंही कुछ सोभात जो ॥ सु ॥ ९ ॥ न्हाइ सज हो प्रहरी वस्त्र भूषण ॥ दुल्लहा वणने परणो राज कुंवार जो ॥ तेलाइ ने सोंप तूं महारा पुत्रने । मानूंगा हूं थारो घणो उपकार जो ॥ सु ॥ १० ॥ मांडे वचन मनायो मुजेन सेठजी । पकडी करने लेजाता घर मांय जो ॥ तिण ही वेला याद हुइ मुज तुम तणी । सेठ कह्यो हूं आस्यूं घरने जाय जो ॥ सु ॥ ११ ॥ मालकुणी की आज्ञा लेइ आवस्यूं । सेठजी छोडी दीधो महारो हाथ जो । सोगन देवाडी छेपाछो जावणो । करणी नही छे किण आगे ए बात जो ॥ सु ॥ १२ ॥ दोडी आयो सीधो हूं अब्बी इहां । शिघ्र जावणो आपो शिघ्र

हुकम जो ॥ वींदवणी ने परणी लावू लाडी भणी । आज रातेरा मजा देखांगा हम जो ॥ सु ॥ १३ ॥ इम कही कूदे हंसे तेतो घणो । गुण सुन्दरी ने हांसी आइ अपार जो मूर्ख्यों मारे झूटी गप्पा ए सहू । कोइ तमाशो जोवण जावा विचार जो ॥ सु ॥ १४ ॥ लूण लक्षण तो फूटी कोडी जित्ता नहीं । होवा जावे सेठ सुत थी अधिक जो ॥ लपराया सीख्यों ए इहां रेइ करी ! मुज भरमावा वात बणावे ठीक जो ॥ सु ॥ १५ ॥ कहे मदन से जाथारी इछा जिहां । पण मत जाजे दूरो ग्राम ने छोड जो । प्राते वेगो आजे भोजनने इहां। झूट तणी मत लगावे अंग खोड जो ॥ सु ॥ १६ ॥ सुणी मदन जी खुशी हुवाने कूदता । उतर्या मेडी नीचे तिणही वार जो ॥ चिंते कला तो जमी छे पूरी महारी । अजु लगण नहीं ओलखे एह लगार जो ॥ सु ॥ १७॥ भेष बदल ने आया चल दूकान पे । लाग्या अपणे काम करण ने मांय जो ॥ ढाल दूसरी कही ए छटा खंडकी । कहे अमोलख कपट किम प्रगटाय जो ॥ सु ॥ १८ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ मदन आपो छिपावा । रवि पश्चिम छिपाय ॥ अन्धकारके व्यापता । दी रोशनी झलकाय ॥ १ ॥ दुल्हा वणिया मदनजी । सजीया सहू सिणगार ॥ रयण मुगट झग मग करे । मोड जरी जरतार ॥ २ ॥ की लंगी तूरी शिर । कुंडल चौकडा कान ॥ हार कंठी वहू भूषणा मुखथी

चावे पान ॥ ३ ॥ जर भर जामो केसर्या ॥ उतासण उतमांग ॥ खड्ग कटारी शस्त्र सज । वाणिया ज्यों राजान ॥ ४ ॥ उत्तम मयंगले वेठीया । छत्र चमर ढुलाय ॥ ओपता ते इन्द्र जिसा । रुप गुणे सोभाय ॥ ५ ॥ ❀ ढाल ३ जी ॥ आवे वर लटकं तो ॥ चंदनरिंद महाराज ॥ यह ॥ आवे वर गुणवंतो। मदनजी समान रुप गुण सोहंतो ॥आं॥ वर राय मयंगला रुढ हुवा जी । सोहे इन्द्र समान ॥ वरोवरीरा सोभता जी । जानीया मिल सजी जान ॥ आ ॥ १ ॥ केइ गज गाजी रथे । केइ सुख पाले छे स्वार ॥ केइ पायक सिणगारीया जी । जाणे अमर अवतार ॥ आ ॥ २ ॥ वन्ही रोशनी ते जथी जी । दीसे ज्यों उग्यो भान ॥ नाच रंग वहू विधना । वंदी जन गावे गान ॥ आं ॥ ३ ॥ सह श्रागम नरे परवर्यां जी । चाल्या मध्य वजार ॥ चालो रायवर जोइये । इम उलट धरे नरनार ॥ आं ॥ ४ ॥ क्रांती गुण जो मदन का । सहू जन जनी कहे छे धन्य ॥ रुप सुन्दरी सी भाग्यवंतनी । जग नारी नहीं अन्य ॥ आ ॥ ५ ॥ इम अनुक्र में चालता आया । गुण सुन्द्री मेहल पास । ते पण उभी थी गोख में कांइ । देखण वर ने हुल्लास ॥ आं ॥ ६ ॥ तिहांइ आइ उभा रह्या जी । करता सहू जन खेल ॥ मदन गुण सुन्दरी देखने जी । मुखडो लीनौ फेर ॥ आ ॥ ७ ॥ चूंप धरी जोवे सुंदरी ।

लागै सेंदी सी सूर्त एह ॥ इम हिया पे निश्चय कियो । एतो मूर्ख नहीं संदेह ॥ आ ॥ ८ ॥ अहा रूप दिव्य एहनो । वेठ्यो किस्यो हूंशीयार ॥ अहा मोहनी मूरती ऐहनी । अहा सोभा सिणगार ॥ आं ॥ ९ ॥ साची ए परणें सही जी । इहां राय की धीय । तो किम मूर्ख जाणीये । अती अश्चर्य उपजे जीय ॥ आ ॥ १० ॥ देखो जोवे नहीं मुज भणी जी । वेठो मुख फेराय ॥ आज कपट में जाणीयौ । मुज आगल ढोंग वणाय ॥ आ ॥ ११ ॥ जब आवे मुज साम ने ए । तब वणे कंगाल ॥ गेली वातां वणाय ने । मुज ने उपजावे जंजाल ॥ आ ॥ १२ ॥ आप वण वेठा राजवीरे । मुज न प्रकाश्यो भेद ॥ कहे भाडे परणावीया । हाहा देखो दगो ए खेद ॥ आं ॥ १३ ॥ हूंनो जाण ती मूर्ख्यों ए । एनो गुण भंडार ॥ रुप कला गुण सहू थी अधिका । हूं चूकी निराधार ॥ आ ॥ १४ ॥ रच्यो परपंच इण ठेटथी । मुज लायो इहां भरमाय ॥ वेठाइ छे केदमा । मैं किस्यौ कियो अन्याय ॥ आं ॥ १६ ॥ आज वात करी मुज कने जी ॥ सेठ को पुत्र मदन ॥ राय सूता लायो ढूंढने । तेतो सत्य इणीरो कथन ॥ आं ॥ १७ ॥ कुटम्ब मिलवाको कह गयो । इण लगाया छे मांस । ते सव करामात एहनी छे । आज पड्यो प्रकाश ॥ आं ॥ १८ ॥ मुज पहिले ग्रह तेहने । तेथी मोटी होसी ते नार ॥ हाहा हिवे

किस्यूं करुं । इम करती अनेक विचार ॥ आं ॥ १९ ॥ आइ पडी निज सेजपे । तस निद्रान आवे लगार ॥ मदन चरित्र संभारीने । एतो अश्चर्य करे अपार ॥ आं ॥ २० ॥ प्रभाते तो आवसी । तब करस्यूं पूरो फजीत ॥ क्षिण २ उठने जोवती । निशा पूरी होवे किण रीत ॥ आं ॥ २१ ॥ हिवे वरात मदन तणी जी । पहोंती तोरण जाय ॥ सासू वधाइ मांये लिया । और कीधा सहू उपाय ॥ आं ॥ २२ ॥ आरण कारण सांचवी । दीवी दंपती जोड मिलाय ॥ अमोल ढाल तीजी कही । जोवो पुण्य तणा पसाय ॥ आं ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ कंन्या दान तणे विषे । दीधो आधो राज ॥ हय गय रथ पायक सही । राज के युक्तो साज ॥ १ ॥ संतोष्या सहू लोकने । योग्य करी सत्कार ॥ दंपति आया मेहल में । हीये उभरा ते प्यार ॥ २ ॥ आनंदे निशी आतिक्रमी । प्रगटिया दिनकार ॥ वंदी जन वरुदावली । सुणी ने जाग्या कुँवार ॥ ३ ॥ जाचक ने संतोषीया । कीधो जन व्यवहार ॥ शुची हुइ भोजन करी । करे मदन विचार ॥ ४ ॥ राते जोयो मुज भणी । किस्यो उपज्यो तस मन ॥ हिवे मजा मिलिये जइ । इम करी चिंतन ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ४ थी ॥ औलंभे मत खीजो ॥ यह ॥ औलंभो खरो दीजेरे सजन औ० ॥ आं ॥ महा पुण्यवंत मदन ते वारे । आया हवेली मझारे ॥ मूर्खको नचि

वेस वणायो । पूर्व परे तत्कालेरे साजन ॥ औ ॥ १ ॥ हड २ हंसता उपर चडीया कुँवरी आगल आइ पडीया ॥ हाहा राते मज कैसी आइ । लेख विधीका घडीयारे साजन ॥ औ ॥ २ ॥ समजी चरित्र कुँवरी खिशाणी । भाले लीक चढाइ ॥ वस २ अब रहवा दो तमशा । प्रगट हुइ कपटाइरे ॥ सा॥ औ ॥ ३ ॥ दगा बाज सदा सुख पावे । सरल स्वभावी सिधावे ॥ करतां तमाशा लाज न आवे । नाहक हमंने चीडावेरे ॥ सा ॥ औ ॥ ४ ॥ किस्यो वैर लेवो मुज साथे । ते लेवो एक वारे ॥ कैद मे न्हाखी ने संतापो । ते केवोनी गुन्हा हमारेरे ॥ सा ॥ औ ॥ ५ ॥ अश्चर्य जैसी मुद्रा करीने । कहे मदन नरमांइ ॥ किस्यों गुन्हो हुयो म्हारा थी । तिण थी तुम रीसाइरे ॥ सा ॥ औ ॥ ६ ॥ तुम आज्ञा थी हूं तो गयो थो। हुइ हकीगत कहीने ॥ भाडे परण्यो राजकी पुत्री । आ-यो छू रात रहीनेरे ॥ सा ॥ औ ॥ ७ ॥ महारी भूल हुवे सो फरमावो । व्यर्थ कोप न लावो ॥ प्रदेश माहे आधार तुमारो ॥ कृप कर सीतल थावोरे ॥सा॥औ॥८॥ कुँवरी कहे नाटक करो पूरो । हिवे लबाडी छोडो ॥ किम वणो छो मूर्ख शाणा । मुजने लागे छे खोडो रे ॥सा॥औ॥९॥ रुप सुन्दरी रीजावा कारण । इन्द्रसा वणी सिद्धाया ॥ महा संकट सही तुम तस लाया॥ खुशी करी तसकायारे ॥ सा ॥ औ ॥ १० ॥ में कांइ थांकी चोरी कीधी-

मूर्ख सा बण आवो ॥ लाया उडाइ अबला तांइ । करीने खोटो कीवोरे सा ॥ औ ॥ ११ ॥ जोइ राते कपट पेछाण्यो । हूं भोली समज्यूं कांइ । नहीं निश्चयथी तुम छो मूर्ख । म्हारी पूरी मूर्खाइरे सा ॥ औ ॥ १२ ॥ भेली रहीमें काल एतलो । परख्या नहीं लगारो ॥ काम केइ थां कीना भारी । हूं तो पूरी गिंवारोरे सा ॥ औ ॥ १३ ॥ मूर्ख २ कही बोलाया । ऐंठा भोजन खवाया ॥ कांण मर्याद जरा नहीं राखी । नोकर सम लेखाय ॥ रेसा ॥ औ ॥१४॥ क्षमो २ अपराध सौ म्हारो । सहू गुनो माफ कीजे । मुज ओगणकी सिक्षामे पाइ । अबे जरा दयालीजेरे ॥ सा ॥ औ ॥ १५ ॥ इम कहती रोती पडी पगमें । मदनजी उचकी बेठाइ ॥ इम किम करो तुम शाणी होइ । तुमथी किसी जुदाइरे ॥ सा ॥ औ ॥१६॥ दुःख देवण ने हूं नही लायो । दुःख नहीं दीयो तुम तांइ ॥ हुकम प्रमाणे आज लग रहीयो । और करूं कहो कांइर ॥सा॥ औ ॥ १७ ॥ आपणो आपो हूं किम दाखू । तेहथी ए चरित्र वणायो ॥ आज पीछाण्यो तोही हूं थाणो । करो जे तुम मन चायोरे ॥ सा ॥ औ ॥१८॥ सुंदरी कह जो कृपा आपकी । तो पहली परणो मुज तांइ ॥ रूप सुन्दरी मोटी न होवे । पहली हुं घर आइरे ॥सा ॥ औ ॥ १९ ॥ मदन कहे मत करो उतावल । हुं नही राज कुँवारो ॥ वाणिकने घर

सहू छे सरखी । कुण छोटी मोटी नारीरे ॥सा॥ औ ॥ २० ॥ तिणथी धैर्य धरो मन मांइ । तुम तात सन्मुख जाइ ॥ तुमनें हूं परणं स्यूं निश्चय । इम सुण ते शरमाइरे ॥सा ॥ औ ॥ २१ ॥ मुज पीयर मुजथी न जवाय । जो मृत्यू महारी थाय ॥ ऐसी उदारी बातां सुणने । कालजडो चीरायरे ॥सा॥ औ ॥ २२ ॥ मदन कहे ऐसी युक्ती जमास्युं । जिम जरा नहीं होवे हाँस्युं ॥ अपणा मनोर्थ सहू सिद्ध थासी । पहलां सी कहुं था स्युंरे ॥सा॥ औ ॥ २३ ॥ इत्यादी वयणे समजाइ । खुशी करी तिण तांइ ॥ विनोद बाते आणंद साथे । सुखे रहे तिण ठाइरे ॥सा॥ औ ॥ २४ ॥ अजब कलावंत मदन कुँ वरण।सींसीं उपाय यह करसी॥ढाल चतुर्थी छट्ठा खंडकी । अमोल सुगुण उचरीसीरे ॥सा॥औ॥ २५ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ पचेंद्री सुख भोगवे । सुखे रहे तिण ठाय ॥ जाणी गुणोघ मदन ने । गुण सुंदरी हर्षाय ॥ १ ॥ चटपटी लागी चितमें । कब मिलसी संयोग ॥ किसी करामाते करी । मिलासी माविल जोग ॥ २ ॥ जारम्वार अर्जी करे । हिवे शिघ्र करो काम ॥ जे करवो छे आपने । मन नहीं रहे वे ठाम ॥ ३ ॥ विनय भक्ती नित्य कर । सफल गिणें अवतार ॥ दुःख सहू भूली गइ । देखी गुणी भरतार ॥४ ॥ दास्या मुखथी सांभल्या । मदन जवैरी गुण ॥ बड भागी पति जाणीयों । सकल कला ए निपुण ॥५॥

॥७ ॥ ढाल ५ मी ॥ साधूजीने वंदणा नित प्रत कीजे ॥ यह ॥ मदन कुँवर जावण सज होवे । राजाजी पासे आवेजी ॥ प्रेमे नमी विचार दरशावे । निज देश जावा चिन हावेजी ॥ म ॥ १ ॥ इम सुणी राजाजी फरमावे । जावण चित किम चाइजी ॥ इहां रहो करो इच्छित कामा ॥ कुण हुयो तुमे दुःख दाइ जी ॥ म ॥ २ ॥ श्वामी आप कृपाकी छायां । दुःख नहीं मुजने लगारोजी ॥ स्वजन मिलण अति चित चहावे ॥ ते पण करे छे संभारोजी ॥ म ॥ ३ ॥ स्वजन थी मिल पाछोआंस्युं । थोडाइ कालके मांइजी । अन्य कार्य मुज मार्गे वहूला । दो आज्ञा हित लाइजी ॥ म ॥ ४ ॥ अतिहट जाणी दीनी आज्ञा । मेहलां माही आया जी ॥ रुप सुंदरी से कहे मधुरे ॥ हुं देश जावूं काम सायाजी ॥ म ॥ ५ ॥ नेणा श्रुत हो कहे प्रेमला । या कैसी वात सुणाइजी ॥ किस्यो देश आपरो नहीं जाणूं । या किसी मन आइ जी ॥ म ॥ ६ ॥ मदन कहे हुं छूं प्रदेशी । वेपार काजे आयोजी ॥ माता पितादी सहू छे लारे । इहां सहू सुख पायो जी ॥ म ॥ ७ ॥ मिलवारी मुज उमंग घणेरी । जरूर एकवार जास्युं जी ॥ तुम इहां सुख मांहे रहीये । थोडाही दिन माहे आस्युंजी ॥ म ॥ ८ ॥ अति अग्रह जावणरो जाणी ॥ त्रिया कहे कर जोडीजी । में पण आपरे साथे

आस्युं । दूर नहीं रहुं थोडीजी ॥ ९ ॥ बहु दिवसे मनोर्थ फलीया । हिवे तज्या नहीं जावेजी ॥ किस्यो विश्वास विदेशी केरो । धैर्य मुज नही आवेजी ॥ म ॥ १० ॥ मदन कहे तुम शाणी होइ । इम किमबोलो वाणी जी । प्यारी प्रेमलाने कुण भूले । या वात बालकरी जाणी जी ॥ म ॥ ११ ॥ काज घणा मुज मार्ग मांहीं। संग न राखी जावे जी ॥ सर्व काम से सिघ्र निवृती । आस्यूं देर न थावे जी ॥ म ॥ १२ ॥ इम बहु विध लि-या समजाइ । तब कहे सुखे पधारो जी ॥ भूल जो मत दासीने तांइ । पूर जो मनोर्थ म्हारो जी ॥ म ॥ १३ ॥ राय जी मदन की सेवा काजे । चतुरंग सैन्य संग देवे जी ॥ और सहू वंदो वस्त कीनो । मार्ग सुख थी वेवे जी ॥ म ॥ १४ ॥ दुकान मोटा मुनीम ने भोलाइ । सहू ऋध्दि संभलाइ जी ॥ भद्रसेणने राज काज निज । संभालण दीधाइ जी ॥म॥ ॥१५॥ पुरजन सुणीयों मदन ।जे जावे।वहू जन मन विलखावे।जी। दोडो२मिलवा आवे । सहू ने सुख उपजावे जी ॥ म ॥ १६ ॥ आय हवेली कहे सुंदरी ने । कीजे वेग तैयारी जी । तुम माविलसे लुमने मिलावु । जोवो करामात महारी जी ॥ म ॥ १७ ॥ ते पण झटपट तब सज होइ । घर दासीने भोलायो जी ॥ खावो उडावो रेवो सुख में । आइने पूरस्युं उमावो जी ॥ म ॥ १८ ॥ गुण सुंदरी रथा रूढ होइ । वहू दासीये

परवरीयां जी ॥ मदन मयंगलारुढ चमर ढुलावे ॥ वरुदावली उच्चरीया जी ॥ म १९ ॥ शुभ महुर्त कियो प्रयाणो । पहोंचाइ फिर्या नर राणो जी ॥ और घणा सेठ सज्जन पुरजन । सीम लगण आया जाणो जी ॥ म ॥ २० ॥ मिलिया प्रेम घणेरो जणाइ । पाछा शिघ्र दर्श दीजो जी ॥ फिरीया पाछा देखता जावे । मदन कहे सुखे रहीजो जी ॥ म ॥ २१ ॥ आगल मार्ग सुखे अतिक्रमी । श्री पुर नेडा आया जी ॥ दोय जोजन के अंतरे रहीया । पडाव करी तिण ठाया जी ॥ म ॥ २२ ॥ आगल युक्ती करे अनोखी । ते सुण जो चित लाइ जी । छट्टा खंड की ढाल पंचमी । ऋषि अमोलख गाइ जी ॥ म ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ जेष्ठ सामंत बुलाय ने । कहे मदन सुणो भ्रात ॥ सहू सुखे रह जो इहां । हूं कोइ कामे जात ॥ १ ॥ थोडेही दिने आवस्यूं । सामंत कहे कर जोड ॥ सुखे पधारो साहीबा । सघली चिंता छोड ॥ २ ॥ सुंदरी पूछे नमन कर । किहां पधारो श्वास ॥ मदन कहे तुम कारणे । करवो जुगतो काम ॥ ३ ॥ जोग जुगत जमाइ ने । फिर आस्यूं इण ठाम ॥ लेइ जास्यूं तुम भणी । जिम होवे सुनाम ॥ ४ ॥ ते कहे भले पधारीये । मदन हुवा तैयार । धीम नी में ते आविया । श्री पुर नयर मझार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ६ ट्टी ॥ वसंत ॥ मत ताको हो नार पिराणी ॥ यह ॥ मदनेश्वर उत्तम

प्राणी । करे करामात बुद्धवानी ॥ आं ॥ इच्छित काम करवाने काजे । मदन जी बुद्धि उपानी ॥ यक्ष देवालय देख मनोहर । रंग्यो चंग्यो मन मानीं । विरज्या तेह ठिकानी ॥ म ॥ १ ॥ ब्रह्मचारी को रुप करणने । समग्री सहू मिलानी । न्हाइ धोइ कुंकम चंदन को । तिलक भाल लियो ठानी ॥ कंठ भुज हीये लगानी ॥ म ॥ २ ॥ लांबी चोटी छुट्टी मेली । काली भमर सोभानी ॥ एकांक्षी रुद्राक्ष की माला । कंठ करे पेरा-नी । पितांबर रंग झलकानी ॥ म ॥ ३ ॥ अग्नि कुंड मुख आगे कीनो । ज्वालादी प्रजलानी ॥ सुवर्ण रत्न नो नाणो राख में । राख्यो गुप्त छिपानी ॥ घोटा मोटा पासा नी ॥ म ॥ ४ ॥ मृग छाल वीछाइ चौडी । चिमटो पास रखानी । पद्मासन लगाइ वेठा ॥ वणियां मौनी ध्यानी । पलक स्थिर रह्या धरानी ॥ म ॥ ५ ॥ तेतले दिनकर तेज पसरीयो । पुर जन हुवा सावधानी । केताक यक्षने देवालय । आवे दर्शन लेवानी । देख ब्रह्मचारी कानी ॥ म ॥ ६ ॥ दिव्य रुप संठाण मनोहर । लघुवय ललित सुहानी ॥ पूर्ण जोगी समते स्थिर चित । वेठा निश्चल ध्यानी । दीसे छे ये पूर्ण ज्ञानी ॥ म ॥ ७ ॥ दंडवत सष्टांग करे केइ । जोगीश्वर वडा जानी ॥ दे आसिर्वाद चिरंजीवो हो । लागी मधुरी वानी । मिल्या वहु जन तिहां आनी ॥ म ॥ ८ ॥ केइक दुःखी दरिद्री

आइ । कहे मुज दुःख असमानी ॥ कृपा करीने दुःख गमावो । विनंती तस मानी । न्हाखे अंगारो सानी ॥ म ॥ ९ ॥ सुवर्ण रुपा को फेंके नाणो । जोइ मोर सोनानी ॥ ते लेइने आनंद पावे । कोइके मिले रुपानी । नशीब जिम लेवे मानी ॥ म ॥ १० ॥ अश्चर्य पा कहे यह कगमती । दोलत करे खीरानी ॥ निर्भागीने होवे रुपैया ॥ इम कीर्ति पसरानी ॥ वात वहु लोकां जानी ॥ म ॥ ११ ॥ निमित प्रकाश करे केइ आगे । केइ देवे रोग गमानी ॥ भोजन वस्त्र कछू न लेवे । निर्लोभी गुण खानी ॥ साक्षात देव समानी ॥ म ॥ १२ ॥ राजाजी पण सुणी परसंस्या । आया कोइ ब्रह्मज्ञानी ॥ भूत भविष्य की कहे वारता । हम कर आया पैछानी । वात भूप ने मन मानी ॥ म ॥ १३ ॥ चिंते राय गुण चंद मिल वामन । कह गया तेही ए जानी ॥ ब्रह्मचारी मुज बात वतासी । जणाइ जा रानी । ते पण मन हर्षानी ॥ म ॥ १४ ॥ दोनोइ आया यथा विधी सज । यक्षा लयने स्यानी ॥ तेज पुंज्य जोगी जो हर्षाया । ब्रह्मचारी पहचानी । तजी वाहण तिहां आनी ॥ म ॥ १५ ॥ द्रढासनी द्रढ ध्यान लगायो । प्रभा नहीं जोवानी ॥ प्रणमी भूपत पासे बेठा । कर जोडी नरमानी । जाणे हिवे करे मेहरवानी ॥ म ॥ १६ ॥ क्षिणंल अवसर जो मदन । ध्यान ने कियो ठिकानी ॥ राजा सन्मुख जोइ बोले । हम

तुम मन की जानी । तुह्मारी कंन्या हरानी ॥ म ॥ १७ ॥ तास पत्तो पूछन को आये
पण मुजसे नहीं छानी ॥ इम सुण राजा अश्चर्य पाया । एतो बडा ब्रह्मज्ञानी । महारा
मन की पहचानी ॥ म ॥ १८ ॥ कर जोडी कहे अंतयामी । मोटी करी मेहरवानी ॥
कृपा करी ए संशय मिटावो । देवो पत्तो लगानी ॥ किहां बाइ गुण खानी ॥ म ॥
१९ ॥ ध्राणे हाथ लगाइ सोचे । बोले सीस हलानी ॥ कोइक देवता हरण करीछे ।
राखी छे सुखस्थानी । जन्मांतर प्रेमानी ॥ म ॥ २० ॥ जो मिलवाकी इच्छा होवेतो ।
लेवूं इहां बुलानी । मंत्रशक्ती प्रबल मुजपासे । इछित देवे अकृशानी ॥ सुणी राजा वि-
समय मानी ॥ म ॥ २१ ॥ इत्ती कृपा करोजो श्वामी । तो जाणे दी जिन्दगानी ॥
जन्म भर उपकार न भूलू । करस्यूं सेव चरनानी ॥ बोले जोगी सुण म्हानी ॥ म ॥ २२
॥ आज रात का मंत्र जपस्यू । ते आसी दिन ऊगा नी ॥ तटनी तटपर जाइ बेठो । जो
वो निघा लगानी । जिण दिशथी आवे पानी ॥ म ॥ २३ ॥ काष्ट स्थंभ एक वहतो आ-
सी । लाल ध्वजा फरकानी ॥ तिण माहे से कुँवरी निकलसी । इम कही वणियां ध्यानी
॥ बोलाया बोले न वानी ॥ म ॥ २४ ॥ कर वंदन राय आनंद धरता । आया निज
ठिकानी ॥ परसंस्या अति करे जोगीकी ॥ षट खन्ड ढाल षटस्यानी । ऋषि अमोल

नखानी ॥ म ॥ २५ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ नृप राणी वाणी सुणी । हर्ष्यो मन अपार ॥ धन्य २ ब्रह्मचारी जी । ज्ञानी गुणी सुख कार ॥ १ ॥ मांस घणा वीती गया । प्यारी लघुजा वीजोग ॥ तेहतो अग मिलावसी । ब्रह्मचारी संयोग ॥ २ ॥ हाहा धन्य दिवस यह । इन मन अति उमंगाय ॥ क्षिण जावे वर्ष समी । खान पान विसराय ॥ ३ ॥ अप्रमादी सुभटने । नदी कंठ वेठाय ॥ सावध रही जोता रहो । रक्त ध्वज स्थंभ आय ॥ ४ ॥ नीकाली तत्क्षिण लइ । दीजो वधाइ मुज ॥ दारिद्र दूरा करी । देस्यूं द्रव्य वहू तुज ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ७ मी ॥ श्री अभीनंदन दुःख नीकंदन ॥ यह ॥ हिवे मदनजी निशा पड्याथी । कोइ पास नहीं जोयजी ॥ मंत्र साधन को भिस्स करीने । पुरमें गुप्त चल्या सोम जी ॥ हिवे ॥ १ ॥ रागे मदनको रुप बनाइ । पक्षी खाती घर आयजी ॥ खाती स्वातण ने पगे लागी । पोतानो नाम जणाय जी ॥ हिवे ॥ २ ॥ अचानक मदनने जोइ । दंपती अश्चर्य पायजी ॥ प्रेमें उभराइ गोदे वेठायो ॥ हर्षका आंशू वहायजी ॥ हिवे ॥ ३ ॥ अहो वच्छ अग्नी किहांथी आया । किहां रह्या इत्ता कालजी । थारे वियोगे हम दुःख पाया । वुरी मोहणी ज्ञालजी ॥हिवे॥ ॥ ४ ॥ गरुड तो तुज इहांइ रहीयो । चोकस कीधी अपार जी ॥ पण तुज पत्तो किहां

नहीं पायो । तब बेठा चुप धारजी ॥ हिवे ॥ ५ ॥ भले आया देख मन हुल्लसाया । तु-
ज थी हमने सुखजी ॥ मदन कहे आज धन्य घडी मुज । आप दर्शने गया दुःख जी ॥
हिवे ॥ ६ ॥ राज कंन्या मुज विदेश लेगइ । तिहांनी राय पुत्री जायजी ॥ ते जोइ ला-
यो अर्ध राज पायो । तेहीज दी परणाय जी ॥ हिवे ॥ ७ ॥ इत्यादी सहू वात सुणाइ
। ते अश्चर्य घणां पायजी ॥ यह नर तो सुर सम करामाती ॥ क्या क्या किया उपाय
जी ॥ हिवे ॥ ८ ॥ उरतस संपी खाती पयंपे । भाइ तूं पुण्यवंत जी महारा घरमें
किण तरह रहवे । तूं तो हो सी महंत जी ॥ हिवे ॥ ९ ॥
मदन कहे नाक बाजे उंचो । तो भी कपाल ने नीचे जी ॥ आप उपकार उरण नहीं
होवूं । जो चर्म देवूं पग वीचेजी ॥ हिवे ॥१०॥ इम सुणी दोनो हर्षाया । मदन कहे
कर जोडजी ॥ एक काम छे अति जरूर को । ते पूरो मुज कोड जी ॥ हिवे ॥ ११ ॥
पद्म कहे वेगी फरमावो । करूं मुज शक्ते काम जी ॥ तुज थी अधिक्य अन्य कुण मुज
ने ॥ कहो सो पुरूं हाम जी ॥ हिवे ॥ १२ ॥ मदन कहे एक स्थंभ वणावो ॥ अष्ट पह
ल जस होयजी ॥ माहे पोलो नर सुखे रेवे । वायू गमन सोभे मेहलजी ॥ हिवे ॥१३॥
जल मार्ग नावा जिम जावे । मांय जल न भरायजी ॥ माहें रहीयो

दुःख नहीं पावे ऐसो करो उपायजी ॥ पद्म कहे अव्वी ॥ हिवे ॥ १४ ॥ में वणादूं । देव शक्त प्रभाव जी ॥ मोटो कष्ट लेइने वणावे ॥ तत्क्षिण कृत उपावजी ॥ हिवे ॥ १५ ॥ पट जडनरी विध वताइ । दीनो मदन ने संभलाय जी ॥ इच्छित देखी मदन हर्षाया । मन मानी वस्त पाय जी ॥ हिवे ॥ १६ ॥ खाती खातणरे पाय प्रणम्या । कहे मिलस्यूं पाछो आय जी ॥ हिवणां काम उतावल को मुज । शिघ्र चल आगे जायजी ॥ हिवे ॥ १७ ॥ शैन्य पडावने स्थाने आया । सुन्दरी भणी जगायजी ॥ चमकी उठी देख मदनेश्वर । आदर दे हर्षायजी ॥ हिवे ॥ १८ ॥ इण वेला किहां थी पधार्या । मदन कहे सुणो बात जी ॥ सहू उपाय करी हूं आयो । तुम मावित्र घणा चहातजी ॥ हिवे ॥ १९ ॥ वेठो तुम अव्वी इण खंभ माही । देवू में नदी में वहायजी । तात तुमारा तीरे वेठा । कहाडी लेसी तुम तांय जी ॥ हिवे ॥ २० ॥ पूछे तो कहजो देव हरी मुज । राखी घणी सुख मांय जी ॥ हूं सूती थी जागी इहां आइ । और न जाणूं कांयजी ॥ हिवे ॥ २१ ॥ सहू विद्या भली पर समजाइ । दीधी खंभमें सोवायजी॥ कुँवरी खुश हुइ देख करामात । कुटंब मिलण ने उमायजी ॥ हिवे ॥२२॥ खंभ भीडीयो सन्धी रहित तब । सरीता ने तट आयजी ॥ युक्ते वहाइ दीयो ते तत्क्षिणे । असो

ल ढाल साल गया जी ॥ हिवे ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ कह्या प्रमाणे विधी जमी । मदन मन हर्षाय ॥ निशा माहें गुप्त ते । श्रीपुर देवले आय ॥ १ ॥ पूर्व तणी परे सज्यो । ब्रह्मचारी को रूप ॥ निसीस्या ध्यान आसणे । कोइ न जाणे श्वरूप ॥ २ ॥ ते तले दिनकर प्रगटचो । शौच हुइ सहू लोक ॥ उमाया दर्शन भणी । आइ मिल्या वहू थोक ॥ ३ ॥ तिसही ध्यानस्थ जोयने । धन्य २ सहु केय ॥ ज्ञानी गुणी तपो धनी । यां सम अन्य न हेय ॥ ४ ॥ सहस्र गम सरीता तटे । मिलिया जाइ जन ॥ वाइ आवसी वेवती । ब्रह्मचारीने यतन ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ८ मी ॥ मानव जन्म २ रत्न तेने पायोरे ॥यह॥ बुद्धवंता २ मदन कला धारीरे । करे कौतक भारी । आं ॥ स्थंभ जलाशय वेवत चाल्यो । श्रीपुर ढिग ते हाल्योरे ॥ ते सुभट निहाल्यो । दोडचो भूप पास पाल्यो । कहे स्थंभ आत भाल्यो । सुणी राय मन माल्यो ॥ बुद्ध ॥ १ ॥ पोकार थेयो स्थंभ आयो आयो । सहू जोइ अश्चर्य पायो जी ॥ शब्द नृपने सुणायो । राय अति उमायो । तटनी तट आयो । रक्त ध्वजा देखाये ॥ बुद्ध ॥ २ ॥ शिघ्र कहाडीने बाहिर लाइ । वाइनो शब्द सुणाइ जी ॥ मुज किहां फसाइ । यह छे अहो कांइ । नीकालो मुज भाइ । देव किहां गयाइ ॥ बुद्ध ॥ ३ ॥ सुणी शब्द भूप अश्चर्य आण्या । ऋपि वयण सत्य जाण्याजी ॥

जे आगम वखाण्या । देव हरी सत्यमान्या । युक्ती स्थंभ भूठाण्या । देखे मेहल थी रा
ण्या ॥ बुद्ध ॥ ४ ॥ युक्ती थी ते स्थंभ उघाडी । वाहिर वाइ कहाडी जी ॥ जोवे नेत्र
ते फाडी । में किहां आइ ठाडी । देव गया झाडी । इम आश्चर्य देखाडी ॥ बुद्ध ॥ ५ ॥
भूधव मधुर वयणे बोलाइ । इम किम करे गेली वाइरे ॥ भूली गइ हम तांइ । हम तु-
जने बुलाइ । रही किम घवराइ । भूल देव सधलाइ ॥ बुद्ध ॥ ६ ॥ मात तात निज
पासे जोइ । कुँवरी हर्षित होइजी ॥ झट पांयेलागी । अति मोहणीं जागी । सव दुःख
गया भागी । हूया सहू अनुरागी ॥ बुद्ध ॥ ७ ॥ राय पूछे वाइ थी उमाइ । किहां रही
इत्या दिन जाइजी ॥ तव कन्या चेताइ । देव हरी मुज तांइ । राखी सुख मांइ । थो
सत्यवंत सहाइ ॥ बुद्ध ॥ ८ ॥ हूं सूती थी सुख सेज जाइ । फिर मुज खबर न कांइजी
। इहां किण विध आइ । किम रही स्थंभ मांइ । सुण अश्चर्य पाइ । ब्रह्मचारी गुण गाइ
॥ बुद्ध ॥ ९ ॥ सहू परिवार मिल्यो तिणवारे । वृत्या मंगलाचारेजी ॥ तव नृप प्रकासे
। चालो ब्रह्मचारी पासे । पहलां भेटां हुल्लास । फिर सहू सुखथासे ॥ बुद्ध ॥ १० ॥ति
मही मिली ने सहूजन आया।अति उमंगे भरायाजी॥ राय कुँवरी तांइ । शिघ्र आगे ला-
इ । जोगी पांये लगाइ । उपकार दरसाइ ॥ बुद्ध ॥ ११ ॥ पाय लागंता सुन्दरी जोवे ।

आश्चर्य अति मन होवेजी ॥ थे किस्या ब्रह्मचारी । मुज कंत समारी । भला जोगी ब्र-
म्हचारी । वहवा कळा धारी ॥ बुद्ध ॥ १२ ॥ चूप चाप बेठी ऋषि पासे । क्षिण २ जो-
वे हुल्लासे जी ॥ राय करी प्रणामो । किया घणा गुण ग्रामो । या बाइ आइ श्यामो ।
आप कृपा सुख पाम्यो ॥ बुद्ध ॥ १३ ॥ ब्रह्मचारी उतर नहीं देवे । तब भुधव इम केवे
जी । श्यामी कृपा कीजे । एक संशय हरी जे । जोगी कहे चुप रीजे । कहूं ते सुण लीज
॥ बुद्ध ॥ १४ ॥ तुम पुत्री वर जाणवा तांइ । आइ तुम मन मांइजी ॥ ते हूं दरसावु । जे
ज्ञान थी पावूं । जोगी जोडी जणावूं । तुम चिंत गमावु ॥ बुद्ध ॥ १५ ॥ पयठाण पुर
पत मदन जमाइ । ते जावे निज घर तांइ जी ॥ तीजे दिन इहां आसी । पूर्व बाग में
रहासी । ते इण पति थासी । सुखे जन्म खुटासी ॥ बुद्ध ॥ १६ ॥ सुण राजेश्वर अश्च-
र्य पाया । वहावा भल भेद बताया जी ॥ आप अंतरयामी । मेटी मल्हारी खामी ।
किया गुण सिरलागी । उठ्या जावा निज धामी ॥ बुद्ध ॥ १७ ॥ वंदन कर सहू निज
घर चाल्या । जोगी गुण संभाल्याजी । राय मार्ग मांइ । जोगी का गुण गाइ । जबर
अपणी पुण्याइ । एसा जोगी रहाइ ॥ बुद्ध ॥ १८ ॥ गुण सुन्दरी जो अति हर्षाइ ।
शाबास मदनजी तांइजी । करी केवी कलाइ । वेसी बात जमाइ । दिया सहूंने भरमा-

इ । पाइ मह बुद्ध वंताइ ॥ बुद्ध ॥ १९ ॥ राजा जैसा गया भरमाइ । तो में किसी गिणतीमें आइ जी ॥ वहु मांस भरमांड । तो भी प्रगट कीधाइ । जवर महारी पुण्या-इ । ऐसा पति पयाइ ॥ बुद्ध ॥ २० ॥ निज २ स्थाने सहू सुखेरेइ । आनंदे दिन गुज-रेइजी । वाट जमाइनी जोवे । ढाल आठमी होवे । अमोल पूण्य थी सोहवे । खन्ड छ-ट्ठे मोवे ॥ बुद्ध ॥ २१ ॥ ८ ॥ दुहा ॥ पुरमें पसरी वरता । साक्षात भगवान ॥ ब्रह्म-चारीजी आवीया । त्रिकाल का जान ॥ १ ॥ बुलाइ राय पुलीने । वर्ष दिवसने मांय ॥ वली बताया जमाइने । ते पण रहसी आय ॥ २ ॥ तिणही पुर मं'हा वसे । धन्ना नामे शाहा ॥ रंभा मंज्जरी तस घेर । रहे करी निर्वाह ॥ ३ ॥ तिण पण सुणी ए वारता । मनमें अति उसंगाय ॥ पूछूं ब्रह्म ज्ञानी भणी । देमुज पती वताय ॥ ४ ॥ अवसर ए उत्तम मिल्यो ॥ जोवू महारा भाग॥ इस चिंती अइ तुरत। धन्ना शाहा पग लाग ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ९ मी ॥ अम्बिका के मन्दिर के मांय ॥ यह ॥ पूर्व पुण्य संयोग । अचिं-त्यो जोग जमे ॥ आं ॥ रंभा मंज्जरी आइ धन्ना जी पासे । कर जोडी ने नमे॥ अचिंत्यो ॥ १ ॥ मे सुण्यो तात जी ज्ञानी यहां आया । यक्ष देवालय रमें ॥ अचिं ॥ २ ॥ त्रि-कालकी बात प्रकाशे । मिलावे जे मनगमे ॥ अचिं ॥ ३ ॥ कृपा करी मुज तिहां ले चा-

लो । ज्यों मुज चिंता शमे ॥ अ ॥ ४ ॥ कहे सेठजी में पण सुणीयां । चेतावा चायो तुमे ॥ आ ॥ ५ ॥ जरूर ते तुज पति बतासी । जोइ एक पलकमें ॥ अ ॥ ६ ॥ इम कही बाइ साथे लेइ । आया यक्षालय ठामें ॥ अ ॥ ७ ॥ लुल २ वंद्या सन्मुख बेठा॥ मदन जोइ प्रिय तमें ॥ अ ॥ ८ ॥ अश्चर्य अतिही मन में आया । या इहां किहां आइ खमें ॥ अ ॥ ९ ॥ महंद पुरे में इण ने परणी । खाइ में प्राण जस गमे ॥ अ ॥ १० ॥ ते किम जीवी किम इहां प्रगटी । हर्षित मन में रमे ॥ अ ॥ ११ ॥ नियमित वंक्के होणो जो होवे । इम चिंती ध्यान ने वमे ॥ अ ॥ १२ ॥ प्रणमी रंभा मंज्जरी बोले । योगी संतोषी तिण समे ॥ अ ॥ १३ ॥ धन्नशाहा ने कहे ब्रह्मचारी । इस दुःख जाण्या हमे ॥ अ ॥ १४ ॥ परणी ने त्याज गया पति तुज । ते तो विदेशे भमे ॥ अ ॥ १५ ॥ गुस कर्म जाणी इण ताते । न्हाखी दी खड्इ में ॥ अ ॥ १६ ॥ पति पतो पूछण ने आइ । इम सुण अश्चर्य पमे ॥ अ ॥ १७ ॥ कहे कंन्या श्वामी बात सहू साची । शरमी जोवे भू गमे ॥ अ ॥ १८ ॥ कर जोडी कहे किम ते मिलसी । फरमावो प्रभू हमे ॥अ॥ ॥ १९ ॥ कहे योगी पयठाण पुर पत नी । ते परण्या पुत्री गुण धमे ॥ अ ॥ २० ॥ निकलिया ते कुटम्ब थी मिलवा । परस्पू आइ इहां थमें ॥ अ ॥ २१ ॥ यहांका राय की

पुत्री परणसी । मदन नाम तुज गमे ॥ अ ॥ २२ ॥ तेहने तूं जाइ ने मिल जे । फिकर दो अत्र वमे ॥ अ ॥ २३ ॥ इम कही ने ध्यानज धरीयो । मंजरी दुःख उपसमें ॥ अ ॥ ॥ २४ ॥ अहो २ ज्ञानी सहू सुख दाता । इम कही वारंवार नमें ॥ अ ॥ २५ ॥ मोटो उपकार कियो मुज ऊपर । इम कहता गया निज धमें ॥ अ ॥ २६ ॥ परस्यूं मुज प्राणेश्वर आसी । रंभा रहे आणंदमें ॥ अ ॥ २७ ॥ अण चिंती मिली पहली परणी । मदन मन हर्षमें ॥ अ ॥ २८ ॥ ढाल षट खन्ड नवमे सबूरी । आइ अमोल सहू रमे ॥ अ ॥ २९ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ मदन बुद्ध परपंच थी । जमायो सहु काम ॥ हिवे ते सहू पूरवा । जागी मन में हाम ॥ १ ॥ चमत्कार सहू ए लखी । अश्चर्य पाया अपार ॥ नर नारी मिलिया घणी । भरायो दरबार ॥ २ ॥ ब्रह्मचारी कहे सुखी रहो। हम जावां निज धाम ॥ कहतांही गगने उडचा । सहू रह्या अश्चर्य पाम ॥ ३ ॥ देव वैकुंट सिधाइ या । इम करे सहू पुकार ॥ गुण उचरंत घरे गया । पसरी वात ते वार ॥ ४ ॥ उतर्या मदन जी वन विषे । मूल स्वरूप बणाय ॥ आया निज शैन्या विषे । जो सहू जन हर्षाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १० मी ॥ कौन दिशासे आये पवन सुत ॥ यह ॥ देखो सब सुख पाये हो मदन नृप देखो० ॥ अ ॥ शैन्य सजाइ चले मदनजी । जय नगारे घुराय ॥

एक मुकाम करी रस्तेमें । श्रीपुरके ढिग आये हो ॥ म ॥ १ ॥ पूर्वके बाग मांही उत-
रीया । रखवाल नृप बेठाये ॥ ते दोड आये दीनी बधाइ । पयठाण पुरके केवाये हो
॥ म ॥ २ ॥ ते आये बहू ठाट पाट से । सुणी भूप हर्षाये ॥ करी सजाइ शैन्या स-
घली । पुर रंग ढंग सोभाये हो ॥म॥ ३ ॥ चाल्या बधावा नृपादी बहू । पुर जन अधिक
उमाये ॥ देखां केसा राय जमाइ । जे ब्रह्मचारी वताये हो ॥ म ॥ ४ ॥ सहआगम
आमिल्या बागमें । भूपती मदन देखाये ॥ आनंद चउ नेत्र प्रफुलित । मदन आसण
तज धाये हो ॥ म ॥ ५ ॥ दोनौ मिलिया नर्मीने प्रणम्या । हर्षथी हृदय भराये ॥ कहे
नृप आप दर्शन चहानो । ते आज पुण्यसे देखाये हो ॥ म ॥ ६ ॥ पावण चारि कीजे
हम घर । येहीज हम मन चहाये ॥ मदन कहे आप हुकम में हाजर । मधुर वचन मोह-
वाये हो ॥ म ॥ ७ ॥ राय मदन दोनो एकण गजवर । रुप गुणे सो भाये ॥ वंदी जन
बरुदावली बोले । छत्र धर चमर ढुलाये हो ॥म॥ ८ ॥ मध्य पुरीमे होइ चाले । पूरजन
मोतीये बधाये ॥ छत्र झरोके गोरे गौरेडी । पेखण छत छवाये हो ॥ ९ ॥ अमोघ धा
रा दान देवता । जाचक दुःख गमाये ॥ बहू ठाट थी इम परवरीया । राज भवन में
आये हो ॥ म ॥ १० ॥ सुखासन बेठाइ सहूने । चारों अहार जीमाये ॥ लेइ तंबोल वे-

ठा सभामे । प्रेमकी वांतां वणाये ॥ म ॥ ११ ॥ मांड कही ब्रह्मचारी की कहानी ।
मदन सुणी विस्माये । अहो ऐसा ज्ञानी धन्य विश्वमें । मदन मुखे फरमाये हो ॥ म ॥
१२ ॥ राय कहे हम कंन्या परणो । जे तन मनतुमें चाये । सत्पुरुष के वचनको पालो ।
ब्रह्म वयण निफल न जाय हो ॥ म ॥ १३ ॥ मदन कहे आप राजेश्वर हो । क्या मुज
देख मोवाये ॥ में नहीं उपना राज के कुलमें । वाणिक जात कहाये हो ॥ म ॥ १४ ॥
हम घर तुम पुत्री किम सोभे । किम सुखे काल गमाये ॥ जोगी जोडी देखी देवो ।
ज्यो लोकीक सोभाये हो ॥ म ॥ १५ ॥ सुणी राय अश्चर्य अति पाया । येही निर्लोभी
पाये ॥ नहीं मिले जोतां इसा जगमें । ब्रह्मऋषि दरशाये हो ॥ म ॥ १६ ॥ राय कहे
पयठाण पुर पतने । जिस गुणसे तुम भाये ॥ वैसेही हम मन लोभाया । नहीं जाये
छिटकाये हो ॥ म ॥ १७ ॥ मदन कहे आप अगृह अती तो । ना नहीं मुज थी कह-
वाये ॥ इम सुणी सहू जन सुख पाया । मौत्सव अधिक मंडाये हो ॥ म ॥ १८ ॥ शुभ
लग्न गुण सुन्दरी बाइ । मदन भणी परणाये ॥ डायचो घणो दीयो भुपती । द्रव्य खूब
खरचाये हो ॥ म ॥ १९ ॥ अच्छो महल दियो रहणेंको । वहां सब सुख जमाये ॥ पद्म
खात्तीको लिया बुलाइ । वोभी देख विस्माये हों ॥ म ॥ २० ॥ पंच इन्द्रीके सुख भोगवे

।सुखें २ इहां रहाये ॥ ढाल दशमी खन्ड छट्टे की । ऋषि अमोलिक गये हो ॥ म ॥२१ते
:। ❀ ॥ दुहा ॥ धन्नाशाहा सुणी वारता । परण्या राज कुँवार ॥ रंभा मंजरी ने कह्यो । ॥
सुण हर्षी अप.१ ॥ १ ॥ शरमी कर जोडी भणे । आप ले चालो साथ ॥ कोइ युक्ती यो-
जी करी । मिलावो मुज नाथ ॥ २ ॥ धन्ना कहे चालो हिवे । करस्युं शक्के सहाय ॥ अंगी
कार करसी पती । कही ब्रह्मचारी वाये ॥ ३ ॥ अंजन मंजन कर सज्या । तन सोले श्रृंगार
॥ धन्नाशाहा साथे चाली । शिवका हुइ सवार ॥ ४ ॥ खास मेहल मदन तणो । आया ति
णभें चाल ॥ गुण सुन्दरी वृतांत सुण । अचंभी हुइ खुशाल ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ११ मी ॥ छे
संवर को ॥ श्री वीर जिनेश्वर गौतम ने कहे ॥ यह ॥ मदन बुलायाजी, सिघ्रते आवीया ॥
देखी लियाने जी, अश्चर्य पावीया ॥ चाल ॥ पाइ अश्चर्य पूछे सेठसे । किणरी नार किम
लावीया ॥ कारण कांइ सत्य भाखो । किस्यो तुम मन चावीया ॥ सेठ कहे ए आप पत्नी
। अन्य वैसन आणीये ॥ निर्दोष बाला सरण दीजे । ज्यूंनो प्रेम पेछाणीये ॥ १ ॥ तव ते
रंभाजी, कर जोडी नमी ॥ हूं आप दासी जी, भूलो किम गमी ॥ चाल ॥ गमी किम
भूलो छो श्वामी । गरुढ चड उड आवीया ॥ महेन्द्र पुरके मेहल मांही । गंधर्व लग्न लगावी
या ॥ आप वियोग ने कोप स्वजन । प्राण हरण खाइ पडी । तुम पुण्ये आयुबल जोगे ।

आज हुइ छे धन्य घडी ॥ २ ॥ मदन कहे तंव, वात सांची कही ॥ महेन्द्र पुरमें, गुप्त परण्यो सही ॥ चाल ॥ सही परण्यो राज पुत्री । दूजी निशा तिहां गया ॥ सुणी डुबी खाड में । जोतां पनो में न लह्यो ॥ अथाग जले किम उगरे । ए अश्चर्य अति मन माहेरे ॥ किम हुवे तूं रंभा मंजरी । ओलख वचन तूं थायरे ॥ ३ ॥ कांइ प्रयोगे तूं, जाणी मुज वातडी ॥ आवी इहां तू, मोह फंदे पडी ॥ चाल ॥ मोह फंद मुज न्हाखवा चावे । परस्त्री त्याग मुज भणी ॥ वृत भंग नहीं म्हारो । किम वरुं हूं तुज भणी ॥ तिण थी जा तुज स्थान के । इण छल में हूं आस्यूं नहीं । इम वयण सुण कंथना । रंभा नेण आंसूं वही ॥ ४ ॥ सत्य वचन नाथ, आप छो सतवंता ॥ हूं निश्चय नहीं, छली लेवूं अंता ॥ चाल ॥ लेवूं अंत हूं छली केहनो । इसी विसी नहीं जाणीयें ॥ वेम आप को दूर करवा । कहूं वीती कहाणीये ॥ जिम उगरी इण शेहर आइ । पाइ प्यारा प्राणेश्वर ॥ धर्म तणी सील महीमां । आप आगे उच्चरुं ॥ ५ ॥ आप गयाथी, मैं निंद्रावस भइ ॥ दिनकर चढीयो, न शुद्ध तेहनी लही ॥ चाल ॥ लही शुद्धी धाय माता । लक्षण देखी माहेरा ॥ लाइ बुलाइ मात तात ने । देखायाप्छे सहु खरा ॥ रोस भराणी राणी राणो । ठोकरी जगाइ मुज भणी ॥ नाम ठाम तव पूछीयो । दीवी धमकी अति घणी

॥ ६ ॥ नहीं कहता गुज । मारण आवीया ॥ में कर जोडी ने, तब दर्शावीया ॥ चाल ॥ दरसावीया नहीं मारीयो । हूं पडी खाइ पोतो मरुं ॥ अजोग कर्म ए माहरा । तेहथी आत्म हत्या करुं ॥ इम कही पडता मेहल पाछल । मंत्र नवकार में धाइयो ॥ पडी जलधी पुण्य जोगो । किंचित दुःख न पाइयो ॥ ७ ॥ अधर उडाइजी, सुर मुज लेगयो ॥ धरी अटवी में, जिहा घर तस रह्यो ॥ चाल ॥ रह्यो तेहने घर मुज कहे । वेहन इहां सुख थी रहो ॥ सहू भला थासी थांयरा । न चिंता थी तन दहो ॥ मान वयण रही विपिन में । फलादि भक्षण करी ॥ पण मनुष्य विन नहीं आसींगे । गेहली परे हूं रही फिरी ॥ ८ ॥ एक दिवस त्यां, सथवारो नरतणो ॥ आतो जोइ जी, मन हर्ष्यो घणो ॥ चाल ॥ घणो हर्ष्यो सार्थ पति तब । वनमें मुज ने जोइने ॥ पास आइ पूछे तूं कुण, साच कह संख खोइने ॥ वनदेवी के विद्या धरी । किण इच्छा यहां फिर रही । इम सुणी धैर्य देइ तस । काल्पित बात महारी कही ॥ ९ ॥ हूं अभागण, भूली बाटडी । इहां भटकी रही, या दुःख की घडी ॥ चाल ॥ दुःख घडी थी छोडाइने । तुम मेलो कोइ शुभ स्थानके ॥ जिम मिले मुज सज्जना । सुखी करो दया आनके ॥ इम सुणी ते हर्षाया। कहे महारे साथे चालीये ॥ हम विदेशी फिरां बहूला । देश विदेश निहाली ए

॥ १० ॥ तिण साथे हूं, चाली खुशी हुइ ॥ सारथ पतिमुज, राखे सुख मइ ॥ चाल ॥ राखे मुख में रुपे रींजी । एकांते एकदा कहे ॥ विरह दुःख क्यों रहे व्याकुल । कोमल तन ने क्यों देहे ॥ करुं पत्नी माहेरी । खा माल तन सज सुखे रहो ॥ सुणी कंपी आ-त्मा, किम कीजीये एहथी द्रोहो ॥ ११ ॥ काम अन्ध ए. मानसी नहीं कयो ॥ रखे वलस्कार' भंगे वृत गह्यो ॥ चाल ॥ गृह्यो वृतज भंगे तेहथी । मरण श्रेय छे मुज भणी ॥ इम चिंती निशा में निकली । तत्र गृही तस्कार दुःख अणी ॥ लेगया झाड ने पहाड में । मैं जोइ ने तत्र थर हरी ॥ वचीखाड थी पडी कूवे । किसी कीजे इहां चरी ॥१२॥ जातां पल्लीये, नारी तस लडी ॥ किणने लायोरे, कहाड तूं इण घडी ॥ चाल ॥ इण घडी इण ने काहाड वाहीर । नहीं तो मरुं कूवे पडी ॥ इम सुणी ते ले चल्यो मुज । क्रोधनेवश वड वडी॥आवीयो इण ग्राम में।मुज सिरपे खडे पुलो धरी ॥ मध्य वजारे नर बृंदे । वेंचवा उभी करी ॥ १३ ॥ इणही पुर रहे अनंगी वेसीया ॥ धन घर में घणो रुप विशेषीया ॥ चाल ॥ वैशीयाते आइ वजारे । अवलोकन महारो करी ॥ तत्क्षिण आ ढूंकडी । मोल पूछे हर्ष भरी सहश्र सोनैया कह्या तिण । ढगलो तिहां तव ही कीया प्रेमे वोलाइ मुज भणी । चलो अपणे घर वीया ॥ १४ ॥ मैं पूछा तस, कुल थांरो कहो

॥ वली तुम आचार, धर्म किस्यो वहो ॥ चाल ॥ वहो धर्म प्रकासीयो तब तेकहे उत्तम हभे ॥ अमर सौभाग्य, श्रृंगार नित्य नव । भोग अभीनव नर रमे ॥ मोटा पुण्य छे थायरा, जेहथी हमारे कर चडी ॥ सुणी वयण इम तेहना । हूंतो सोग सागर पडी ॥ १५ ॥ नहीं आवूं हूं, घर कदी थायरे ॥ अति निंदक कर्म, न चहीये माहेरे ॥ चाल ॥ माहारे ए सुख नाहीं चहीये । ए थी तो मरणो भलो ॥ इम कही हूं बेठी रोती । ते कहे वेगी चलो ॥ कर धरी तब खेंची मुजने । मर्या पशु ज्यूं बजार में ॥ जोवो कर्म विटंबणा । में इम पडी दुःख धारमें ॥ १६ ॥ में मन समर्यो जी, तब नवकारने ॥ जो निर्मळ शील, तो करो सारने ॥ चाल ॥ सार करो सासण सूरी। इम चिंतवतां साहायक भया॥ अनेक सांप विच्छूहुइ,मुज चौपखे घेरी रह्या ॥ स्मरण धारी डरी नहीं मे । वैस्या सहू अलगी ॥ जोकर फर्यो माहा रो ॥ तस सांप विच्छू डंक दइ ॥ १७ ॥ व्यापी झणणाट, सहु वैस्यां तने ॥ जीव ले भागी अश्चर्य धरी मने ॥ चाल ॥ अश्चर्य पा लोक जो तमाशो । हांसी करे तिणरी भणी ॥ तेतले ए सेठ आइ । शुद्धी पूछी हमतणी ॥ वाइ चरु घर माहेरे । हूं राखस्यूं बेटी करी ॥ जैन धर्मी श्रांवक छूं हूं । करस्यूं भक्ती सक्के सरी ॥ १८ ॥ मैं सुण हर्षी जी । यां साथे थइ ॥ करु

धर्म पुण्य, में इण घरमें रही ॥ चाल ॥ रही घर में हूं तो सुखथी। सहाज दीयो मुजने घणो ॥ सर्व तरह नो सुख पाइ । एक फीकर रह्यो आपनो॥ तेतले पुण्य जोग इहां । ब्रह्मचारी एक आवीया । अनुभव ज्ञान तणें प्रसादे । आप भणी बतावीया ॥ १९ ॥ पयठाण पुरपत, जमाइ आवसी ॥ इहां राजेश्वर, धूया परणावसी ॥ चाल ॥ परणसी तेही पती थारा । नाम पण बतावीयो ॥ निश्चय आयो मुज मन में । मन घणो हर्षावीयो ॥ मार्ग मेह पर जोवती । आज नीठ दर्शन पावीया ॥ भूली सह्रू दुःख स्मरण आइ । सह्रू मंगल वरतावीया ॥ २० ॥ ए कही साहीबा, बीती मुज सह्रू ॥ झूट न समजोजी, सागने हूं लहूं ॥ चाल ॥ हूं लहूं सोगन निश्चय काजे । पूछो सेठजी तात ने ॥ जाण आपकी लाज राखो । संतोषो मुज गात ने ॥ ढाल एक दश खन्ड छट्टे । अमोल ऋषि इण पर कहे ॥ रंभा मंजरी को चरित्र । सुणी मदन मन गेह गहे ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ मदन कहे अहो भामणी । साची थाणी बात ॥ सुखे रहो इण घर विषे । अर्पो सुख निज गात ॥ १ ॥ चोरीथी परणी तुमें । भोग युक्त नहीं मुज ॥ तुम पिता ने सन्मुखे । पुनः परण स्यूं तुज ॥ २ ॥ प्रेमला कहे ए किम बणे । शरम भर्यो ए काम ॥ मदन कहे फीकर तजो । रीते पूरी सह्रू हाम ॥ ३ ॥

गुण सुन्द्री निज कथन कही । संतोष्यो तस मन ॥ मिली रहे दोनो लिया । सुखथी
काल गमन ॥ ४ ॥ धन्नासहा संतोष ने । पहोचाया तस घेर ॥ आगल कार्य साधवा ।
उपजी मन मे लेहर ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १२ मी ॥ सोहन सिंह सण रेवती ॥ यह ॥
एकदा मदन जी चिंतवे । हूं बेठे इहां मोजरे माय तो ॥ काम धणो अजु माहेरे । न
चिंता रह्यां ते सिद्ध किम थाय तो ॥ ए ॥ १ ॥ इहां थी आगे हिवे चालवो । इम
चिंतवी सुंदरी ने चेताय तो ॥ तुम सुखमें रहजो इहां ॥ हूं आगे जावूं करवा उपाय
तो ॥ ए । २ ॥ सुन्दरी कहे हुं संग चलू ॥ जोवस्युं तुम किसी करो करामात तो ॥
मदन कहे अवसर नहीं । शार्णा हुइने मानो जरा वात तो ॥ ए ॥ ३ ॥ किण रीते का-
म सिद्ध हुवे । पहलांथी ते नहीं कहवाय तो ॥ सर्व इच्छित हुयां माहेरा ॥ देस्यु वीग-
ते सहु संभलाय तों ॥ ए ॥ ४ ॥ इम बहु विध समजाय ने । आवीया ते भूधव ने पास
तो ॥ आदर दियो घणो रायजी ॥ मधुर वचन पूछें कीजीये आस तो ॥ ए ॥ ५ ॥
हुकम प्रमाणें हम करां । आप थी नहीं जरा दूसरी वात तो ॥ मदन कहे कृपा आपकी
। आप प्रशाद सहू हुवे मुज चहात तो ॥ ए ॥ ६ ॥ इहां थी आगे जावा तणी । इच्छा
म्हारी थइ नृपाल तो ॥ अज्ञा दीजीये मुज भणी । मिलवो छे मुज कुटंब ने हाल तो

॥ ए ॥ ७ ॥ राय अश्चर्य धरी कहे । कांइ दुःख थी आयो देश याद तो ॥ ते शिघ्र फ-
रमाइये । निश्चयमें मेटस्या विख वाद तो ॥ ए ॥ ८ ॥ मदन कहे किंचित दुःख नहीं ।
काम घणा मुज करणा जरूर तो ॥ ते करी पाछो आवस्युं । हाजर छूं हूं हुकम हजूर
तो ॥ ए ॥ ९ ॥ राय कहे सुख जिम करो । फोज लेजावो लाग जित्ती साथ तो ॥
पहलां कीने इहां तणी । सज हुइ शैन्य हुकम हुयां नाथ तो ॥ ए ॥ १० ॥ आया खा-
ती खातण कने । प्रणमी कहे हूं जावू छूं देशतो । आप रहजो इहां सुखमें । पाछो आ-
स्यूं काम हुयां असेस तो ॥ ए ॥ ११ ॥ इम सहू ने संतोषने । तैयारी करी मदन तत्-
क्षिण तो ॥ रंभा मंजरी साथे ग्रही । ओर सहु जमायो सरतन तो ॥ ए ॥ १२ ॥ शुभ
मोहोर्ते चालीया । राजा प्रजा घणा पहोंचावा जाय तो ॥ दर्शन वेगा दीजीये । सीम
लगण पहोंचाइ फिर आय तो ॥ ए ॥ १३ ॥ सुख मुकाम करता थका । मदनजी आ-
या महेन्द्र पुर पास तो ॥ साता कारी स्थानके । सहू रह्या कार्य युक्ती विमास तो॥ए॥
॥ १४ ॥ दूत वलिष्ट कला निपुण । सजवाइ कहे जावो भुप पास तो ॥ कहजो जमाइ
आवीया । मदन नरेश वधावो सू आस तो ॥ ए ॥ १५ ॥ दूत अद्भुत साजे सजी । चा-
ल्यो होइ मध्य वजार तो । लोक देखी विस्मित हुया । ए किण का सूभट आयो जुजा-

र तो ॥ ए ॥ १६ ॥ राज सभा नृप सन्मुखे । नमी कहे जय विजय बधाय तो ॥ मदन
नरेश्वर आवीया । जे आपका जवाइ कहवाय तो ॥ ए ॥ १७ ॥ अति अश्चर्य पाया राज
वी । पुत्री विना किम जवाइ होय तो ॥ ए कुण किहांथी आवीया ॥ भूली गया पर-
ण्यां ठिकाणोय तो ॥ए॥ १८ ॥ दूत थी कहे जाइ कहो । इहां नहीं हुयो आप को व्या
व तो ॥ पुत्री नहीं कोइ माहेरे ॥ विना कारण किम जगे उत्साहव तो ॥ ए १९ ॥ भू-
लीने भूप आवीया । याद करी पधारो तिण ठाम तो ॥ दूत आयो मदन कने । वीतक
बात कीवी तमाम तो ॥ ए ॥ २० ॥ हँसीया मदन कह्यो नार ने ॥ ते कहे साचो तास
विचार तो ॥ अमोल ढाल बारमी कही । मदन कहे हिवे करूं उपचार तो ॥ ए ॥ २१ ॥
॥ ❀ ॥ दुहा ॥ पुनर्पि सज कियो दूत ने । कहे खुल्ला स ाचार ॥ तुम भूलो पुत्री रखण ।
हम नहीं भूल्या लगार ॥ १ ॥ रंभा मंज्जरी पुत्री तुम ॥ परण्या रात जेह ॥ मदनतेह-
पेछाणीये । आया लेवा तेह ॥ २ ॥ सुख सम्प थी सोंपीये । तो तुम रहसी माम ॥ नहीं
तो सज हो आइये । रणमां करां संग्राम ॥ २ ॥ सीस चडाइ बचन ते । दूत गयो फिर चा
ल ॥ मदन कह्या तिमही सहू । हाल कह्या भूपाल ॥ ४ ॥ चकित हुइ सारी सभा । सुणि
यां दूत वचन ॥ बात संभारी पाछली । खिन्न थयो तब मन ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १३ मी ॥

श्री जिनवर गणधर मुनीवरने कहेरे ॥ यह ॥ उपकार गुणवंतां भूले नहींरे ॥ आं ॥ फेडे जव अवसर आयरे ॥ दोनोरे भवे सुख ते लहेरे । सुगुणा ने येही सुहायरे ॥ उ ॥ १ ॥ सुणी वचन इम दूत कारे । कोपातुर हुया भूपालरे ॥ बुलावो दुष्ट तलवर भणीरे । निमक हरामी चंडालरे ॥ उ ॥ २ ॥ झट झट लाया कोतवालनेरे । रोसे वचन कहे भूपरे ॥ तूं अपराधी माहेरोरे । भाखी जे साच स्वरुपरे ॥ उ ॥ ३ ॥ जिण मुज पुत्री भृष्ठ करीरे । ते चोर मारण काजरे ॥ में दीयो थो एक दिन तुजेरे । ते होइ आयो राजरे ॥ उ ॥ ४ ॥ थें जीवतो राख्यो तेहनेरे । तेहनो थयो शत्रूरुपरे ॥ मांगे छे कंन्या माहरीरे । तेतो पडी मरी कूपरे ॥ उ ॥ ५ ॥ हिवे किहां थी आपीयोरे । लडाइ किम करायरे ॥ इण संकट मे में पड्योरे । कीजीये कैसो उपायरे ॥ उ ॥ ६ ॥ किम जीवतो छोड्यो तेहनरे । किसी खाइथें लांचरे ॥ पाप प्रगट्या अव थायसारे । कहे जिम होवे तिम साचरे ॥ उ ॥ ७ ॥ इत्यादी कोटवालनेरे । नृप कीया वचन करूररे ॥ साचा मन में जाणीयारे । सो-च पड्यो भरपूररे ॥ उ ॥ ८ ॥ चिंते ऊंडो मन विषेरे । किम कियो इण अन्यायरे ॥ वचन दियो थो मुज भणीरे । पाछोन आस्यूं इण ठायरे ॥ उ ॥ ९ ॥ धर्म ठगाइ इण करीरे । दिसतो थो गुणवंतर ॥ मरणो मुजन दोनो पखेरे । तो पण कहाडू तंतरे ॥ उ ॥

१० ॥ नरमाइ कहे भूपतीरे । गुन्हो कीजीये माफरे ॥ कीधी भूलमें मोटकीरे । परका-
स्यों सहू साफरे ॥ उ ॥ ११ ॥ हूं ले जातो मारवारे । बिच मिलीया मुनीरायरे ॥
उपदेश देइ छुडावीयोरे । श्रावक करी तिण ठायरे ॥ उ ॥ १२ ॥ बचन बदल इहां
आवीयोरे । हूं जावू तिणरे पासरे ॥ समजाइने आवस्यूंरे । मानो इत्ती अरदासरे ॥ उ ॥
१३ ॥ राय कहे होतब हुयोरे । हिवे पण कीजे उपायरे ॥ समाधान होवे तो भलोरे ।
नहीं तो फिर देखी जायरे ॥ उ ॥ १४ ॥ हुकम सीस चडायनेरे । तेंहीज दूत ने साथरे
॥ मदन भेटवा चालीयारे । किम भयो ए नर नाथरे ॥ उ ॥ १५ ॥ दल प्रबल घणो
पेखीयोरे । पूछी सहू दूत थी बातरे ॥ मदन पक्षे घणा राजीयोरे । तलवर अश्चर्य पातरे
॥ उ ॥ १६ ॥ अहा २ पुण्य एक नर तणारे । प्रगटता कीसी वाररे ॥ राहीज एकदा
मुज करेरे ॥ थइ चल्यो निराधाररे ॥ उ ॥ १७ ॥ फोजकी हद के बाहीररे । तलवर
उभो राखरे ॥ रजा लेइ लेइ जावस्यूरे । दूत्त जा मदनने भाखरे ॥ उ ॥ १८ ॥ श्वामी
समाचार केववोरे । आया कोतवाल लाररे ॥ हद्द बाहिर उभा कर्यारे । कहो तो लावूं
इण वाररे ॥ उ ॥ १९ ॥ मदन दोडी सामे आवीयारे । लुली २ लाग्या पायरे । जीवित
दान दाता तुमेरे ॥ दर्श हर्ष उपजायरे ॥ उ ॥ २० ॥ कोटवाल पावां लगेरे । मदन

लागण नहीं देयरे । सुख स्थान जाइ बेठीयारे । अमोल तेरे ढाल केयरे ॥ उ ॥२१॥७॥
॥ दुहा ॥ नरमाइ कोतवाल कहे । आप महा पुण्यवंत ॥ किंचित गुण बहुकर लख्यो । तिण थी हुवा महंत ॥ १ ॥ माठो नहीं लगाडीयो । पण प्रकास्युं गुज ॥ वचन न पालयो रंच तुम ॥ एही अश्चर्य मुज ॥ २ ॥ ना कही इहां आवण तणी । पधारी छो या राज ॥ आपतो दोइ समर्थ छो। म्हारो विचे अकाज ॥ ३ ॥ राणी मांगी आप की । त किण विध अपाय ॥ मर्या न होवे जीवता । कीजे क्रोड उपाय ॥ ४ ॥ सरणे आयो आंपके । लज्जा राखो मोय ॥ आप कहो सोही करूं । अण हुं तो न होय ॥ ५ ॥ ७ ॥
ढाल १४ मी ॥ तूं तो सांची श्राविका ॥ यह ॥ भय नहीं उत्तम मिस थी । कुशल न दुष्ट थी होय हो ॥ साजन ॥ परिक्षा होवे इण तणी । जे वक्त चल जोय हो ॥ साजन ॥ भ ॥ १ ॥ मदन कहे नरमाइने । जो तुमने दुःख होय हो ॥ सा ॥ तो मे जीवित निष्फल गिणुं । निश्चय कीजे सोय हो ॥ सा ॥ २ ॥ कोण समर्थ छे विश्वमे । थारणो करवा अकाज हो ॥ सा ॥ धैर्य धरो मन ने विषे । सत्य थी मिले सुख साज हो ॥ सा ॥ भा ॥ ३ ॥ मंतो वचन पलटयो नहीं । छे मुज पूरो ध्यान हो ॥ सा ॥ विन अवसर आस्युं नहीं ॥ एहथी महारी जबान ॥ सा ॥ भा ॥ ४ ॥ ए अवसर आवा तणो । जा-

णी आयो चलाय हो ॥ सा ॥ अण हूं ती बाल करूं नहीं । निश्चय धरो मन मांय हो ॥ सा ॥ भा ॥ ५ ॥ मरी किम कहो तेहने । जे जग जीता जोय हो ॥ सा ॥ मार्या तो मरे नहीं । जस आयु प्रबल होय हो ॥ सा ॥ भा ॥ ६ ॥ अश्चर्य धर तलवर कहे । इम प्रकाशो केम हो ॥ सा ॥ जे न्हांखी खाइ विषे । तेहने किम रहे खेम हो ॥ सा ॥ भा ॥ ७ ॥ मदन कहे डेरा विषे । जाइ जोवो नेण हो ॥ सा ॥ जो मिले तुमे पुत्री राजरी । तो मान जो सत्य वेण हो ॥ सा ॥ भा ॥ ८ ॥ तलवर अति अश्चर्य धरी । जाइ तम्बू में जोय हो ॥सा॥ ओलखी राज कुँवरी भणी । हिवडे हर्षित होय हो ॥ सा ॥ भा ॥ ९ ॥ प्रणमी कहे बाइ साव जी । खुशी छे आप तन हो ॥ सा ॥ निज कोटवाल ने ओळखी । [illegible]इ ते मन हो ॥सा॥ भा ॥ १० ॥ तलवर कहे धन्य आप ने । छो जी महा बुद्धवंत हो ॥ सा ॥ पोतेही परिक्षा करी । किया कंत पुण्यबंत हो ॥ सा ॥ भा ॥ ११ ॥ एता रीत अनाद की । पती कीजे परिक्षा हो ॥ सा ॥ सवरा मंडप ने विषे । वरे कन्या बुद्ध जो दक्ष हो ॥ सा ॥ भ ॥ १२ ॥ हूं आयो गुण सांभली । दरशण करवा कास हो ॥ सा ॥ देखी प्रताप ए आप को । पाम्यो घणो आराम ॥ सा ॥ भ ॥ १३ ॥ राय जी आगे केवस्युं । ते पण पावसी सुख हो ॥सा॥ आज भलो दिन हम तणो ।

पणास्यो सहू दुःख हो ॥ सा ॥ भ ॥ १४ ॥ कृपा करी संदेह हरो । पडी खाड़रे मांय हो ॥ सा ॥ ते उपसर्गे किम उवर्या । अश्चर्य मुज ने सवाय हो ॥ सा ॥ भ ॥ १५ ॥ रंभा कहे नवकार थी । कीधी सुर मुज सार हो ॥ सा ॥ उठा सूकी वन विषे । चोर ले गया ते वार हो ॥ सा ॥ भ ॥ १६ ॥ तिण वेंची बजार में । तव राखी एक सेठ हो ॥ सा ॥ तिहां मिल्या वालेश्वरुं ॥ आण पूगाइ ठेट हो ॥ सा ॥ भ ॥ १८ ॥ विता सुणी वाइ तणी ॥ नेणा छूटी जल धार हो ॥ सा ॥ धन्य २ सती छे तुज भणी । सत्य थी पडया सहू पार हो ॥ सा ॥ भ ॥ १९ ॥ हिवे जाइ हूं रायजीं कने। देवूं वधाइ एह हो ॥ सा ॥ सब परिवारे वधाववा । सामा आगी तेह हो ॥ सा ॥ भ ॥ २० ॥ नमन करीने चालीया । पुर भणी कोटवाल हो ॥ सा ॥ अमोल पुण्यवंत मदनकी । हुइ चौदमी ढाल हो ॥ सा ॥ भ ॥ २१ ॥ दुहा ॥ तव तिण महेन्द्र पुरी विषे । राज सभा ने मझार ॥ राजा परजा सुस्त हो । चिंता करे अपार ॥ १ ॥ अचिंत्य उपसर्ग आवीयो । कियो तलवर अन्याय ॥ शत्रू छोडयो जीवतो । तिणरा फल प्रगटाय ॥ २ ॥ इत्यादी केइ कल्पना । केइक हृदय उठंत ॥ ततले हर्षित वदनथी । कोटवाल आवंत ॥ ३ ॥ प्रणमी लुली भूपने । नृप कहे अकुलाय ॥ कहे पहला वीतक कथा । किम समाधान थाय

॥ ४ ॥ कर जोगी तलवर कहे । निश्चिंत रहीये चित ॥ नही कोइ शत्रू आपना । मदन छे साचा मित ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १५ मी ॥ जंबू कयो मान लेरे जाया ॥ यह ॥ राजेश्वर सांभलो श्वामी । नर पुण्य अचिंत्य होय ॥ आं ॥ पुरुष्य भाग्य अचिंत छे श्वामी । जोवो प्रत्यक्ष आप ॥ जे नर मारण ने ग्रह्यो । तेहना प्रगट्या पुण्य अमाप ॥ रा ॥ ॥ १ ॥ केइ राज व्रशमे हुवा । अने विद्या शक्त अनेक ॥ दल प्रबल छे तेहने । कुण भागी सके तस टेक ॥ रा ॥ २ ॥ पुण्यवंत क्रोड उपाय से श्वामी । मार्या कधी नहीं जाय ॥ पुण्यवंत ने पुण्यवंत मिले । ते पण जोवो इण ठाय ॥ रा ॥ ३ ॥ में मिल्यो मदन राय ने । ते लाग्या महारे पाय ॥ ऋद्धि ठकुराइ घणी । पण अभीमान नहीं देखाय ॥ रा ॥ ४ ॥ उपकार तो अति मानीयो । जें दीधो जीवित दान ॥ बरोबरी हम बेठीया । और कीयो घणो सन्मान ॥ रा ॥ ५ ॥ अश्चर्य ए छे मोट को । 'बाइ' डाली खाइ मांय ॥ ते तो मदन जी साथ छे । मने निजरे दीनी बताय ॥ रा ॥ ६ ॥ में बात पूछी बाइने । तिण कीधा वीतक हाल ॥ ते तिणही सभा विषे । विस्तारी कह्या सवाल ॥ रा ॥ ७ ॥ सुणी सहू सुख पाविया । करे धन्य २ मुख थी उचार ॥ हाहा कर्म गति कहेवी । और सील बडो सुख कार ॥ रा ॥ ८ ॥ नृप कहे शिघ्र चालीये । बधाइ लावां

पुर मांय ॥ अचिंत्य ए मौको मिल्यो । पूरां सहू मनरा चाव ॥ रा ॥ ९ ॥ मेहलां मे
जाइ भूपती जी । कही राणी ने वात ॥ रंभा मंजरी आइ छे । जवाइजी के साथ
॥ रा ॥ १० ॥ हॅसी समजी राणी कहे । अब क्यों करो गयो दुःख याद ॥ पुण्य विना
किम भोगीये । बाइ जवाइ का अहलाद ॥ रा ॥ ११ ॥ वीतक वात राजा कहीजी ।
तब आइ परतीत ॥ हर्ष पामी अति घणो । जागी पूर्वली प्रीत ॥ रा ॥ १२ ॥ चतुरंगी
शैन्या सजी । राय राणी हुवा तैयार ॥ उमंग सहू संग चली जी । आया ग्राम के वार
॥ रा ॥ १३ ॥ फोज आवंती देखने जी । चमक्या मदन का लोक ॥ चेताया मदन भ-
णी जी । आवे बहूलो थोक ॥ रा ॥ १४ ॥ मदन बाहिर आया देखवा जी । आगे आ
या कोटवाल ॥ प्रणमी कहे लेवा भणी जी । सामे आवे नृपाल ॥ रा ॥ १५ ॥ मदन
जी सामंत संगले जी । पायचर सन्मुख आय ॥ महेंद्र पती पाला हुया जी । देखी हीयों
हुलसाय ॥ रा ॥ १६ ॥ मिलिया वांय पसार ने जी। पूछयो सुख समाधान॥ सुखासन
सहू वेठीया जी । जोइ हर्ष्या पुण्यवान ॥ रा ॥ १७ ॥ राणी वृंद दास्यां तणें जी । आ
इ बाइ पास ॥ मा वेटी प्रेमा तुरी मिली । आश्रू पात हुल्लास ॥ रा ॥ १८ ॥ बाइ तूं
गुणवंत छ । किया मोटा नृप भरतार ॥ क्षमो अपराध सहू हम तणो । हम कियो विगर

विचार ॥ रा ॥ १९ ॥ कुँवरी कहे आप पुण्य थी में । पाइ सघलो सुख ॥ सखी सहे-
ली सहू मिली जी । जोवे बाइ को मुख ॥ रा ॥ २० ॥ शुभ मोहर्त मे सजहुइ जी । आ-
या नगर मझार ॥ सुखे समाधे रहे सहू । पनरे ढाल अमोल उचार ॥ रा ॥ २१ ॥
॥ ❀ ॥ दुहा ॥ एकदा राणी रायजी । करे आपस में विचार ॥ एकही पुत्री आपणो
नहीं कीधो कुछ लाड ॥ १ ॥ तनुजा परणावा तणी । मात पिता मन हूंश ॥ ते अ-
पणी पूगी नहीं ॥ हिवे लीजे रस चूंस ॥ २ ॥ बोलाया मदनेशने । कहो मनकी
बात ॥ मदन कहे इच्छित करो । कमी कछू न देखात ॥ ३ ॥ अति अडंबर कर
तिहां । रंभ मंज्जरी परणाय ॥ अर्ध राज दे डाय जे । राय राणी हर्षाय ॥ ४ ॥
विना कह्या इच्छित हुया । हर्ष्या दंपति दोय ॥ पुण्यवंत प्राणी भणी । पग २
पे सुख होय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १६ मो ॥ ममत मत कीजो राज मनमें ॥ यह ॥
पुण्यवंन सोभा राज पावे । पग २ आणंद प्रगटावे ॥ पुं ॥ आं ॥ एकदा कुटुंब
जागरणा जगत । विचार इसो मन आवे ॥ ठाम २ हूं पडू फंदमे । मन म्हारो मो-
ावे ॥ पुण ॥ १ ॥ मात तात विदेशरे मांइ । पीडा वहुली पावे ॥ खबर मुज ने कु-
छ नहीं तेहनी । मुज विरह तडफावे ॥ पुण्य ॥ २ ॥ में जब पड्यो सरीता मांहीं ।

वंधव मुज अरडावे ॥ में कह्यो थो मिलस्यू काम कर । ते सहू काम मुज थावे ॥पुण्य॥
॥ ३ ॥ हिवे दर्श लूं माविल वंभूका । तव मुज मन तोषावे । रिद्धी सिद्धी महारी देखी
। तस मन पण हर्जावे ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ इम विचारी निशा विहाणी । रंभा भणी चेतावे
॥ तुम इहां रहजो सुख मांही । मुज मन आगे धावे ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ मंज्जरी हर्ष कहे
भले चालो । मुज मन एही चावे । सासू सुसरा कुटम्ब ने मिलस्यु । मदन पुनः दर्शावे
॥ पुण्य ॥ ६ ॥ ठाम ठिकाणो खबर नहीं मुज । अब्बी किहां ते रहावे ॥ छोड आयो
हूं विदेश मांइ । तास पतो जब पावे ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ ठाम ठिकाणो सहू जम्या थी ।
मुज मन ठामे आवे ॥ फिर लेजास्यूं तुमने आइ । इम तस चित स्थिर ठावे ॥ पुण्य ॥
॥ ८ ॥ भूपति ने विचार जणायों । खिन्न हो ते फरमावे ॥ तुम दर्शने हम परसन्न हो-
वां । जावो किम कहवावे ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ मदन कहे मात तात मिलण ने । मुज मन
अति उमावे ॥ पाछो आस्यु आप सेवामें । कृपा रखीयो भावे ॥ पुण्य ॥ १० ॥ नृप कहे
शैन्य लजावो । ज तुम साथे चहावे ॥ मदन कहे जो कृपा आपकी । कांइक फो जलैरा-
वे ॥ पुण्य ॥ ११ ॥ तीनी दल तव किया ए कठा । प्रयाण मदन करावे ॥ राजा सामं-
त प्रजा दी मिली । सीम लगे पहोंचावे ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ दर्शन वेगा दीजो इम

कही । लुल २ सीस नमावें ॥ मदन खुशी होनथ्या घणेरा । सहू फिर ठामे आवे ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ सुखे मुकाम करता मदनजी । वट पुर ढिग आ रहावे । दल प्रबल पसर्यो चउ दिश में । खबर ग्राममें जावे ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ सुण राजा जी मन संकाणा । कुण पर चक्री ए आवे ॥ वैर नहीं अपणो किण साथे । अचिंत किम प्रगटावे ॥पुण्य॥ ॥ १५ ॥ कहे सचीव से जावो वेगा । करो चौकस वे दावें । खबर देवो वेगी मुज आइ । आया ए किण फावे ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ चतुर्घंट रथारूढ होइ । भट प्रभाव सोहावे ॥ आया मदन शैन्य ने पासे । देखी मन धसावे ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ राज वर्गी नर आतो देखी । मदन शैन्य रक्ष धावे ॥ कर जोडी कहे मदन राय थी । कोइक सामंत आवे ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ मदनजी तत्क्षिण बाहिर आया । जेष्ट ना चिन्ह देखावे ॥ ततले तो रथ आयो नेडो । मदन सलामी करावे ॥ पुण्य ॥ १९ ॥ रथ तजी प्रधानजी नमीया । मदनजी कर धरावे ॥ ले आया निज डेरा माही । उच्चासन पधरावे ॥ पुण्य ॥ २० ॥ कियो सत्कार सन्मान घणेरो । सचीव मन हर्षावे ॥ ढाल सोलमी कहो अमोलख । छट्टे खन्ड सोहावे ॥ पुण्ह ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ नम्र होइ सचीव जी । पूछे वेकर जोड ॥ आप किहां का भूपति । इहां आया किण कोड ॥ १ ॥ मदन कहे नरमायनें । हुं नहीं ।

छूं राजन ॥ हूं तो इहां को वाणीयो । आयो मिलण सजन ॥ २ ॥ कुण सज्जन इहां आपका । प्रकाशों तस नाम ॥ मदन कहे वसु पतजी । अजुध्या छें तस गाम ॥ ३ ॥ चोथो पुत्र हूं ते मनो । मदन म्हारो नाम ॥ आयो छू मिलवा भणी । अवर नहीं को काम ॥ ४ ॥ सुणी सचीव अचंभीया । अहो २ नर ना पुण्य ॥ महीदाकाश गती सही । प्रत्यक्ष ए न नुन्य ॥ ५ ॥ ० ॥ ढाल १७ मी ॥ आज आनंद घन जोगीश्वर आया ॥ यह ॥ आज आनंद दिन मदन जी आया । रिद्धी सिद्धी ए सोभायारे लो ॥ सज्जन जन का मन हर्षाया । इष्टार्थ सिद्ध थायारे लो ॥ आज ॥ १ ॥ फिरी सचीव आया सभा मांही । हर्षी वीतक चेताइरे लो ॥ वसुपति शाहा का कुँवर मदनजी । पुर वाहिर आ रह्याइरे लो ॥ आज ॥ २ ॥ राजा चार तस हुकमके मांइ । ऋद्धि अपार देखाइरे लो ॥ मिलवा आया निज परिवार ने । अवर विचार न कांइरे लो ॥ आज ॥ ३ ॥ सुणी राजेश्वर घणा हर्षाया । वसुपत परिवारे बुलायारे लो ॥ कहे थांरा चौथा नंदन आया । मदन जग प्रगटायारे लो ॥ आ ॥ ४ ॥ वात सचिव जी सव जणाइ । ऋद्धि धणी लायाइरे लो ॥ कहे पुर पत अति आणंद पाइ । मिलण मन उमंगाइरे लो ॥ आज ॥ ५ ॥ राजेश्वर तव फोज सजाइ । ग्रामे खवर पसराइरे लो ॥ सुणी सहू अति

अश्चर्य पाइ। वसुपति निज घर आइरे लो ॥ आज ॥ ६ ॥ चाल्या नर वर बाजत भेरी । वसुपत जीने संगलेरीरे लो ॥ और प्रजा संग हुइ घणेरी । आया ग्राम वाहिर फेरीरे लो ॥ आज ॥ ७ ॥ मदन नफर देखी शैन्या आती । हर्ष नाद उभरा तीरे लो ॥ तत्क्षिण जाइ कह्यो मदन ने । श्वामी शैन्य आती जणातीरे लो ॥ आज ॥ ८ ॥ मदनजी जोइ घणा हर्षाया । निज दल सज करायारे लो ।। पयदल पुर पत सन्मुख आया । इते तो प्रधान देखायारेलो ॥ आज ॥ ९ ॥नेणानेण मिल्या अमीरस ठरीया।प्रेमथी हीया भरीयारेलो॥ लुली २ मदन जी मुजरा करीया । राय जी नमी कर धरीयारे लो ॥ आज ॥ १० ॥ सुख समाधीनी पूछी बातां । फिर तात ढिग मदन आतारे लो ॥ प्रेमाश्रुत पगे सीस नमाता । व सुपत हृदह लगातारे लो ॥ आज ॥ ११ ॥ पूत सपूत जोइ सहू सुख पावे । तो माविलनो किस्यो कहवावेरे लो ॥ फिर तीनो भाइने आइ नमीया । द्रढा लिंगन मिलावेरे लो ॥ आज ॥ १२ ॥ मदन सजन सुख तस मन जाणे । के जाणे जिनराया रे लो ॥ विछी विछायत तिहां विराज्या । जोवत हर्षे उमायारे लो ॥ आज ॥ १३ ॥ हर्षानंदकी बटे बधाइ । कुशल वारता कराइरे लो ॥ शुभ महोर्त पुनः सजी सजाइ । चाल्या ग्राम के मांइरे लो ॥ आज ॥ १४ ॥ मदन नरपत एक गज सोभे । तेज प्रतापे

अरी क्षोभेरे लो ॥ और यथायोग वाहना रुढ भया । देखंता मन लोभेरे लो ॥ आज ॥ १५ ॥ मध्य बजारे चली सवारी । जोवे उमट नर नारीरे लो ॥ मदन कुँवर पर जाव वारी । ए कोइ नर अवतारीरे लो ॥ आज ॥ १६ ॥ राय भवन में आइ उतरीया । नृपने नमन करीयारे लो ॥ रजा लेइ वसु पत घर आया । राज रुढीने अनुसरीयारे लो ॥ आज ॥ १७ ॥ माता जी ने पाये लागा । जोताइ सहू दुःख भागारे लो ॥ चीरायु सुखी नग जिम स्थिर रहो । आसीस दीया पुण्य जागारे लो ॥ आज ॥ १८ ॥ और सहू सजान ने सन्मान्या । कीधा सहूना मन मान्यारे लो ॥ पुण्यवंत किण ने नहीं अपमाने । तेहीने जग पेछान्यारे लो ॥ आज ॥ १९ ॥ शैन्य सहू सुख स्थान जमाइ । निहांइ रह्या सुख मांइरे लो ॥ सहू सज्जन को मिल्यो समागम । नित्यानंद वरताइरे लो ॥ आज ॥ २० ॥ पुण्य तणा फल ए दरसाया । षष्टम खन्ड पूर्ण थायारे लो ॥ मदन कुटुंब के सुख में लो भाया । अमोल ढाल सतरे गायारे लो ॥ आज ॥ २१ ॥ ❀ ॥

॥ खन्ड सारांस । हरीगीत छंद ॥ सुखीकर रुप सुंदरी वर । गुण सुन्दरी मन मोहीया ॥ वण ब्रह्मचारी परण्या नारी । विरहना दुःख खोइया ॥ महेन्द्र पुरे पुनः वरा रंभा । वट पुर सज्जन संग सोहीया॥षट खन्ड ए अधीकार कहे अमोल नर पुण्य जोइया ॥६॥

परम पुज्य श्री कहान जी ऋषि जी महाराज के सम्प्रदायके बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री अमोलख ऋषि जी रचित पुण्य प्रकाश मदन चरित्रस्य षष्टम खन्डम् समाप्त ॥ ६ ॥
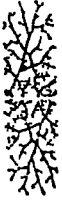
॥ दुहा ॥ प्रणमु पंच प्रमेष्टी को । समरु सरस्वती मांय ॥ ए सातों का सरण ले । सप्तम खन्ड वरणाय ॥ १ ॥ दान सील तप भावना । धर्म का चार प्रकार॥ प्रथमपद दियो दान ने । से सहू गुण दातार ॥ २ ॥ महीमा दान की वरणवार। रचीयो मदन चरित्र ॥ खन्ड २ रस नवनवा । सुणी हुवो मन पवित्र ॥ ३ ॥ मदन विदेश गया पछे । वसुपत पाया सुख । आरम्भ कार्य साधीया । ते सुणो कहूं मुख ॥ ४ ॥ एकदा मदन कुटंब संग । करे भूतक विधी वात ॥ कहो भाइ जी याद छे । वट वर को अवदात ॥ ५ ॥ शुभ वक्के वाणी वदी । आंपां विनोदे चार ॥ तिमही हिवणा देखलो । निपज्या सहू प्रकार ॥ ६ ॥ श्री धर कहे मदन कहो । सहू वीतक तुम हाल ॥ राज कुँवरी चउ किम वरी । किम पाया यह माल ॥ ७ ॥ मदन जी निज वीती कथा । दी विस्तारी

सुणाया ॥ अश्चर्य पाया सहू घणो । धन्य २ कहे मुख वाय ॥ ८ ॥ हा हा प्राक्रम था
यणे सागे इन्द्र समान ॥ तुज दर्शन सुखी हम भया । निकल्यो वहू गुण वान ॥ ९ ॥
❁ ॥ ढाल १ ली ॥ वारी जाउं में गुराकी । जिन समकित रस पायो जी ॥ यह ॥
सुणो मदन जी भाइ । जिम ऋद्धिया पाइ जी ॥ सुणो ॥ आं ॥ नरमी मदन कहे
थाणी प्रकासो । किम तुम सुखीया थयाइजी ॥ सुणो ॥१ ॥ श्री धर कहे सुणो वीतक
महारो । जिम राज पुत्री व्याइ जी ॥ सुणो ॥ २ ॥ जिण वेला तुम सरीता में पडीया
। तव हम गया घवराइ जी ॥ सुणो ॥ ३ ॥ पूकार्या उत्तर नही पाया । तिहूं रह्या विल
खाइ जी ॥ सुणो ॥ ४ ॥ दिन उगता पाणी उतर्यो । तीनौ नीचे उतर्याइ जी ॥ सुणो
॥ ५ ॥ दूर २ लग जोया कांठा । किहां पतान पायाइ जी ॥ सुणो ॥ ३ ॥ आरत कर
ता निज घर आ ा । तात उदास दीठाइ जी ॥ सुणो ॥ ७ ॥ पूछे मदन किम नहीं
देखावे । तुम किम रह्या विलखाइ जी ॥ सुणो ॥ ८ ॥ इम सुण हम वीतक कह्यो रोतां
। मदन वह गयो पाणी मांइ जी ॥ सुणो ॥ ९ ॥ जोयो पण पत्तो नहीं लाग्यो । तेह
थी मन दुःखाइ जी ॥ सुणो ॥ १० ॥ सुणी वज्र पात ज्यूं वचन ए लागा । दोनु
गया मुरछाइ जी ॥ सुणो ॥ ११ ॥ जल विन मीन तणीपर तडफे । प्राण आ कंठे रह्या

इ जी ॥ सुणो ॥ १२ ॥ तव हम कह्यो तात जी सुणो आगे । मदन ने हम दीठाइ जी ॥ सुणो ॥ १३ ॥ इम सुणी जरा सावध हुया । कहे दे मदन बताइ जी ॥ सुणो ॥ १४ ॥ हम कह्यो ते पड्यो जब जल में । तब विद्युत चमकाइ जी ॥ सुणो ॥ १५ ॥ काष्टारुढ दीठो हम वहतो । तेह थी जीवतो भाइजी ॥ सुणो ॥१६॥ निश्चय निकल शी कोइक ठामें । मिलसी पाछो आइ जी ॥ सुणो ॥ १७ ॥ इम सुणी मन जरा स्थिर थइयो । विश्वासे साता पाइजी ॥ सुणो ॥ १८ ॥ ततले एक नैमीतिक आया । हमने दुःखो दीठाइ जी ॥ सुणो ॥ १९ ॥ दया लाइ कहे दुःख सहू छोडो । तुम सहू पुण्य-वंताइ जी ॥ सुणो ॥ २० ॥ पांच वर्ष में मदन आ मिलसी । ऋद्धि घणी संग लाइ जी ॥ सुणो ॥ २१ ॥ आजीवका काष्ट थी नित्य करता । याद आता रणमांइ जी ॥सुणो॥ ॥ २२ ॥ वार तेंवारे शुभ संयोगे । अटकतो ग्रास गले जाइजी ॥ सुणो ॥ २३ ॥ इम केइ दिन कष्टे विताता । केइदा विचार थयाइजी ॥ सुणो ॥ २४ ॥ कोइ उद्योग ऐसो कर लंग । प्रगटे जिम पुण्याइजी ॥ सुणो ॥ २५ ॥ बुद्धी बल चलतो अजमायो । पण कांइ न सिजाइजी ॥ सुणो ॥ २६ ॥ जब पाप दिशा संपवा आइ । तब जे जोग वण्या-इ जी ॥ सुणो ॥ २७ ॥ ते सुणी यो कहे ऋषि अमोलक । सप्त खंड ढाल पहली थाइ

जी ॥ सु ॥ २८ ॥ ❀ ॥दुहा ॥ वसंत ऋतु ते अवसरे । पसरी भूमंड मांय ॥ तरुवर नव पल्लव थया । लीला लेहर सोभाय ॥ १ ॥ वसंत क्रिडा ने कारणे । नृपराणी परिवार ॥ पुरजन परजन वहू मिली । वनी कामे रहे आय ॥ २ ॥ अभीनव भूषण चीवरा । नवरं-ग उडे गुलाल ॥ मस्त तान वाजिंतरे । गाता राग धमाल ॥ ३ ॥ तिण अवसर राय पु-त्रीका । पुष्पवती गुणवान ॥ सखी सहेली संग ले । खेलती एकांत स्थान ॥ ४ ॥ आ-नंद मंगल वरतता । चउ दिश जय २ कार ॥ तव आचिंत्य होतव्य वण्यो । सुणीयो मदन कुँवार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २ री ॥ आदही आद जिनेश्वरोजी ॥ यह ॥ भव्यतव्य ता भाइ सांभलो जी । तिण अवसर ने मझार ॥ अंजन गिरीना सरीखोजी । करतो अति गुंज्जार ॥ भ ॥ १ ॥ कालो मतवालो मद भर्यो जी । भरतो मोटी फाल । सूंडा दंड उ छालतो जी । दीसे ज्यों आयो काल ॥ भ ॥ २ ॥ गाजे भाद्रव मेहलो जी । तीक्षण दं-तासूल ॥ सात अंग धरणी लगे जी । जोया शुद्ध जावे भूल ॥ भ ॥ ३ ॥ वायु वेगे दोड तो जी । आयो राज कंन्या पास ॥ देख्यो नही कोइ तिण भणी जी । सहू लागी क्रिडा अभ्यास ॥ भ ॥ ४ ॥ झूलती राय धूया भणी जी । अंधर लीवी उठाय ॥ घव-राइ पाडी चीसली जी । तेतले गज भग जाय ॥ भ ॥ ५ ॥ सहेल्यां हुइ घावरी जी ।

भागी ले निज जीव ॥ साहास कुण करे वक्तपे जी । जब आवे अचिंती रीव ॥ भ ॥ ६ ॥
कुंजर पुष्पवती ग्रही जी । तुर्त गयो निकल ॥ विजली ना झलकापरे जी । लागे नहीं
एक पल ॥ भ ॥ ७ ॥ दंती गयो जब वेगलो जी । तब सहेल्या करे पुकार ॥ दोडो २
राजेश्वरु जी । दोडो सहू परिवार ॥ भ ॥ ८ ॥ दोडो जौधा सूभटा जी । कांइ अनर्थ
मोटा थाय ॥ बाइ साव ने ग्रही करी जी । ले मयंगल न्हाटो जाय ॥ भ ॥ ९ ॥ छोडा
वे कुँवरी भणी जी । करो सूर वीर सहाय ॥ हा हा कार इम सांभली जी । लोक घणा
विस्माय ॥ भ ॥ १० ॥ राजा राणी दोडीया जी । कांइ दोड्या मंत्री सांमत ॥ बहू
जन दोडी आवीया जी । सहेल्या ने पूछंत ॥ भ ॥११॥ रुदन करंतीते भणे जी । कांइ
स्यूं पूछो मुज तांय ॥ हाथी ले भग्यो बाइ ने जी । लावो छुडाइ जाय ॥ भ ॥ १२ ॥
सुणी घबराया सहू जणा जी । दोड्या सुभट तत्काल ॥ किण दिशे गयो लेइने जी ।
चौकस करे भूपाल ॥ भ ॥ १३ ॥ शस्त्र ग्रही घणा सूरमा जी । कांइ भाग्या नोग ने
लार ॥ हाथें नहीं ते आवीयो जी । गयो गीरी गहन मझार ॥ भ ॥ १४ ॥ सहू फिर
पाछा आवीया जी । कहे नहीं आवे ते हाथ ॥ पतो न लागे किहां गयो जी । किसो
करा हो नाथ ॥ भ ॥१५॥ सुस्त हुइ सहू बेठीया जी । राय राणी का झुरे नेण ॥ अहो

लाडली तूं किहां गइ जी । कांइ झूरे सहू सेण ॥भ॥१६॥ हा दैव यह किस्यो कियो जी । लूट्या कालजा मोय ॥ हा हा हिवे किस्यो करूं जी । इम राणी रही रोय ॥ भ ॥ १७ ॥ उर कुटे शिर भूहणे जी । पलक २ मुर छाय ॥ रंगने मांही भंग हुयो जी । कांइ सहू रह्या खिलखाय ॥ भ ॥ १८ ॥ ख्याल तमाशा बंध हुया जी । कांइ जे सुणे ते करे सोग ॥ सहू जन गया पुर विषे जी । मोह ए मोटो रोग ॥ भ ॥ १९ ॥ राय समजाइ राणी भणी जी । कांइ आर्त कियां किस्यो होय ॥ जीवती हुइ तो मंगावस्युं जी । उद्यमथी तस जोय ॥ भ ॥ २० ॥ इत्यादी वचने करी जी । कांइ राणी समजाइ राय ॥ अमोल ढाल दूजी कही जी । श्री धर मदन जणाय ॥ भ ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ राय मंत्री दोनो मिली । उंडो करे विचार ॥ किण उपाय थकी लगे । बाइ तणा समाचार ॥ १ ॥ ले गया ते जीवती । नहीं भक्षते तन । आगे कहीं न्हाखी दइ । तो ते भटकसी वन ॥ २ ॥ प्रधान कहे पीटाइये । डंडेरो पुर मांय । जो कोइ लासी बाइने । देशी तस परणाया ॥ ३ ॥ काम नहीं कायर तणो । लासी को पुण्यवंत ॥ जीवती होसी तो तसे । करदेशा तस कंत ॥ ४ ॥ लालच वस जासी घणा । लासी पतो लगाय ॥ कला सुणी सचीव की । गइ राय मन भाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ३ जी ॥ वीर सुणो

मोरी वीन ती ॥ यह ॥ सुणी वयण राय हर्षीया । तताक्षिण हो कहे भट ने बुलाय ॥ पडह बजावो पुर विषे । जे जाइ हो राय कुँवरी लाय ॥ सु ॥ १ ॥ तेहने तेह परणाव सी । वली देशी होतस द्रव्य अपार॥ भट चट बचन चडायने । पडह पीटयो हो ते पुर ने मझार ॥ सु ॥ २ ॥ सुणी ने केइ चालीया । जोवा ने हो ते राज कुँवार ॥ चउदिश माहे फिर्या घणा । नही मिल्या थी हो आइ रह्या निज द्वार ॥ सु ॥ ३ ॥ तब स्वपन माय मुज भणी । कुलदेवी हो कहे बीडो तूं साय ॥ राज पुत्री ने लेववा । तूं तो जाजे हो कजली वन माय ॥ सु ॥ ४ ॥ ते तो मिलसी तुज भणी । सुखी होसो हो प्रगटया तुम पुण्य ॥ जाग्यो जणायो में ताताने । अज्ञादी हो करो काम निपुण ॥ सु ॥ ५ ॥ राजा जी पासे जइ ने । में कह्यो हो लावूं राज कुँवार ॥ ते कहे शिघ्र पधारीये । काम हूया हो करस्युं कह्या अनुसार ॥ सु ॥ नाम ठाम नोंधी लीया । हूं चाल्यो हो हुइ मन हुल्लास ॥ कजली वन ने पूछतो । हूं पहूं तो गजारण्या पास ॥ सु ॥ ७ ॥ ग्राम एक आयो तिहां । हूं रहीयो हो भोजन ने काम ॥ पूछ्यो कोइक भीलथी । कजली वन हो कहो छे किण ठाम ॥ सु ॥ ८ ॥ ते कहे इहां थी उतरे । एक जो जन हो रेवानदी आय ॥ तेहना पल्ला कांठा पे । जे झाडी हो कजली वन ते कहाय ॥ सु ॥ ९ ॥ किम

पूछ्यो तस नाम ने । मे कह्यो हो मुज जावो छे त्यांय ॥ ते कहे तुम भोला हुया । मरण मुख हो किम करी जनाय ॥ सु ॥ १० ॥ जे नर नदी लंघीया । ते न आया हो फिर ने पाछा घेर ॥ फिर पाछा जावो घरे । जो चावो हो तनने खेर ॥ सु ॥ ११ ॥ फिर में पूछ्यो तेहने । गज वेचे हो वेपारी लाय ॥ इणही वन थी में सुण्या ॥ विन गया हो किम हाथे आय ॥ सु ॥ १२ ॥ ते कहे उपाय सांभलो । जिस पकडा हो हम ए गजराज ॥ जावां नही पेले कंठे । एले तीरे हो रही करा काज ॥ सु ॥ १३ ॥ फील सरीर थी अधिक त्या । खोदा हो एक उंडीखाड ॥ तेहने उपर पाथरा । फनलीचीमट हो वंश तणाज फाड ॥ सु ॥ १४ ॥ चारो हरीयो तिण परे । लगाइ हो करां हथणी तैयार ॥ कागद तणी सुहामणी । उभी करां हो खाड पे ने वार ॥ सु ॥ १५ ॥ टोली आवे गज तणी । तिण नद पे हो जल पीवा काज ॥ केली करे बहू विध तिहां । एली तीरे हो देखे हम साज ॥ सु ॥ १६ ॥ कोइक गज मद मे छक्यो । ते जाणे हो चेर कुंजरी एह ॥ पडे आइ तिण उपरे । ते खाड में हो पेठे ततखेव सु ॥ १७ ॥ एक पक्ष पड्यो रहे । क्षुधा व्यापे अति दुर्बल थाय ॥ तब हम नेडा जाइने । थोडो २ हो तस चारो चराय ॥ सु ॥ १८ ॥ वस करां जोग उपाय थी । ते

हमसे हो जव सेंदो थाय ॥ तव आगल भूं खोदने । हम कहाडा हो ते हम लारे आय ॥ सु ॥ १९ ॥ सांकल दंड थी बांध ने । लावां हो इण ग्रामरे मांय ॥ सेंदो करां सहू नर थकी । इक्षु दिक हो मधु अहार कराय ॥ सु ॥ २० ॥ जोगो होय ते वेंचवा । जाइ वेंचा हो ले मूं माग्या दाम ॥ यह आजीविका हम तणी । ते करवा हो किम हुइ तुंम हाम ॥ सु ॥ २१ ॥ हम चेतावां हित भणी । तिहां जावा हो मत करो उमंग ॥ इछा जो गज वैपारकी । तो रहीजे हो तुम म्हारे जी संग ॥ सु ॥ २२ ॥ इम समजाइ बहु विधे । ते गयो हो कोइ काम के काज ॥ ढाल तीजी खन्ड सात की । कहे अमोलिक हो जोवो पुण्य का साज ॥ सु ॥ २३ ॥ ॥ दुहा ॥ सुणी वचन ते भीलका । चमक्यो चित मझार ॥ संकल्प विकल्प मन हुवो । जमे न एक विचार ॥ १ ॥ निश्चय कीनो मन थकी । मरणो छे एक वार ॥ धारी काज जे नीकल्या । जीवता पाडणो पार ॥ २ ॥ खाली तो हिवे मुज थकी । म्हारे घर न जवाय ॥ हिम्मते मदत दैव की । साची ए जन वाय ॥ ३ ॥ होणहार जे होवसी । करस्यूं बुद्धी उपाय ॥ इम चिंती शिघ्र चालीयो । सहास धर वन मांय ॥ ४ ॥ आयो रेवा नद तटे । पेख्यो द्रष्ट लगाय ॥ मोटा प्रवत सरीखा । मयंगल टोला देखाय ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ४ थी ॥ मन डो मो

छोजी महावीर श्वामी म्हाने दर्शन दइदो जी ।।यह।। वीतक सुणजोजी मदनेश्वर महारो हो तब जो जो जी ॥ वीतक ॥ आं ॥ रेवातट एक वट वृक्ष वर।पहले कीनारे पेखीजी ॥ तीरी नीर आइ चडीयो तिणपे । गहरो देखी जी ॥ वीत ॥ १ ॥ गज वृंद देख विचार करूं मन । कीजे किस्यो उपायो जी ॥ जो देखे कोइ फील मुजे तो । काल आयो जी ॥ वीत ॥ २ ॥ कार्य म्हारो इणही वन में । फीरीया थी सिद्ध न थावे जी ॥ जीवती मूइ राजरी कंन्या । द्रष्टी आवे जी ॥ वीत ॥ ३ ॥ वृक्ष घणा छे इण वन मांही । गया थी नही ओलखाइ जी ॥ झड रुप हूं वणी चलूं तो । कारज थाइजी ॥ वीत ॥ ४ ॥ इम चिंती ग्रही वड की डाली । मोटी छोटी तोडी जी ॥ सर्व सरीरने बांधी लीधी । पतीया चोडी जी ॥ वीत ॥ ५ ॥ झामर झूमर होइने उतर्यो । धीरे२ चाल्यो जी ॥ चकोर निजरे चउ दिश जोतो । गज आवे हाल्यो जी ॥ वीत ॥ ६ । जो देखूं कोइ दंती आतो । तो तिहांहीं स्थिर रेवुंजी ॥ आगे गया थी आगे चालू । डर दिल लेवुं जी ॥ वीत ॥ ७ ॥ इण पर वहूली भूम उल्लंधतो । एक गीरी तले आयोजी ॥ आगे अंजन गिरीने सरीखो । फील देखायो जी ॥ वीत ॥ ८ ॥ सात अंग तस भूमी ए लागा । घूमंतो वन फिरतो जी ॥ अन्य गज पासे ते नहीं जावे । झाडीमें

सिरतो जी ॥ बीत ॥ ९ ॥ तेहने स्कन्ध वर निहली । राय कुँवरीते वारो जी । विनोद भावे क्रिडा करता । दुःख न लगारो जी ॥ बीत ॥ १० ॥ मधूर सरस वन फल गज तोडी । सुंड थी तेहने आपे जी ॥ शीतल नीर निरझरणारो पाव । पृष्ट स्थापे जी ॥वी त ॥ ११ ॥ कदीक सूंडमे लेइ झुलावे । कदीक दंते ठावे जी ॥ इम बहु विध क्रिडा करावे । हँसे हँसावे जी ॥ वीत ॥ १२ ॥ मै देखी घणो अश्चर्य पायो । ए जुड्यो केम सम्बन्धो जी ॥ गजकी प्रीत घणी कुँवरी पर । ए मोहणी धन्दो जी ॥ वीत ॥ १३ ॥ राज कंन्या तो इहां छे सुखमें । किम आवे मुज लारे जी ॥ मुजने जाणी गजने चेतावे तो । ए मुज मारे जी ॥ बीत ॥ १४ ॥ जिण वस्तु काजे मैं आयो । ते तो मुजने पाइजी ॥ हिव आगे करूं युक्ती कैसी । ज्यूं साथे आइजी ॥ बीत ॥ १५ ॥ रीतो तो नही जायो जावे । जे किया इत्ता उपाये जी ॥ इम हूं साथे फिरूं किहां लग ॥ जीव डर पावे जी ॥ बीत ॥ १६ ॥ पुरी मंडल रवी आयो जाणी । बड नीचे गये आइजी ॥ घांस पान की सेजे सुतो । कंन्या भूठाइजी ॥ बीत ॥ १७ ॥ राज पुत्री खेलण ने लागी । कुंजरे निंद्रा आइजी ॥ बात करण को अवसर जाणी । कंकरी वाइजी ॥ बीत ॥ ॥ १८ ॥ कंन्या चमकी जोवे चउदिश । कोइ न द्रष्टी आवे जी ॥ हूं तो उभो झाड ने

रूप । किम ओलखावे जी ॥ वीत ॥ १९ ॥ विचार करती पुष्पवतीने । आँखे आंसू [illegible]
या जी । ते देखी मुज मनडों हर्ष्यो । भेद ज पाया जी ॥ वीत ॥ २० ॥ उपर [illegible]
खुशी रहे छे । हाथी थी मन डरती जी ॥ पण मनडो तो लाग्यो कुटुम्ब में । [illegible]
भरती जी ॥ वीत ॥ २१ ॥ हिवे डणरो हूं दुःख गमावुं । इम मन मांही विचारी जी ॥
वृक्ष रुप तजी ने चाडियो । वड पे ते वारी जी ॥ वीत ॥ २२ ॥ शाख पत्र नी आड छि-
पायो । पत्र लिखीने न्हाखी जी ॥ लेखित पत्र देखी कुँवरी हुइ । हाकी वाकी जी
॥ वीत ॥ २३ ॥ अश्चर्य पाइ लियो उठाइ । किहांथी उड ए आइजी ॥ नर विना कुण
चित्रे अक्षर । उप्योग लगाइजी ॥ वीत ॥ २४ ॥ वांचण लागी हुइ अति आतुर । ढा-
ल चथुर्थी मांहीजी ॥ सप्त खन्डनी आगे वीतक । अमोल सुणाइजी ॥ वीतक ॥ २५ ॥
॥ ❁ ॥ दुहा ॥ हूं अति कष्ट सही करी । तुम ने लेवण काम ॥ आयो नृप नो मोकल्यो
। दर्शने लियो विश्राम ॥ १ ॥ जो मन हे चलव तणो तो । होवो हूंशीयार ॥ नहीं तो
उत्तर आपीये । जाउं म्हारे द्वार ॥ २ ॥ हर्ष आश्रू कुँवरी हुइ । तरु वर ऊपर जोय ॥
चौ निजर हूयां थका । आनंद अन हद होय ॥ ३ ॥ शानी करी मुजने तदा । आवो
अधो भय छोड ॥ गज हसणा जागे नहीं । पूरो महारी कोड ॥ ४ ॥ नीचो उतर्यो तरु-

क्षिणे । ते आइ मुज पास ॥ दोनो मिल सुखीया भया । जाणे फली सहू आस ॥ ५ ॥
॥ ❀ ॥ ढाल ५ मी ॥ कुँवर अभे बुद्धनो भंडारीरे ॥ यह ॥ मदन जी सुणीयो सारी म्हारीरे ॥ मद० ॥ जिण विध परण्यो राय पुत्री में । कहूं वींती सारी ॥ आं ॥ एकान्त अवसर पाइ तिण समें । बोले कुँवारी ॥ भले पधार्यो कार्य सार्यो । कुटम्ब दो भिलारी ॥ म ॥ १ ॥ में उपाय बतायो तस लो । मृत्यू रुप धारी ॥ छोर्डा जासी दंती तुज । में लेस्यूं उठारी ॥ म ॥ २ ॥ इम सुण कुँवरी पडी मृत्यूक जिम । गज जब जाग्यारी ॥ जगावे कुँवरी नहीं जागे । तब गयो घबरारी ॥ म ॥ ३ ॥ मरी जाणिने रोयो घणे रो । गयो वन मझारी ॥ में निचिंत हो कुँवरी पासे । आयो ते वारी ॥ म ॥ ४ ॥ पछोडी में बान्ध ने कुँवरी । ली पीठ पर धारी ॥ शिघ्र गती तिहांथी चाल्या । कारज थयो भारी ॥ म ॥ ५ ॥ रेवा सरीता पार होवा भगू । भय मन अपारी॥ तेतले गजना पांय सुणाया । जोगो हूं लारी ॥ म ॥ ६ ॥ काष्ट सूंडमें न्हाठो आवे । वायु वेगारी ॥ ते हीज गज कुँवरी पेछाण्यो । गया अति घबरारी ॥ म ॥ ७ ॥ हिवे मृत्यु ए आइ आपणी । मेहनत व्यर्थ सारी ॥ संतप्त क्रोधे दीसे दंती । न्हाख से सही मारी ॥ म ॥८॥
में कह्यो तस न घबरावो । ए वट वृक्ष भारी ॥ इण पर गुप्त चढीने बेठां । विघ्न देखां

टारी ॥ म ॥ ९ ॥ तत्क्षिण चडीया दोनो वट पर । छिप्या शाखा आडी ॥ पत्तार्थी तन लीना ढांकी । रह्या तन थर्रारी ॥ म ॥ १० ॥ ते पण आ ऊभो वट नीचे ॥ उंचा निहारी ॥ क्रोधा तुर हो मारे टक्कर । दीयो झड धूजारी ॥ म ॥ ११ ॥ प्रबल बलाकियो तरु तोडन । मुडयो न लगारी । हम आयु ने पुण्य प्रतापे । गयो फाले हारी ॥ म ॥ ॥ १२ ॥ फिर रह्यो ओलूं दोलूं झाडरे । जावे न लगारी ॥ आंप उछले ने सूंड उलाले । मारे किल कारी ॥ म ॥ १३ ॥ ते दिवस ने निशा विहाणी । गया हम अकुलारी ॥ ए तो नहीं छोडेला जीवता । वडी मुशीबत यारी ॥ म ॥ १४ ॥ अन्य उपाय न दीस्यो वचन को । कुल देवी संभारी ॥ जेहना हुकम थी साहस कीधो । लसी ते उवारी ॥ म ॥ ॥ १५ ॥ धैर्य दी कुँवरी ने तांइ । मन धरो करारी । तीन दीवसमें सुखीया थास्या । धावूं मातारी ॥ म ॥ १६ ॥ इम कही डाली ने तन वांध्यो । पद्मासन वाली । आराधन कीधी कुलस्वे । दिन ली वीत्यारी ॥ म ॥ १७ ॥ चौथे प्रात प्रगटी मैया । प्रणमी उच्चारी ॥ ए संकट थी वेग छोडावो । असुरी ते वारी ॥ म ॥ १८ ॥ अचूक वाण आपीयो मुजने । दो गज ने मारी ॥ अदर्श हुइ ते लोदशी । में ध्यान ने निवारी ॥ म ॥ ॥ १९ ॥ हं कारी तव बोल्यो गज थी । जो जीतव की चहारी ॥ तो तत्क्षिण भीग

जा ह्यांथी । नहीं तो मोत थारी ॥ म ॥ २० ॥ पण ते तो माने नहीं मद भर । कर फिर मसत्यांरी ॥ होणहार आयो जाणी में । दीयो वाण मारी ॥ म ॥ २१ ॥ टूट पडे गिरी शिखर ज्युं पडीयो । गइ भूंथरांरी ॥ तडफडतो चीकार मारतो । वोल्यो ते वारी ॥ म ॥ २२ ॥ में तुज किंचित दुहवी नाही । पूर्व भव प्यारी ॥ तूं तो मुज मारी ने चाली । हुइ होण हारी ॥ म ॥ २३ ॥ तो पण एक कहूं तुज हितनी । मुज सिर मझारी ॥ मुक्ताफळ छे सहज उपना । लेजो नांकाली ॥ म ॥ २४ ॥ इम बोलता प्राण ज छूटा । ढाल पंचमारी ॥ होणहार गत देखो सुगुणा । अमोल उच्चारी ॥ म ॥ २५ ॥

॥ ❁ ॥ दुहा ॥ हेटा उतर्या ततक्षिणे । सयंगल मस्तक फाड ॥ मुक्ताफल सवही हमें । लीना युक्तीये कहाड ॥ १ ॥ हर्षाया मनमें घणा । हुयो अचिंत्य महा लाभ ॥ प्राण वच्या सज्जन मिलण । जगीयो मन उत्साभ ॥ २ ॥ फळ अहार गमतो कियो : पीधो शीतल नीर ॥ आणंद धर आगे चल्या । आइ मन में धीर ॥ ३ ॥ मुक्ताफल की पोटली । राखी महार पास ॥ थोडा मोती कुँवरीये । पल्ले वान्ध्या खास ॥ ४ ॥ आगे चाल्या हर्ष थी । कुँवरी कहे कर जोड ॥ जीवित दान आपही दिधो । और सहू पूगसी कोड ॥ ५ ॥ ए, उपकार ने फेडवा । करस्यूं महारा नाथ ॥

तन मन सेवा में धरु । जाव जीव साथ ॥ ६ ॥ वीनोद बात इम के करत । आगल
चाल्या जाय ॥ विघ्न वीच में उपजे । ते सूण जो चित लाय ॥ ७ ॥ ⁂ ॥ ढाल ६ ठी
॥ सो वन सिंहासणरेवती ॥ यह ॥ जोवो कला कपटी तणी । सरल न समजे कांयरे
॥ आखीर तो सत्य ही तीरे । सुण जो ते चित लायरे ॥ जो ॥ १ ॥ तिण अवसर अंत
लिख में । जातो विद्या धर कोयरे ॥ नीचे जोय जाता हम भणी । हर्षित हियडे होयरे
॥ जो ॥ २ ॥ पुष्पवती जोइ मोही यो । हरण करण लाग्यो लाररे ॥ तेह भेद हम
जाण्यो नहीं । होवे जेह होण हाररे ॥ जो ॥ ३ ॥ कुँवरी कहे उभा रहो । त्रपा लागी
ठे अपाररे ॥ कृपा करी जल पाइये ॥ जिम आवे चालण कराररे ॥ जो ॥ ४ ॥ तरु
तल तास वेठाय ने । हूं लेवा गयो नीररे ॥ ढूंकडो कहीं मिलीयो नहीं । आगे गयो सर
र तीररे ॥ जो ॥ ५ ॥ पाछे डाव रम्यो खेचरु । म्हारोइ रुप बणायरे ॥ दोड आयो
कुंवरी कने । जल पाव कर सहायरे ॥ जो ॥६॥ घबराइ इम उच्चरे । जल्दी बावरी
चलो तांयरे ॥ रखे विघ्न कोइ ऊपजें । में आयो जे जोयरे ॥ जो ॥ ७ ॥ कोइ देव दान
व इहां । मुज सम रुप बणायरे ॥ लार लाग्यो थो ते माहेरे । हूं दोडी आयो इण ठायरे
॥ जो ॥ ८ ॥ प्रास्यो उदक शिघ्र कुँवरी । दोनू चल्या तब दोडरे ॥ में पण जोया दूर

थी । पायो अश्चर्य कुण जोडरे ॥ जो ॥ ९ ॥ आयो भागी जोया तेहने । व्यापीयो
अंगमा क्रोधरे ॥ अरे धूतारा तूं कोण छे । करे कार्य ए वीरोध रे ॥ जो ॥ १० ॥ ज्युं
जीया दोनो तिहां भणा । दोधो तिण मुज ने गुडायरे ॥ लेइ कुँवरी भागी गयो । पत्तो
न तास देखायरे ॥ जो ॥ ११ ॥ पस्तावो अति मुज हुयो । हा हा कर्म करूररे ॥ मेहन.त
सहू निष्फल हुइ । भोगी जे विसी पूररे ॥ जो ॥ १२ ॥ विचमा ए दुष्ट कुण मिल्यो ।
मुज सम रुप बणायरे ॥ भरमाइ लेगयो कुँवरी । मारी कूटी मुज तांयरे ॥ जो ॥ १३ ॥
आगल ए करसी किस्यो । निज घर कुँवरी लेजायरे ॥ के भोलावे राजा भणी । महरा
कुटंब भरमायरे ॥ जो ॥ १४ ॥ इम विकल्प केइ उपजे । शिघ्र गती चाल्यो तामरे ॥
तिण पापी आइ आगले । जमाइ पोतारी मामरे ॥ जो ॥ १५ ॥ दी कुँवरी जाइ रायने
। कहे सह्यो कष्ट अपाररे ॥ अनेक युक्ती उपाय थी । काम पाड्यो में पाररे ॥ जो ॥
१६ ॥ सहू पूछी आंप कुँवरी भणी । दीजीये मुज इनाम जी ॥ रखे विघ्न कोइ उपजे ।
चे तावुं पहलां श्याम जी ॥ जो ॥ १७ ॥ मार्ग धूतारो मुज मिल्यो । सरीखो रुप बणाय
जी ॥ हराइ आयो हूं तेहने । रखेते आइ भरमाय जी ॥ जो ॥ १८ ॥ नृप कहे निश्चिंत
रहो । मिलो जाइ परिवार जी ॥ अवसर उचित करस्युं सहू । पाडस्युं वयण हूं पाररे ॥

जो ॥ १९ ॥ इम सुण ते राजी हुयो । आइ वजार ने मांय जी ॥ यह काया सहू लोक ने । कुटम्ब ने दीया भरमाय जी ॥ जो ॥ २० ॥ धन्न २ सहू तस उच्चरे । रह्या सुखे इहां तेहजी ॥ ढाल छट्ठी अमोलख कही । देखो कपट कला एहजी ॥जो॥ २१ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ कुँवरी मिली माविल थी । आणी अधिक स्नेह ॥ त सुख जाणे केवली । के जाणे तस देह ॥ १ ॥ पूछी वीतक वारता । तिण कही सहू विस्तार ॥ धन्य २ श्री धर भणी । कियो वडो उपकार ॥ २ ॥ ते उपकार फेडण तणो । अवसर दे भगवान ॥ ते दिन सफलो जाणस्युं । तव बोले राजन ॥ ३ ॥ जे लासी बाइ भणी । तस परणस्युं तेह ॥ ए वचन छे माहरो । पार पाडस्यूं जेह ॥ ४ ॥ आनन्दी कुँवरी सुणी । सुख गुजारे काल ॥ सुणीयों मदन जी हिवे । जे हुवा म्हारा हाल ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ७ मी ॥ कुन्दन पुर आजोजी बनडा जी ॥ यह ॥ मेरी वीती सुणीयों जी मदन जी । कीधा जे जे में उपाय ॥ मेरी ॥ आं ॥ हूं आइ पूग्यो इहा जी । चलियो मध्य वजार ॥ लोक घणा घेर्यों मने जी ॥ हाँसी करे अपार हो ॥ मद ॥ १ ॥ ए आयो ते ठग चली जी । श्री धर रुप बनाय । हुर्रराटचो देइ करी जी । दीनो मुज घवराय हो ॥ मद ॥ २ ॥ चुगली करी कोइ राज में जी।आया भट झट दोड॥ मारण लाग्या मुज भणी जी

कहे मोडो इणरी खोड हो ॥ मद ॥ ३ ॥ में कह्यो नहीं मारीये जी । इच्छा थी जाउं बार ॥ नुकशान कुछ कीनो नहीजी । क्यों व्यर्थ करो मुज क्ष्वार हो ॥ मद ॥ ४ ॥ सहू जणा मिल कहाडीयो हो । पुर गोपुर ने बार ॥ हुकम दियो पोरायत ने जी । मत आवा दो नगर मझार हो ॥ मद ॥ ५ ॥ सहू गया निज स्थान के जी । मे पड्यो सोंच के माय ॥ अहो प्रभु ये कैसी बनी जी । जग कोइय न म्हारो देखाय हो ॥ मद ॥ ६ ॥ आर्त अति व्यापी मने जी । चूवण लागा नेण ॥ सुख उपाय दुःखीयो भयोजी । निकसे न मुखथी वेणहो ॥ मद ॥७॥ चिंतामाहे चालीयोजी।अथडा तोहूंताम॥केसरवागकी छांयमें जी में लेइ बेठो विश्राम हो ॥ मद ॥ ८ ॥ तिण अवसर आइ तिहां जी । फूलां मालण चाल ॥ रोवंतो मुज देखने जी । बोले दया लाइ रसाल हो ॥ मद ॥ ९ ॥ कुण तुम किहां थी आवीया जी । रोवो छो किण काज ॥ सत्य बात वाती कहों तो । हूं देस्युं कुछ साज हो ॥ मद ॥ १० ॥ में कह्यो में निराधार छुं मां । नहीं सरतन मुज पास ॥ इम सुणी ते दया लाइ जी । साची किम कीजे प्रकाश हो ॥ म ॥ ११ ॥ मालण कहे चिंता तजो जी । तूं मुज पुत्र समान ॥ सुखे रहो घर माहेरे जी । में देस्युं वस्त्र खान पान हो ॥ म ॥ १२ ॥ रखवालो इण वागने जी । अवर नहीं कोइ काम ॥ इम

सुणी मे धैर्य धरो जी । लियो तिणहीज स्थान विश्राम हो ॥ म ॥ १३ ॥ नित्य प्रत फूल चूंटने जी । ढेर करे घर मझार ॥ भूषण ख्याल वहु विध करे जी । मैं पूछ्यो तस तिण वार हो ॥ म ॥ १४ ॥ माजी यह वणाय नेजी । नित्य प्रत किहां ले जाय ॥ ते कहे वेटा सांभलोरे । राय कुँवरी ने घणा ए सुहाय हो ॥ म ॥ १५ ॥ फिर मैं पूछ्यो राय ने जी । किती पुत्री है मांयाते कहे एकाएक छे जी । ते पण आइ दुःख पाय हो ॥ म ॥ १६ ॥ वसुपत सेठ का सुत थी जी । होग्यी तेहनो व्याव ॥ थोडा दिन के आंतरे जी । मांड सी घणा उत्सहाव हो ॥ म ॥ १७ ॥ इम सुणी में आणंदीयो जी । हिवे करूं उपाय ॥ फूल तणी रचना विषेजी । देवूं कुँवरीने समजाय हो ॥ म ॥ १८ ॥ माजी हुँ पण जाणू छूंजी । करवा पुष्फ आभरण ॥ कहो तो करूं सार्डी कंचूकी जी । दीजो कुंवरी नो जोइ मन हो ॥ म । १९ ॥ इम सुण ते खुशी हुइ जी । दियो सूइ डोरो हाथ ॥ रचना रचन सुरू करी जी । जे भुक्ती दोनो साथ हो ॥ म ॥ २० ॥ ...
जली वन रेवा नदी जी । फीले युथ वट झाड ॥ स्कन्ध बैठी कन्यका इम । ...
रंग दीया मांड हो ॥ म ॥ २१ ॥ मृत्युक गज वणाड्यो जी । मुक्त फल ...
त्याजी रचना रची । मैं तो धरींने अति उमंग हो ॥ म ॥ २२ ॥ करी ...

डी जी । दी डोसीने हाथ ॥ एकान्त कुँवरीने आपीये जी । जिम कोइय न जाणे बात हो ॥ म ॥ २३ ॥ देखी बुद्धी खुशी हुइ जी । मिलसी घणो इनाम ॥ सप्त खन्ड ढाल सप्तमी जी । कहे अमोल देखो काम हो ॥ म ॥ २४ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ हरषाणी मालण तदा । पुष्प करंड कर लेय ॥ गइ ते कुँवरी मेहल में । एकांते रही तेय ॥ १ ॥ पुष्पवती बुलायने । दीना गजरा हार ॥ फिर कहे हूं लावी अछूं । पुष्प सटिक मनोहार ॥ २ ॥ प्रसारी देखाडता । कुँवरी द्रष्ट लगाय ॥ अश्चर्य पाइ अति घणा । ए कुण रचना रचाय ॥ ३ ॥ ए तो वीती मुज विषे । सघली दी आलेख ॥ हम दोनो जाणां अछां । वली कुण आयो देख ॥ ४ ॥ शंका पडी मन ने विषे । सच्चा श्रीधर कौन ॥ जल्दी परिक्षा कीजीये । फिर परण वो जौन ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ८ मी ॥ अषाड भूती अणगार ॥ यह ॥ पूछे मालण तेह । माजी सच्च मुज केह ॥ मदनज सुणीये ॥ ए उत्तम साडी कुण करी जी ॥ ए मुज अतिही सुहाय । एसी नित्य दीजे लाय ॥ मदनजी सुणीये । इनाम देस्यूं मन भरीजी ॥ १ ॥ बाइजी परदेशी कोय । सहू वियोगे दुःखी होए । बाइजी सुणीये ॥ आइ रह्यो मुज वाग में जी ॥ सूरुपे गुणवंत । कळा कौशल्य सोहंत ॥ वा ॥ लोभायो गुण ना राग में जी ॥ २ ॥ तिण दी साडी बणाय । अग्रह-

थी कह्यो मुज तांय ॥ वा ॥ एकांत दीजे कुँवरी भणी जी ॥ अन्य न जाणे भेद । नि
वारे सहू खेद ॥ वा ॥ हुकम होसी तो लास्यूं घणी जी ॥ ३ ॥ कुँवरी मन हर्षाय ।
जाण्या श्रीधर साचाय ॥ मदन ॥ पत्र लिख दीयो तिण तदा जी ॥ चिंता मत कीजो
कांय । इहांइ रहजो सुख मांय ॥ मदन ॥ उपाय करस्यूं हूं यदाजी ॥ ४ ॥ देजो नि-
त्य समाचार । नहीं कीजो प्रेम विसार ॥ मदन ॥ आखिर सत्य तिरसे सही जी ॥ पं-
च मोहर संग पत्र । दियो मालण ने तत्र ॥ मदन ॥ सुखे राख मुख थी कही जी ॥
५ ॥ मालण अति हर्षाय । वेगी आइ वाग मांय ॥ मदन ॥ कागद दियो म्हारे करे
जी ॥ कुँवरी खुशी हुइ बहोत । जोइ साडीरी जोत ॥ मदन ॥ भकरी मुज थी उच्चरे
जी ॥६॥ प्रेम पत्र ते वांचाबुजी मुज दुख की आंच ॥म॥ साच उपजावण कारणे जी
॥ पुष्प नो कंचू बणाय । नाम गुंथ्यो ज्यों जणाय ॥ मदन ॥ गज मोती गुंथ्या वारणे
जी ॥ ७ ॥ रखीयो छाबडी मांय । कुसुम थी दीनो छाय ॥ म ॥ कह्यो एकांतमें देव
जो जी ॥ दूजे दिन तिहां जाय । दीनो कुँवरी ने ताय ॥ म ॥ हर्षी गृह्यो प्रसाद ज्यूं
जी ॥ ८ ॥ खोली मुक्ताफल दीठ । लाग्या मन ने मीठ ॥ म ॥ प्रेमे उर लगावीयो
जी ॥ दी दीनार पच्चीस । कहे पुरला जगीस ॥ म ॥ इम नित्य नव २ लावीयो जी

॥ ९ ॥ डोकरी घणी हर्षाय । महारे पासे आय ॥ म ॥ वीतक माडी सहू कही जी ॥
नित्य नव २ वणाय । दूं डोर्सा हाथ पहोंचाय ॥ म ॥ मोती जो कुँवरी बुद्धी लही जी
॥ १० ॥ आइ पिताने पास । कर जोडी करे अरदास ॥ पिताजी सुणीये ॥ गडबड
ग्राममें सांभली जी ॥ कोइ आयो रुप वणाय । तिणथी वेम मुज आय ॥ पित ॥ मन
सा म्हारी थांमली जी ॥ ११ ॥ जो होवे पुरो परिक्ष । दोन्यारी महारे समक्ष ॥पित॥
तो वर वानो दाखस्युं जी ॥ ज्यां सह्यां मुज काज दुःख । लाया हो मरण सन्मुख
॥ पित ॥ तेहथी प्रिती राखस्यूं जी ॥ १२ ॥ नृप कहे तव घवराय । यहां लेवूं दोन्या
ने बुलाय ॥बाइ॥ तूं कीजे परिक्षा तेहनी जी ॥ इम कही दोन्या ने बुलाय । ते कपटी
शिघ्र आय ॥म॥ दूजा को पतो को कहेनी जी ॥ १३ ॥ तव दाख्यो कुँवरी उपाय ।
गज मोती जे लाय ॥ पित ॥ पूरा सवा सेर जे भरी जी ॥ नमूना के काम । एक
मोती दीयो ताम ॥ पित ॥ गइ मेहलां मांय कुँवरी जी ॥ १४ ॥ नकली ने कहे भूप ।
लावो मोती इण रुप ॥ मदन ॥ सवा सेरतो कंन्या वरो जी ॥ नहीं तो वेठो चुप जा-
य । साचाकी परिक्षा न थाय ॥ म ॥ परणन इच्छा पर हरो जी ॥ १५ ॥ नकली भइ
उदास । इण विध करे प्रकास ॥ राजाजी सु० ॥ खरो होस्युं तो लावस्युं जी ॥ नमी

गयो घर चाल । गुंत भर्यो बहू थाल ॥ मदन ॥ मोती नामिल्या मूंगा भावस्युं जी ॥ १६ ॥ फिर आइ इम केय । गज मोती न मिलेय ॥ राज जी ॥ मेहनत निष्फल किम करो जी ॥ राय जी समज्या भेद । तो पण नकरी खेद ॥ मदन ॥ घर बेठो विचार करस्युं खरो जी ॥ १७ ॥ सचिवस्यूं विचारी राय । नगर ढंडेरो पीटाय ॥ परजाजन सुणीये ॥ गज मोती सेर सवा लावसी जी ॥ कराइ बाइ ने परसन्न । जो गमसी तस मन ॥ प्रजा ॥ तो कुँवरी तस परणावसी जी ॥ २८ ॥ पसरी पुर मे वात । राय पुत्री सहू चहात ॥ मदन ॥ मांगी मोती घणा लावीया जी ॥ पण नही गज मोती नाम । कोइ की न पूगी हास ॥ मदन ॥ सहू रह्या चुप उमावीया जी ॥ १९ ॥ मे कुसुम वस्त्र कर तैयार । दीय मालण ने ते वार ॥मदन॥ भज्या राय कुँवरी कने जी ॥ दीया कुँवरी ने जाय । जोइ घणी हर्षाय ॥ मदन ॥ पत्र लिख्या तत्क्षिण मने जी ॥ २० ॥ लेइ सहू मोती लार । पधारो सभा मझार ॥ मदन ॥ डर मत धर जो केह नो जी ॥ हूं करस्युं वंदो बस्त । जिम काम होसी परसेस्त ॥ मदन ॥ जोर न चालसी जेय नो जी ॥ २१ ॥ पत्र लिखी दियो तास । दीनी असरफी पचास ॥ मदन ॥ झट आइ मालण मुज कने जी ॥ बांची सहू समाचार । हर्यो हीये आार ॥ मदन ॥ धैर्य आइ तव मने जी ॥

२२ ॥ कीधो मन में विचार । शुत करणो उच्चार ॥ मदन ॥ कपटी जाणन पावे नहीं जी ॥ मिलुं राय से जाय । लेवुं कुँवरी बुलाय ॥ मदन ॥ मोती बतावुं सें सही जी ॥ २३ ॥ इम मन निश्चय कीध । थासी कार्य सिद्ध ॥ मदन ॥ ढाल आठमी ए भइ जी ॥ अमोल करे प्रकाश । आगे रशिक सम्भास ॥ मदन ॥ सुणीयों श्रोता चित दइ जी ॥ २४ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ चाल्यो राज सभा विषे । आयो जब बजार ॥ लारे लाग्या लोक मुज । करण लाग्या बेजार ॥ १ ॥ ए आयो ठग ठगण ने । रह जो सहू हुशीयार ॥ मुज पूछे सीधावो क्यां । लाया गज मुक्त लार ॥ २ ॥ में कह्यो हां लायो अछूं । चालो सभा मझार ॥ राय सन्मुख देखाडस्युं । शंकन आणो लगार ॥ ३ ॥ इम कही हूं आगे चल्यो । बहू चाल्या मुज लार ॥ नगल मोती पेखवा । करता हा हा कार ॥ ४ ॥ पुर में पसरी वारता ॥ मिलीया लोक अनेक ॥ दोडा २ आगले । सहू रह्या मुज देख ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ९ मी ॥ झीणो मार्ग जिन जी रो ॥ यह ॥ आयो राज सभा विषे ॥ सुख कारी हो मदन जी ॥ कांइ लुली २ मुजरो कीध ॥ पुण्य फल जोइ लीजो ॥ ऊभो राय जी सन्मुख ॥ सुख कारी हो राजिंद जी ॥ कांइ लोक जुड्या बहू विध ॥ पुण्य ॥ १ ॥ राय पूछे तुम काण छो ॥ सुख कारी हो मदन जी ॥ तब में कह्यो कुँवरी

लाणार ॥ पुण्य ॥ धूर्त मुज ने छेतर्यो ॥ सुख राज० ॥ कांइ कीनो घणो ख्वार ॥ पुण्य ॥ २ ॥ राय कहे तुम पास छे ॥ सुव्र० श्री धर जी ॥ कांइ गज मुक्ता फळ चंग ॥ पुण्य ॥ हिवणां ते देखाड ज्यो हो ॥सु०श्री॥ तो सहू पूगे उमंग ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ में तव बटहो कढाडीयो ॥ सु० मद० ॥ कांइ मुट्ठी भरी तिणमाय ॥ पुण्य ॥ दीधी नृप का हाथ में ॥ सु० मद० ॥ कांइ परक्षी गुण हर्षाय ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ बोलाइ कुँवरी भणी ॥ सु० म० ॥ अति आदर दे बैठाय ॥ पुण्य ॥ मुक्ता फळ सन्मुख ठव्या ॥ सु० म० ॥ बाइ ले तुज मोती मिलाय ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ कुँवरी ये ताम मिलाइया ॥ सु० म० ॥ एक सरीखा जोय ॥ पुण्य ॥ हर्षी घणी मन ने विषे ॥ सु० म० ॥ कांइ मुज मुख ने अव-लोय ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ राय थी कहे कर जोड ने ॥ सु० पिता जी ॥ कांइ येइ मुज दुःख हरनार ॥ पुण्य ॥ मन थकी में पहलां कर्या ॥ सु० पिता जी ॥ ए सुगुण भरतार ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ इत्ती वात हुइ जित्ते ॥ सु० ॥ म० ॥ तत्क्षिण नकली आय ॥ पुण्य ॥ चुनके उभो मुज आगले ॥ सु० म० ॥ रुपे जन भरमाय ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ में कह्यो कुण आगे आवीयो ॥ सु० म० ॥ ते कहे तूं छे कुण ॥ पुण्य ॥ में कह्यो मोती में लावीयो ॥ सु० म० ॥ ते कहे वडो निपुण ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ में दिया मोती राय ने ॥

सु० म० ॥ तूं झूटो मत बोल ॥ पुण्य ॥ हिवे भागी जा इहां थकी ॥ सु० म ॥ चाले नहीं तुज पोल ॥ पुण्य ॥ १० ॥ मैं बटवो पको कर्यो ॥ सु० म० ॥ तिण नहीं जाण्यो भेद ॥ पुण्य ॥ लोक तमाशो देखने ॥ सु० म० ॥ अतिही पाया खेद ॥ पुण्य ॥११॥ मारेरे मारो धुर्त ने ॥ सु० म० ॥ इम राजा प्रजा केय ॥ पुण्य ॥ पण ओलख नहीं एक ने ॥ सु० म० ॥ त्रिया थी एक ही दिखेये ॥ पुण्य ॥१२॥ कुँवरी कह्यो राय कान में ॥ सु० म० ॥ राय होवो हूंशीयार ॥ पुण्य ॥ कहे ोमाथी एकी जणो ॥ सु० म ॥ आवो मुज पास अवार ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ मैं जाइ उभो राजाकने ॥ सु० म ॥ कांइ सोती छे तुम पास ॥ पुण्य ॥ इम पूछ्यो मुज कान में ॥ सु० म ॥ कांइ में करी तब अरदास ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ पहलां बंदोवस्त कीजिये ॥ सु०म ॥ राजाजी ते नहीं आवे मुज पास ॥ पु ॥ तो हूं मोती देखाडस्यूं । सु०म राजाजी ॥ नहीं तो होवे मुज नाश ॥ पु ॥ १५ ॥ कीधो बंदोवस्त तत्क्षिणे ॥ सु०म ॥ भट सूरा ने बुलाय ॥ पु ॥ पकडा यों धूर्त भणी ॥ सु०म ॥ मुज लगयो महल मांय ॥ पु ॥ १६ ॥ सुक्ष्म रुप खेचर करी ॥ सु०म ॥ भागी गयो तवार ॥ पु ॥ हा हा कार सभा विषे ॥ सु०म ॥ मचीयो तव अपार ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ तब हर्ष्या सहू जणा ॥ सु० म० ॥ साचो

निवड्यो कोण ॥ पुण्य ॥ निर्णय करनां जाणीयो ॥ सु० म० ॥ मंती के आयो होण ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ सांचो जाण्यो ते झूटो भयो । सु० म० ॥ सांचो निकल्यो एह ॥ पुण्य ॥ इम सुण दोड्या आवीया ॥ सु० म० ॥ नान भ्रात घर नेह ॥पुण्य॥ ॥ १९ ॥ राजा राणी खुशी हुवा ॥ सु० म० ॥ टलीयो सघलो दुःख ॥ पुण्य ॥ इस कारण निश्चय कीयो ॥ सु० म० ॥ मनुष्य जन्म पाया सुख ॥ पुण्य ॥ २० ॥ मदन दीयो एह रहणने ॥ सु० म० ॥ वली द्रव्य केइ कोड ॥ पुण्य ॥ हम सव आइ इण में रह्या ॥ सु० म० ॥ उत्सव माड्यो मोड ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ शुभ लग्न परणावीया ॥ सु० म० ॥ दीवी जागीर कुडाय ॥ पुण्य ॥ इण विध हम सुखीया भया ॥ सु० म० ॥ टलीयो दुःख को पहाड ॥ पुण्य ॥ २२ ॥ श्रीधर वीतो कथा कही ॥ सु० म० ॥ सात खंड नव डाल ॥ पुण्य ॥ अमोल ऋषि कहे सांभलो ॥ सुख कारी हो श्रोताजी ॥ पुण्य फल यह रसाल ॥ पुण्य ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ जेष्ट बन्धव की सुण चरी । मदन घणा हर्षाय ॥ धन्य २ भाइ तुमे । कीना जबर उपाय ॥ १ ॥ फांकक उत्तम वक्त की । वात वही सिद्ध होय ॥ ए नो प्रत्यक्ष पारखो । मे लीधो छे जोय ॥ २ ॥ आं पा चारुं वड पंथ । नदीने नट पंथ ॥ जे जे इच्छा चरण की । ते पाया आ ग्य

॥ ३ ॥ हिवे कमी कुछ ना रही । मिलीया शुभ संयोग ॥ कुलदेवे कह्या तिका ॥ वर्ष बारे ना भोग ॥ ४ ॥ ते काल पूरण हुयो । प्रगटचा पुण्य प्रताप ॥ हिवे चालो निज शेहर में । सहू धन जन संग आप ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १० मी ॥ हरीया मन लागो ॥ यह ॥ मदन कुँवर सहू जन संगे । सोभावे उहू गणेरे ॥ पुण्य ना फल जोइलो ॥ संभार्या निज देशनेरे । तिहा चालण हुइ उमंगरे ॥ पुण्य ॥ १ ॥ मदनजी कहे तात ने । अब चालीजे निज देशरे ॥ पुण्य ॥ कुल देवी लह्या तिकेजी । वर्ष वीत्य छे शेषरे ॥ पुण्य ॥ २ ॥ वसुपतजी कहे चालीये । हम तो सहू तुम लाररे ॥ पुण्य ॥ सपूत पुत्र तुम सारीखा । हिवे हमने चिंता न लगाररे ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ श्रीधर नृप पासे जइ । मांगे रजा तेवाररे ॥ पुण्य ॥ श्वामी जावां हम देशमें । संग मिलो सहू परिवाररे ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ राय कहे इम किम करो । तुम ने इहां किस्यो दुःखरे ॥ पुण्य ॥ हम पाछल राज तुम तणो । भोगवो इच्छित सुखरे ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ श्रीधर वदे नरमाइने । मिल्यो सहू परिवार मन रंगजी ॥ पुण्य ॥ जन्म स्थान जोवा तणो । सहू ने भयो उमंग जी ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ वर्ष घणा हुवा हम भणी । रहतां विदेश न मांय जी ॥ पुण्य ॥ हिवे मिलस्या सज्जन भणी । शिघ्र हुकम फरमाय जी ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ राज कहे जिम

सुख हुवे । तिम करो सहू काज जी ॥ पुण्य ॥ दल बल जे चाइये । ते लेजा-
वो तुम साज जी ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ इम सुणी खुशी हुवा । लीनी शैन्य घणी साथ जी
॥ पु ॥ मिलाइ मदन शैन्य में । साज जम्यो ज्यों नर नाथ जी ॥ पु ॥ ९ ॥ शुभ म-
हूर्त तणे विषे । कीधो सहू प्रयाण जी ॥ पु ॥ राज साज पहोंचाविया । सीम लगण
तस जाण जी ॥ पु ॥ १० ॥ आगल चाल्या मोद में । सुखे २ करत मुकाम जी ॥पु॥
शक्ती भक्ती थी मनावता । विच राजा ने लाता ठाम जी ॥ पु ॥ ११ ॥ इम अनुक्र
में आवीया । अजुध्या पुरी समीप जी ॥ पु ॥ सुखस्थान जो वन विषे । रह्या जो सि-
न्धु द्विपजी ॥ पु ॥ १२ ॥ पूरमें पसरी वारता । कोइ आया राजेन्द्र चलायरे ॥ पू ॥
आपणा ग्रामके वाहीरे । रह्या छें छावणी छायरे ॥ पू ॥ १३ ॥ सन्धी पाल आइ नृप
ने । अर्ज करे अकुलायरे ॥ पू ॥ न जाणे कुण राजवी । किण कामे रह्या सीमे आयरे
॥ पू ॥ १४ ॥ भूप सुणी विस्मित भया । कुण ए आया किंण काजरे ॥ पू ॥ वैर नहीं
महारो किण थकी । ए छे किहां ना राजरे ॥ पू ॥ १५ ॥ जो लडवाने आवता । तो
भेजता आगे दूतरे ॥ पू ॥ कारण अन्य दीसे सही । कोइ खबर लावो रजपूतरे ॥ पु ॥
॥ १६ ॥ सामंत तत्क्षिण सज हुइ । आया मदन शैन्य मायरे ॥ पू ॥ वसुपत सेठ ने

पेखने । ते अति अश्चर्य लायरे ॥ पू ॥ १७ ॥ तस सत्कार्या सेठ जी । उंच्च आसाण बे ठायरे ॥ पु ॥ पूछे सामंत सेठ से । आप पधार्या किण नृप सहायरे ॥ पू ॥ १८ ॥ सेठ कही सहू बारता । मदन श्रीधर वीतरे ॥ पु ॥ सुण अश्चर्य पाया अति । कहे धन्य २ पुल वनीतरे ॥ पू ॥ १९ ॥ फिर आया महीपाल पे । भरी सभारे मायरे ॥ पु ॥ वसुपत सेठकी पूण्य कथा । दी सहू ने संभलायरे ॥ पु ॥ २० ॥ सुणी हर्ष्या राजेश्वरु । धन्य २ महारा भाग्यरे ॥ पु ॥ मुज वस्ती का एहवा । साहूकार सौभाग्यरे ॥ पू ॥ ॥ २१ ॥ हूं लावस्युं बधायने । करावो शैन्य तैयाररे ॥ पु ॥ पूरमें पसरी बारता । घ सुपति आया सहू परिवाररे ॥ पू ॥ २२ ॥ शैन्या तस पासे घणी । पांच राज स्वाधीनरे ॥ पू ॥ जे सुणे ते अश्चर्य लये । अहो २ पुण्याप्रवीनरे ॥ पु ॥ २३ ॥ वसुपत जी की दुकानपे । सुणीयां मुनींम समाचाररे ॥ पु [illegible] ॥ सेठ [illegible] उमाइया । सहू सज्जन हुवा तैयाररे ॥ पु ॥ २४ ॥ राजा प्रजा शैन्य संग [illegible] वाजिंत्रने न.दर ॥ पु ॥ ढाल दशमी सप्त खंडकी । अमोल भणे हुवो समा[illegible] ॥ पू ॥ २५ ॥ दुहा ॥

वसुपत शाह सांभल्यो । सामे आवे राज ॥ स्वजन परजन [illegible] । मिलवा उत्सुक आज ॥ १ ॥ हर्षाया घणा मन में । कियो परिवार तैयार ॥ [illegible] लीयो भेटणो । च-

उ पुत्र संग ते वार ॥ २ ॥ आयी वेठा मार्गें । जोता सहू की वाट ॥ तेतले जन आवा तणो । सांभलियो घोंघाट ॥ ३ ॥ गज गाजी गण गम मिल्या । आवे शिघ्र चलाय ॥ नेडा आया देखने । वसुपति ऊभा थाय ।। ४ ॥ वहू मोल्यो सज भेटणो । बहू तो सान सजाय ॥ मिलवा सज्जन राज ने । अति ही मन उमंगाय ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ११ मी ॥ म्हारे आज आणंदा नो दिन छे जी ॥ यह ॥ आज आनंद दिन सेठ आवीया जी । सहू सज्जन के मन भावीया जी ॥ आं ॥ सेठ सपरिवार उभा जोयने जी ॥ फोज उभी रही खुश होय ने जी ॥ आ ॥ १ ॥ सामा आया भूप पांयां चरी जी । सेठ सामा आया हर्ष भरी जी ॥ आ ॥ २ ॥ लुली २ नम्या सेठ परिवार थी जी । राय खुशी किया घणां सत्कार थी जी ॥ आ ॥ ३ ॥ सेठ निजराणो सामो कियो जी । राजेश्वर हर्षी लियो जी ॥ आ ॥ ४ ॥ सहू विध लायक तुम सेठ छो जी । किसी वस्तु हम पास करां भेट जो जी ॥ आं ॥ ५ ॥ राज्य मान्य राजे श्री तुम मिल्या जी ॥ तुम दीठा पुण्य म्हाणा फल्या जी ॥ आ ॥ ६ ॥ प्रधानादिक आइ नम्या जी । यथा योग्य किया सहू ना गम्या जी ॥ आ ॥ ७ ॥ राय वसुपत एक गजा रुढ भया जो । चउ भाइ दूजे दंती सोभी रया जी ॥ आ ॥ ८ ॥ सहू शैन्य साथ वाजिंत्र वाजीया जी ।

चाल्या ग्राम में अंबर गार्जीया जी ॥ आ ॥ ९ ॥ नर नारी जोवे बहु गम्म मिल्या जी । हाट वाट ग्रह छत्त मांहे ठल्या जी ॥ आ ॥ १० ॥ सहु मदन ने अथिको दाखवे जी । गण गुण मुख तास हीं भाखवे जी ॥ आ ॥ ११ ॥ देखो ऋद्धि वसुपति शाहा तणी जी । लोक जाणे ए छे स्युं भरत धणी जी ॥ आ ॥ १२ ॥ राय मेहल दीयो मोटारण ने जी । तिहां वसुपत उतर्या संग सेण ने जी ॥ आ ॥ १३ ॥ राजादिक निज स्थाने गया जी ॥ ग्रामे आणंद वर्ती रह्या जी ॥ आ ॥ १४ ॥ पसरी परसंस्या सुगन्ध परेजी। धन्य वसुपत सहू उच्चरेजी॥ आ ॥ १५ ॥ भोजन भक्ती करी सुख पावीया जी । वहु उत्सव काल गमावीया जी ॥ आ ॥ १६ ॥ लीनी खबर ज्युना घर तणी जी । शाबासी मुनीम ने दी घणी जी ॥ आ ॥ १७ ॥ सहू ग्राम भणी जीमावीया जी ॥ वस्त्र भूषण सहु ने पहरावीया जी ॥ आ ॥ १८ ॥ पीयर थी बुलाइ चारुं वहु भणी जी ॥ ते पण हुइ खुशी घणी जी ॥ आ ॥ १९ ॥ देखी ऋद्धि राजेश्वर जेहवी जी । मान्यो अहो भाग्य आपणो तेहवी जी ॥ आ ॥ २० ॥ विद्या वले मदन सिद्धाविया जी । सुवर्ण पोरसो कहाडी लावीया जी ॥ आ ॥ २१ ॥ तेह रख्यो ग्रह गुप्त में जी । कोइ नहीं करी सके लुप्त ने जी ॥ आं ॥ २२ ॥ दान शाळा मंडाइ देश में घणी जी । करे

पोषण अनाथ अपंगनी जी ॥ आ ॥ २३ ॥ विद्या वृद्धी ना कार्य लय किया जी । धर्म उन्नती कर लाभज लिया जी ॥ आ ॥ २४ ॥ पसरी कीर्ती चउदिश माय ने जी ॥ कही ढाल ग्यारे अमोलख गाय ने जी ॥ आ ॥ २५ ॥ ० ॥ दुहा ॥ एक दिन मदन जी चिंतवे । हूं लुब्ध्यो इहां आय ॥ पाछल झुरे परिवार मुज । करी दर्श फर्श चाय ॥ १ ॥ हिवे शिघ्र निज शैन्य सज । चलणो फिर सहू ठाम ॥ संतोषू सहू ने हिवे । करूं सें एकण धाम ॥ २ ॥ इम निश्चय कर आवीया । तात भ्रात नृप पास ॥ निज इच्छा जणाय ने । ली आज्ञा हुल्लास ॥ ३ ॥ शैन्या पति बुलाय ने । सजाइ फोज ते वार ॥ मेहंदपुर श्रीपुर तणी । वट पुत्नी ले लार ॥ ४ ॥ प्रणमी पग सजन तणा । करी पुर जन सत्कार ॥ गजारूढ हो चालीया । मदन श्वसुर ते वार ॥ ५ ॥ ० ढाल १२ मी ॥ लावणी ॥ दया धर्म का मूल ॥ यह ॥ पुण्य सदा सुख कार । प्रगटे करी हुइ पुण्याइ ॥ मदन कुँवर पुण्य जाग । कीर्ती जग में फलाइ ॥ आं ॥ प्रथम श्री पुर आया खबर ए राजा प्रजा पाइ ॥ आया सामने अति उमंगे । ले गया वधाइ ॥ खान पान सुस्थान भोगवे । रहे आनंद माइ ॥ गुण सुन्दरी मिली बीत्यो सहु वीतक चेताइ ॥ चाल ॥ तिण अवसर रुषी राय जी आया राजा प्रजा सहू वंदन धाया । मुनी राज

उपदेश सुणाया । श्री पुर पत वैरागज लाया ॥ मिलत ॥ मदन कुँवर ने देइ राज ।
लेइ दिक्षा सुख पाइ ॥ मदन ॥ १ ॥ श्री पुर पती भया मदन । तत्क्षिण खाती ने
बुलाया ॥ अखूट धन सुख देइ पासे राख्या तिण तांया । आगल चालण कीनी इच्छा
। सुन्दरी ने चेताया ॥ यहां का लस्कर यहां ही छोडा । दोनो सज वाया ॥ झेला ॥
खाती पुत्र ने राज संभलाइ । गुण सुन्द्रीने साथे ठाइ । महन्द्र पुर फिर आया चलाइ
। राजा प्रजा सुण हर्षाइ ॥ मिलत ॥ गया ग्राम में विध पुर्वली । सुख थी रह्याइ
॥ मदन ॥ २ ॥ रंभा मंज्जरी अति सुख पाइ । पुर पति विचारे । बृध भयो नही राज
निभे । करूं मदनजी सिरदारे ॥ दीयो राज अति कर ने अग्रह । आप धर्म धारे ॥ थो
डेही काले आयू पूर्ण कर । गये स्वर्ग मझारे ॥ झेल ॥ मदनेश्वर जी राज निभावे । आ
गल जावा को मन थावे । कोट वाल ने राज भोलावे । दोनो नारी साथ सिधावे ॥
मि० ॥ फोज तिहां की तिहां छोड और लीनी साथाइ ॥ मदन ॥ ३ ॥ चल आये
पयठाण पुरमें । उपजा आणंदा ॥ घर दुकान सहू काम संभाल्या । रुप वनी समंदा ॥
अचानक राय मृत्यू पाये । उपज्या ए फंदा । सहू शल्लाथी मदन राज किया। मिट्या सहू
दुःख धंदा ॥ झेल ॥ भद्रसेण ने राज भोलाइ । तिहां विमाण की करी सजाइ । तीनो

महीला मांय बेठाइ । विद्या बल थी तास चलाइ ॥ मि० ॥ आनंद पुर में आया उतरी या यक्ष देवल मांइ ॥ मदन ॥ ४ ॥ नारी संग प्रणम्या जोगी पग । आसीस ते देवे ॥ आज दर्शन प्रसन्न हुवा चित, नरनी मदन केवे ॥ देवल रक्षक जा दीनी वधाइ । सुणी हर्ष लेवे । दोडी आया जन देख मदन कहे । धन्य २ अहु सेव ॥ झे ॥ वधाइ लाया महल मझारो । कनकावती मन हर्ष अपारो । राज पाट की फेर संभारो ॥ वर्त रहा छे मंगला चारो ॥ मि ॥ चारी सर्वी मिल अति हर्षाइ । जो विभूती इन्द्र के साइ ॥ मदन ॥ ५ ॥ फिर अजुध्या जावण सज हुवा । राज पुत्र को राज दीया ॥ चारी प्रेमला अंगज साथ ले । जोगीश्वर को नमन किया ॥ बेठ विमाणे गगन गति चले । भूमंडल ऋद्धि देखावरया । रंग विनोद मार्ग लेवता । अजुध्या पुरी आय गिया ॥ झेला ॥ घर आगल विमाण उतारिया । जाणे भूंवर रवी अवतारिया । नर वृन्द मिल्या अश्चर्य भारिया । वहा वहा मदन जी पुण्य का दरिया ॥ मि ॥ चार नार संग मदन कुँवर जी । मिल्या मावित भ्रात भोजाइ ॥ मदन ॥ ६ ॥ देख मदन की ऋद्धि इन्द्र सम । राज प्रजा अश्चर्य लावे ॥ दया नम्रता क्षमा सील थी । मदन जी अधिका सो-भावे ॥ गुणवंत जे मनुष्य देखता । गुणी जन सघला हर्षावे । राज प्रीतियें नमी माम्

पाग । तास खुशी न हीये मावे ॥ झेल ॥ रुव कुटुंब संग सुख थी रहावे । दो गंधक सुर जों सुख विलखावे । गगन गामणी विद्या प्रभावे । च्यार राज ने सुखे निभावे ॥ मि ॥ अमोल ऋषि कहे ढाल द्वादेश । पुण्य पदार्थ गृहो भाइ ॥ मदन ॥ ७ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ तिण अवसर पधारीया । संयति ऋषिराय ॥ नाणे करेण चरण टिके । गुण छत्तीस सोभाय ॥ १ ॥ पंचसैय साधू संगे । फिरता जिन पद देश । अयुध्या के वाग में । उतर्या लइ आदेश ॥ २ ॥ राजा पासे जाइ ने । दी वधाइ वन पाल ॥ सुणी सहू आणंदीया । दीधो बहु ला माल ॥ ३ ॥ श्री भंडार थकी दीवी । हीरण अर्ध लक्ष तर ॥ हर्षीने घरे गया। सजीसजाइ फेर ॥ ४ ॥ सहू परिवारे परिवर्या । चाल्या वंदन राय ॥ हय गय रह पाल खी । स्वजन परजन सहाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १३ मी ॥ क्षिण लाखे णीरे जाय ॥ यह ॥ राय भवन थी नीसरी जी । वन पालक ते वार ॥ वसुपत मेहले आवीया जी । मदन तणें दरबार ॥ १ ॥ भविक जन । धर्म सदा सुख दाय ॥ आ ॥ वधाइ दे पधारीया जी । मुज वागे मुनी राय ॥ पांच सय परिवार थी जी । सुणी सहू हर्षाय ॥ भविक ॥ २ ॥ धन दियो तिण ने घणो जी । ते आयो निज घेर ॥ सहू परिवार ने सेठ नी तब । हुकम दियो इण पेर ॥ भविक ॥ ३ ॥ शिघ्र चलो वंदण भणी

जी। । महा पुण्ये मिल्यो जोग ॥ जे प्रसाद ग. वक्के करे जी । जाणो नम्म कर्म रोग ॥ भविक ॥ ४ ॥ सेठ सेठाणी बेटा वहू जी । दासादिक परिवार ॥ सगा स्नेही सजाय ने जी लीना सब ही लार ॥ भवि ॥ ५ ॥ राजाजी ने लारे थया जी । और सायवी लार ॥ मध्य बजारं होय ने जी । आया बाग मझार ॥ भवि ॥ ६ ॥ जो मुनीवर बाह्मण तज्या जी । पंच अभीगम सांच ॥ सचित वस्त दूरी ठवी जी । मुनी गुण दर्शन राचा ॥ भवि ॥ ७ ॥ अचित अजोग ने परहरी जी । मुखे उत्रासण किध ॥ सरल करी ली जोग ने जी । धर्म ध्याने चित दीध ॥ भवि ॥ ८ ॥ नहीं नजीक नहीं वेगला जी । नमन यथा विध कीन ॥ बेठा नम्र हो सन्मुखे जी । कथा सुणन चित दीन ॥ भवि ॥ ९ ॥ परिषद् भरी जोय ने जी । दे मुनी वर उपदेश ॥ भव निवारण कारणे जी । समज्यो धर्म कीरेस ॥ भवि ॥ १० ॥ धर्म अनेक प्रकारका जी । पण मुख्य छे दो भेद ॥ पुद्गली ने आत्मिक लखो जी । पुद्गली देवे खेद ॥भवि॥ ११ ॥ पुद्गल के परिचय थकी जी । भमियों अनंत संसार ॥ जेह वमन कर आवीयो जी । तस भख्यो अनंत वार ॥ भवि ॥ १२ ॥ तो पण तृप्ती नहीं भइ जी । अधिक २ भइ चहाय ॥ अग्नी नी परे त्रषणाजी । सर्व भक्षवा जाय ॥ भवि ॥ १३ ॥ नटवा की परे नाचीयो जी । करी

अनंता रुप ॥ पुद्गलकी ममता थकी जी । पड्यो भवांतर कूप ॥ भवि ॥ १४ ॥ शुद्ध लहो हिवे तेहनी जी । थावो मा गिल्याण ॥ वमण भोग इच्छा तजो जी । येही खरो विज्ञाण ॥ भवि ॥ १५ ॥ आत्मिक धर्म ते जाणीये जी । धरेन पुद्गल प्रेम ॥ पूरे गले मिल वीछडे जी । तेह थकी किसी क्षेम ॥ भवि ॥ १६ ॥ अजंत काल की संगती जी । सहजे नहीं तजाय ॥ सम्यक्त्व देश वृती लही जी । अणगारी जव थाय ॥ भवि ॥ १७ ॥ मर्यादा संकोचता जी । अहार वस्त्र ने योग ॥ भावे कषाय घटावती जी । जेह अनादी रोग ॥ भवि ॥ १८ ॥ इम गुण स्थान रोहता जी । आत्म ध्यान लगाय ॥ लीन होवे निज रुप में जी । सहू विकल्प मिटाय ॥ भवि ॥ १९ ॥ धर्म ए आत्म ओलखी जी । तजी कर्म नो भर्म ॥ निष्फल श्रम जे नीपजे जी । वरो उंचो ए वर्म ॥ भवि ॥ २० ॥ तो नर गत की सार्थता जी । हुइ सम जो मम प्राण ॥ विद्या चरण युग तारका जी । नहीं एक ही की ताण ॥ भविक ॥ २१ ॥ येही विचार तो सार छे जी ॥ धार मुमुक्षु हित ॥ छोड प्रणती अनादनी जी । होय खरा मुज मित ॥ भविक ॥ २२ ॥ सर्व प्राणी तारणो जी । दिये गुरु सद्बोध ॥ अमोल ढाल लयो दशी जी । लागी आत्म की सोध ॥ भविक ॥ २३ ॥ ❁ ॥

॥ दुहा ॥ पियुष पीवासी आसीयो । त्यों प्रगम्यो उपदेश ॥ यथा शक्त वृत धारने । घर गया परजा नरेश ॥ १ ॥ वसुपत कहे स्वामी जी । साची आपकी केण ॥ हिवे तारूं मुज आतमा । साचा मिल्या तुम सेण ॥ २ ॥ ऋषि कहे सुख जिम करो । न करो धर्म में ढील ॥ तारो आतमा आपणो । अवसर एह मुशकील ॥ ३ ॥ मुनी वंदी गृह आवीया । बोलायो परिवार ॥ निज इच्छा दर्शावता । सहू मुरजा तिण वार ॥ ४ ॥ मदन कहे कर जोडने । कीजो विचारी काम ॥ आप जाण अवसर तणा । तिहां नहीं कुछ धाम ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल १४ मी ॥ महारो मनडो ऋषभजी से राजी ॥ यह ॥ मेरा मनडा संयम में उमाया ॥ आ ॥ मे तो वचन विचारी उचार्या । मुज चेतवा वक्त ए आया ॥ मेरा ॥ १ ॥ सशक्ति निज काज सुधारूं । तो जन्म मरण मिट जाया ॥ मेरा ॥ २ ॥ जे पर वसमें दुःख में सहीया । ते संयम में न देखाया ॥ मेरा ॥ ३ ॥ धर्म मार्ग में दुःख नही सहीया । ते परवश में दुःख पाया ॥ मेरा ॥ ४ ॥ हिवे चेतूं तो कुछेक सुधर । अपूर्व वक्त ए आया ॥ मेरा ॥ ५ ॥ नहीं तो पीछे गोता खास्यूं । महा मुनीवर फरमाया ॥ मेरा ॥ ६ ॥ तुमसा सपूत मिल्या नहीं सुधारूं । तो में मूर्ख गिणाया ॥ मेर ॥ ७ ॥ निज हिन में अंतराय जे देने । ते कीज पिशुन जगाया ॥ मेरा

॥ ८ ॥ थोडा में समजी दो अज्ञा । कछू सार न खेंचायां ॥ मेरा ॥ ९ ॥ प्रिय वती कहे भली विचारी । मुज मन में येही चाया ॥ मेरा ॥ १० ॥ पुत्रादिक कहे सुख जिम कीजे । दिक्षा उत्सब मंडाया ॥ मेरा ॥ ११ ॥ करी आडंबर वाग में आया । लोच करी सोच छिटकाया ॥ मेरा ॥ १२ ॥ लीनो संयम श्री गुरु पासे । कुटम्ब बन्धी घर सिधाया ॥ मेरा ॥ १३ ॥ बिनय भक्ती कर शिक्षा ग्रही दोइ । मुनी महा सतीयाजी मे रहाया ॥ मेरा ॥ १४ ॥ यथा शक्त करी ज्ञान अभ्यास ते । तप जप चित रमाया ॥ मेरा ॥ १५ ॥ तप जप क्षप करे चडते भावे । अंत अवसर जब आया ॥ मेरा ॥१६॥ आलोइ निंदी करी संथारो । समाधी चित लाया ॥ मेरा ॥ १७ ॥ आयुष पूर्ण हुया तन ने त्यागी । वसु ऋषि ब्रह्म स्वर्ग पाया ॥ मेरा ॥ १८ ॥ तिहां थी चवी थोडा ही भव में । जासी मोक्षेर मांया ॥ मेरा ॥ १९ ॥ सुपुत्र योगे तिरीया तात मात । पुत्र ने लारे गवाया ॥ मेरा ॥ २० ॥ ढाल चौदमी सातमा खंडकी । अमोल भाव दरशाया ॥ मेरा ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ हिवे श्रीधर मदनजी । भोगे जगका भोग ॥ धर्म ध्यान करे चूंपसे । उभय पक्ष सुयोग ॥ १ ॥ सामायिक त्रिकाल की । पौषध छे छे मांस ॥ ॥ प्रास मस्त थी अधिक । तजी सर्व द्रव्य आस ॥ २ ॥ चारराजका कृत्य को। रास्ये

छे आगार ॥ बाकी इच्छा पर हरी । तजी पंच वरनार ॥ ३ ॥ तन मन धने दीपावता । श्री जिनेश्वर धर्म ॥ चउ तीर्थ को पोपता । समज्या धर्म का मर्म ॥ ४ ॥ ढाल १५ मी ॥ आज तो वधाइ राजा नाभ के दरबाररे ॥ यह ॥ अर्थ धर्म साधक है । मदन परिवाररे ॥ आं ॥ मूल स्थान अजुध्या में । रह्या सह ते वाररे ॥ अर्थ ॥ १ ॥ इच्छा हुया वेठ विमाणे । फिरे इच्छा चाररे ॥ अर्थ ॥ २ ॥ चारही राज संभाले पोते । करी सुख उपचाररे ॥ अर्थ ॥ ३ ॥ वट पुर मिलवाने गया । श्रीधर जे वाररे ॥ अर्थ ॥ ४ ॥ राज देइ मरिया राजा । श्रीधर करे संभाररे ॥ अर्थ ॥ ५ ॥ दोय श्यामा श्रीधरनी । रूप गुणे श्रेय काररे ॥ अर्थ ॥ ६ ॥ रूपवंति ने पुष्प नती संग । भोगवे सुख संसाररे ॥ अर्थ ॥ ७ ॥ दोइने दो नंद हुया । रूप गुण तदकाररे ॥ अर्थ ॥ ८ ॥ पद्मसेण गुणदत्त । नाम गुणाधाररे ॥ अर्थ ॥ ९ ॥ मे तारज ने धन्नश्री । हूवा एक कुँयाररे ॥ अर्थ ॥ १० ॥ नाम जसो धर दीपे । करे चैन चाररे ॥ अर्थ ॥ ११ ॥ अंगजने प्रियेकरी । नारी सुखकाररे ॥ अर्थ ॥ १२ ॥ गुण शील कुँवर हूवा । रूप गुण उदाररे ॥ अर्थ ॥ १३ ॥ मदन ने नारी पांच । अपच्छरा अनुहाररे ॥ अर्थ ॥ १४ ॥ रत्यवंती वैश्य पुत्री । चार छे राज कुँवाररे ॥ अर्थ ॥ १५ ॥ रंभा मंज्जरी गुणै सुन्दरी । कन्कावती साररे ॥अर्थ॥

॥ १६ ॥ रूपँवती ए पांचो प्यारी । मोहे दिस दीदाररे ॥ अर्थ ॥ १७ ॥ पांच पुत्र पांचू केरा । नाम करुं उच्चाररे ॥ अर्थ ॥ १८ ॥ हेरी सेण वारीसेण । महासेण मनोहररे ॥ अर्थ ॥ १९ ॥ जयसेँण मित्रैसेण । कलागुण भंडाररे ॥ अर्थ ॥ २० ॥ सर्व सिशु चारुं भाइका । भणाया तेवाररे ॥ अर्थ ॥ २१ ॥ कला बहोत सीखी नरनी । चोसट जाणी नाररे ॥ अर्थ ॥ २२ ॥ सामायिक प्रति क्रमण क्रिया । तत्व द्रव्य नवकाररे ॥ अर्थ ॥ २३ ॥ नय प्रमाण अनुयोग्य नीती । सीख्या तंत साररे ॥ अर्थ ॥ २४ ॥ सर्व कला प्रवीन जाण्या । उपवय हूवा जे वाररे ॥ अर्थ ॥ २५ ॥ योग्य जोडी देखी परखी । परणाइ तस नाररे ॥ अर्थ ॥ २६ ॥ काम संभालण जोगा हूवा । उतारण भाररे ॥ अर्थ ॥ २७ ॥ वैश्य जाती घर संभलाय । करो नीती वैपाररे ॥ अर्थ ॥२८॥ जिण २ आसरी राय कंन्या थी । तिण २ कुँवर ने धाररे ॥ अर्थ ॥ २९ ॥ नानाजीका राज संभलाया । किया घणा हूंशीयाररे ॥ अर्थ ॥ ३० ॥ निश्चिंत हूवा चारुं भाइ । अमोल पन्नरमी ढालरे ॥ अर्थ ॥ ३१ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ निश्चिंत हूवा सहू । करवा आत्म उधार ॥ छोडी परपंच घर तणो । षट पट का वैपार ॥ १ ॥ भाइ चउ पत्नी सहू । पौषध शाळा मांय ॥ धर्म साधना नित्य करे । सीधो अहारज खाय ॥ २ ॥ अभीनव-

ज्ञान वधारता । करी अवृत संकोच ॥ स्वधर्मी को पोषता ॥ अन्य मती धर्म रोच ॥ ३ ॥ साधु सतीनी साधता । यथा योग्य नित्य सेव ॥ श्री जिन धर्म दीपावना । तल्लीन रही अह मेव ॥ ४ ॥ तन तप थी धन दान थी । लेखे लगावे जेह ॥ देखी करणी जिण तणी । वधीयो धर्म अछेह ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल १६ मी ॥ लावणी । एक नगर बणा गुलजार ॥ यह ॥ सुणलेणा दान का फल । होय वीमल । दान नित्य दीजे ॥ तो मदन कुँवर परे संपदा लीजे ॥ आं ॥ तिण अवसर भूमंड माय । फिरे मुनीराय । गुरु गुणधारी ॥ पंच महा वृत समिति पांच । पांच आचारी ॥ सील धरे नव वाड । तीन गुप्त आड । कषाय चौटारी ॥ पांचों इन्द्रिय से विषय लेहर निवारी ॥ झेला ॥ सुणो भाइ, छत्तीस गुण जहां पावे । सुणो भाइ, घणा मुनी साथ सोभावे । सुणो भाइ - जे जैन धर्म दीपावे । सु० तिण अवसर अजुध्या आवे ॥ मिलत ॥ सुदर्शन ऋषि जी संत । इन्दू सोहंत । दर्श तस कीजे ॥ नो मदन ॥ १ ॥ वन पालक सज थाय । नृप सभा आय । दीनी वधाइ ॥ मदन जी सह परिवार । खबर यह पाइ ॥ सहू सजाइ कीन । सज्जन संग लीन । चले भाइ वाइ । यथा विधी मुनी राज आय वंद्याइ ॥ झेल ॥ सु० ॥ आचार्य पंच ज्ञान धारी । सु० अवसर उचित उचारी । सुण० दान तणी महीमा

भारी । सु० लोपाल भेद बिचारी ॥ मि० ॥ निश्चय मुक्त पहोंचाय । द्रबे ऋद्धी पाय । पाप सह्रू छीजे ॥ तो मदन ॥२॥साकेत पुर शुभ ग्राम । सेठ गुण धाम । मणी भद्र रेवे ॥ चउ गुमास्तां संग धर्म ध्यान नित्य सेवे ॥ करे घणो वैपार । चित उदार । दान घणो देवे ॥ इम तन धन पाइ । श्रेष्ट लाभ तस लेवे ॥ झे० ॥ सुण० ॥ चउ मुनीवर जी तिहां आया । सु० विहारे श्रम अति पाया । सुण० क्षुध्या लषा शोषी काया । सु० मन बलीया नहीं घबराया ॥ मि० ॥ पुरी मंडल मझार । फिरे दारो दार । इर्या सोधी जे ॥ तो मदन ॥ ३ ॥ देखी सेठ हुल्लसाय । दोड झट आय । करे इम अरजी । कृपा करो महाराज । तारो मुनीवर जी ॥ है शुद्ध मुज घर अहार । चार प्रकार । लेवो जे मर जी ॥ तिम चउ मेहता हर्षाय दान के गर जी ॥ झे० ॥ सु० तब मुनी राज पधारे । सु० धामे भोजन विविध प्रकारे । सु० धोवण उष्णोदक तैयारे ॥ सु० थी मेवा मिठाइ भारे ॥ मि० ॥ और मुखवास । चार अहार खास । हुइ हुल्लास । धामे सह्रू चीजे ॥ तो मदन ॥ ४ ॥ चित वित पातर शुद्ध । थाल भरलाइ ॥ सर्व तरह को आ- हर सेठ वहराइ ॥ चारों मेहता दे दान । चिंते मन म्यान । घणो ले जाइ॥ तिण करण वेहरावण में करी कपटाइ ॥ झे ॥ सु० ते थोडो २ वेहराइ ॥ सु० मुख वातां बहुली

वणाइ । सु० ते स्त्री गौत्र वन्धाइ ॥ सु० मुनी राज वेहर सिधाइ ॥ मि ॥ सुखे रहे पंच प्रान । करे धर्म दान । एकाग्र लगीजे ॥ तो मदन ॥ ५ ॥ तिहां थी चत्री मणी चन्द । पुण्य अमंद । मदन जी थइया ॥ चउदान तणे प्रताप राज चार लहीया ॥ चारुं महता करी काल । उपज्या तत्काल । राज घर आइया ॥ कपट प्रभावे नारी वेद ते थइया ॥ झेला ॥ सु० पुर्व प्रेम प्रभावे । सु० चारी राणी ते थावे । सु० दान थी संपदा पावे । सु० वली धर्म में मन रमावे ॥ मि ॥ इम जाणी दीजो दान । करी सन्मान । तजी अभीमान । शुष्क वृती रीजे ॥ तो मदन ॥ ६ ॥ जे कीधा ते पाया । वाणिक कुल आया । राजा केवाया ॥ किंचित दुःख थी सुख आचिंत्यो पाया ॥ और भावे गुण भारी । प्रत संसारी । भइ तुम काया ॥ तेहथी तारण सामग्री कर तुम आया ॥ झे ॥ सु० ए ऋद्धि साथ नहीं जावे । सु० ए ऋद्धि न दुःख मिटावे । सु० दान मांही देवे ते पावे । सुण० मोक्ष अर्थी ए छिटकावे ॥ मिल ॥ इम जाणी अहो प्राणी । संतोष करीजे ॥ तो मदन ॥ ७ ॥ अत्र छोडो ऋद्धि करो करणी । भव उद्धरणी । जिन जी फरमाइ । खांत दांत निरारंभ अणगार ज थाइ । ते मिटा देवे जन्म मर्ण । फिरी अवतर्ण । मोक्ष में जाइ ॥ ए सार जक्त में धारो सुखेच्छु भाइ ॥ झेला ॥ सु०

ए गुरु उपदेश रसाल । सु० सुणी भवी जीव तत्काल । सुण० हुवा धर्म करण उजमाल । सुण भाइ ये हुइ षोडशमी ढाल ॥ मिल ॥ ए ऋषि वचन अमोल । हीरा में तोल दान शुद्ध दीजे ॥ तो मदन ॥ ८ ॥ ❀ ॥ दुहा । इत्यादी दीदेशना।सुणी भव्य हर्षाय ॥ जाणी मदन पुर्व चरी । घणा जन विस्माय ॥ १ ॥ अचिंत्य महीमा दान की । थोडा में महालाभ ॥ दाता मुक्ता सब मिल्या । भाव जिसा उत्साभ ॥ २ ॥ दान सील तप भावना । धर्म का चार प्रकार ॥ प्रथम पद इण कारणे । दीयो दान ने सार ॥ ३ ॥ पुण्यवंत अवसर पाय ने । लेखे वस्त लगाय ॥ कंकर को कंचन करे । कालंत में जणाय ।। ४ ॥ विशेष काले जे फले । ते विशेष दे सुख ॥ इम प्रत्यक्ष आसा तजी । ग्रहो परोक्षो हो मुख ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ११ मी ॥ अगड दम २ वाजे चौघडया ॥ यह ॥ महा पुण्य वंत श्री मदन कुँवर जी । दान से कीयो खेवा पार ॥ पाप हटावन धर्म बडावन पुण्य प्रकाश कियो अधिकार ॥ आं ॥ सुणी पूर्व भव रचना मदन जी । मुनीवर ने जाण्या उपकारी । विन पूछया मुज तारण कारण । कथा कही पहली महारी ॥ ऋद्धि इण थी आधिक मे पाइ । छोड आयो अनंत वारी ॥ आर । ऋद्धि प्राप्त हुया विन । भव २ में हुइ खुवारी ॥ अवतो हूं गुरु कृपा ए समज्यो । करूं आत्मका

निस्तारा ॥ महा ॥ १ ॥ उठ वंदणा कर कहे पुज्यथी । भली कृपा करी महाराया
दीन दयाल दया कर दीन पे । भयल महारा फरमाया ॥ अल्प गुरु सेवा
का फल यह । अब करस्यूं अर्पण काया ॥ ऋद्धि सिद्धी तो मुज नहीं चहीये । जन्म
मरण से घबराया ॥ येही दुःख मिटावन कारन । लेस्यूं हूं संयम भारे ॥ मदन ॥ २ ॥
ऋषिजी कहे करो सुख होवे जिम । धर्मे ढील करणी नाहीं । सुणी हर्षी वंदी घर आया
। जग छोडन मन उमाइ ॥ आइ विराज्या धर्म स्थानके । सब परिवार लिया बुलाइ ॥
कहे सहू मुज देवो आज्ञा॥ दिक्षा की लगी अति चाइ ॥ सहू कहे किसी कसर यहां है ।
कर रह्या आत्म उद्धार ॥ मदन ॥ ३ ॥ मदन कहे तुम ज्ञानी होइ । इसा वचन मुख
मत बोलो ॥ जन्म सर्व श्रावक व्रुत धरे । नहीं मुनीकी दो घडी तोलो ॥ मुनी मार्ग शि
वसुख कादाता । संसारमें चउगति जोलो ॥ मनुष्य भवेही संयम आवे । कुण खोवे व-
क्त असोलो ॥ हू तो लेस्यु संमप अव्वी । ढील करूं नही लगार ॥ मदन ॥ ४ ॥ तीनो
भाइ कहे नरमाइ । विरह हम थी सह्यो नहीं जावे ॥ जो आत्म उद्धार करोतो । म्हारे
ही मन ते चावे ॥ मदन कहे यह भली विचारी । प्रेमला तब दोडी आवे ॥ सहू मिली
एक मतो कर्यो थां । म्हाकी गती कैसी थावे ॥ हरगिज हम जावां नही देशा । महाके

तुमही आधार ॥ मदन ॥ ५ ॥ मदन कहे मोह दिशा को छोडी । ज्ञान निजर करके जोवो ॥ किंचित पापे भइ छो नारी । इन से हलकी मत होवो ॥ साचो प्रेम जो राख्यां चावो । तो मोह निंद्रासे मत सोवो । अवसर पाइ करो कमाइ । जिनसे भव भ्रमण खोवो । तुम कहणी थी हूं नहीं डूबू । तुम क्यों नहीं तीरो संसार ॥ मदन ॥ ६ ॥ संक्षेपे अति बोध वचन सुन । कहे हम भी साथे आरां ॥ जैसी प्रीत संसारे निभाइ । वैसी धर्म में निभासां ॥ इम सुणी कुँवर पयंपे । सर्व एक मन तुम भइया ॥ तो आसरो हम ने किनको । जो नहीं रहे तात मैया ॥ और सज्जन भी मोह वस होइ । नेणां आंश्रू नीतारे ॥ मदन ॥ ७ ॥ मदन कहे अहो मोहो गिन्माणी । जरा विचार करो मन में ॥ आसरो दाता को नहीं जगमें । मतलब वसे सारा जनमें ॥ आप आपणा कीधा पावे । कुण लोभावे व्यर्थ धन में ॥ तुम सरीखा सुपुत्र सज्जन मुज । तारुं जन्म हिवे नरपनमें ॥ करो धर्म दलाली भारी । दे आज्ञा तुम इण वारे ॥ म ॥ ९ ॥ इम सहू कुटंब समजाया । खबर चारी राज में जावे ॥ मोटा २ सामंत सज्जन प्रजा जन मिलके आवे ॥ कर जोडी कहे श्वामी आपके सरण छोड गया हम राजा ॥ आपकी छांया आनंद पाया । सुख दीया गरीब निवाजा ॥ विना गुन्हे किम तजो नाथ । तव मदन वचन इम उच्च

रे ॥ म ॥ ९ ॥ येही रीती विश्व तणी है । तजी २ सहू रिद्ध जावे ॥ जिम पहलां क- राय सिधाया । सोही गती महारी थावे ॥ बाकी रहे जे जग माहे जन ॥ निज २ कर- णी फल पावे ॥ साचा सेवक परजा सोही । श्वामी को जो सुख चावे ॥ राजा थारे हु- या है उत्तम । सुख देशी ते ज्यादारे ॥ मदन ॥ १० ॥ इम बहु विध समजुत करी तस । कियो दिक्षा को मंडानो ॥ जग विवहार सांचववा कारण । खुरमुंडण मंडण ठानो । सहू वैरागी वस्त्र भुषण सज । आवेठा पालखी श्याने ॥ सहश्र पुरुष उठावे तेवी । अ- लग २ सव को जाणो ॥ शैन्य वाजा गीत नृत्य तिहां । आणंद मंगल वृत्यारे ॥ म ॥ ॥ ११ ॥ मध्य बजार सवारी चाली । क्रोडोंगम संग नर नारी ॥ लटक २ कर सहू न- मे छे । धन्य २ मुख उच्चारी ॥ जय २ नन्दा जय २ भद्दा । भदा भदंती ललकारी ॥ आया सहू मिल ग्रामके वाहिर । जिहां मुनीवर दीठारी ॥ तजी सवारी हुइ पायचारी । यत्नाकर भूं निहारे ॥ म ॥ १२ ॥ करी वंदणा इशाण कुण आ । पंचमुष्टी लोचनकीधा । पुत्र वाल झेल्या खोलामे । दर्शनिक जाण संग्रही लीधा ॥ पहरी साधू वेस पंदरेही । आ उभा गुरुके पासे ॥ जावजीव साव जोगने । नव कोटी त्याग्या तासे ॥ बेठा सा- धू पंक्ती मे जा । शांत दांत गुणी अणगारे ॥ म ॥ १३ ॥ सर्व कुटंब मिल करी वंदणा ।

नेणासे वर्षे पाणी ॥ वेगा दर्शन दीजो श्वामी । धन्य २ जीतव तुम जाणी ॥ निरखत नेण तृप्त नहीं होवे । ठपर्क २ फिर घर जावे ॥ सुनी २ सहु दीसे साहेबी । गुण गण हीये रमावे ॥ धर्म कर्म दो साधन करते । सुखे २ काल गुजारे ॥ म ॥ १४ ॥ श्रीधर ऋषि श्रीधरी ज्ञान की । मे तारज निजने तारे ॥ अंगज अंग ज्ञानका वणिया । मर्दन मदन न्हाख्या मार ॥ अंक ऋषि विरत्न अंकीया । पांचो नाम गुण उच्चारे ॥ सर्व मुनी सर्व गुणमें संपन्न । जैस है सूत्र के मझारे ॥ किया ज्ञान अभ्यास बहुतसा । तपस्या कर कर्म कों जारे ॥ म ॥ १५ ॥ रुप श्रीजी निज रुपे स्थित । पुष्प श्री गुण सुगन्ध भरी ॥ धन्नश्री धर्म धन्न संचीयो । प्रिय करी तप प्रित करी ॥ रत्तवंती रत्त रहे संयमे । रंभा रच्या क्रिया ने हीरो ॥ गुण सुन्द्री राची गुण ज्ञाने । रुप वंती स्वरुप वरी । कन्कावती कन्क ज्यों निर्मळ । ए नव सत्तीयां सिरदारे ॥ म ॥ १६ ॥ सर्व सतीयां महा गुणवंती । ज्ञान भणी विनय भावे ॥ फिरतो तपस्या मांडी दुक्कर । एकांत मोक्ष तणी चावे ॥ सती संत करी करणी यथा शक्त । जैन धर्म घणा दीपाया ॥ घणा जीवने मार्ग लगाया आयु तणा जब अंत आया ॥ आलोइ निंदी अणसण करीयो । निज आत्म जग थी तारे ॥ म ॥ १७ ॥ पांचूं साधू आयुपूर्ण कर । ब्रह्मस्वर्ग को पधारे ॥ सतीयों

चोथे स्वर्ग विराजी । करणी फल के अनुसारे ॥ अनोपम सुख भोगे श्वर्ग का । महा विदेह धर्मी घर मांही ॥ जन्म लेइ संयम धारी । कर करणी एक चित लाइ ॥ कर्म क्षपा के मोक्ष ज पासी ॥ हो जासी जय २ कारे ॥ मदन ॥ १८ ॥ आदी अंत वरण न करी ए । मदन कुँवर पुण्यवंत चरी ॥ सारांस ग्रहण । करीये श्रोता । निजात्म को हितधरी ॥ सत्य सील सहासिकता धैर्य । निश्चय दया गुरु भक्त सिरी । नम्रता गुण ग्राही अमानी ॥ इत्यादी गुण लेवो वरी ॥ धारे गुण मदन का जो जन । तोही सुणी यां को सार ॥ मदन ॥ १९ ॥ कथानुसार विस्तार करीने । विविध राग ढाल बनाइ ॥ सोभीतो सम्मास बहु जगा । दीनो मन थी मीलाइ ॥ अधिको उणो विरुध विप्रीत । जो कोइ गयो होवे कथाइ ॥ तो अर्हंत ने आत्म शाखे । मिथ्या दुष्कृत्य मुज तांइ ॥ शुद्ध कर लीजो कृपाया विद्वर । अर्ज मेरी यह स्विकार ॥ मदन ॥ २० ॥ श्री महावीर जी चर्म जिनेश्वर । पाट सुधर्मा गण धारा । जंबूजी प्रभव स्वयंभव । यशोभद्र संभुती सारा ॥ भद्रबाहु स्थूलभद्र महागीरी । सबल स्वातिके अणगार ॥ समय सादिले यति-धर आर्यश्याम भद्दल कारा ॥ नगदत्त अरहगण खंदिलेजी । द्रक्षण नगराय श्रोकार ॥

मदन ॥ २१ ॥ गोविन्द[२२] संभूती[२३] दीन लोहीतांग[२४] । उसरंगणी[२५] लोहितस्वामी[२६] ॥ आर्यऋषि[२७]
धर्माचार्य[२८] शिवभूत[२९] । संगांजी[३०] आर्यभद्र[३१] नामी ॥ विष्णुचन्द[३२] धर्मवृधन[३३] श्रीभर[३४] । सुदत्त[३५]
सुस्थित[३६] वरदत्त[३७] यामी ॥ सुबुद्धि[३८] शिवदत्त[३९] वीरदत्तजी[४०] । जयदत्त[४१] जयदेव[४२] जयघोषजरे[४३] ॥
मदन ॥ २२ ॥ वीर[४४] वकधर शांतीसेन[४५] श्रीवंत[४६] सुमती[४७] लूंका[४८] जक कारी ॥ वाना रुप[४९]
ऋषि जवरुषीजी[५०] । वंजरं[५१] लवजी[५२] उद्धारी। सोमजी[५३] कहानजी[५४] ऋषि पुज्यजी । तारा[५५] काला[५६]
ऋषि बलाहारी । वक्षुऋषिजी[५७] धनजी[५८] ऋषिजी खुबा[५९] ऋषिजी आचारी ॥ गुरु दयाल श्री
चेना[६०] ऋषिजी । सर्वे अमोल[६१] ऋषि नमतारे ॥ मदन ॥ २३ ॥ श्री वीर संवत
चोवीससो[२४००] चौतीस[३४] । विक्रम उन्नीस[१९] चौसट[६४]॥ दक्षिण हैद्राबाद में आया । नवोक्षेल
जैनी हुयो पट ॥ तवस्वीजी श्री केवल ऋषिजी । संसारी तात साथे आया ॥ लालाने
तरामजी रामनारायणजी । दीयो स्थानक स्थिरता पाया । दीप वाली दिन पूर्ण चरित्र
यह । कियो अमोल ऋषि हित धार ॥ मदन ॥ २४ ॥ वक्ता यथा तथ्य रागे गावे श्रो-
ता सुण के हर्षावे॥ग्रन्थ समाप्तिकी भेट अर्पता॥इच्छित वृत करो सहू भावे॥भणता सुणतां
पुण्य प्रकाशे । आनन्द मंङ्गल वृतावे ॥ जय २ रहे सदा जैन धर्म की । जिहां लग भू.
रवी सशी रहावे ॥ ही श्री सुख संपदा।सदा चरित्र यह दातार ॥ मदन ॥ २५ ॥ ❀ ॥

॥ सारांस हरीगीत छन्द ॥ श्री घर निज निज वीतक कह्यो । सबहीं कुटुम्ब सुखीया भया ॥ सर्व सज्जन संग अजुध्या । आया मुनी भेटो थया ॥ सुणी पूर्व भव लियो संयम । करणी कर स्वर्गे गया ॥ जासी मोक्ष ए खंड सप्तम : ऋषि अमोल इण विध कया ॥ १ ॥

पुन्य प्रकाश मदन चरित्र का । सात खन्ड मिल्या सहू ॥ ढाल एकसो आठ पूरी । भणता कर्म होवे लहू ॥ धार सार ज्यूं हो निस्तार । यहै तत्व थोडा में कहूं ॥ हीं श्रीं अक्षय अनंत सुख । भणतां सुणतां ले बहू ॥ १ ॥

परम पुज्य श्री कहान जी ऋषि जी महाराज के सम्प्रदाय के महंत
मुनी श्री खुबा ऋषि जी महाराजे के आर्य शिष्य श्री चेना ऋषि
जी महाराज के शिष्य बाल ब्रह्मचारी श्री अमोलख
ऋषि जी महाराज रचित पुण्य प्रकाश श्री

मदन कंवर चरित्र समाप्त

मदन कुँवर चरित्र समाप्त